ठ'-लोकोदय-ग्रन्थमाला—हिन्दी-ग्रंथांक ११

नारायणप्रसाद जैन

ारतीय ज्ञानपीठ काशी

ग्रन्थमालासम्पादक और नियामक
लक्ष्मीचन्द्र जैन एम. ए., डालमियानगर

प्रकाशक,
अयोध्याप्रसाद गोयलीय,
मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ काशी,
दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस

प्रथम संस्करण ३०००
फरवरी १९५१
मूल्य छह रुपये

मुद्रक,
देवताप्रसाद गहमरी
संसार प्रेस,
काशीपुरा, बनारस

समर्पण

परम स्नेहमयी भाभी

श्रीमती सौभाग्यवती ज्ञानदेवी 'विदुषी'

और

परम श्रद्धेय भाई साहब

गंगाप्रसाद जैन एम. ए., एल-एल. बी.

को

सादर

सप्रेम

स म र्पि त

भूमिका

श्री नारायणप्रसाद, 'साहित्यरत्न', हिन्दीके उन इने-गिने लेखकोंमेंसे हैं जो साहित्यको साधनाका मार्ग मानकर चलते हैं और जिनकी सफलताका अनुमान विज्ञापनकी बहुलतासे न लगाकर सम्पर्ककी घनिष्ठतासे ही लगाया जा सकता है। साहित्यके अतिरिक्त यदि और किसी दिशामें उनकी रुचि हुई है तो वह है राष्ट्रीय कार्य और लोक-सेवा। इस प्रकारका कार्यक्षेत्र वही व्यक्ति चुनते हैं जिन्हें जीवनके साधनोंको जुटाने की अपेक्षा साधनाकी उपलब्धिमें अधिक सन्तोष और सुख मिलता है। सुकुमार प्राण, भावुक मन और कर्मठ साधनासे जिस व्यक्तिने जीवनको देखा और परखा है उसकी अन्तर्दृष्टि कितनी निर्मल और निखरी हुई होगी। श्री नारायणप्रसादकी इसी अन्तर्दृष्टि और परिष्कृत रुचिने उन्हें प्रेरणा दी है कि उन्हें अपने जीवनव्यापी अध्ययनमें जहाँ कहींसे जो सत्यं, शिवं और सुन्दरं प्राप्त हो वह यत्नसे संग्रह करके लोकजीवनके लिए वितरित कर दें।

भारतीय ज्ञानपीठसे प्रकाशित 'मुक्तिदूत'के ख्यातनामा साहित्य-शिल्पी श्री वीरेन्द्रकुमारने हमें सूचना दी थी कि श्रीनारायणप्रसादजीके पास ज्ञानोक्तियों, लोकोक्तियों और सुभाषितोंका एक बृहत् संग्रह है जिसे उन्होंने परिश्रमसे संकलित किया है और जिसका प्रकाशन ज्ञानपीठके लिए उपादेय होगा। श्री नारायणप्रसादजीको हमने एक पत्र लिखकर पांडुलिपि भेज देनेका आग्रह किया। जब पांडुलिपि प्राप्त हुई तो कागज़ोंका पुलिन्दा और कतरनोंका ढेर देखकर हम अवाक् रह गये। कितने प्रकार और कितने ही आकारके कागज़ोंमें अनेक प्रकारकी स्याहीसे लिखे गए हज़ारों ज्ञान-वाक्य संगृहीत थे, बिना

विषय-क्रम और बिना योजनाके। उस मूल रूपमें संग्रह अपने जन्म और विकासकी कहानी अपने आप ही कह रहा था। एकके बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी सूक्ति किस प्रकार कब मिली और किस 'मूड' (mood = मनःस्थिति) में लेखकने उसे लिपिबद्ध किया यह स्पष्ट झलक रहा था। संग्रहकी उस क्रम-हीनतामें भी एक विशेष आकर्षण और प्रभाव था।

'ज्ञानगंगा'की मूल पांडुलिपिमें आरम्भिक सूक्तियोंका क्रम इस प्रकार था :—

(१) हे प्रभो, मुझे अभौतिक प्रकाश नहीं मिला, तो क्या मैं केवल कवि बनकर रह जाऊँ? —संत तुकाराम

(२) पापकी सारी जड़ ख़ुदीमें है। —गीता

(३) अतिशयोक्ति वह सत्य है जो बौखलाई हुई हालतमें है। —खलील जिब्रान

(४) अपना उल्लू सीधा करनेके लिए शैतान भी धर्मशास्त्रके हवाले दे सकता है। —शेक्सपियर

(५) सच तो यह है कि ग़रीब हिन्दुस्तान स्वतन्त्र हो सकता है लेकिन चरित खोकर धनी बने हुए हिन्दुस्तानका स्वतन्त्र होना मुश्किल है। —गान्धी

(६) अपने प्रेममें ईश्वर सान्तको चूमता है और आदमी अनन्तको। —टैगोर

(७) जिसे दोषविहीन मित्रकी तलाश है वह मित्रविहीन रहेगा। —एक तुर्की कहावत

(८) मायाके दो भेद हैं—अविद्या और विद्या। —रामकृष्ण

(९) जोश—आदि गर्म, मध्य नर्म, अन्त सर्द। —जर्मन कहावत

(१०) स्याहीकी एक बूँद दस लाख आदमियोंको विचारमग्न कर सकती है। —बायरन

(११) शब्दोंका अर्थ नहीं; अनुभव देखना चाहिए। —शीलनाथ

इन सूक्तियोंको पढ़कर पता चलता है कि मनुष्यके जागरित मनने पृथ्वीके विभिन्न खण्डोंमें रहकर अनन्त युगोंतक जीवनसे जूझकर और जीवनको अपनाकर अपने अनुभव द्वारा सत्यको किस प्रकार प्राप्त किया है और उसे किस अमर वाणीमें व्यक्त किया है। यह मानव-सन्ततिका अक्षय-भंडार और अखंड उत्तराधिकार है। यहाँ देश, काल, जाति और भाषाकी सीमाओंसे परे सारा विश्व ज्ञानके प्रकाशसे उद्भासित, सत्यके बलसे अनुप्राणित और सौन्दर्यके आकर्षणसे एकाकार प्रतीत होता है। ज्ञानकी यह कितनी बड़ी करामात है कि वह मानव-मात्रमें अभेद ही उत्पन्न नहीं करता, जीवनकी मौलिक एकताका आधार साक्षर-वाणीमें व्यक्त करता है और इतिहासके पृष्ठोंपर अमरत्वकी छाप लगा देता है।

संग्रहकी समस्त सूक्तियोंको विषयके अनुसार अकारादि क्रमसे व्यवस्थित कर दिया गया है। उदाहरणार्थ, उपर्युक्त ११ सूक्तियोंको अकारादि क्रमसे 'ज्ञानगंगा' की विभिन्न तरङ्गोंके अन्तर्गत क्रमशः इन विषय-शीर्षकोंमें संकलित किया गया है :—

१ कवि, २ पाप, ३ अतिशयोक्ति, ४ धर्मशास्त्र, ५ चरित्र, ६ चुम्बन, ७ मित्र, ८ माया, ९ जोश, १० स्याही और ११ अनुभव।

उक्त विषयोंपर अन्य जितनी सूक्तियाँ मिली हैं सब विषयवार इन्हीं शीर्षकोंके अन्तर्गत दे दी गई हैं। फिर भी, विभाजनमें विषयकी दृष्टिसे पुनरावृत्ति हुई है क्योंकि एक ही विषयसे सम्बन्धित सूक्ति उस सूक्तिमें प्रयुक्त प्रमुख शब्दके आदि अक्षर के अनुसार अन्य तरङ्गमें सम्मिलित करनी पड़ी है।

ऊपर जिन ११ सूक्तियों को उद्धृत किया गया है उनपर दृष्टि डालनेसे मालूम होगा कि प्रायः सूक्तियाँ मूलसे या मूलके अन्य अनुवादसे अनूदित हैं। इस प्रकारकी सूक्तियोंका अनुवाद बहुत कठिन होता है क्योंकि मूल सूक्ति

अपनी भाषा और शब्दयोजनामें इतनी चुस्त, सीधी और मुहावरेदार होती है कि इन्हीं गुणोंके कारण उनका प्रभाव टिकाऊ बनता है। भाषा और मुहावरेकी इस शक्तिको अनुवादमें लानेके लिए अनुवादक को कभी कभी एक-एक शब्दके पीछे घंटों मग़ज़ मारना पड़ता है और फिर भी ऐसा होता है कि पूरा प्रयत्न करनेपर भी सफलता नहीं मिलती अथवा लेखकका मन नहीं भरता। 'ज्ञानगंगा' के संकलनकी यह ख़ूबी है कि श्री नारायणप्रसादने अनुवादकी भाषाको रवानी दी है और मुहावरेकी शक्तिको क़ायम रखनेकी कोशिश की है। उदाहरणके लिए, शेक्सपियरकी उपयुक्त प्रसिद्ध सूक्ति 'Even the Devil can quote scriptures' का अनुवाद इससे अच्छा और क्या हो सकता था? "अपना उल्लू सीधा करनेके लिए शैतान भी धर्मशास्त्रके हवाले दे सकता है।" माना कि अनुवादमें मूलकी सूत्रता (aphorism) और करारापन (crispness) नहीं है पर उसका प्राण और मुहावरा ज़रूर है। इसी प्रकार ख़लील जिब्रानकी सूक्ति 'अतिशयोक्ति वह सत्य है जो बौखलाई हुई हालतमें है" में अनुवादके लिए 'बौखलाई हुई हालत' की शब्दयोजना सुन्दर और सप्राण है। अतिशयोक्ति का यह सहज चित्रांकन अन्य प्रकारसे कठिन था। लेखकने कहीं कहीं धर्मशास्त्रके गूढ़ और परम्परागत शब्दोंका अनुवाद उर्दू फ़ारसी अथवा 'हिन्दुस्तानी' के अनेक ऐसे शब्दोंसे किया है कि पढ़नेपर अटपटा लगता है पर जैसे बिजलीसी कौंध जाती है और गूढ़ अर्थ उजागर हो जाता है।

इन सूक्तियों को पढ़ते हुए पाठकको अवश्य सोचना होगा कि जिस सूक्तिके अनुवादके पीछे इतना श्रम और चिन्तन है उस मूल सूक्तिके जन्मके पीछे जन्मदाताके जीवनका कितना विशाल अनुभव और मनन छिपा हुआ है। सूक्तिकार द्रष्टा, मनीषी,

साधक और कवि सब कुछ एक साथ है और शायद फिर भी वह कहीं कहीं निपट निरक्षर भी हो सकता है। पाठककी ज़िम्मेदारी है कि वह प्रत्येक सूक्ति और सुभाषितको ध्यानसे पढ़े, अर्थ पर विचार करे और अर्थके पीछे वक्ताका जो ज्ञान, अनुभव तथा साधना है उसको, उसके अंशमात्रको, आत्मसात् करनेका प्रयत्न करे। युधिष्ठिरने गुरुकी एक सूक्ति, एक शिक्षा, 'सत्यं वद' को ही सीखनेमें सारा जीवन लगा दिया था, किन्तु फिर भी महाभारतमें अश्वत्थामाके प्रसंगमें 'नरो वा कुंजरो वा' के असत्यजालमें फँस ही गए थे। इसलिए, समूची पुस्तक को कहानी या लेखकी तरह पढ़ डालनेका प्रयत्न करना 'ज्ञानगंगा'के साथ और स्वयं अपने साथ अन्याय करना होगा। महात्मा भगवानदीनजीने आपको सावधान कर दिया है—'देखिये'!

ज्ञानपीठकी इस लोकोदय ग्रन्थमालाका मुख्य उद्देश्य इस प्रकारके सांस्कृतिक ग्रन्थोंका प्रकाशन है जो लोकजीवनको चेतना और गति दें, जो साहित्यके जागृत और सजीव रूपका प्रतिनिधित्व कर सकें। 'ज्ञानगंगा' इसी साहित्य-शृंखलाकी एक कड़ी है।

आशा है 'ज्ञानगंगा' की अक्षय धार पाठकोंके मनको पावन और हृदयको शीतल करेगी।

नायं प्रयाति विकृतिं विरसो न यः स्यात्
न क्षीयते बहुजनैर्नितरां निपीतः।
जाड्यं निहन्ति रुचिमेति करोति तृप्तिं
नूनं सुभाषितरसोऽन्यरसातिशायी॥

डालमियानगर
(वसन्तपंचमी)
११-२-५१

—लक्ष्मीचन्द्र जैन
सम्पादक

दो शब्द

चक्रवर्तीकी फ़ानी सम्पदा और इन्द्रलोकके क्षणिक भोग मिलना आसान है, मगर अपने शाश्वत सच्चिदानन्द स्वरूपको पा लेना बड़ा मुश्किल है। सारी कलायें व्यर्थ हैं, तमाम ज्ञान-विज्ञान फ़िज़ूल हैं, अगर वे इन्सानको आत्म-दर्शनकी ओर नहीं ले जाते।

आत्म-ज्ञान होता है निर्मल अन्तःकरणवालोंको। गुस्सा, घमंड, छल-फ़रेब, अय्यारी-मक्कारी, लोभ-लालच, भय शोक, राग-द्वेष, आशा-तृष्णा, कामना-वासना, रंज-फ़िकर वग़ैरह गंदगियोंसे जिनका चित्त लिपटा हुआ है उनपर क्या ख़ाक हक़ीक़त रोशन होगी!

जिन दिव्य हस्तियोंने अपने आत्माओंसे कर्म-मल धो डाला है उन्हींकी अमृत-वाणी इस दुनियाके सन्तप्त जीवोंको शान्ति देनेके लिये 'ज्ञान-गंगा' बनकर उनके आँगनमें बह निकली है।

तक़दीरवाले! इस ज्ञान-गंगामें तैरता चलः यह तुझे दुखी दुनियासे दूर अनन्त सुखके दिव्य लोकमें पहुँचा देगी।

—नारायणप्रसाद जैन

देखिये !

इस 'ज्ञान-गंगा' में पैरिये भी धीरे धीरे. नाव चला बैठे तो कुछ हाथ न लगेगा. मोटर-बोटकी तो सोचना तक नहीं. इस गंगा में पूरब पच्छिम दोनों ओरसे पग पग पर आकर नई नई विचार-धारें मिली हैं; और हर धार कहती है: 'मुझे देखिये; मेरा पानी चखिये; बन सके तो मुझमें नहाइये'. धार तो यह कहती है; पर मैं कहता हूँ—'नहाइये और हलके हो जाइये'. हो सकता है किसी धारमें नहाकर आप अपने आपको इतना महसूस करने लगें कि आपको लगने लगे आपके पाँव ज़मीनसे उठे जा रहे हैं.

यह कैसी गंगा है कि साथ चल सकती है ! ट्रङ्कमें समा सकती है ! जिस देशमें गागरमें सागर रह सकता हो वहाँ गंगा गागरमें क्यों न समा सके ?

इस सुभीतेसे जिस विचार-धारमें आप नहाना चाहें चट नहा सकते हैं. इस किताबको, संग्रह करनेवाले श्री नारायन-प्रसाद जी ने, बहुत बड़े कामकी चीज़ बना दिया है .

इसे कोई अनपढ़ भी ख़रीद कर घरमें रख ले तो टोटेमें नहीं रह सकता . कभी न कभी किसीके काम आ ही जायेगी, क्योंकि यह सदा नई बनी रहनेवाली किताब है. गंगाजलकी तरह इसका पानी-जल हमेशा जैसेका तैसा बना रहता है; उपयोगितामें रत्ती भर कमी नहीं आती.

यह तो विचारोंका ख़ज़ाना है; कभी न घटनेवाला ख़ज़ाना है; सबके कामका ख़ज़ाना है. क्या विद्यार्थी, क्या पुजारी,

क्या राजनेता, क्या सिपाही, क्या बनिया, क्या कारीगर,—सभीके कामका खज़ाना है. लड़का पढ़ने लगे तो हरज़ नहीं, लड़की पढ़ने लगे तो हरज नहीं. समझमें आ जाय तो नफ़ा ही नफ़ा।

इस किताबमें आप सन्तोंसे मिलिये; महात्माओंसे मिलिये; राजनेताओंसे मिलिये; बहादुर सूरमाओंसे मिलिये; नंगे फ़क़ीरों से मिलिये; कवियोंसे मिलिये; और फिर चाहे नर नारायनोंसे मिलिये, और पूजाके योग्य देवियों और नारियोंसे मिलिये.

ज़रूरत तो इसकी बहुत दिनोंसे थी; अब आई अभी सही.

यह ठीक है कि यह आपकी पूरी भूख न मिटा सकेगी; पर ज्ञानकी भूख मिटाना ठीक भी नहीं. और फिर ज्ञानकी भूख मिटा भी कौन सकता है?

४० ए, हनुमान रोड,
नई दिल्ली

—भगवानदीन

विषय-सूची

ज्ञानगंगा

अकर्तृत्व

कर्तृत्वहीनताकी अपेक्षा कर्त्तव्य श्रेष्ठ है, कर्त्तव्यकी अपेक्षा अकर्तृत्व श्रेष्ठ होता है।

—विनोबा

अकर्मण्य

अकर्मण्यके मनोरथ स्वप्नराज्य के समान हैं।

—अज्ञात

अकर्मण्यता

नाचीज़ बननेका उपाय कुछ न करना है।

—होव

प्रकृति अपनी उन्नति और विकासमें रुकना नहीं जानती, और हर अकर्मण्यता पर वह अपने शापकी छाप लगाती जाती है।

—गेटे

अंकुश

दूसरोंका डाला अंकुश गिरानेवाला है और अपना बनाया उठानेवाला है।

—गांधी

अकेला

तुम कहते हो, 'अकेला क्या होगा?' लेकिन आकाशमें सूर्य अकेला नहीं है क्या? —अज्ञात

अकेला ही जीवन व्यतीत कर, और किसी पर भरोसा न कर—मेरा इतना ही कहना काफ़ी है।

—एक कवि

गरुड़ अकेले उड़ते हैं; भेड़ें ही हैं जो हमेशा भीड़ लगाती हैं।

—सर फिलिप सिडनी

जिसे ईश्वरने संसारमें अकेला बनाया है, धन वैभव नहीं दिया है, सुखमें प्रसन्न होने वाला और दुःखमें गले लगाकर रोने-वाला साथी नहीं दिया है, संसारके शब्दोंमें जिसे उसने 'दुखिया' बनाया है, उसके जीवनमें उसने एक महान् अभिप्राय भर दिया है।

—रामकृष्ण परमहंस

✓एक साधुसे किसी ने पूछा कि तू अकेला क्यों बैठा है? जवाब दिया कि पहले तो अकेला न था, मालिक ध्यानमें साथ था, लेकिन अब तूने आकर अकेला कर दिया।

—अज्ञात

जगत्में विचरण करते करते अपने अनुरूप यदि कोई सत्पुरुष न मिले तो दृढ़ता के साथ अकेला ही विचरे; मूढ़ के साथ मित्रता अच्छी नहीं।

—बुद्ध

जिसे अकेले भी अपने निर्दिष्ट पथ पर चलनेकी हिम्मत है वही सच्चा बहादुर है। निर्दिष्ट पथपर अकेला अन्त तक वही जा सकता है जिसका पथ सत्पथ है और जिसे सत्पथ ही प्रिय है। —हरिभाऊ उपाध्याय

अक़्ल

उसीकी अक़्ल ठीक या क़ायम रह सकती है जिसकी इन्द्रियाँ उसके क़ाबूमें हैं।

—गीता

अक़्लमन्द

अक़्लमन्द आदमी बोलनेसे पहले सोचता है, बेवक़ूफ़ बोल लेता है और तब सोचता है कि वह क्या कह गया।

—फ्रेंच कहावत

जैसे सुनार चाँदीके मैलको दूर करता है, उसी तरह अक़्लमन्दको चाहिये कि अपने पापोंको हर वक़्त थोड़ा-थोड़ा दूर करता रहे।

—बुद्ध

अक़्लमन्दको इशारा और बेवक़ूफ़को तमाचा।

—हिब्रू कहावत

अख़बार

मानसिक अनुशासन की दृष्टिसे अख़बार पढ़ना हानिकर है। मन के लिये दस मिनटमें चालीस बातें सोचनेसे बदतर क्या हो सकता है?

—मंजर

धन्य भाग्य हैं उनके, जो अख़बार नहीं पढ़ते, क्योंकि वे प्रकृतिको देखेंगे और प्रकृतिके ज़रिये परमात्मा को।

—स्वामी रामतीर्थ

अग्निपरीक्षा

अगर तुम सबसे ज़्यादा कष्टकर अग्नि-परीक्षाओंमें से गुज़र रहे हो, तो इसका कारण यह है कि ईश्वर तुम्हें उनसे सफलतापूर्वक भिड़नेके योग्यतम समझता है। क्या सर्वोत्तम विद्यार्थी को कठिनतम प्रश्न नहीं दिये जाते?

—अज्ञात

अचरज

कल तो एक आदमी था, और आज वह नहीं है। दुनियामें यही बड़े अचरजकी बात है।

—मिर. हिलुबर

अच्छा

मनुष्यको क्या अच्छा लगेगा, इसका विचार करनेसे पहिले ईश्वरको क्या अच्छा लगेगा, इसका विचार करो।

—अज्ञात

अच्छाई

जीवनका एक रहस्य उसमें अच्छाई देखना है।

—अज्ञात

अच्छा-बुरा

न कुछ 'अच्छा' है, न कुछ 'बुरा'। जिस चीज़में पवित्रात्मा 'अच्छाई' निकाल देखता है, उसीमें पतितात्मा 'बुराई'।

—अज्ञात

अच्छी

बुरीसे अच्छीका और भी ख़्याल रखना चाहिये, वह हँसते-खेलते मारती है; मालूम भी नहीं पड़ने देती कि हम फँसे हुए हैं!

—शीलनाथ

अत्याचार

तुम पहले तो आदमीको खाईमें धकेल देते हो और फिर उससे कहते हो कि "जिस हालतमें ईश्वरने तुझे डाल दिया है उसमें सन्तुष्ट रह"।

आजाद देशमें चीख़-पुकार ज़्यादा होती है दुःख कम; अत्याचारी राज्यमें शिकायत न-कुछ होती है लेकिन दुःख ज़्यादा।

—कानों

अगर तूने किसीपर अत्याचार किया हो, तो उसके द्रोहसे बच; क्योंकि जो आदमी काँटे बोता है वह अँगूर नहीं काटा करता।

अत्याचारी

जिसने किसी ऐसे आदमीपर अत्याचार किया है, जिसका ईश्वरके सिवा कोई और सहायक ही नहीं है, तो उसे चाहिये कि सचेत रहे और अपने अत्याचारका फल शीघ्र न पानेसे भ्रममें न पड़ जाय।

—इस्माईल-इब्न-अबूबकर

कोई अत्याचारी ऐसा नहीं है कि उसे भी किसी अत्याचारीसे पाला न पड़े।

—अज्ञात

ग़ुलामोंकी अपेक्षा अत्याचार करने वालोंकी स्थिति अधिक ख़राब होती है।

—गांधी

सिन्दबादका वह समुद्री बूढ़ा आदमी उसे गाने सुनायेगा, मिठाइयाँ खिलायेगा, नेक सलाह देगा और उसके लिए सब कुछ करेगा, मगर उसकी पीठपरसे न उतरेगा।

—एनन

अत्याचारीसे अधिक अभागा कोई नहीं है। विपत्तिके दिन उसका कोई साथ नहीं देता।

—अज्ञात

अत्याचारी जब चुम्बन लेने लगे, वह समय खौफ़ खाने का है।

—शेक्सपियर

अत्युक्ति

अत्युक्ति झूठ की सगी रिश्तेदार है और लगभग उतनी ही दोषी।

—बैलन

अति

किसी भी बातका अतिरेक न होने देनेके प्रति बड़ी ख़बरदारी रखनी ज़रूरी है।

—विवेकानन्द

अतिसे हमेशा बचना चाहिये।

—अज्ञात

अति प्रेम

प्रिय जनोंसे भी मोहवश अत्यधिक प्रेम करनेसे यश चला जाता है और दुनियामें बदनामी होती है।

—रामायण

अतिथि

निकम्मे, बहुभोजी, लोक-द्वेषी, अति मायाचारी, बदनाम, देश-कालको न जाननेवाले और बुरे वेष वालेको घरमें न ठहरावे।

—विदुर

अतिथि जब तक मेरे घरमें रहता है, तब तक मैं निस्सन्देह उसका दास हूँ। इसके अलावा किसी और अवसरपर मेरी टेक दासत्वकी नहीं है।

अतिथि-सत्कार

अतिथि-सत्कारसे इंकार करना ही सबसे ज़्यादा ग़रीबी की बात है।

—तिरुवल्लुवर

अति भोजन

अति खाना और श्मशान जाना।

—मराठी कहावत

जब साधक अधिक खाने लगता है तब देवता रोने लगते हैं।

—अज्ञात

अतिशयोक्ति

अतिशयोक्ति भी असत्य है।

—गांधी

जो अपनी बातको बढ़ा-चढ़ाकर कहते हैं वे अपने आपको छोटा बनाते हैं।

—सिमन्स

अतिशयोक्ति वह सत्य है जो कि बौखलाई हुई हालतमें है।

—खलील जिब्रान

अतीत

अतीतकी चिन्ता मत करो; उसे भूल जाओ, बीती हुई बात में चिन्तासे सुधार नहीं हो सकता।

—जेम्स डगलस

अतृप्त

धन, जीवन, स्त्री और भोजनवृत्तिमें अतृप्त लोग नष्ट हुए हैं, नष्ट होते हैं और नष्ट होंगे।

—अज्ञात

अदब

जो अपना अदब करते हैं उनका सब अदब करेंगे ही।

—चीकनसफ़ील्ड

अदया

जब तुम किसी दुर्बल मनुष्यको सतानेके लिये उद्यत होओ, तो सोचो कि अपनेसे बलवान् मनुष्यके आगे जब तुम भयसे काँपोगे तब तुम्हें कैसा लगेगा।

—तिरुवल्लुवर

अदुःख

त्रिदोषके अदुःखसे ज्वरका दुःख अच्छा। (अज्ञानीके आनन्दसे ज्ञानीका दुःख अच्छा) —अज्ञात

अद्वैत

कर्त्तव्य और आनन्द एकरूप होना यह अद्वैतकी एक व्याख्या है, परन्तु ऐसा जब तक नहीं होता, तब तक कर्त्तव्यसे चिपटे रहनेमें ही कल्याण है। —विनोबा

निरभिमानताका अभिमान जीतना ही अद्वैत है।

—विनोबा

अद्वैतवाद

अद्वैतवाद माने अचूक द्वैत सिद्धि। —विनोबा

अधम

अधम कौन? जो ईश्वरके मार्गका अनुसरण नहीं करता।

—जुन्नुन

कोई धनहीन मनुष्यको अधम समझता है, कोई गुणहीन मनुष्यको अधम मानता है; लेकिन तमाम वेद पुराणोंको जानने वाले व्यासऋषि नारायण-स्मरण-हीन मनुष्यको अधम कहते हैं।

अधर्म

हे लक्ष्मण ! अधर्मसे इन्द्रपद भी मिलता हो मैं उसकी इच्छा नहीं करता ।

—रामायण

अर्थ-सिद्धि

संसारमें भलीभाँति उसीके अर्थकी सिद्धि होती है जो दूसरोंकी सहायताका भरोसा न रखकर फ़ुर्तीके साथ अपने काम आप करता है ।

—अज्ञात

अर्थशास्त्र

'लोहा और सोना समान हैं' यह सच्चे अर्थशास्त्रका मुख्य सूत्र है ।

—विनोबा

अध्यवसाय

सतत अभ्याससे दुःसाध्य चीज़ भी मिल जाती है; दुश्मन दोस्त हो जाते हैं; विष भी अमृतका काम देने लगता है ।

—अज्ञात

अति वर्षासे संगमरमर तक घिस जाता है ।

—शेक्सपियर

महान् कार्य शक्तिसे नहीं, अध्यवसायसे किये जाते हैं ।

—जानसन

हो सकता है तुम्हारा मोती एक और ग़ोतेका इन्तज़ार कर रहा हो ।

—अज्ञात

अध्यात्म

सर्वोत्तम अध्यात्म, दिव्य ज्ञानकी अपेक्षा दिव्य जीवन है ।

—जैरेमी टेलर

अंधविश्वास

कोई कितना ही बड़ा हो, अन्धोंकी तरह उसके पीछे न चलो। 'अमुक आदमी कहे सो वेद वाक्य' ऐसा माननेवाले को कोई समझदार कहेगा क्या?

—विवेकानन्द

मेरे कहनेपर आप पूर्ण विश्वास रक्खें ऐसा कहनेवाला मनुष्य मानवजातिका कट्टर शत्रु है।

—विवेकानन्द

अर्ध-सत्य

वह झूठ जो अर्धसत्य है हमेशा सबसे काला झूठ है।

—टेनीसन

अधिकार

ईश्वरनिर्मित हवा पानीकी तरह सब चीज़ोंपर सबका समान अधिकार रहना चाहिये।

—गांधी

ज्ञानियोंका अज्ञानियोंपर एक हक़ है; वह है उन्हें सिखानेका अधिकार।

—इमर्सन

अधिकार दिखानेसे ही अधिकार सिद्ध नहीं हो जाता।

—टैगोर

"अधिकार बहुत बुरी चीज़ है।"

—गांधी

कोई शख़्स जिसे अधिकार दे दिया गया है, अगर वह सत्य-प्रेम और सेवा भावसे सरशार नहीं है, उसका दुरुपयोग ही करेगा, ख़्वाह वह राजकुमार हो, या जनतामें से कोई।

अधूरा

अधूरा काम और अपराजित शत्रु—ये दोनों बिना-बुझी आगकी चिनगारियोंकी तरह हैं; वे मौका पाकर बढ़ जायँगे और उस लापरवाह आदमीको आ दबायँगे।

—तिरुवल्लुवर

अधोगति

विषय चिन्तनसे आसक्ति, आसक्तिसे कामना, कामनासे क्रोध, क्रोधसे मोह, मोहसे स्मृतिभ्रम, स्मृतिभ्रमसे बुद्धिनाश और बुद्धिनाशसे अधोगति पैदा होती है।

—गीता

अनजान

अनजान होना इतने शर्मकी बात नहीं, जितना सीखनेके लिये तैयार न होना।

—फ्रैंकलिन

अन्त

कितनी दर्दनाक बात है कि दुनिया छोड़नेका वक़्त आनेतक हम इस बातका अहसास न करें कि हम इस दुनियामें किस लिये आये थे!

—वालसिंघम

अन्तर्नाद

मैं मानता हूँ कि सत्यका तादृश ज्ञान, सत्यका साक्षात्कार अन्तर्नाद है।

—गांधी

अन्तःप्रेरणा

तुम मेरे पीछे क्यों पड़े हो? क्या तुम नहीं जानते कि मैं तुम्हारी अभिलाषाओंसे जुदी प्रेरणाएँ रखता हूँ?

—१२ वर्षकी उम्रमें ईसा अपने वालिदैनसे

अन्तर

अरबी घोड़ा अगर दुबला पतला भी हो तो भी गदहोंके पूरे अस्तबलसे अच्छा है।

—अज्ञात

अन्तरात्मा

हमारे दिलोंमें एक खुदा है—हमारा ज़मीर।

—भीमेन्दर

अन्तरात्माकी आवाज़को दुष्परिणाम भोगे बिना, कोई खामोश नहीं कर सका।

—श्रीमती जेमसन

निष्ठावान् पुरुष अन्तरात्माके खिलाफ कभी किसी तर्कको नहीं सुनेगा।

—अज्ञात

हमें क्या करना चाहिये हमारी अन्तरात्मा बता देती है।

—अज्ञात

जो मनुष्य जितना अन्तर्मुख होगा, जितनी ही उसकी वृत्ति सात्त्विक और निर्मल होगी, उतनी ही दूर की वह सोच सकेगा, और उतने ही दूरके वह परिणाम देख सकेगा।

—अज्ञात

पूर्ण शान्तिका मुझे कोई रास्ता नहीं दिखाई देता, सिवाय इसके कि आदमी अपने अन्तरकी आवाज़पर चले।

—ग्लैडस्टन

अन्तरात्मा हमको न्यायाधीशकी तरह सज़ा देनेके पहिले मित्रकी तरह चेतावनी देती है।

—अज्ञात

मनुष्य अपने अन्तरका अनुसरण करता है, इसका पता उसको नज़रें दे देती हैं।

अनर्थ

यौवन, धनसम्पत्ति, प्रभुत्व और अविवेक—इनमेंसे प्रत्येक अनर्थ करनेके लिये काफी है। जहाँ चारों हों वहाँ क्या होगा?

—विदुर

अन्धश्रद्धा

अन्धश्रद्धाके क्या माने? 'तर्क ईश्वर जाने' इस श्रद्धाका नाम अन्धश्रद्धा।

—विनोबा

अन्न

जहाँ तक हो सके विषयी धनिक पुरुषोंके अन्नसे तो बचना ही चाहिये।

—अज्ञात

अन्तर्युद्ध

जब आदमीमें अन्तर्युद्ध शुरू हो जाता है, तब उसकी कुछ क़ीमत हो जाती है।

—ब्राउनिंग

अनादर

अति परिचयसे मनुष्य की अवज्ञा होने लगती है, बार-बार जानेसे अनादर होता है।

—अज्ञात

अन्धानुकरण

अन्धानुकरणसे आत्मविकासके बजाय आत्मसंकोच होता है।

—अरविन्द घोष

अन्याय

जो अन्याय करता है वह, सहनेवालेकी अपेक्षा हमेशा अधिक दुर्दशामें पड़ता है।

—प्लेटो

सत्यको हमेशा सूली पर लटकाये जाते देखा, असत्यको हमेशा सिंहासन पाते देखा।

—जेम्स लॉवेल

अन्याय और अत्याचार करनेवाला उतना दोषी नहीं है जितना उसे सहन करनेवाला।

—तिलक

अन्धकार

जब हर कोई चोरी करता है, धोखा देता है और मज़ेसे गिर्जाघर जाता है, तो अंधकार कैसा निविड़ है।

—रस्किन

जब इच्छा हो, तू इस दीपको बुझा दे, मैं तेरे अन्धकारको जानूँगा और उसे प्यार करूँगा।

—टैगोर

अनासक्त

जो अनासक्त है वह परमात्माके बराबर सुखी है।

—अज्ञात

जो आदमी अपने अच्छे कामोंका इनाम चाहे या बुरे कामोंके नतीजेसे बचना चाहे वह बे लगाव नहीं है और जो इबादत (पूजापाठ) में लगा रहे या मार्फ़त (ज्ञान) की चाह रक्खे वह भी ख़ालिस अल्लाहकी तरफ़ लगा हुआ नहीं कहा जा सकता। हाँ, जिस किसीकी इबादत और उसके काम अपने लिए नहीं बल्कि सिर्फ़ अल्लाहके लिए हैं, वही ईश्वरमें लौ लगाए हुए कहा जा सकता है।

अनासक्ति

ओ हो, निरपेक्षता और निराशा सचमुच ईश्वरीय वरदान हैं। इसमें कितनी निश्चिन्तता, कितनी शान्ति, कितना बल, कितनी स्थिरता, कितनी अडिग कार्यशक्ति भरी हुई है।

—अज्ञात

आदमी अनासक्त यानी बेलाग और निःस्वार्थ काम करते हुए ही ईश्वरको पा सकता है। इसीमें सबका भला (लोक-संग्रह) है। —गीता

हज़ार वर्ष तक बिना मन लगाये नमाज़ पढ़ने और रोज़ा रखनेके बजाय एक कणके बराबर संसारके प्रति सच्ची अनासक्ति बढ़ाना अधिक उत्तम है।

—हुसैन बसराई

यदि हम अपने कर्मके सिद्धान्तको मानते हैं और सचमुच उसपर दृढ़ रहते हैं, तो अनासक्ति अपने आप आ जाती है।

—अज्ञात

अनासक्तिकी कसौटी यह है कि फिर उस वस्तुके अभावमें हम कष्टका अनुभव न करें।

—हरिभाऊ उपाध्याय

अनासक्त कार्य शक्तिप्रद है, क्योंकि अनासक्त कार्य भगवानकी भक्ति है।

—गांधी

मोक्षके प्रति भी अनासक्ति यह फलत्यागका अंतिम और सर्वोत्तम अर्थ है। —विनोबा

कर्मफलमें और इन्द्रिय-विषयोंमें मन न लगाकर कार्य करना ही अनासक्ति है।

—अरविन्द घोष

अनित्य

यह बड़ा-सा सूरज, यह तारे और यह चाँद सब खूबसूरत हैं। तू इन सबके फेरमें न पड़, और हमेशा यही कहता रह कि मैं नाशवान् चीज़ोंको नहीं चाहता।

—शब्स्तरी

अनिमंत्रित

बुलाये बग़ैर स्वयं ही दूसरेके यहाँ जानेमें अपमान होता है।

—अज्ञात

अनियमितता

कामकी अधिकता नहीं, अनियमितता आदमीको मार डालती है।

—गांधी

अनुकरण

जहाँ अनुकरण है, वहाँ खाली दिखावट होगी, जहाँ खाली दिखावट है वहाँ मूर्खता होगी।

—जॉन्सन

अनुग्रह

जिनका हम आदर करते हैं, उनके किसी अनुग्रहमें रहना एक प्रकारका रुचिर दासत्व है।

—रानी क्रिश्चिना

अनुग्रह स्वीकार करना अपनी स्वतंत्रता खोना है।

—लैबर

अनुभव

अनुभव हमें वही ठोकरें लगाता है जिनकी कि हमें आत्म-शिक्षणके लिये ज़रूरत होती है।

"उसका मैं" इस अनुभवमें अहंकार नहीं है, परन्तु परोक्षता है; "मेरा मैं" इस अनुभवमें परोक्षता नहीं है, परन्तु अहंकार है; "तेरा मैं" इस अनुभवमें परोक्षता भी नहीं है अहंकार भी नहीं है।

—विनोबा

मेरे पास एक दीपक है जो मुझे मार्ग दिखाती है और वह है मेरा अनुभव।

—पैट्रिक हैनरी

आत्मानुभवके प्रेमसागरमें ग़र्क़ होनेवाला अपना अनुभव कहनेके लिये भी बाहर नहीं निकलता।

—स्वामी रामतीर्थ

बिना अनुभव कोरा शाब्दिक ज्ञान अन्धा है।

—विवेकानन्द

औषधि लिये बिना, उसका नाम लेने मात्रसे रोग नहीं चला जाता; प्रत्यक्ष अनुभव किये बिना ब्रह्मका शब्दोच्चारण करने भरसे मोक्ष नहीं मिल जाता।

—अज्ञात

शब्दोंका अर्थ नहीं, अनुभव देखना चाहिये।

—शीलनाथ

दर्शन विश्वास है, परन्तु अनुभव नग्न सत्य है।

—कहावत

न गिरनेवालेसे गिरकर उठनेवाला श्रेष्ठ है, कारण कि वह खाइयोंको देख चुका है।

—अज्ञात

जो 'कृष्ण कृष्ण' कहता है वह उसका पुजारी नहीं; 'रोटी-रोटी' कहनेसे पेट नहीं भरता, खानेसे ही भरता है।

—गांधी

अनुवाद

किसी किताबमें जो कुछ सचमुच सर्वोत्तम है अनुवादके योग्य है।

—एमर्सन

अनुसरण

जब तक हमारा अनुसरण करते रहोगे कभी मुक्त न होगे।

—भगवान् महावीर

श्रेष्ठ जो करते हैं कनिष्ठ लोग उसीका पदानुसरण करते हैं।

—गीता

अनुकूलता

एक आदमीको एक ही काम माफ़िक़ आयेगा।

—फ़ारसी कहावत

सब अनुकूल हो तब तो सभी लोग अपनेको भला कहलाने लायक़ आचरण करते हैं।

अपने पास सब अनुकूल होनेपर ही काम करना, यह कुछ किया नहीं कहलाता। चाहे जिस लकड़ीके टुकड़ेसे बढ़ई आकृति बनाता है, चाहे जिस पत्थरसे मूर्तिकार मूर्तियाँ बनाता है; वैसे ही चाहे जैसे मनुष्योंके साथ रहना और उनसे काम कराना आया तो ही मनुष्यता कहनी चाहिये। मैं तो समझता हूँ कि हमें यही संसारमें सीखना है और इसके लिये हमें समुद्र-सी उदारता चाहिये।

—गांधी

अपनत्व

जिसने अपनापन खोया उसने सब खोया।

—गांधी

अपनी ही घड़ीसे दुनियाभरकी घड़ियाँ ठीक करना न चाहो।

—[illegible]

अपना

सूरजमुखी फूल बेनाम फूलको अपना सगा माननेमें शर्माया।

सूरज उगा और उसपर यह कहते हुए मुस्काया, 'अच्छे तो हो तुम, मेरे प्यारे ?'

—टैगोर

जो हमने पचाया वह दूसरे का है ही नहीं, वह अपना हुआ। जो अपना हुआ उसके बारेमें शंका न होनी चाहिये और उस विषयके उत्तर अपने पास होने ही चाहिए।

—गांधी

जो चीजें वास्तवमें तेरे लिए हैं, खिचकर तेरे पास आती हैं।

—एमर्सन

हर आदमी अपने मतको सच्चा और अपने बच्चेको अच्छा समझता है, लेकिन इसलिये दूसरेके मत या बच्चेको बुरा कहना उचित नहीं है।

—सादी

अपना-पराया

गैर भी अगर अपना हितेच्छु है तो बन्धु है, और भाई भी अहितेच्छु हो तो उसे गैर समझना। जैसे देहका रोग अहित करता है और जंगलकी ओषधि हितकारी है।

—अज्ञात

अपमान

अपमान भरी जिन्दगीसे मौत अच्छी है।

—अज्ञात

जो लोग अपना अपमान करनेवालोंका गर्व चूर्ण नहीं करते वे बहुत समय तक नहीं रहेंगे।

—ति० वल्लुवर

अपमानका मक़सद कुछ भी रहा हो उसे हमेशा नज़र-अन्दाज़ ही करना सबसे अच्छा है, क्योंकि मूर्खतापर क्या अफ़सोस करना, और दुर्भावकी सज़ा उपेक्षा है।

—आल्मन

कोई अपमान तुम्हें गिरा नहीं सकता, तुम अपना पतन अपने आप ही करते हो।

—अज्ञात

अगर कोई हमारा अपमान करता है, तो इसमें हमारा क्या क़सूर है? उसने हमारा क्या लिया? या क्या बिगाड़ा? अपनी अधम संस्कृतिका परिचय अलबत्ते दिया।

—हरिभाऊ उपाध्याय

अपराध

दरिद्रता, रोग, दुःख, बन्धन और विपत्ति ये सब मनुष्यके अपराधरूपी वृक्षके फल होते हैं।

—अज्ञात

दूसरोंके प्रति किये गये छोटे अपराध, अपने प्रति किये गये बड़े अपराध हैं।

—शानवत

अर्पण

संसार, साधन और सिद्धि तीनोंको भक्त, देवके सुपुर्द कर देता है।

अप्रमाद

कलका काम आज ही कर लेना और शामका काम सुबह ही कर लेना; क्योंकि मौत यह देखनेके लिये नहीं खड़ी रहेगी कि इस आदमीने अपना काम पूरा कर लिया या नहीं।

—महावन

पहले जो प्रमादमें था और अब प्रमादसे निकल गया, वह इस दुनियाको बादलोंसे निकले हुए चाँदकी तरह रोशन करता है।

—बुद्ध

अपशब्द

अपशब्दोंसे क्रोध उत्पन्न होता है, क्रोधसे घूँसेबाजी तक नौबत पहुँचती है; और घूँसोंसे प्रिय मित्र घोर शत्रु हो जाते हैं।

—अज्ञात

अप्राप्त

जो हमारे पास नहीं है उसके पानेकी हम अभिलाषा रखते हैं और जो हमारे पास है, उससे खुशी मिलनी बन्द हो जाती है।

—मोनवेल

अपरिग्रह

आदर्श आत्यन्तिक अपरिग्रह तो उसीका होगा जो मनसे और कर्मसे दिगम्बर है। मतलब, वह पक्षीकी भाँति बिना घरके, बिना वस्त्रोंके और बिना अन्नके विचरण करेगा।...... इस अवधूत अवस्थाको तो बिरले ही पहुँच सकते हैं।

—गांधी

अपरिग्रहकी कैंची ज्ञान पर भी चलानी चाहिये, व्यर्थ भरा-भर ज्ञानका परिग्रह रखना योग्य नहीं है।

—विनोबा

अपरिग्रहसे मतलब यह है कि हम उस किसी चीज़का संग्रह न करें जिसकी हमें आज दरकार नहीं है।

—गांधी

परिग्रहकी चिन्तासे अन्तरात्माका अपमान होता है; परिग्रहकी चिन्ता न करनेसे विश्वात्माका अपमान होता है; इसी लिये अपरिग्रह सुरक्षित है।

विनोबा

अपूर्णता

अपूर्णता ही है जो अपूर्ण चीज़की शिकायत करती है हम जितने ज्यादा पूर्ण होते हैं उतने ही ज्यादा हम दूसरोंके दोषोंके प्रति मृदु और शान्त हो जाते हैं।

फेनेलिन

अभ्यास

अभ्यास और वैराग्य ये एक ही वस्तुके विधायक और निषेधक अंग हैं।

अज्ञात

बिना अभ्यास कोई भी विद्या साध्य नहीं होती, और सच्ची यशप्राप्ति अभ्यास पर ही सर्वथा अवलंबित है।

—विवेकानन्द

अभिमान

अभिमान मोहका मूल है—बड़ा शूलप्रद।

—रामायण

किसीका भी अभिमान रह न सका।

—गांधी

प्रभु और जीवके बीचमें अभिमानके समान अन्तराय दूसरा नहीं है।

'मुझे अभिमान नहीं है' ऐसा भासित होना इस सरीखा भयानक अभिमान नहीं है ।

— विनोबा

'मैं जानता हूँ' ऐसी अभिमान-वृत्ति ही ज्ञानामृत-भोजन की मक्खी है । वह मक्खी जिसने खा ली उसे ज्ञानभोजन मधुर कैसे लगेगा ?

—समर्थ गुरु रामदास

अभिमान छोड़नेसे मनुष्य प्रिय होता है ।

—महाभारत

अभिलाषा

जो चाहे उन्हें अपनी आतिशबाज़ीकी फुफकारती दुनियामें जीने दे । मेरा हृदय तो तेरे सितारोंको चाहता है, मेरे प्रभु ।

—टैगोर

किसी कामके श्रेय पाने की अभिलाषाके मानी हैं अपने व्यक्तित्वको मान्य करानेकी इच्छा ही नहीं बल्कि उसमें रस भी ।

—अज्ञात

अमंगल

बदबख़्तीकी आशंका करनेसे ज़्यादा मनहूस और अहमक़ाना चीज़ कोई नहीं । आनेके पहले ही अमंगलकी आस लगाना कैसा दीवानापन है !

—सेनेका

अमन

मैं अमन आदमी हूँ, ईश्वर जाने मैं अमनको क्यों प्रेम करता हूँ; लेकिन मुझे आशा है कि मैं ऐसा बुज़दिल कभी न होऊँगा कि दमनको अमन मान बैठूँ ।

— कोसुथ

अमल

अपने अमलको सच्चा रक्खो और बदनामीकी परवाह न करो; गंदगी मिट्टीकी दीवालसे चिमट सकती है, पॉलिश किये हुए संगमरमरसे नहीं।

[illegible]

जो बहुत-सी विद्याएँ जानता है मगर धर्मपर नहीं चलता वह सचमुच उस उल्लूके मानिन्द है जो सैकड़ों सूर्योंके होते हुए भी नहीं देख सकता।

अज्ञात

जो बहुतसे धर्मशास्त्र पढ़ता है लेकिन उनके अनुसार अमल नहीं करता वह उस ग्वालेके समान है जो दूसरोंकी गायोंको गिनता रहता है।

[illegible]

जो विवेकके नियमोंको तो सीख लेता है, परन्तु जीवनमें उन्हें नहीं उतारता वह ऐसे आदमी की तरह है जिसने अपने खेतोंमें मेहनत की, मगर बीज नहीं डाला।

गांधी

जब हम पढ़ते हैं, हमें लगता है कि हम शहीद हो सकते हैं; जब हम अमल करनेपर आते हैं, हम एक उत्तेजक शब्द नहीं सहन कर सकते।

[illegible]

जितना हमें ज्ञान है उसपर अमल करनेसे वह हकीकत भी रोशन हो जाती है जिसे हम इस वक्त नहीं जानते।

[illegible]

तुम वह क्यों कहते हो जो नहीं करते?

जो कुछ नहीं करता, कुछ नहीं ज़ानता। अपने सिद्धान्तोंको परखो; देखो कि वे आज़माइशकी अग्निपरीक्षामें खरे उतरते हैं कि नहीं।

—एलोयसियस

अगर तुम किसीको यह इत्मीनान दिलाना चाहते हो कि वह ग़लती पर है, तो सच्चाईको करके दिखलाओ। आदमी देखी हुई चीज़पर विश्वास करते हैं, उन्हें देखने दो।

—थोरो

किसी निश्चय पर पहुँचना ही विचारका उद्देश्य है; और जब किसी बातका निश्चय हो गया, तो उसको कार्यमें परिणत करनेमें देर करना भूल है।

—तिरुवल्लुवर

मोहम्मद साहबकी तलवारकी मूँठपर ये वाक्य खुदे हुए थे—तेरे साथ अन्याय करे उसे क्षमा कर दे, जो तुझे अपनेसे काटकर अलग कर दे उससे मेल कर, जो तेरे साथ बुराई करे उसके साथ तू भलाई कर और सदा सच्ची बात कह, चाहे वह तेरे ही ख़िलाफ़ क्यों न जाती हो।

यदि 'मोमिन' होना चाहता है तो अपने पड़ोसियोंका भला कर और यदि 'मुस्लिम' होना चाहता है तो जो कुछ अपने लिये अच्छा समझता है वही मनुष्य मात्रके लिये अच्छा समझ और बहुत मत हँस, क्योंकि निस्सन्देह अधिक हँसनेसे दिल सख़्त हो जाता है।

—अज्ञात

शास्त्रज्ञान होनेपर भी लोग मूर्ख बने रहते हैं। विद्वान् तो वह है जो क्रियावान् है। दवाके खानेसे रोग जाता है, दवाका नाम लेनेसे नहीं।

—अज्ञात

मैं कोई चीज़ नहीं हूँ, सिवाय ख़ुदाके भेजे हुए एक मनुष्यके। न मेरे पास अल्लाहके खज़ाने हैं, न मैं ग़ैबका इल्म रखता हूँ, न मैं फ़रिश्ता हूँ, मैं केवल उसपर चलता हूँ जो अल्लाहने मेरे घटमें बिठा दिया है।

—[illegible]

पर-उपदेश-कुशल बहुत हैं। स्वयं आचरण करनेवाले पुरुष अधिक नहीं हैं।

—[illegible]

अमरता

अगर चाहते हो कि मरते और सड़ते ही तुम भुला न दिये जाओ तो या तो पढ़ने लायक़ चीज़ें लिखो या लिखने लायक़ काम करो।

—अज्ञात

जो अपने जीवनकी आहुति देता है वही अमर जीवन पाता है।

—ईसा

हे मेरी आत्मा! तू उस तरह मत जी, जिस तरह अबतक प्रशंसारहित होकर जीती रही है और हे आत्मा! जब तू मरे, तब इस तरह मरे, मानो मरी ही नहीं।

—[illegible]

क्रियाकांडसे, प्रजननसे, धनसे नहीं, अमरत्व तो त्यागसे प्राप्त होता है।

—[illegible]

अमरपान

विशुद्ध सत्त्वके लक्षण हैं—प्रसन्नता, स्वात्मानुभूति, परम प्रशांति, तृप्ति, प्रहर्ष और परमात्मनिष्ठा—इन्हींसे आनन्दरसका अमरपान पीनेको मिलता है।

—अज्ञात

अमीर

जो एक सालमें अमीर बनना चाहता है, आधे सालमें फाँसी पर चढ़ा दिया जायेगा।

—अज्ञात

जंगलमें जैसे शेर जंगली गधेका शिकार करता है, उसी तरह अमीर गरीबोंको खा जाते हैं।

—एक्लेसियस्टिकस

अमीरी

यह भी हो सकता है कि ग़रीबी पुण्यका फल हो और अमीरी पाप का।

—गांधी

अनियमित ग़रीबीसे अनियमित अमीरी ज़्यादा ख़तरनाक है।

—बीचर

"अमीरी दिलसे है, धनसे नहीं; बड़प्पन अक़्लसे है, उम्रसे नहीं"। "अत्याचारी पुरुष शासन नहीं कर सकता, भेड़िया भेड़ोंकी रक्षा नहीं कर सकता"। "अपनी प्रजासे सन्धि करो और शत्रुकी शत्रुतासे निश्चिंत रहो क्योंकि न्यायप्रिय राजाके लिये प्रजा ही फ़ौज है"।

—अज्ञात

अमीर-ग़रीब

अगर कोई मुर्दोंकी मिट्टी खोदे तो अमीर और ग़रीबमें विवेक नहीं कर सकता।

—अज्ञात

अमृत

संसाररूपी कटुवृक्षके दो फल अमृत सरीखे होते हैं—एक तो मीठा सुभाषित और दूसरा साधु पुरुषोंकी संगति।

—अज्ञात

अरण्यवास

अरण्यवास जंगली जीवनका दूसरा नाम है।

—स्वामी रामतीर्थ

अल्पभाषी

अल्पभाषी सर्वोत्तम मनुष्य है।

—शेख सादी

अल्पाहार

कम खाना और कम बोलना कभी नुक़सान नहीं करते।

—अज्ञात

"बड़ी उम्र चाहते हो तो खाना कम खाओ।"

—बेंजामिन फ्रैंकलिन

अल्पज्ञ

अगर कोई अल्पज्ञ कोई बुरा काम करे तो उचित है कि तू उसे क्षमा कर दे और उसे बुरा-भला न कहे।

—अ[illegible]भूसी

अलबेली

जिसके चित्तको अलबेलीके कटाक्ष नहीं छेदते वह तीनों लोक जीतता है।

तू अलबेलीको त्याग और उसकी कुछ परवाह न कर, तो तू मान पावेगा और तेरी बड़ी आवभगत होगी।

—[illegible]-उल-वर्दी

अवकाश

अगर तुमको एक क्षणका भी अवकाश मिले, तो तू उसे शुभ कार्यमें लगा; क्योंकि कालचक्र अत्यन्त क्रूर और उपद्रवी है।

—अयास-बिन-हल-हूर्ती

अवगुण

अवगुण नावकी पेंदीके छेदके समान है जो छोटा हो या बड़ा, एक दिन उसे डुबा देगा।

—कालिदास

अपने अवगुण अपनेको ही तकलीफ़ देते हैं।

—शीलनाथ

अवतार

साधुओंकी रक्षा करनेके लिये, दुष्टोंका संहार करनेके लिये, धर्मकी संस्थापनाके लिये मैं युग युगमें अवतार लेता हूँ।

—कृष्ण

अव्यवस्था

अव्यवस्था क़तई कुछ नहीं बनाती, लेकिन बिगाड़तो हर चीज़को है।

—ब्लेकी

अवज्ञा

अति संघर्षणसे चन्दनमें भी आग प्रगट हो जाती है, उसी प्रकार बहुत अवज्ञा किये जाने पर ज्ञानीके भी हृदयमें क्रोध उपज आता है।

—रामायण

अवसर

अगर तुम्हें असाधारण अवसर मिल जावे तो फौरन् दुस्साध्य कामको कर डालो।

—तिरुवल्लुवर

मुझे रास्ता मिलेगा, नहीं तो मैं बनाऊँगा।

—सर फ़िलिप सिडनीका सिद्धान्त

जब तुम्हें असाधारण अवसर मिले, तो तुम हिचकिचाओ मत, बल्कि एक दम काममें जुट जाओ, फिर चाहे वह असंभव हो क्यों न हो।

—तिरुवल्लुवर

जब समय तुम्हारे विरुद्ध हो, तो सारसकी तरह निष्कर्मण्यताका बहाना करो, लेकिन वक़्त आवे तो सारसकी तरह तेजीके साथ, झपट कर हमला करो।

—तिरुवल्लुवर

अक़्लमन्द आदमीको जितने अवसर मिलते हैं उनसे अधिक तो वह पैदा करता है।

—बेकन

कोई महान् पुरुष अवसरकी कमीकी शिकायत नहीं करता।

—अज्ञात

जिसने अपना रास्ता निकालनेका फ़ैसला कर लिया है उसे हमेशा काफ़ी अवसर मिल जायेंगे, न भी मिले तो वह उनकी सृष्टि करेगा।

—स्माइल्स

जो अवसरोंका उपयोग करना जानते हैं वे देखेंगे कि वे उन्हें पैदा भी कर सकते हैं।

—जॉन स्टुअर्ट मिल

हर अवसरको महान् अवसर बना दो, क्योंकि तुम नहीं कह सकते कि कब कौन उच्चतर स्थानके लिये तुम्हारी थाह ले रहा हो।

—अज्ञात

हमेशा वक़्तको देखकर काम करना—यह एक ऐसी डोरी है जो सौभाग्यको मजबूतीके साथ तुमसे बाँध देगी।

—तिरुवल्लुवर

अविचार

विना विचारे उतावलीमें कोई काम कभी न करना चाहिये। अविचार सब आपत्तियोंका मूल है। विचारपूर्वक कार्य करने वालेकी मनोवांछित कामनाएँ स्वयं पूर्ण हो जाती हैं।

—भारवि

अविनय

अविनय मनुष्यको शोभा नहीं देता, चाहे उसका इस्तेमाल अन्यायी और विपक्षीके प्रति ही क्यों न हो।

—तिरुवल्लुवर

जिस तरह बुढ़ापा सुन्दरताका नाश कर देता है उसी तरह अविनय लक्ष्मीका नाश कर देती है।

—अज्ञात

अविश्वास

अविश्वास धीमी आत्महत्या है।

—एमर्सन

अशान्ति

पूर्णताके अभावमें जो अशान्ति रहती है वह हमें ऊर्ध्वगामी बनाती है, दूसरेकी विभूतिकी ईर्ष्यासे जो अशान्ति रहती है, वह अधोगामी।

—अज्ञात

असन्तोष

जिसे सन्तोष नहीं है उसे बुद्धि नहीं है।

—अज्ञात

चिड़िया कहती है 'काश मैं बादल होती?'
बादल कहता है 'काश, मैं चिड़िया होता!'

—टैगोर

बहुधा, हम दूसरोंसे इसलिये असन्तुष्ट रहते हैं कि स्वयंसे असन्तुष्ट हैं।

—[illegible]

असन्तोष चाहिये ही। किन्तु वह असन्तोष खुदके बारेमें हो। "अब क्या, अब मैं पूर्ण हो गया," ऐसा समझकर मैं बैठूँगा उसी दिनसे मेरा विनाश शुरू हुआ समझो। अतः मुझे अपने बारेमें असन्तोष मालूम होना ही चाहिये। इस असन्तोष का अर्थ मैं अपने कर्तव्य-कर्ममें हमेशा परिवर्तन करनेकी ही इच्छा करूँ, यह कदापि नहीं है।

—गांधी

अगर सारी दुनियाँ और तमाम खज़ाने तुम्हारे हो जायँ तो भी तुम्हें सन्तोष न होगा, और न यह सब तुम्हें बचा ही सकेगा।

—अज्ञात

असत्य

असत्य अंधकारका रूप है, इस अंधकारसे मनुष्य अधो-गतिको पाता है। अंधकारमें फँसा हुआ अंधकारसे ढके हुए प्रकाशको नहीं देख सकता।

—[illegible]

दूसरोंके प्रति असत्य-वर्तन सिर्फ़ मामलेको उलझा देता है और उसके हल होनेमें बाधा डालता है, लेकिन अपने प्रति वर्ता गया असत्य, जिसे सत्यकी तरह पेश किया गया हो, आदमीकी ज़िंदगीको क़तई बरबाद कर देता है।

—[illegible]

नहिं असत्य सम पातकपुंजा।

—रामायण

असत्यमें शक्ति नहीं होती, उसे अपने अस्तित्वके लिये सत्यका आश्रय लेना पड़ता है।

—विनोबा

मैं क्या हूँ? सत्यका एक व्यक्त रूप। दूसरा क्या है? सत्यका एक व्यक्त रूप। दोनों 'एकों' में जो अन्तर है वह असत्य है।

—अज्ञात

प्रत्येक असत्याचरण समाजके स्वास्थ्य पर आघात है।

—एमर्सन

असत्य विजयी भी हो जाय, तो भी उसकी विजय अल्पकालिक होती है।

—ल्योनार्ड

असफलता

असफलता सिर्फ यह साबित करती है कि सफल होनेका हमारा इरादा काफ़ी मज़बूत नहीं था।

—अज्ञात

असफलतासे वही अछूता है जो कोई प्रयत्न ही नहीं करता।

—व्हेटली

अनिश्चितता और विलम्ब नाकामयाबीके वालिदैन हैं।

—केनिंग

असफल

असावधान सफल नहीं हो सकता, घमंडी अपने उद्देश्यको पूरा नहीं कर सकता।

—सलाह-उद्दीन सफ़दी

असम्भव

'असम्भव' शब्द केवल मूर्खोंके कोशमें मिलता है।

—नेपोलियन

अगर ठीक मौक़े और साधनोंका ख्याल रखकर काम शुरू करो और समुचित साधनोंको उपयोगमें लाओ तो ऐसी कौन-सी बात है जो असम्भव हो ?

—तिरुवल्लुवर

कौवेमें पवित्रता, जुआरीमें सत्य, सर्पमें सहनशीलता, स्त्रीमें कामशान्ति, नामर्दमें धीरज, शराबीमें तत्त्वचिन्ता और राजामें मैत्री किसने देखी या सुनी है ?

—पंचतंत्र

सम्भव असम्भवसे पूछता है, "तुम्हारा निवास स्थान कहाँ है ?" जवाब आता है "नामर्दके स्वप्नोंमें"।

—टैगोर

असमर्थ

बुद्धिमान् लोगोंके सामने असमर्थ और असफल सिद्ध होना धर्ममार्गसे पतित हो जानेके समान है।

—तिरुवल्लुवर

असंयमी

असंयमी धर्म-अधर्मका फ़र्क़ नहीं जानता।

—अज्ञात

असंयम

जिसकी इन्द्रियाँ बसमें नहीं, वह एक ऐसा मकान है जिसकी दीवारें गिर चुकी हैं।

—सुलेमान

असलियत

दूर करो अपने चेहरेके नक़ाब।—कार्लाईल चिल्लाता है। "मुझे तुम्हारी सच्ची हुलिया देखने दो।"

पिता मदिरा-पानसे, और पुत्र रोमांस-पठनद्वारा उस वस्तु स्थितिसे निकल भागनेके लिये प्रयत्नशील हैं जिसका वह सामना नहीं कर सकते।

—ए. एस. नील

अस्पृश्य

मेरी अल्पबुद्धिके अनुसार तो भंगी पर जो मैल चढ़ता है, वह शारीरिक है और वह तुरन्त दूर हो सकता है। किन्तु जिनपर असत्य और पाखण्डका मैल चढ़ गया है, वह इतना सूक्ष्म है कि दूर करना बड़ा कठिन है। किसीको अस्पृश्य गिन सकते हैं तो असत्य और पाखण्डसे भरे हुए लोगों को।

—गांधी

अस्पृश्यता

जिस प्रकार एक रत्ती संखियासे लोटा भर दूध बिगड़ जाता है, उसी प्रकार अस्पृश्यतासे हिन्दू-धर्म चौपट हो रहा है।

—गांधी

असहयोग

अहिंसाके बिना असहयोग पाप है।

—गांधी

असत्पुरुष

जो अपने उच्चकुलका अभिमान करता है और दूसरोंको नीची निगाहसे देखता है वह असत्पुरुष है।

—बुद्ध

अस्तित्व

रोगियोंकी बहुतायतके कारण तन्दुरुस्तीके वजूदसे इंकार नहीं किया जा सकता।

—एमर्सन

मिट्टी जिस प्रकार कुम्हारके हाथोंमें है उसी प्रकार मेरा अस्तित्व परमात्माके हाथोंमें है, वह जैसा चाहता है मुझे बनाता है।

गांधी

अहंकार

जब तू खुदी (अहंकार) को बिल्कुल छोड़ देगा, खुदाको पाकर मालामाल हो जायगा।

[illegible]

शून्यवत् होना माने 'मैं करता हूँ' यह वृत्ति छोड़ना।

—गांधी

"मैं" और "मेरे"के जो भाव हैं वे घमंड और खुदनुमाईके अलावा और कुछ नहीं हैं।

— तिरुवल्लुवर

वह अहंकार, अहंकार नहीं है जो आत्माकी शान प्रकटाये। वह नम्रता नम्रता नहीं है जो आत्माको हीन बनाये।

रामकृष्ण परमहंस

अहंकार छोड़े बग़ैर सच्चा प्रेम नहीं किया जा सकता।

- विवेकानन्द

जिस महफ़िलमें सूरज एक कणके समान माना जाता है। वहाँ अपनेको बड़ा समझना बेअदबी है।

हाफ़िज़

अगर तुम्हारा अहंकार चला गया है तो किसी भी धर्म-पुस्तककी एक पंक्ति भी बाँचे बग़ैर, व किसी भी मंदिरमें पैर रक्खे बग़ैर तुमको जहाँ बैठे हो वहीं मोक्ष प्राप्त हो जायगा।

- विवेकानन्द

इस संसारके अहंकारियोंसे कह दो कि अपनी पूँजीको कम कर दें। हानि और लाभ यहाँ समान हैं।

—हाफ़िज़

अहंकारको लगता है कि 'मैं न हुआ तो दुनिया कैसे चलेगी'! वस्तुस्थिति यह है कि मैं ही क्या सारा जग भी न हुआ तो भी दुनिया चलती रहती दीखती है।

—अज्ञात

जो यह कल्पना करता है कि वह दुनियाके बग़ैर अपना काम चला लेगा, अपनेको धोखा देता है; लेकिन जो यह क़यास आराई करता है कि दुनियाका काम उसके बग़ैर नहीं चल सकता और भी बड़े धोखेमें है।

—रोशे

सुख बाहरसे मिलनेकी चीज़ नहीं, हमारे ही अन्दर है; मगर अहंकार छोड़े बग़ैर उसकी प्राप्ति नहीं होनेवाली।

—विवेकानन्द

शरीर है तब तक थोड़े बहुत अंशोंमें अपना-पराया रहेगा यह समझ कर चले बिना दूसरा रास्ता नहीं है। ज्यों-ज्यों स्वयं मरते जायँगे, त्यों-त्यों अपने-परायेका भेद टूटता जायेगा। जो पराया मालूम होता है उसे मारते जायँगे तो भेद बढ़ता जायेगा।

—गांधी

अगर तू तरक़्क़ी करके बड़ा आदमी हो जाय तो भी अपने रास्तेसे डिग मत। तू कमानसे छोड़े हुए तीरके मानिन्द है जो थोड़ी देर हवामें उड़कर ज़मीनपर गिर जाता है।

—हाफ़िज़

अहंकारसे ऐश्वर्यका नाश होता है।

दार्शनिकका पहला काम यह है कि वह अहम्मन्यता-को छोड़ दे।

—[illegible]

अहंकार शैतानका प्रधान पाप है।

—[illegible]

क्षुद्र जीवको भी अपनेसे नीचा मत समझो।

—[illegible]

ज्यों ज्यों अहंकार जाता है त्यों त्यों निजानंद आता है।

—[illegible]

अक्सर, मुर्गी जिसने सिर्फ़ अण्डा दिया है, ऐसे कुड़-कुड़ाती है जैसे किसी नक्षत्रको जन्म दिया हो।

—मार्क ट्वेन

मुर्गा समझता है कि सूरज बाँग सुननेके लिये उगता है।

—जार्ज ईलियट

ज़रासा भी अहंकार कार्यविघाती है।

—स्वामी रामतीर्थ

अहंकार और लोभसे सावधान रहना। अहंकारी अपनेसे तुच्छ माने हुए लोगोंका अपमान सहनेके बाद ही मरने पाता है; फिर भी जब तक दुनियामें भूख-प्याससे पीड़ा नहीं पा लेता, तब तक प्रकृति उसे संसारमें से नहीं जाने देती।

—[illegible]

पहले प्रभुके दास बनो; और जब तक वैसे न बन पाओ, 'मैं ही प्रभु हूँ' ऐसा मत कहो; नहीं तो घोर नरककी यातना भोगनी होगी।

—[illegible]

हमारा अहंकार ही है जिसके कारण हमें अपनी आलोचना सुनकर दुःख होता है।

—मेरी कोनाएली

आदमी जब कपड़े पहन लेता है तब ऐसा मालूम होता है मानो वह कभी नंगा ही नहीं था और जब अमीर हो जाता है तब ऐसा मालूम होता है मानो वह कभी ग़रीब ही नहीं था।

—जाबिर-बिन-सालब उत-ताई

तुम्हारे क्षुद्र अहंकारको समूल नष्ट करके तुमको विश्व-व्यापी बनानेके एकमात्र ध्येयकी ख़ातिर सब धर्मकल्पनाएँ पैदा हुई हैं।

—विवेकानन्द

इस तमाम प्रपंचका मूल अहंकार है। अहंकारके समूल नाशसे तृष्णाओंका अन्त हो जाता है।

—बुद्ध

अहंकारी

अहंकारी वह है जो अपने "मैं"से शेष समस्त जीवराशि-को चुप कर देनेकी कोशिश करता हुआ दिखलाई देता है।

—अज्ञात

अहतियात

अपने हृदयके कोसनेसे बचना मनुष्यकी पहिली अहतियात होनी चाहिये और संसारकी बदनामीसे बचना दूसरी।

—एडीसन

अहित

जो मनुष्य मनसे भी अगर प्राणियोंका अहित सोचता है उसको इस लोकमें वैसा ही मिलता है, इसमें संशय नहीं।

—हितोपदेश

हम प्रतिघात सहे बग़ैर किसीका अहित नहीं कर सकते, जब हम दूसरेको दुखी करते हैं, हमेशा स्वयं दुःखमें पड़ते हैं।

—मरसियर

अहिंसा

अहिंसाकी शक्ति अमाप है, वैसी ही अहिंसककी है। अहिंसक खुद कुछ नहीं करता, उसका प्रेरक ईश्वर होता है, इस कारण भविष्यमें ईश्वर उससे क्या करा लेगा, यह वह खुद कैसे बतायेगा ?

—गांधी

अहिंसा माने अपने भाषणसे या कृतिसे किसीका भी दिल न दुखाना, किसीका अनिष्ट तक न सोचना ।

—विवेकानन्द

मैं बगुलेको तीरका निशाना बनानेके बजाय उसे उड़ते देखना चाहता हूँ, किसी बुलबुलको खा जानेकी अपेक्षा उसे गाते सुनना चाहता हूँ ।

—रस्किन

अहिंसा धर्मका तक़ाज़ा है कि हम दूसरोंको अधिकसे अधिक सुविधाएँ प्राप्त करा देनेके लिये स्वयं अधिकसे अधिक असुविधाएँ सहें—यहाँ तक कि अपनी जान भी जोखममें डाल दें ।

—गांधी

जिन लोगोंका जीवन हत्यापर निर्भर है, समझदार लोगों की दृष्टिमें वे मुर्दाखोरोंके समान हैं।

—तिरुवल्लुवर

दयाभाव+संमता+निर्भयता=अहिंसा।

—विनोबा

जहाँ तक हो सके एक दिलको भी रंज न पहुँचाओ क्योंकि एक आह सारे संसारमें खलबली मचा देती है।

—अज्ञात

ज्ञानीका सार-ज्ञान यही है कि वह किसीकी किंचित् भी हिंसा न करे। 'अहिंसा सबसे ऊपर है' यही विज्ञान है।

—महावीर

तमाम जीवोंके प्रति पूर्ण अद्रोह भावसे और यह न हो सके तो फिर अत्यल्प द्रोह रखकर जीना परम धर्म है।

—अज्ञात

धन्य है वह पुरुष जिसने अहिंसा-व्रत धारण किया है। मौत जो सब जीवोंको खा जाती है, उसके दिनों पर हमला नहीं कर सकती।

—तिरुवल्लुवर

इस दुनिया में प्राणोंसे ज्यादा प्यारी कोई चीज़ नहीं है। इसलिये मनुष्यको अपनी तरह दूसरोंके प्रति भी दया दिखलानी चाहिये।

—अज्ञात

धर्मप्रवचन इसलिये हुआ था कि जीवोंको एक दूसरेकी हिंसा करनेसे रोका जाय। इसलिये सच्चा धर्म वही है जो जीवोंके प्रति अहिंसाका प्रतिपादन करता है।

—अज्ञात

ऐसा हृदय रखो जो कभी कठोर नहीं होता और ऐसा मिज़ाज जो कभी नहीं उकताता और ऐसा स्पर्श जो कभी ईज़ा नहीं पहुँचाता।

—डिकिन्स

अगर तुझे अपना नाम बाकी रखना है तो किसीको दुःख पहुँचानेकी कोशिश मत कर।

—जामी

धर्मका निचोड़, उसका दूसरा नाम अहिंसा है।

—गांधी

अहिंसाका अर्थ है अनन्त प्रेम और उसका अर्थ है कष्ट सहनेकी अनन्त शक्ति।

—गांधी

ज़रूरतमन्दके साथ अपनी रोटी बांटकर खाना और हिंसासे दूर रहना, यह सब पैग़म्बरोंके तमाम उपदेशोंमें श्रेष्ठतम उपदेश है।

—तिरुवल्लुवर

तलवारका उपयोग करके आत्मा शरीरवत् बनती है। अहिंसाका उपयोग करके आत्मा आत्मवत् बनती है।

—गांधी

जिन लोगोंने इस पापमय सांसारिक जीवनको त्याग दिया है उन सबमें मुख्य वह पुरुष है जो हिंसाके पापसे डरकर अहिंसा-मार्गका अनुसरण करता है।

—तिरुवल्लुवर

अहिंसाका लक्षण तो सीधे हिंसाके मुँहमें दौड़ जाना है।

—गांधी

अहिंसाके सामने हिंसा निकम्मी हो जाती है। अगर आज तक ऐसा नहीं हुआ है तो उसका कारण यह है कि हमारी अहिंसा दुर्बलों और भीरुओंकी थी।

—गांधी

नेक रास्ता कौन-सा है? वही जिसमें इस बातका ख्याल रक्खा जाता है कि छोटेसे छोटे जानवरको भी मरनेसे किस तरह बचाया जाय।

—तिरुवल्लुवर

अहिंसाका अर्थ ईश्वरपर भरोसा रखना है।

—गांधी

अहिंसा सब धर्मोंसे श्रेष्ठ धर्म है। सचाईका दर्जा उसके बाद है।

—अज्ञात

यदि तुमने अपने सत्यके साथ अहिंसाकी रसायन मिला दी है तो तुम्हारी बातमें रस हुए बिना रह ही नहीं सकता।

—हरिभाऊ उपाध्याय

लोग कह सकते हैं कि बलि देनेसे बहुत सारी नियामतें मिलती हैं, मगर पाक दिलवालोंकी नज़रमें वे नियामतें, जो हिंसा करनेसे मिलती हैं, जघन्य और घृणास्पद हैं।

तुम्हारी जान पर भी आ बने तब भी किसीकी प्यारी जान मत लो।

—तिरुवल्लुवर

जैसे हिंसाकी तालीममें मारना सीखना ज़रूरी है, उसी तरह अहिंसाकी तालीममें मरना सीखना पड़ता है। हिंसामें भयसे मुक्ति नहीं मिलती, किन्तु भयसे बचनेका इलाज ढूँढ़ने का प्रयत्न रहता है। अहिंसामें भयको स्थान ही नहीं है।

—गांधी

हमारे पास दो अमर वाक्य हैं "अहिंसा परम धर्म है" और "सत्यके सिवा दूसरा धर्म नहीं"।

—गांधी

अहिंसकको अक्षय तपका फल मिलता है, अहिंसक सदा यज्ञ करता है, अहिंसक सब प्राणियोंको माताकी तरह—पिताकी तरह—लगता है।

—महाभारत

जहाँ अहिंसा है वहाँ कोढ़ी भी नहीं रह सकती।

—गांधी

यदि हमारा धर्म अहिंसा है, तो यह हमारा दावा इसी कसौटी पर खरा या खोटा साबित होगा कि समाजमें हम एक हैं कि नहीं।

—जैनेन्द्रकुमार

द्वेषका कारण हुए बग़ैर कोई द्वेष नहीं करना; इसलिये हमारे लिये किसीने द्वेषका कारण जुटाया तो भी उससे द्वेष न करके प्रेम करें। उसपर दया करके सेवा करना ही अहिंसा है। मनुष्योंसे प्रेम करनेमें अहिंसा नहीं है, वह तो व्यवहार है।

—गांधी

अहिंसा, अपने सक्रिय रूपमें, सम्पूर्ण जीवनके प्रति एक सद्भावना है यह विशुद्ध प्रेम है।

—गांधी

अहिंसाके बिना प्राप्त की हुई सत्तामें दरिद्रनारायणका स्वराज्य होगा ही नहीं। स्वराज्यकी प्राप्तिमें जितने परिमाणमें अहिंसा होगी उतने परिमाणमें दरिद्रोंका दारिद्र्य दूर हो जायगा। अहिंसाके माननेवाले रोज़ अधिकाधिक अहिंसक होते जायँगे और उससे उनका सेवा-क्षेत्र बढ़ता जायेगा। जो हिंसा के पुजारी होंगे उनका क्षेत्र संकुचित होता जायेगा और वह अन्तमें उन्हीं तक रह जायेगा।

—गांधी

सीधी बातको भी मनुष्य टेढ़ी समझे, उसे सहन करनेमें कितनी भारी अहिंसा चाहिये!

—गांधी

अगर तुम्हारे एक लफ़्ज़से भी किसीको पीड़ा पहुँचती है तो तुम अपनी सब नेकी नष्ट हुई समझो।

—तिरुवल्लुवर

भगवान् महावीरने सबसे पहले अहिंसा को बताया है वह सब सुखोंको देनेवाली है ।

सत्यके दर्शन वगैर अहिंसाके हो ही नहीं सकते । इसीलिये कहा है कि 'अहिंसा परमो धर्मः'

—गांधी

ऐसा अनमोल अहिंसा-धर्म मैं शब्दोंके द्वारा नहीं प्रकट कर सकता । खुद पालन करके ही उसका पालन कराया जा सकता है ।

मेरी अहिंसा सारे जगत्के प्रति प्रेम मांगती है ।

—गांधी

अहिंसा सब धर्मोंमें श्रेष्ठ है, हिंसाके पीछे हर तरहका पाप लगा रहता है ।

—तिरुवल्लुवर

देहधारी पुरुषोंकी अपनी सर्व प्रेमशक्ति, इकट्ठी की हुई सम्पूर्ण सेवाका अन्तिम फलित 'अ-हिंसा' इन निषेधक शब्दोंमें व्यक्त होता है ।

—विनोबा

सम्पूर्ण आत्मशुद्धिके प्रयत्नमें मर मिटना यह अहिंसाकी शर्त है ।

—गांधी

अहिंसा परम श्रेष्ठ मानव-धर्म है; पशुबलसे वह अनन्त गुना महान् और उच्च है ।

—गांधी

समूची सृष्टिको अपनेमें समा लेनेपर ही अहिंसाकी पूर्ति होती है ।

— वनोबा

अहिंसा मानो पूर्ण निर्दोषिता ही है। पूर्ण अहिंसाका अर्थ है प्राणिमात्रके प्रति दुर्भावका पूर्ण अभाव।

गांधी

अक्षरज्ञान

अक्षर-ज्ञानकी हमें मूर्तिपूजा और अन्धपूजा न करनी चाहिये वह कोई कामधेनु नहीं है। वह तो अपने स्थानपर तभी शोभा पा सकता है जब हम अपनी इन्द्रियोंको वश कर सकते हों, जब नीतिपर दृढ़ हों, जब हम उसका सदुपयोग कर सकते हों; तभी वह हमारा आभूषण हो सकता है।

गांधी

अज्ञान

अशिक्षित रहनेसे पैदा न होना अच्छा, क्योंकि अज्ञान तमाम बुराईकी जड़ है।

—प्लेटो

तुम्हारा अज्ञान ही तुम्हारा वास्तविक पाप है। वही है जो दुःख लाता है।

—अज्ञात

अज्ञान मनकी रात है, लेकिन ऐसी रात जिसमें चाँद हैं न तारे।

कन्फ्यूशियस

मोह और स्वार्थ अज्ञानके पुत्र हैं, अतएव अज्ञानी मनुष्य ही दुष्ट और कायर होते हैं।

—गांधी

अज्ञानके अलावा आत्माके और किसी रोगका मुझे पता नहीं।

—बेन जॉन्सन

दुःखसे बचनेके लिये 'अज्ञान' की दलील बेकार है। कोई अज्ञानी अगर बिजलीके तारको छुएगा तो मरेगा ही। आत्माको भी क्रोध, लोभ, मोह वग़ैरह करनेसे जन्म-जरा-मरणके दुःख भोगने ही पड़ते हैं।

—अज्ञात

सब मलोंमें अज्ञान परम मल है। इस मलको धो डालो भिक्षुओ, और पवित्र हो जाओ।

—बुद्ध

एक ही दुश्मन है; अज्ञानके समान आदमीका कोई दुश्मन नहीं है।

आधी दुनिया नहीं जानती कि शेष आधी कैसे जीती है।

—रबेले

अज्ञान ईश्वरका शाप है, ज्ञान वह पंख है जिससे हम स्वर्गको उड़ते हैं।

—शेक्सपियर

मेरे प्रभो, वे लोग जिनके पास सिवाय तेरे सब कुछ है, उन लोगों पर हँसते हैं जिनके पास तेरे सिवाय कुछ नहीं है।

—टैगोर

अज्ञानको क्रियाशील देखनेसे भयंकर कुछ भी नहीं है।

—गेटे

अज्ञानी रहनेसे पैदा न होना अच्छा, क्योंकि अज्ञान दुःख-का मूल है।

—प्लेटो

मानव-जाति, युग-युगान्तरसे, उन स्वार्थी लोगों द्वारा अज्ञानमें क़ैद रक्खी गई है, जिनका लक्ष्य मनुष्यके दिमागोंको संकुचित और अव्यवस्थित बनाये रखना रहा है।

—आर० जैफ़रीज़

तू अपनेसे अनजान है, और इस बातमें और भी अधिक अनजान है कि तेरे लिये क्या योग्य है।

—आगस्टस हेअर

अज्ञानकी दलील दुष्परिणामोंसे नहीं बचा सकती।

—रस्किन

आत्मविषयक अज्ञान 'पहिला अज्ञान है;' 'हम अज्ञानी हैं' इसकी भी जानकारी न हो तो यह 'अज्ञानका अज्ञान' है; 'हम अज्ञानवर्गमें शामिल हैं' इस बातसे इनकार करना माने 'अज्ञान धन'—इसीको विद्वत्ता कहते हैं।

—विनोबा

अज्ञानी

रूप और जवानीसे सम्पन्न, बड़े खानदानवाले, मगर-विद्याहीन लोग गंधरहित ढाकके फूलकी तरह शोभा-शून्य होते हैं।

—अज्ञात

अज्ञानी होनेसे भिखारी होना अच्छा; क्योंकि भिखारीको तो सिर्फ धन चाहिये, मगर अज्ञानी आदमीको इन्सानियत चाहिये।

—अरिस्टिपस

अज्ञानी आदमीके लिये खामोशीसे बढ़कर कोई चीज़ नहीं और अगर उसमें यह समझनेकी बुद्धि हो तो वह अज्ञानी नहीं रहेगा।

—सादी

अपने पास बहुतसे नौकर-चाकर देखकर एक अज्ञानी भी फूला नहीं समाता।

—हुसैन अलराई

[आ]

आक्रमण

जो साहसपूर्वक और ज़िन्दगीका मोह छोड़कर आक्रमण करता है, उसके सामने खड़े रहनेकी हिम्मत इन्द्रतक नहीं कर सकता।

—अज्ञात

आँख

ज्ञानेन्द्रियोंमें आँखका क्या स्थान हो सकता है अगर वह एकही नज़रमें दिलकी बात नहीं जान सकती?

—तिरुवल्लुवर

अकेली आँख ही यह बतला सकती है कि हृदयमें घृणा है या प्रेम।

—तिरुवल्लुवर

मनमानी आँख, अपवित्र हृदयकी परिचायक है।

—ऑगस्टाइन

आग

दिलकी आगसे दिमागको धुआँ चढ़ता है।

—जर्मन कहावत

चमककी आग तबतक प्रगट नहीं होती जबतक उसे रगड़ा न जाय।

—कहावत

जो खुद नहीं जलता, दूसरोंमें आग नहीं लगा सकता।

—अज्ञात

आगन्तुक

मछली और आगन्तुक (Visitors) तीन दिनमें बास मारने लगते हैं।

—फ्रैंकलिन

आचरण

जन्मके पहले तू ईश्वरको जितना प्यारा था, उतना ही मृत्यु-पर्यन्त बना रहे, ऐसा आचरण कर।

—जुनैद

मित्रतासे मनुष्यको सफलता मिलती है; किन्तु आचरणकी पवित्रता उसकी हर इच्छाको पूर्ण कर देती है।

—तिरुवल्लुवर

बुद्धि-बल संसार-व्यवहारको देखकर चलता है, आत्म-बल अपने भीतर देखकर।

—अज्ञात

भले आदमी जिन बातोंको बुरा बतलाते हैं, मनुष्योंको भी चाहिये कि वे अपनेको जन्म देनेवाली माताको बचानेके लिये उन कामोंको न करें।

—तिरुवल्लुवर

जिसने ज्ञान, आचरणमें उतार लिया उसने ईश्वरको ही मूर्तिमन्त कर लिया।

—विनोबा

आत्म-त्याग स्वीकार करो; सबको रास्ता दे दो, सबकी बातों और आचरणोंको सह लो, इसी प्रकार तुम उन लोगोंको भलाई कर सकोगे; उन लोगोंके ऊपर क्रोध उगलकर उनपर कटु वाक्योंकी वर्षा करके तुम उन लोगोंकी भलाई नहीं कर सकोगे।

—महात्मा एपिक्टेटस

आचार

बिना आचारके कोरा बौद्धिक ज्ञान वैसा ही है जैसा कि ख़ुशबूदार मसाला लगाया हुआ मुर्दा।

—गांधी

महज़ पुस्तकी ज्ञानके प्रदर्शनसे जनता पर कभी सच्चा वज़न नहीं पड़ता। अपने उच्चतत्त्व जिस परिमाणमें अपने रोज़ के बर्तनमें प्रत्यक्ष दिखाई देने लगते हैं उसी परिमाणमें अपने प्रति लोगोंका आदर व पूज्य भाव बढ़ता जाता है।

—विवेकानन्द

आज

एक आज दो कलके बराबर है।

—क्वार्ल्स

आजसे अपने चित्तमें विकार नहीं आने दूँगा, मुँहसे दुर्वचन नहीं निकालूँगा और दोषरहित हो मैत्रीभावसे इस संसारमें विचरण करूँगा।

—बुद्ध

आजका दिन हमारा है। गुज़रा हुआ कल मर गया, और आनेवाला कल अभी पैदा नहीं हुआ।

—अज्ञात

जो काम कभी भी हो सकता है, वह कभी नहीं हो सकता है। जो काम अभी होगा वही होगा, जो शक्ति आजके कामको कल पर टालनेमें खर्च हो जाती है उसी शक्तिके द्वारा आजका काम आज ही किया जा सकता है।

—अज्ञात

आज ही विवेकी बन; शायद कलका सूर्य तू देख ही न पाये।

—अज्ञात

जो कुछ श्रेयस्कर है वह आज ही करो, बुढ़ापेमें क्या कर सकोगे? तब तो तुम्हारा शरीर तक तुम्हारे लिये बोझा हो जायेगा।

—अज्ञात

अच्छी तरह जिया हुआ आज हर गुजरे हुए कलको आनन्दका स्वप्न, और हर आनेवाले कलको आशाका दर्शन बना देता है।

—अज्ञात

आजकलकी लड़की

आजकलकी लड़कीको अनेक मजनुओंकी लैला बनना प्रिय है। वह दुस्साहसको पसन्द करती है···आजकलकी लड़की वर्षा या धूपसे बचनेके उद्देश्यसे नहीं, बल्कि लोगोंका ध्यान अपनी ओर खींचनेके लिये तरह-तरहके भड़कीले कपड़े पहनती हैं

—गांधी

आर्जव

साधुजनोंके वचन उनके विचारोंके अनुसार होते हैं उनके काम उनके वचनोंके अनुसार होते हैं। उनके विचार, वाणी और कृतिमें एकरूपता होती है।

—अज्ञात

सब छल-कपट मौत लाते हैं; सरलताके सब काम ब्रह्मपद तक ले जाते हैं। ज्ञानका विषय बस इतना ही है, अधिक प्रलापसे क्या लाभ?

—अज्ञात

आज़ाद

गुलाम और आज़ादमें यही फ़र्क़ है कि गुलाम मरनेके लिए जीता है मगर आज़ाद जीनेके लिये मरता है, गुलामकी ज़िंदगी मौतके बराबर है मगर आज़ादकी मौत भी ज़िंदगी है।

—अज्ञात

कोई आदमी आज़ाद नहीं है जब तक वह अपनी कषायों पर क़ाबू न पा ले।

—अज्ञात

इन्सान आज़ाद पैदा हुआ था, लेकिन हर जगह जंज़ीरों में है।

—रूसो

जो स्वयं सोचता है, और नक़ल नहीं करता, आज़ाद आदमी है।

—क्लापस्टॉक

आज़ादी

ओ आज़ादी, मानव जातिकी पहली ख़ुशी।

—ड्राइडन

दो क़िस्मकी आज़ादियाँ हैं, झूठी जहाँ कोई जो चाहे करनेको आज़ाद है, और सच्ची जहाँ वह वही करनेके लिये आज़ाद है जो कि उसे करना चाहिये।

—किंग्सले

आज़ादीसे साँस लेनेके मानी ही जीना नहीं है।

—गेटे

पापकी ग़ुलामी करनेवाली आज़ादीको नष्ट कर दो।

—स्वामी रामतीर्थ

आज़ादी इसी वक़्त और आज़ादी हमेशाके लिये।

—डेनियल वैबस्टर

आजादी आत्माकी एक ख़ास हालतका नाम है, न कि मुल्क में किसी ख़ास हक़ूमतका। शेर पिंजड़ेमें रहकर भी कुछ आज़ाद है, क्योंकि वह आदमीकी गाड़ी नहीं खींचता। बैल और घोड़े खुले रहकर भी गुलाम हैं। क्योंकि वह जुए या साजके नीचे एक टिटकारीपर सिर झुकाकर गर्दन या पीठ लगा देते हैं।

—महात्मा भगवानदीन

कोई देश बिना आजादीके अच्छी तरह नहीं जी सकता, और न आजादी बिना सत्कर्मके बरक़रार रह सकती है।

—रूसो

बिना फ़र्माबरदारीके आज़ादी घपला है; बिना आज़ादीके फ़र्माबरदारी ग़ुलामी है।

—अज्ञात

अपनी आज़ादीको बुद्ध, ईसा, मुहम्मद या कृष्णके हाथों न बेच दो।

—स्वामी रामतीर्थ

आज़ादीका ध्येय ईश्वरका ध्येय है।

—ब्राउन्स

अपनी आज़ादी खोना अपनी इन्सानियत खोना है, मानवता के हक़ों और फ़र्ज़ोंको खोना है। यह त्याग मनुष्यकी प्रकृतिके अनुकूल नहीं है, क्योंकि उसकी इच्छा-शक्तिसे तमाम स्वतंत्रता छीन लेना उसके कार्योंसे तमाम नैतिकता छीन लेना है।

—रूसो

मुझे आज़ाद कहकर न चिढ़ाओ, जबकि तुमने मेरे बन्धनों को केवल सजीली बन्दनवारोंमें गूँथ दिया है।

—कार्लाइल

क़ानून आदमियोंको कभी आज़ाद नहीं बनायेगा; आदमियों को ही क़ानूनको आज़ाद बनाना होगा।

—थोरो

किसीकी मेहरबानी माँगना अपनी आज़ादी खोना है।

—गांधी

मुझे और सब आज़ादियोंसे पहले अपने अन्तःकरणके अनुसार जानने, सोचने, मानने और बोलनेकी आज़ादी दो।

—मिल्टन

आज़ादीकी तड़प आत्माका संगीत है।

—सुभाष बोस

अल्लाह तुम्हारी किसी बातसे इतना प्रसन्न नहीं होता जितना गुलामोंको आज़ाद करने से।

—ह० मुहम्मद

जिन्हें आज़ाद होना हो, उन्हें स्वयं ही प्रहार करना होगा।

—बायरन

बुलबुल पिंजड़ेमें नहीं गाती।

—कहावत

आजादी एक शानदार दावत है।

—बर्न्स

मोटी-चर्बीली गुलामीसे दुबली-पतली आज़ादी अच्छी।

—कहावत

निज देशमें गुलाम रहनेकी अपेक्षा-परदेशमें आज़ाद रहना अच्छा।

—जर्मन कहावत

उससे बदतर गुलाम नहीं, जो झूठमूठको मानता है कि वह आज़ाद है।

—गेटे

क्या आपको पूरी आज़ादी नहीं है कि साहित्य और इतिहासकी तुच्छ फ़तसीलोंपर वक़्त बर्बाद कर डालें, क्योंकि ये अध्ययन किसी शासक वर्गको नागवार खातिर नहीं होते?

—गुनन

जो अपनी स्वतंत्रताके खोनेसे प्रारंभ करते हैं वे अपनी शक्ति खोकर समाप्ति करेंगे।

—बर्कले

आजीविका

मुँह छिपाये और मुँह दबाए जीते रहनेकी शर्तपर आजीविका पाना कोई गौरवकी बात नहीं है।

—जॉन मॉर्ले

जो ईश्वरका भरोसा रखते हैं, ईश्वर उनका निर्वाह अवश्य करता है।

—बुन्यन

शिक्षाको आजीविकाका साधन समझकर पढ़ना नीच वृत्ति कहा जाता है; आजीविकाका साधन तो शरीर है। पाठशाला तो चरित्रगठनका स्थान है। विद्यार्थियोंको यह पहलेसे ही जान लेना ज़रूरी है कि हमें अपनी आज़ीविकाको बाहुबलसे ही प्राप्त करना है।

—गांधी

आतंक

यह बात हम सब लोगोंमें आमतौरपर पाई जाती है, मगर है यह खसूसन् नीच बुद्धिवालेका लक्षण है कि वह उम्दा कपड़ों और उम्दा फ़र्नीचरसे आतंकित हो जाता है।

—डिकेन्स

आतङ्क सबसे ज़्यादा निःसत्त्व करनेवाली अवस्था है जिसमें कोई हो सकता है।

—गांधी

आततायी

आततायी अगर सामनेसे आ रहा हो तो बिना सोचे उसे मार डालना चाहिये।

—मनुस्मृति

आत्मकल्याण

सर्वस्वका त्याग करके भी मनुष्यको आत्मकल्याण करना चाहिए। —अज्ञात

आतिथ्य

अर्ध-आतिथ्य दरवाज़ा खोल देता है मगर मुँह छिपा लेता है।

—फ्रैंकलिन

आत्मनिग्रह

आत्मनिग्रहसे स्वास्थ्यकी हानि नहीं होती; इतना ही नहीं, वल्कि स्वास्थ्यका यही एक अमोघ साधन है।

—गांधी

आत्मरक्षा

आत्मरक्षा हर उपायसे करनी चाहिये।

—अज्ञात

आत्म-विस्मरण

दूसरोंको खुश कर सकनेके लिये, तुम्हें खुदको भूलना पड़ सकता है।

—एविड

आत्मविश्वास

आत्मविश्वास वीरताकी जान है।

—इमर्सन

महान् कार्य करनेके लिये पहिली ज़रूरी चीज़ है आत्म-विश्वास।

—जॉन्सन

जहाँ भी आप जायें अपने आत्मविश्वासको साथ लेते जायें।

—अज्ञात

आत्मविश्वास सरीखा दूसरा मित्र नहीं। आत्मविश्वास ही भावी उन्नतिका मूल पाया है।

—विवेकानन्द

जिसमें आत्मविश्वास नहीं है, उसमें अन्य चीज़ोंके प्रति विश्वास कैसे उत्पन्न हो सकता है?

—विवेकानन्द

आत्मश्रद्धा

आत्मश्रद्धा हमारे हाथमें एक अमोघ शस्त्र है। किसी भी बातसे मनमें दुर्बलता आनी लगे कि पहले उस बातका त्याग करना चाहिये। नहीं तो दिन दिन तुम्हारा मानसिकबल कम होता जायेगा और आख़िरश मुस्तक़िल तौरसे नाश पायेगा।

—विवेकानन्द

आत्मशक्ति

तुम्हीं हो जो मूर्खतावश अपनी आश्चर्यकारिणी शक्तियोंपर हदबन्दी कर रहे हो।

—अज्ञात

आत्मदर्शन

जिसका मन रागद्वेषादिसे नहीं डोलता वही आत्मतत्त्वका दर्शन कर सकता है।

—अज्ञात

मनुष्यजीवनका उद्देश्य आत्म-दर्शन है और उसकी सिद्धिका मुख्य एवं एकमात्र उपाय पारमार्थिक भावसे जीव-मात्रकी सेवा करना है; उनमें तन्मयता तथा अद्वैतके दर्शन करना है।

—गांधी

आत्म-दान

अगर सारी दुनियाको हम पाना चाहते हैं तो हमें यही सीखना है कि पाओ अपनेको देकर।

—जैनेन्द्रकुमार

हमारा देश आत्मदानका ऐश्वर्य चाहता है—विपुल धनकी महिमा और शक्तिकी प्रतियोगिता नहीं! धन अब मनुष्यको अर्घ नहीं चढ़ाता वरन् उसे अपमानित करता है और प्रति-योगिता विस्मित करती है—आनन्दित नहीं, इससे ईर्ष्या होती है, प्रशंसा नहीं।

—टैगोर

आत्मनिर्भरता

अगर कोई मुझे अपना फिलॉसफी एक शब्दमें कहनेको कहे, तो मैं कहूँगा "आत्म-निर्भरता", "आत्म-ज्ञान।"

—स्वामी रामतीर्थ

आत्मप्रशंसा

जिसके गुणोंका दूसरे लोग बयान करते हैं तो निर्गुणी भी गुणी हो जाता है; मगर अपने गुणोंका खुद बखान करनेसे इन्द्र भी लघुताको प्राप्त हो जाता है।

—अज्ञात

क्या तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारी प्रशंसा करें? तो आत्म-प्रशंसा कभी न करो।

—पास्कल

अपनी प्रशंसा स्वयं करना अनार्य मनुष्योंका काम है।

—अज्ञात

आत्मप्रशंसा नागवार खातिर होती है।

—अज्ञात

आत्म-प्रेम

आत्म-प्रेम इतना बुरा पाप नहीं है जितना आत्म-उपेक्षा।

—शेक्सपियर

आत्म-परीक्षा

कोई भी शुभ कार्य करते समय तुम निष्कपट हो न? जो कुछ बोल रहे हो निस्स्वार्थ भावसे ही न? जो दान-उपकार कर रहे हो बदलेकी आशाके बिना ही न? जो धन संचय कर रहे हो कृपणता छोड़कर ही न?

—आनिम आगम

आत्म-बलिदान

कर्त्तव्यका सारा सबक़ आत्म-बलिदानसे शुरू और आत्म-बलिदान पर खत्म होता है।

—लिटन

आत्मरक्षण कुदरत (Nature) का पहला क़ानून है; आत्म-बलिदान सौम्यता का सर्वोच्च नियम।

—अज्ञात

जो खुद अपनी जान दे देता है वह तो उसे पा जाता है और जो उसे बचाता है वह उसे खो देता है।

—अज्ञात

आत्म-बुद्धि

खुदका अच्छा बुरापन दूसरेकी दृष्टिसे कभी न नापो, ऐसा करना अपने मनकी दुर्बलता दिखलाना है।

—विवेकानन्द

आत्मा

'नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यः' (यह आत्मा प्रवचनसे नहीं मिलता।")

—उपनिषद्

इन्द्रियाँ काफ़ी सूक्ष्म हैं, इन्द्रियोंसे ज़्यादा सूक्ष्म मन है, मनसे ज़्यादा सूक्ष्म बुद्धि है, बुद्धिसे ज़्यादा सूक्ष्म आत्मा है। यह आत्मा ही सब कुछ है। वही वह है।

—गीता

क्या आत्माका अपना कोई ख़ास घर नहीं है, जो इस वाहियात शरीरमें आश्रय लेता है।

—तिरुवल्लुवर

अपनी आत्माको खोजो, उसीसे तुम्हें सब बातोंका पता लग जावेगा। इस जानकी गुत्थीको सुलझानेके लिये अपनी आत्माको जान लेना ही सबसे बड़ा साधन है।

—याज्ञवल्क्य

एक ही विचारसे आत्मा जानी जा सकती है।

—स्वेन्डनबर्ग

जिसने आत्माके अस्तित्वको स्वीकार किया है, और जो आत्माका विकास करना चाहता है, उसे यह समझानेकी जरूरत नहीं कि देह दमन बिना आत्माकी पहिचान या आत्माका विकास असंभव है। शरीर या तो स्वच्छंदताका भाजन होगा या आत्माकी पहिचान करनेका तीर्थक्षेत्र होगा। जो यह आत्माकी पहिचान करनेका तीर्थक्षेत्र हो तो स्वेच्छाचारको स्थान ही नहीं है। देहको क्षण-क्षणपर वश करना आत्माके लिये लाज़िमी होगा ही।

—महात्मा गांधी

जिसतरह एक सूरज सारी दुनियाको रोशनी देता है, उसी तरह एक आत्मा इस सारे मैदानको रोशन करता है।

—गीता

जिसका मन संसारकी वार्ताको छोड़कर आत्मारामी बना है, वह अमोघ अमृतकी धारासे सर्वांगीण रूपसे सिंचित होता है।

— [illegible] सूरि

तू अपनी आत्माकी ओर ध्यान धर, और उसके गुणोंकी पूर्ति कर; क्योंकि तू आत्माके कारण ही मनुष्य है, न कि शरीरके कारण।

—अबुल [illegible]

आत्माकी दौलत इससे नापी जाती है कि वह कितना ज्यादा अनुभवन करती है उसकी गरीबी इससे कि कितना कम।

—अलजर

जब कोई विश्वात्माको निजात्मा ही अनुभव करने लगता है तो सारा ब्रह्माण्ड उसकी इस तरह सेवा करता है जैसे उसका शरीर।

—स्वामी रामतीर्थ

समुद्रोंसे बड़ी एक चीज़ है और वह है आकाश; आकाशसे बड़ी एक चीज़ है और वह है मनुष्यकी आत्मा।

—विक्टर ह्यूगो

सबकी आत्मा एक सरीखी है सबकी आत्माकी शक्ति समान है मात्र कुछकी शक्ति प्रकट हो गई है, दूसरोंकी प्रकट होना बाकी है।

—महात्मा गांधी

आत्माकी प्राप्ति हमेशा सत्यसे, तपसे, सम्यग्ज्ञानसे और ब्रह्मचर्यसे होती है। निर्दोष लोग अपने अन्दर शुभ्र ज्योतिर्मय आत्माको देख सकते हैं।

—अज्ञात

यह आत्मा प्रवचनोंसे, बुद्धिसे या बहुश्रवणसे नहीं मिलता। परन्तु जो आत्माको ही वरता है उसीको आत्मा अपना स्वरूप प्रकट करता है।

—उपनिषद्

दया दिखाना कुछ नहीं है—तेरी आत्मा दया से भरी होनी चाहिये; अमलमें पवित्रता कुछ नहीं है—तुझे हृदयसे भी पवित्र होना चाहिये।

—रस्किन

जैसे कि तमाम कर्व अपने केन्द्रों या फोकसोंसे ताल्लुक रखते हैं, वैसे ही तमाम चरित्रका सौन्दर्य आत्मासे सम्बन्धित है।

—थोरो

'आत्माका अस्तित्व' ये शब्द पुनरुक्त हैं कारण कि 'आत्मा' माने, अस्तित्व।

—विनोबा

निर्बल आत्मा, बजाय खुद बरकतहीन, तमाम खुशियोंके लिये दूसरेकी छाती पर झुकती है।

—गोल्डस्मिथ

जिस हस्तीको वेदान्ती ब्रह्म कहते हैं, उसीको योगी आत्मा कहते हैं, और भक्त भगवान् कहते हैं।

—रामकृष्ण परमहंस

उसने अपनी आत्माकी उज्ज्वलताको क़ायम रक्खा था, इसलिये लोग उसके लिये यूँ रोये।

—बायरन

आत्मा पृथ्वीपर एक अमर मेहमान है, जो कि एक अवास्तविक दावत पर भूखों मरनेको मजबूर है।

—अमोर

आत्माको रथमें बैठा हुआ योद्धा जान; शरीरको रथ जान, बुद्धिको सारथी जान; मनको लगाम जान।

—कठोपनिषत्

जिसे अपने जीवनके लिये मन प्राण शरीरकी गरज़ नहीं, जिसे अपने ज्ञानके लिये मन और इन्द्रियोंकी गरज़ नहीं, जिसे अपने आनन्दके लिये पदार्थ मात्रके बाह्य स्पर्शकी दरकार नहीं, उसी तत्त्वको 'आत्मा' नाम दिया गया है।

—अरविन्द घोष

आत्मा शक्यता मूर्ति है, आत्माको कुछ भी अशक्य नहीं है।

—विनोबा

हम सब शारीरिक पक्षाघातसे डर खाते हैं, और उससे बचनेकी हर तदबीर करते हैं; लेकिन आत्माको लकवा मार जाने पर किसीको परेशानी नहीं होती।

—एपिक्टेटस

शरीरको हमेशा आत्माकी अधीनता और दासत्वमें रहना चाहिये।

—हॉलैंड

आत्मा व्यक्तियोंका लिहाज़ नहीं रखती।

—एमर्सन

आत्मा दैविक आनन्दके किनारेपर खड़ा है, वह आनन्द ऐसा है मानो उसमें करोड़ों दुनियावी (इन्द्रिय भोग-जन्य) खुशियाँ घनीभूत हो गई हों; और उस आनन्दको भोगनेके बजाय, वह दुनियाके तुच्छ मज़ोंसे प्रलोभित होकर मायाके जालमें फँसकर मरता है।

—रामकृष्ण परमहंस

मैंने चमकीली आँखें, सुन्दररूप खूबसूरत शक्लें देखीं; लेकिन एक ऐसी आत्मा न मिली जो मेरी आत्मासे बोलती।

—एमर्सन

जिनकी आत्माएँ छोटी-छोटी हैं वे बड़े-बड़े पापोंके रचयिता होते हैं।

—गेटे

देव लोग आत्माकी गहराई पसन्द करते हैं, न कि उसका कोलाहल।

—वर्ड्सवर्थ

आत्मा होठोंसे नहीं, आँखोंसे प्रतिबिम्बित होती है।

—मैक्डोनल्ड क्लार्क

दुनियामें जुड़वाँ आत्माएँ नहीं हैं।

—हॉलैंड

क़ीमती चीज़ दुनियामें एक है—सक्रिय आत्मा।

—एमर्सन

एक आत्मा सारे ब्रह्माण्डसे बढ़कर है।

—अलेक्जैण्डर स्मिथ

आत्मा वीरान परमात्मा है।

एमर्सन

हमारे शरीर भिन्न-भिन्न हैं तो क्या हुआ, आत्मा तो हमारे अन्दर एकही है।

गांधी

हृदय भले ही टूट जाय, मगर आत्मा अचल रहे।

नेपोलियन

आत्मा ही अपना स्वर्ग और नरक है।

उमरखय्याम

कॉरपोरेशनके आत्मा नहीं होती।

कोक

मौन और एकान्त आत्माके सर्वोत्तम मित्र हैं।

लॉंगफ़ैलो

आत्मानुभव

जो शरीरपोषणमें लगा रहकर आत्मानुभव कर लेना चाहता है वह मगरको लट्ठा समझकर नदी पार करना चाहता है।

—अज्ञात

आत्म-सन्तोष

अपने निजी सन्तोषके लिये मैं ताज़ पहननेकी बनिस्बत अपने ही वक़्तका मालिक होना ज़्यादा पसन्द करूँगा।

—बिशप बर्कले

आत्म-सम्मान

अगर आपने अपना आत्म-सम्मान खोया तो आपने सब कुछ खो दिया।

—अज्ञात

आत्म-सम्मान पहिला रूप है जिसमें महानता प्रगट होती है।

—एमर्सन

आत्म-सम्मान समस्त गुणोंकी आधार-शिला है।

—सर जॉन हरशल

सब बातोंसे पहिले आत्म-सम्मान।

—पिथागोरस

जिसके यहाँ रहना चाहते हो, उसके यहाँ अपनी आवश्यकता पैदा करो, दया पर पेट पल सकता है आत्म-सम्मान नहीं।

—अज्ञात

धूलसे नीच कौन होगा? मगर वह भी तिरस्कार सहन नहीं कर सकती—लात मारें तो सिरपर चढ़ती है।

—रामायण

आत्म संयम

आत्म-संयम शालीनताका प्रधान अंग है।

—अज्ञात

धन्य है वह आत्म-संयम जो मनुष्यको बुजुर्गोंकी सभामें आगे बढ़कर नेतृत्व ग्रहण करनेसे मना करता है। यह एक ऐसा गुण है जो अन्य गुणोंसे भी अधिक समुज्ज्वल है।

—तिरुवल्लुवर

किसी मनुष्यने अपने लिये कोई हानिकर बात की कि उसका बुरा करनेकी बुद्धि अपनेमें होती है। उसका नियमन करना यही आत्म संयमकी पहली सीढ़ी है।

—विवेकानन्द

आत्म-संशोधन

सर्व साहित्यके अभ्याससे अथवा सर्व विश्वके विज्ञानसे जो समाधान नहीं मिलनेवाला वह आत्म-संशोधनसे मिलेगा।

—विनोबा

आत्म-ज्ञान

खाना और सोना मुझे तेरे पदसे गिरा देते हैं, तू अपने आपको उस समय पहचानेगा जब विश्राम और विलासको तिलाञ्जलि दे देगा।

—हाफ़िज़

सिर्फ़ दो तरहके लोगोंको आत्म-ज्ञान हो सकता है। उनको जिनके दिमाग़ विद्वत्ता यानी दूसरोंके उधार लिये हुए विचारोंसे बिल्कुल लदे हुए नहीं हैं; और उनको जो तमाम शास्त्रों और साइन्सोंको पढ़कर यह महसूस करने लगे हैं कि वे कुछ नहीं जानते।

—अज्ञात

जिसने अपने आपको पहचान लिया उसने अपने रबको पहचान लिया।

—मुहम्मद

जिसने अपने आपको देख और पहचान लिया वह फिर अपने कामिल [सिद्ध या पूर्ण] बननेकी तरफ़ तेज़ीसे दौड़ने लगता है।

—मौलाना रूम

आत्मज्ञान ही शेष समस्त विज्ञानोंका विज्ञान है और अपना भी।

—प्लेटो

इस महत्त्वपूर्ण सत्यको कभी नज़र अंदाज़ न होने देना, कि कोई तबतक सचमुच महान् नहीं हो सकता जबतक कि वह आत्मज्ञान न पा जाय।

—ज़िमरमन

हाय! मेहनत फ़िज़ूल गई, अगर आत्मा तक को न जाना।

—अज्ञात

समझ लो कि जिसने अपना पता लगा लिया उसके दुःख समाप्त हो गये।

—मैथ्यू आर्नोल्ड

ख़ुदको जाने बग़ैर दुनियाको जानना यह बड़ीसे बड़ी भूल है।

—अज्ञात

संसारका सुख और संसारकी सहूलियतें रखकर जिसे आत्म-ज्ञान लेना है उसे आत्म-ज्ञान नहीं मिलेगा।

—अज्ञात

जिसने बुरा स्वभाव नहीं छोड़ा है, जिसने अपनी इन्द्रियों को नहीं रोका है, जिसका मन चंचल बना हुआ है, वह केवल पढ़ने-लिखनेसे आत्म-ज्ञानको नहीं पा सकता।

—कठोपनिषद्

जीवनमें सबसे मुश्किल बात अपने आपको जानना है।

—थेल्स

जो 'ख़ुद'को पहिचानता है उसके लिये लापरवाही सबसे बड़ा गुण है।

—अज्ञात

जो अपनेको जानता है वह दूसरोंको जानता है।

—कोल्टन

ओ इन्सान! अपने आपको जानः तमाम ज्ञान वहीं केन्द्री-होता है।

—यंग

आदमी

दुनिया कुछ नहीं, आदमी ही सब-कुछ है।

—एमर्सन

आदमी खाना पकानेवाला जानवर है।

—बर्क

सिर्फ़ आदमी ही रोता हुआ जन्मता है, शिकायतें करता हुआ जीता है, और निराश मरता है।

—सर वाल्टर टेम्पिल

सिर्फ़ तीन क़िस्मके आदमी हैं—पतनशील, स्थिर और उन्नतिशील।

—लेवेटर

'मैं आश्चर्य करता हूँ कि मछलियाँ समुद्रमें कैसे जीती हैं!' 'क्यों, जैसे आदमी भूतल पर जीते हैं, बड़े छोटोंको निगलकर।'

—शेक्सपियर

हर आदमी एक बर्बाद परमात्मा है।

—एमर्सन

हर एक आदमी भक्षक है, उसे उत्पादक होना चाहिये।

—एमर्सन

आदमी लिखनेके लिये पैदा हुआ है।

—एमर्सन

हमको कार्यौंकी नहीं, आदमियोंकी जरूरत है।

—एमर्सन

आदर्श

मेरे पास आदर्श है, ऐसा तब ही कहा जाय जब मैं उस तक पहुँचनेकी कोशिश करता हूँ।

—गांधी

आदर्शको हमेशा 'वास्तविक' में से उगना होता है।

—कार्लाइल

तुम्हारा आदर्श, तुम अन्तमें जो करके दिखा दोगे उसकी भविष्यवाणी है।

—अज्ञात

जिस आदर्शमें व्यवहारका प्रयत्न न हो वह फिज़ूल है; जो व्यवहार आदर्श-प्रेरित न हो वह भयंकर है।

—अज्ञात

मानव जातिकी एकमात्र पाठशाला है—आदर्श; मनुष्य और कहीं नहीं सीखता।

—बर्क

आदर्श-विहीन मनुष्य मल्लाह रहित जहाज़ जैसा है।

—गांधी

आचारधर्म

आचारधर्मका स्वर्णसूत्र है परस्पर-सहिष्णुता, क्योंकि यह असंभव है कि हम सब एक ही तरह विचार करें। हम तो अपने विभिन्न दृष्टिकोणोंसे सत्यको अंशतः ही देख सकते हैं। सदसद्विवेक-बुद्धि सबके लिए एक ही वस्तु नहीं होती। इसलिये वह व्यक्तिगत आचरणके लिये बहुत अच्छा पथ-प्रदर्शक ज़रूर है। लेकिन उस आचारको बलपूर्वक सब लोगों पर लादना व्यक्तिमात्रके बुद्धि-स्वातन्त्र्यमें अक्षम्य और असह्य हस्तक्षेप है।

—गांधी

आध्यात्मिक

'आध्यात्मिक'का सच्चा अर्थ 'वास्तविक' है ।

—इमर्सन

आनन्द

दुनियाकी चीज़ोंमें और दुनियाके विचारमें मन न जाय तो आत्माके आनन्दको रोकनेवाली दूसरी कोई चीज़ नहीं है।

—अज्ञात

आनन्द प्रेमके द्वारा ईश्वरको पा लेना है ।

—ऑमील

शरीर वीणा है और आनन्द संगीत। यह ज़रूरी है कि यंत्र दुरुस्त रहे ।

—बीचर

जबतक तुम पापसे नहीं लड़ोगे, तबतक तुम कभी वास्तविक आनन्द नहीं पा सकते ।

—जे० सी० राइल

हम स्वयं आनन्दकी अनुभूति लेनेकी अपेक्षा दूसरोंको यह इत्मीनान दिलानेके लिये अधिक प्रयास करते हैं कि हम आनन्दमें हैं।

—कन्फ्युशियस

बाहर जाओ, और किसीकी कोई सेवा करो, यह तुम्हें 'आपे'से छुड़ाएगा और आनन्द देगा ।

—जोसेफ़ जफ़रसन

सिवाय पापके हर चीज़में कुछ न कुछ आनन्द है ।

—श्रीमती सिगोरनी

लालच और आनन्दने कभी एक दूसरेको नहीं देखा, फिर वह परिचित हों तो कैसे ?

—फ्रेंकलिन

पार्वती–"स्वामिन्! अभीक्ष्ण, अनन्त, सर्वग्राही आनन्दका मूल क्या है? महादेव–"मूल है विश्वास"।

—रामकृष्ण परमहंस

दूसरोंके साथ हाथ बँटानेसे आनन्द और भी अधिक होता है।

—अज्ञात

जीवनका आनन्द जीनेवाले आदमीके अनुरूप है, काम या जगहके अनुरूप नहीं।

—एमर्सन

आनन्द क्रियाशीलतामें है; हमारी प्रकृतिकी बनावट ही ऐसी है, वह बहता हुआ चश्मा है, रुका हुआ तालाब नहीं।

—अज्ञात

पशुका आनन्द इन्द्रियतृप्ति है, और मनुष्यका आनन्द बुद्धिगत है।

—विवेकानन्द

पराधीनतामें दुःख है, और स्वाधीनतामें आनन्द।

—अज्ञात

अगर कोई मनुष्य शुद्ध मनसे बोलता या काम करता है, आनन्द उसके पीछे सायेकी तरह चलता है जो कि उससे कभी अलग नहीं होता।

—बुद्ध

चित्तवृत्तिको सदा आनन्दित रखना एक बात है और जीवन आमोद-प्रमोदमें बिताना दूसरी बात।

—अज्ञात

आत्माका परमात्मासे मिलना ही आनन्द है

—पास्कल

सच्चा आनन्द एकान्त-प्रिय है, शान और शोरका दुश्मन। एक तो वह आत्म-रसलीनतासे मिलता है, और दूसरे थोड़े-से चुने हुए मित्रोंकी मित्रता और बातचीतसे।

—एडीसन

आनन्द वह खुशी है जिसके भोगने पर पछताना नहीं पड़ता।

—सुक़रात

शोपेनहोर कहता है:–'अपने अन्दर आनन्द पाना मुश्किल है।' मगर उसे और कहीं पा सकना असम्भव है।

—स्वामी रामतीर्थ

'सच्चे अनुभव विना मूढ़को होनेवाला आनन्द ऐसा ही व्यर्थ है जैसा कि प्रतिबिम्बित वृक्षके फलका स्वाद।'

—अज्ञात

जो मनुष्य अपनी आत्मामें परमात्माको देख सकता है और सब तरफ़ समभावसे देखता है, वही सर्वोत्कृष्ट आनन्द प्राप्त करता है।

—मनु

आनन्दकी क़ीमत सम्यग्ज्ञान है।

—मेंग

पेश्तर इसके कि हम औरोंको आनन्द अभिषिक्त कर सकें, हमें स्वयं आनन्दका फ़व्वारा बन जाना होगा।

—अज्ञात

आनन्द, परिग्रहके बढ़ानेसे नहीं, दिलके बढ़ानेसे बढ़ता है।

—रस्किन

अगर ठोस आनन्दकी हमें क़द्र है तो यह रत्न हमारे हृदय में रक्खा हुआ है; वे मूर्ख हैं जो इसकी तलाशमें बाहर भटकते हैं

—अज्ञात

जब अपनी आत्मामें से आनन्द निकलने लगे तब उसमें स्थिति करनी चाहिये।

—अज्ञात

शांति-रहित आनन्द भौतिक है; आनन्द-सहित शांति, शाश्वत है।

—ग्रोथे

आनन्द हमारी और ईश्वरकी मर्ज़ियोंके सामंजस्यसे उत्पन्न आन्तरिक मधुर प्रफुल्लताके अतिरिक्त कुछ नहीं है।

—अज्ञात

आनन्द रुचिमें है चीज़ोंमें नहीं; और हम अपने अभिलषित पदार्थको पाकर सुखी होते हैं, न कि दूसरोंकी तबियतकी चीज़ पाकर।

—रोची

आनन्द कुरूपताको दूर कर देता है, और सुन्दरताको भी सौन्दर्य प्रदान करता है।

—एमील

जो अपने आत्मामें परमात्माको देखता है उसीको शाश्वत आनन्द मिलता है।

—अज्ञात

जब मनसे कामिनी और कञ्चनकी आसक्ति धो डाली तो आत्मामें बाक़ी क्या बचा? सिर्फ़ ब्रह्मानन्द।

—रामकृष्ण परमहंस

एक आनन्दमय मनुष्यसे मिलना सौ रुपयेका नोट पा जाने से अच्छा है। वह कल्याणकी किरणें बाहर फेंकनेवाला केन्द्र है; और उसका किसी कमरेमें दाख़िल होना ऐसा है मानो एक शमा और जला दी गई।

—आर. एल. स्टीवेन्सन

सत्पुरुषोंका आनन्द विजयमें नहीं, युद्धमें है।

—मौण्टलेम्बर्ट

किसीको कोई आनन्द नहीं मिला जब तक उसने उसे अपने लिये स्वयं न रचा हो।

—चार्ल्स मॉर्गन

मैंने इन्सानके आनन्दका रहस्य इसमें पाया कि अपनी शक्तिको सड़ने न दे।

—आदम क्लार्क

बहुतसे शासन कर सकते हैं, और भी बहुतसे लड़ सकते हैं, मगर असंख्य हृदयोंको आनन्द विरले ही दे सकते हैं।

—वाल्टर सैवेज लैंडर

आनन्द हर जगह है, और उसका स्रोत हमारे ही दिलोंमें है।

—रस्किन

जो आनन्द पूर्णतया बाहरसे आता है मिथ्या, अत्यल्प और क्षणिक है। जो आनन्द अन्दरसे आता है वह डालीपर लगे सुगन्धित गुलाबके समान है, अधिक मधुर, सुन्दर और स्थायी।

—यंग

सब ईश्वर करता है, और वह जो करता है वह अच्छेके ही लिये है, ऐसा समझकर आनन्दमें रहो।

—गांधी

आनन्द मनकी समता और दृढ़तामें है।

—अज्ञात

आनन्द सर्वोत्तम मदिरा है।

—जॉर्ज ईलियट

जीना आनन्दपूर्ण है, फिर भी मरनेसे न डरो।

—प्रायर

देखो, जो मनुष्य भ्रमात्मक भावोंसे मुक्त है और जिसकी दृष्टि स्वच्छ है, उसके लिये दुःख और अन्धकारका अन्त हो जाता है और उसे आनन्द प्राप्त होता है।

—तिरुवल्लुवर

आनन्दमें और दुःखमें एक गुण समान है, कि वे विचार-शक्तिका हरण कर लेते हैं।

—प्लेटन

बँटानेसे आनन्द दुगुना हो जाता है।

—गेटे

अपने जीवनको सीमित कर लेना हमेशा सुखद होता है।

—शोपेनहोर

आनन्द दुःखसे अधिक दैविक है; क्योंकि, आनन्द आहार है और दुःख औषध है।

—वार्ड बीचर

राम नामका सहारा चाहिये। सब उनको अर्पण किया तो आनन्द ही आनन्द है। —गांधी

हमें न तो दौलत ही आनन्द देती है और न महानता ही।

—ला फ़ॉण्ट

उस हृदयको जिसे पवित्र आनन्दसे लबालब भरना है, स्थिर रखना होगा।

—बोविस

ख़िताब और पदवियाँ, पोशाक और गणवेष, दर्जा और मरतबा, इसलिये आकर्षित करते हैं कि ये मनुष्यकी प्रदर्शनप्रियता को तृप्त करते हैं, किन्तु जीवनका आनन्द उनमें नहीं है।

—ए. पनसोबी

इस सचाईको जान ले (और आदमीके लिये इतना ही जान लेना काफ़ी है) कि सद्गुणशीलतामें ही आनन्द है।

—पोप

तर्क-शक्तिसे मनुष्यको सत्यका ज्ञान प्राप्त होता है; सत्यसे वह मनकी शांति पाता है; और मनकी शांतिसे उसका दुःख दूर होता है।

—योग वाशिष्ठ

एक फ्रांसीसी दार्शनिकने आनन्द-प्राप्तिके तीन नियम बतलाये, पहला था कार्य-व्यस्त रहना, दूसरा वही, तीसरा वही।

—अज्ञात

आनन्दका मूल सन्तोष है।

—मनु

जीवनका आनन्द विवेक पर निर्भर है।

—यंग

आनन्दके मानी शरीरकी ही पीड़ाओं और बीमारियोंसे छूट जाना नहीं है, बल्कि आत्माकी चिन्ताओं और यंत्रणाओंसे मुक्त हो जाना है।

—टिलटसन

उस व्यक्तिके आनन्दमें क्या वृद्धि की जा सकती है जो स्वस्थ है, ऋणमुक्त है, और जिसका अन्तःकरण निर्मल है?

—आदम स्मिथ

एक क्षण भी बग़ैर कामके रहना ईश्वरकी चोरी समझो, मैं दूसरा कोई रास्ता भीतरी या बाहरी आनन्दका नहीं जानता हूँ।

—गांधी

आनन्दघन

आनन्दघन स्थिति प्राप्त करनेका साधन चिद्घन अथवा विज्ञान है।

—अरविन्द घोष

आनन्द-मस्त

जो आनन्द-मस्त है वही आनन्द फैला सकता है।

—लैवेटर

आनन्दवर्षण

अपने इर्द-गिर्द आनन्दवर्षण (न कि कष्टवर्षण) की इच्छासे बेहतर, सूरत शकल और बर्तावको सुन्दर बनानेवाला कोई साधन नहीं।

—एमर्सन

आपत्ति

देखो, जो आदमी ऐशो-आरामको पसन्द नहीं करता और जो जानता है कि आपत्तियाँ भी सृष्टिनियमके अन्तर्गत हैं, वह बाधा पड़नेपर कभी परेशान नहीं होता।

—तिरुवल्लुवर

आपत्तियोंको जो आपत्ति नहीं समझते वे आपत्तियोंको ही आपत्तिमें डालकर वापस भेज देते हैं।

—तिरुवल्लुवर

जो आदमी आपत्तियोंसे दुखी होना नहीं चाहता, उसे दूसरोंको हानि पहुँचानेसे बचना चाहिये।

—तिरुवल्लुवर

मनुष्यको आपत्तिका सामना करनेके लिये सहायता देनेमें मुस्कानसे बढ़कर और कोई चीज़ नहीं है।

—तिरुवल्लुवर

दुष्ट मनुष्यपर जब कोई आपत्ति आती है तो बस उसके लिये एक ही मार्ग खुला होता है, और वह यह कि जितनी जल्द मुमकिन हो वह अपने आपको बेच डाले।

तिरुवल्लुवर

आपदा

ईश्वर आपदाओंका भला करे, क्योंकि इन्हींके ज़रिये हमने अपने शत्रुओं और मित्रोंको परख लिया है।

अज्ञात

आपा

वही आदमी अपना भला करेगा जिसने अपने आपेको पाक साफ़ किया, और वह आदमी अपना भला नहीं कर सकता जिसने अपने आपेको नीचे गिराया यानी अपनेको नापाक किया।

—क़ुरान

आफ़त

सारी आफ़त इच्छा और कामवासनामें है, नहीं तो इस दुनियामें शरबत ही शरबत है।

मौलाना रूम

आभारी

आभारी होना शर्मिंदगीकी हालत है।

—गोल्डस्मिथ

आभूषण

नम्रता और स्नेहार्द्र वाणी, बस ये ही मनुष्यके आभूषण हैं।

—तिरुवल्लुवर

आभास

यह ध्यान रख कि जिसे तू सत्य समझकर ग्रहण करता है कहीं वह उसका आभास मात्र न हो !

—अज्ञात

आर्य

जो प्राणियोंकी हिंसा करता है वह आर्य नहीं। समस्त प्राणियोंके साथ जो अहिंसाका बर्ताव करता है वही आर्य है।

—बुद्ध

आयु

जब आयुकी सीमा अन्तमें मृत्यु है, तब आयुका अधिक या न्यून होना बराबर सा ही है।

—अज्ञात

एक क्षण या पलभरकी आयु भी करोड़ों अशर्फ़ियोंके बदलेमें कभी नहीं मिल सकती। यदि ऐसी आयु यों ही बरबाद हो गई तो इससे बढ़कर हानि और क्या होगी ?

—शंकराचार्य

शुद्ध कर्म करनेवाला मनुष्य घंटे भर जिए तो अच्छा है, मगर इस लोक और परलोकको बिगाड़नेवाला, काले-काम करनेवाला लाख बरस जिए तो ख़राब।

—अज्ञात

करोड़ मुहरें ख़र्च करनेसे भी आयुका एक पल भी नहीं मिल सकता, वह अगर तमाम वृथा गई तो उससे अधिक हानि क्या है ?

—शंकराचार्य

आराम

ईसाई धर्ममें कहा है कि ईश्वरने छह दिन तक सृष्टि की और सातवें दिन विश्राम किया। यह सातवाँ दिन बहुत लम्बा हो गया है। ईश्वरके आराम करनेसे दुनियाके नाकों दम आ रहा है।

—पार्कशिगर

आलस

पापके लिये प्रायश्चित्त करना तो साधारण है, पर आलसके लिये प्रायश्चित्त करना असाधारण है।

—जुन्नुन

आलस्य

पानीमें अगर सिवार हो तो मनुष्य उसमें अपना प्रतिबिम्ब नहीं देख सकता। इसी प्रकार जिसका चित्त आलस्यसे पूर्ण होता है, वह अपना ही हित नहीं समझ सकता, दूसरोंका हित कैसे समझेगा ?

—बुद्ध

आलस्य एक प्रकारकी हिंसा है।

—गांधी

आलस्यमें दरिद्रताका वास है, मगर जो आलस्य नहीं करता उसके परिश्रममें कमला बसती है।

—तिरुवल्लुवर

आलस्यकी रफ़्तार इतनी धीमी है कि उसे दरिद्रता फ़ौरन आ दबाती है।

—अज्ञात

पहले ईमानदारी, फिर मकानदारी।

—अज्ञात

अगर इस दुनियामें आलस्य न होता तो कौन धनी या विद्वान् न बन जाता? सिर्फ आलस्यके कारण ही यह सारी पृथ्वी नर-पशुओं और कंगालोंसे भरी हुई है।

—अज्ञात

जो आलस्य डर नहीं रखता, वह प्रेमकी मधुरताका रसास्वादन नहीं कर सकता।

—अबुउस्मान

आलसी

एक दिन आलसी आदमी इस कारण काम नहीं करता कि आज बड़ी कड़ाकेकी सरदी पड़रही है और दूसरे दिन बेहद गरमीके कारण वह कामसे जी चुराता है। किसी दिन कहता है कि अब तो शाम हो गई है, कौन काम करने जाय; और किसी दिन यह कहता है कि अभी तो बहुत सबेरा है, कामका वक़्त अभी कहाँ हुआ है!

—बुद्ध

ईश्वर उसीकी सहायता करता है, जो स्वयं अपनी मदद करता है। वह आलसी पुरुषको मरने देना ही अधिक पसन्द करेगा।

—गांधी

आलोचक

बच्चोंको आलोचकोंकी अपेक्षा आदर्शोंकी अधिक आवश्यकता है।

—जोबर्ट

मेरा पहला नियम है कि मैं छिद्रान्वेषी आलोचकोंसे दूर रहता हूँ।

—गेटे

आलिम

बदतरीन आलिम वह है जो दौलतमन्दोंका मोहताज़ हुआ; और बहतरीन अमीर वह है जो आलिमका ख्वास्तगार हो।

—मुहम्मद

आलोचना

सबसे पहले यह करो कि दोषान्वेषण और आलोचनाकी आदत छोड़ दो।

—प्रोफेसर ब्लेथी

आवश्यकता

जीवनमें हमारी प्रधान आवश्यकता यह है कि कोई ऐसा मिले जो हमसे वह कराये जो हम कर सकते हैं ।

—एमर्सन

ज़मीन इन्सानको ज़िंदगीकी ज़रूरियात मुहय्या कर दे, तब कहीं उसे फ़ुर्सत या इच्छा होगी कि सूक्ष्मतर ख़ुशियों का अनुशीलन करे।

—गोल्डस्मिथ

अपनी आवश्यकताएँ थोड़ी कर तो सफल होगा; और आवश्यकताकी न्यूनता विद्वत्ताका चिह्न है।

—इब्न-उल-वर्दी

खुदकी कुछ आवश्यकता हो, वह न बताना यह बड़ा अभिमान और अन्याय है और उससे अपने प्रियजनों पर बड़ा बोझ पड़ता है। विनय और निरभिमान यह अपनी आवश्यकता जाननेके दुःखसे प्रियजनोंको बचाती है, यह विनयका पहला पाठ है।

—गांधी

आवाज़

चारित्रका परिचायक आवाज़के समान कोई शर्तिया लक्षण नहीं।

—टैनक्रेड

आशंका

सबसे अटल नियम यह है कि जैसी हम आशंका करते हैं वैसा हो गुज़रता है!

—थोरो

साँपकी आशंकासे अन्धा मनुष्य शिरपर डाली जानेवाली माला फेंक देता है।

—कालिदास

आश्चर्य

इससे अधिक आश्चर्यजनक कुछ नहीं है कि किस आसानी से थोड़ेसे लोग बहुतोंपर शासन करते हैं!

—अज्ञात

आशा

आशाको जीवनका लंगर कहा है उसका सहारा छोड़नेसे आदमी भवसागरमें बह जाता है, पर बिना हाथ-पैर हिलाये केवल आशा करनेसे ही काम नहीं सरता।

—लुक़मान

जो आशाके दास हैं वे सर्वलोकके दास हैं और आशा जिनकी दासी है उनकी तमाम दुनिया दासी बन जाती है।

—अज्ञात

जो आशाओंपर जीता है वह फ़ाक़े करके मरेगा।

—फ्रेंकलिन

जो मिल जाय उसीमें सन्तोष मानना, पराई आशासे निराशा अच्छी।

—हामम

हमेशा ईश्वरका भय रखो और प्रभुके सिवाय किसीकी आशा न रखो।

—हातिम हासम

धन्य है वह, जो आशा नहीं रखता, क्योंकि वह निराश नहीं होगा।

—स्विफ्ट

आशा मनुष्यका ऐसा आश्चर्यकारक बन्धन है, कि इसमें बँधा हुआ दुनियामें दौड़ादौड़ करता है और इससे छूटा हुआ पंगुकी तरह शान्त होकर बैठा रहता है।

—अज्ञात

अपनी आशाओंकी मुर्ग़ियोंके पर कैंच कर दो, वरना वे तुम्हें अपने पीछे भगा-नचाकर परेशान कर डालेंगी।

—मैकलिन

आशा और आनन्दका रुझान सच्ची दौलत है; भय और रंजका, सच्ची ग़रीबी।

—ह्यूम

ओ तुच्छ द्रव्यरूपी मृगतृष्णाके समुद्रका जल पीनेवाले पशु! कितने और कितनी बार तेरे मनोरथ भग्न हुए हैं! फिर भी तेरी आशा अभी तक शान्त नहीं होती! तेरा हृदय शतधा फट क्यों नहीं जाता? अवश्य ही वह पत्थरका बना होना चाहिये!

—अज्ञात

आशा ही परम दुःख है और निराशा ही परम सुख है।

—अज्ञात

आशा अमर है, उसकी आराधना कभी निष्फल नहीं होती।

—गांधी

लोगोंकी आशा छोड़, ऐसा करनेसे लोग भी तेरी आशा छोड़ देंगे। जो साधना करे, गुप्तरूपसे प्रभुके निमित्त कर, ईश्वर अपने आप जगत्की भलाईके लिये तेरे गौरवका प्रसार करेगा। तू दुनियाकी सेवा करेगा तो दुनिया भी तेरी सेवा करेगी।

—हातिमहासम

आशा अमर है, परन्तु उसके बच्चे एकएक करके मरते जाते हैं।

—अज्ञात

आशाकी आशामें निश्चित वस्तु न छोड़ दो।

—अज्ञात

यदि आनन्द और शोककी आशा न होती तो साधुके पैर स्वर्गमें होते, यदि मंत्री जितना राजासे डरता है उतना परमेश्वर से डरता तो फ़रिश्ता हो गया होता।

—अज्ञात

जब तक तुम संसारसे सुख-शांतिकी आशा रखोगे, ईश्वर के प्रति सन्तोषी नहीं बन सकोगे। यदि तुम सांसारिक भयोंसे डरोगे तो तुम्हारे मनमें ईश्वरका डर नहीं समा सकेगा। यदि तुम दूसरेकी आशा रखोगे तो ईश्वरकी आशा निष्फल होगी।

—अबु उस्मान

आशा ही वह मधुमक्षिका है जो बिना फूलोंके शहद बनाती है।

—इंगर सोल

नरकके बीज बोकर स्वर्गकी आशा रखनेसे अधिक मूर्खता क्या होगी?

—हयहया

आशावादी

आशावादी हर कठिनाईमें अवसर देखता है, निराशावादी हर अवसरमें कठिनाई देखता है।

—अज्ञात

आशिक़ी

सूरत पर आशिक़ होनेको अपने आपसे दुश्मनी करना समझ।

—अज्ञात

आश्रय

जो ईश्वरके सिवाय न किसीकी आशा रखता है न किसी का भय, वास्तवमें वही ईश्वर पर निर्भर रहनेवाला है।

—फ़ज़ल अयाज़

शैतानको छोड़कर खुदाका आश्रय लो।

—आबिस

चाहे कोई सर्वज्ञतुल्य गुणी हो वह बिना आश्रयके डूब जाता है, अमूल्य माणिक्यको भी स्वर्णके आश्रयकी ज़रूरत होती है।

—अज्ञात

आसक्ति

ईश्वरने कहा है- जो ज्ञानी संसार पर प्रेम रखता है उसके हृदयमेंसे मैं ईश्वर-स्तवन और उसके गुणगानमेंसे मिठास हर लेता हूँ।

—मलिक दिनार

आसक्ति भय और चिन्ताकी जड़ है।

—स्वामी रामतीर्थ

दुःखका मूल कारण आसक्ति है।

—महाभारत

अनासक्तिका अर्थ प्रेमकी कमी नहीं, जहाँ प्रेमका फल दुःख होता हुआ दिखाई दे वहाँ समझो कि आसक्ति है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

रखनेको फूल इकट्ठे करनेके लिये ठिठको मत, बल्कि चलते रहो, क्योंकि फूल तुम्हारे तमाम रास्ते भर अपनेको खिलाते रहेंगे।

—टैगोर

आसक्ति का राक्षस नष्ट कर दिया तो इच्छित वस्तुएँ तुम्हारी पूजा करने लगेंगी।

—स्वामी रामतीर्थ

यहाँके सुन्दर, कोमल और क़ीमती कपड़ों और स्वादिष्ठ भोजनोंमें आसक्त रहनेवालेको स्वर्गीय अन्न-वस्त्रसे वंचित रह जाना पड़ेगा।

—फ़ज़ल अयाज़

उन आदमियोंसे कैसे पेश आयें जो इरादोंसे तो ईमानदार हैं, परन्तु जिनकी अन्तरात्माएँ आसक्त हैं?

—नैपोलियन

बुरेसे बुरा दुर्भाग्य मनकी मौत है, संसारमें आसक्ति होना मनका मरना है।

—हुसेन बसराई

जबतक लोक और लौकिक पदार्थोंमें आसक्ति रहेगी, तबतक ईश्वरमें सच्ची आसक्ति न हो सकेगी।

—जुन्नुन

आसुरी-वृत्ति

आसुरी-वृत्तिके ख़िलाफ़ युद्ध करनेसे इन्कार करना नामर्दी है।

—गांधी

आँसू

ईश्वर कभी कभी अपने बच्चोंकी आँखोंको आँसुओंसे धोता है, ताकि वे उसकी क़ुदरत और उसके आदेशोंको सही पढ़ सकें।

काइलर

आहार

'जिसे हवा, पानी और अन्नका परिमाण समझमें आ गया वह अपने शरीर पर जितना अधिकार रख सकता है उतना डाक्टर कभी नहीं रख सकता।'

— गांधी

हम पशुओंकी सतह पर न उतर आयें जिनका कि प्रधान आनन्द खाने और पीनेमें है। हमारे अन्दर एक अमर आत्मा है जो परम कल्याणके सिवाय किसीसे तृप्त नहीं होती।

[illegible]

कोई इज़्ज़तदार आदमी, खाते वक़्त, डटकर नहीं खाता।

— [illegible]

शास्त्रदृष्टिसे तीन प्रकारका अन्न त्याज्य है : जिस अन्नसे रजोगुण बढ़ता है वह, जो अन्न गंदी जगह तैयार किया गया हो वह, और जिस अन्नसे दुष्ट मनुष्यका स्पर्श हो गया हो वह।

—विवेकानन्द

आज्ञापालन

दुष्ट आदमी डरसे आज्ञापालन करते हैं, अच्छे आदमी प्रेमसे।

—अरस्तू

[इ]

इख़लाक़

उम्दा इख़लाक़ दौलतसे नहीं मिलते, बल्कि दौलत उम्दा इख़लाक़से मिल जाया करती है।

—सुक़रात

इच्छा

इच्छासे दुःख आता है, इच्छासे भय आता है; जो इच्छाओं से मुक्त है वह न दुःख जानता है न भय।

—बुद्ध

इच्छापर विचारका शासन रहे।

—सिसरो

इच्छा कभी तृप्त नहीं होती; किन्तु अगर कोई मनुष्य उसको त्याग दे तो वह उसी दम सम्पूर्णताको प्राप्त कर लेता है।

—तिरुवल्लुवर

जब तुझे किसी मामलेमें भलाई-बुराई न सूझ पड़े, उस समय अपनी इच्छाका निरोध कर।

—अज्ञात

हमारी इच्छाएँ जितनी ही कम हों, उतने ही हम देवताओंके समान हैं।

—सुक़रात

मेरी इच्छायें मूर्ख हैं।

—अज्ञात

इच्छा मौत है, त्याग ज़िंदगी।

—अज्ञात

इच्छा एक रोग है।

—स्वामी रामतीर्थ

कुहरा पृथ्वीकी इच्छाकी तरह है वह उस सूरजको छिपा देता है जिसके लिये वह चिल्लाती है।

—टैगोर

तुम अपनी इच्छाओंको जितना घटाओगे उतने ही परमात्म-पदके निकट होगे।

—सुकरात

जिस क्षण तुम इच्छासे ऊपर उठ जाओगे, इच्छित वस्तु तुम्हारी तलाश करने लगेगी, यही नियम है।

—स्वामी रामतीर्थ

हमारी इच्छा जिंदगीके महज़ कुहरे और भापको इन्द्र-धनुषके रंग प्रदान करती है।

—टैगोर

सांसारिक आकांक्षा रखकर कोई साधना न करे, जो केवल प्रभुकी खोज करता है, उसकी इच्छा पूर्ण हो जाती है।

—अज्ञात

इच्छा-शक्ति

अपनी प्रचण्ड इच्छा-शक्तिसे कोई कब क्या बन जायेगा, कह नहीं सकते।

—पटोरिया

इच्छाशक्ति शक्तिका स्रोत है, आत्मा है, परमात्मा है।

—अज्ञात

महान् आत्माओंकी इच्छा-शक्तियाँ होती हैं; दुर्बल आत्माओंकी सिर्फ इच्छायें।

—चीनी कहावत

इच्छुक

लोकके चाहनेवाले क्रूर हैं, परलोकके चाहनेवाले मजूर हैं, मालिकके चाहनेवाले शूर हैं।

—अज्ञात

इठलाना

अपने पद या स्थानपर इठलाना, अपनेको उससे नीचा दर्शाना है।

—स्टेनिस्लो

इज़्ज़त

मान-बड़ाई और सुख-चैन शायद ही कभी साथ रहते हों।

—कहावत

दुष्ट आदमीको दौलत और इज़्ज़त देना, गोया बुख़ारके मरीज़को तेज़ शराब पिलाना है।

—प्लुटार्क

इज़्ज़त और शर्म किसी दशासे पैदा नहीं होते, अपने पार्टको अच्छी तरह खेलो, इसीमें सारी इज़्ज़त है।

—पोप

दुनियाकी इज़्ज़त-आबरू शैतानकी शराब है।

—हयहया

दुनियामें इज़्ज़तके साथ जीनेका सबसे छोटा और सबसे शर्तिया उपाय यह है कि हम जो कुछ बाहरसे दिखना चाहते हैं वैसे ही वास्तवमें हों भी।

—सुक़रात

अपनी इज़्ज़तको ईज़ा पहुँचानेकी अपेक्षा दस हज़ार बार मरना अच्छा।

—एडीसन

आदमीके लिये यह शर्मकी बात है कि वह केवल अपने शरीफ़ पूर्वजोंके कारण ही इज़्ज़त चाहे, और ख़ुद अपने सद्गुणोंसे उसका हक़दार बननेकी कोशिश न करे।

—अज्ञात

मेरी इज़्ज़त मेरी ज़िन्दगी है, दोनों साथ-साथ बढ़ती हैं, मेरी इज़्ज़त ले लो तो मेरी जिंदगी ख़त्म हो जाय।

—शेक्सपियर

इतिहास

इतिहास दर्शाता है कि चन्द व्यक्तियोंकी कथायोंने लोगों पर कैसे-कैसे दुःख ढाये।

—लिंगार्ड

जो लोग इतिहासके मज़मून बनते हैं, उन्हें उसके लिखने की फ़ुर्सत नहीं होती।

—मैटर्लिनक

इत्तिफ़ाक़

जिसे लोग इत्तिफ़ाक़ कहते हैं वह ख़ुदाकी मुबारिक ख़बरदारी है।

—शैली

इन्द्रियाँ

इन्द्रियोंको वशमें करना सुज्ञ पुरुषका काम है, उसके वश हो जाना मूर्ख का।

—एपिक्टेटस

इन्द्रिय-निग्रह

जहाँ बुद्धि और भावनाका मेल नहीं दीखता, वहाँ इन्द्रिय-निग्रहका अभाव है।

—विनोबा

जैसे कछुआ अपने सब अंगोंको समेट लेता है, उसीप्रकार जब मनुष्य अपनी इन्द्रियोंको विषयोंमें से खींच लेता है, तभी उसकी बुद्धि स्थिर होती है।

—महाभारत

तूफ़ानी घोड़ेकी रस्सीको ढील देकर उसे चाहे जहाँ जाने देनेके लिये अधिक सामर्थ्यकी ज़रूरत नहीं, यह तो कोई भी कर सकता है; मगर रस्सी खींचकर उसे खड़ा रखनेमें कितने समर्थ हैं ?

—विवेकानन्द

इरादा

'उसका इरादा अच्छा है' यह फ़िज़ूल है अगर वह अच्छा काम न करे।

—अज्ञात

इन्सान

इन्सान जब हैवान बन जाता है उस वक़्त वह हैवानसे बदतर होता है।

—टैगोर

इन्सानियत

तुमने हमें हवामें चिड़ियोंकी तरह उड़ना व समुद्रमें मछलियोंकी तरह तैरना सिखाया लेकिन ज़मीन पर कैसे रहा जाता है यह तुम भी नहीं जानते।

—भारतके एक दार्शनिकका अंग्रेज़को कहना

इबादत

आदत और इबादत एक साथ नहीं रह सकतीं अगर तू इबादत करना चाहता है तो आदतका त्याग कर दे।

—शब्सतरी

इरादा

हम अपने उत्तमतर कामों तकमें अक्सर शर्मिंदा हो जायँ, अगर दुनिया सिर्फ उन इरादोंको देख सके जिनकी प्रेरणासे वे किये गये थे।

—गेटे

आदमी कृतियोंपर विचार करता है, लेकिन ईश्वर इरादों-को तोलता है।

—अज्ञात

इलाज

सूरज-तले हर बेहूदगीका इलाज या तो है या नहीं; अगर इलाज है तो उसका पता लगानेकी कोशिश करो, अगर नहीं है तो उसको धता पिलानेकी कोशिश करो।

—अज्ञात

समय वह जड़ी है जो तमाम रोगोंका इलाज कर देती है।

—फ्रैंकलिन

इहलोक

'इस दुनियामें झेंपना अच्छा है बजाय इसके कि हमें अगली दुनियाँमें कष्ट भोगना पड़े।

—ह० मुहम्मद



[ई]

ईज़ा

ईज़ाओंको खाकपर और मेहरबानियोंको संगमरमर पर लिखो।

—प्लेटो

ईद

ईद नहीं तो फ़ाक़ा।

—अज्ञात

ईमान

'ईमान क्या है ?'

'सहनशीलता और दूसरोंका उपकार करना।'

—अज्ञात

ईमान क्या है ? सब्र करना और दूसरोंकी भलाई करना।

—मुहम्मद

अगर मोमिन (ईमानवाला) होना चाहता है तो अपने पड़ोसीका भला कर और अगर मुसलिम होना चाहता है तो जो कुछ अपने लिये अच्छा समझता है वही सबके लिये अच्छा समझ।

—मुहम्मद

ईमानदार

ईमानदार आदमीका सोचना लगभग हमेशा न्यायपूर्ण होता है।

—रूसो

ईमानदार होना, फ़ी ज़माना, दस हज़ारमें एक होना है।

—शेक्सपियर

ईमानदार मनुष्य ईश्वरकी सर्वोत्कृष्ट कृति है।

—फ्लीथिकर

आदमी पहले ईमानदार और नेक बने, और बादमें तहज़ीब और खुशनूदी की पालिश चढ़ाये।

—स्पर्जियन

ईमानदार आदमी ईश्वरकी सर्वोत्कृष्ट कृति है।

—पोप

ईश-कृपा

जब सत्कर्मीको असह्य कष्ट हो तो समझना चाहिये कि ईश्वर शीघ्र ही उसपर कृपा करनेवाला है।

—अज्ञात

ईश्वरकी कृपाके बिना मनुष्यके प्रयत्नसे कुछ भी नहीं मिल सकता।

—बायजीद

ईश्वरने कहा है—मैं अपनी स्वाभाविक करुणासे मनुष्य को उसकी इच्छासे भी विशेष देता हूँ।

—सादिक़

ईशचिन्तन

जिस मुहूर्तमें या क्षणमें ईश्वरका चिन्तन न किया उसे महाहानि समझो, उसे महाछिद्र मानो और वही अन्धता, जड़ता और मूढ़ता है।

—मार्कण्डेय

जितनी बार साँस लेते हो उससे अधिक बार ईश-चिंतबन करो।

—एपिक्टेटस

ईश-प्राप्ति

जबतक कोई शख़्स 'अल्लाह हो! अल्लाह हो! हे भगवन्! हे भगवन्!' चिल्लाता है निश्चय जानो उसे ईश्वर नहीं मिला, जो उसे पा लेता है चुप और शांत हो जाता है।

—रामकृष्ण परमहंस

ज्ञान, उपासना और कर्म ये ईश्वर-प्राप्तिके तीन विभिन्न मार्ग नहीं हैं— ये तीनों मिलकर एक मार्ग है।

—गांधी

ईश्वर-प्राप्तिके लिये मुझे अपनी अनासक्ति ही अच्छी लगती है। उसमें सब कुछ आ जाता है।

—गांधी

ईश-प्रेम

जहाँ ईश्वरके प्रति सबसे ज़्यादा प्रेम है वहाँ सबसे सच्ची और सबसे बड़ी दानशीलता होगी।

—सूदे

ईश्वर पर प्रेम करना और फ़क़्त उसीकी सेवा करना इसके सिवाय सब फ़िज़ूल है।

—अज्ञात

ईश-दर्शन

जबतक कामिनी और कंचनका मोह नहीं छूट जाता, ईश्वर के दर्शन नहीं हो सकते।

—रामकृष्ण परमहंस

ईश्वरके दर्शन तब होते हैं जब मन बिल्कुल शान्त हो जाता है।

—रामकृष्ण परमहंस

मैंने तुझे उसी तरह देखा है, जिस तरह कि अर्ध-जागृत बालक प्रातःकालके धुँधलेपनमें अपनी माँको देखता है और तब मुस्कराता है फिर सो जाता है।

—टैगोर

जबतक इच्छाका लवलेश भी विद्यमान है ईश्वरका दर्शन नहीं हो सकता, इसलिये अपनी छोटी छोटी इच्छाओंको पूरी कर ले, और सम्यक् विचार और विवेकद्वारा बड़ी बड़ी इच्छाओं का त्याग कर दे।

—रामकृष्ण परमहंस

जिसके चित्तमें तरंगे उठती ही रहती हैं वह सत्यके दर्शन कैसे कर सकता है। चित्तमें तरंगका उठना समुद्रके तूफ़ान जैसा है। तूफ़ानमें जो तूफ़ान पर क़ाबू रख सकता है वह सलामत रहता है। ऐसे ही चित्तकी अशांतिमें जो रामनामका आश्रय लेता है वह जीत जाता है।

—महात्मा गांधी

ईश्वर

न तो शास्त्र और न गुरु ही तुम्हें परमेश्वरके दर्शन करा सकते हैं। मनुष्य स्वयं ही शुद्धबुद्धिसे अपनी आत्मामें परमात्माको देखता है।

—अज्ञात

जब तक हम ईश्वरकी लाईनपर काम करते हैं, वह हमारी मदद करेगा। जब हम अपनी लाइनोंपर काम करनेकी कोशिश करते हैं, तो वह असफलता देकर हमें झिड़कता है।

—टी० एल० कॉयलर

तपस्वियो, 'उस'से डरो, बस फिर तुम्हें किसी औरसे न डरना पड़ेगा। 'उस'की सेवाको तुम अपना आनन्द बना लो, तुम्हारी आवश्यकताकी पूर्ति करना 'उस'का काम होगा।

—अज्ञात

ईश्वर न दूर है न दुर्लभ है, महाबोधमयी अपना आत्मा ही ईश्वर है।

—अज्ञात

ईश्वर अन्तरात्मा ही है।

—गांधी

मेरा ईश्वर तो मेरा सत्य और प्रेम है। नीति और सदाचार ईश्वर है, निर्भयता ईश्वर है।

—गांधी

ईश्वर आनन्द है।

—अज्ञात

ईश्वर ही पूर्णतः इच्छा-रहित है। मानवीय सद्गुणोंमें वही सर्वोत्कृष्ट और दैविक है जिसमें ज़रूरत कमसे कम है।

—प्लुटार्क

केवल शास्त्र पढ़कर ईश्वरकी व्याख्या करना ऐसा है जैसा बनारस शहरको सिर्फ़ नक़्शेमें देखकर किसीको उसका विवरण सुनाना।

—रामकृष्ण परमहंस

जो ईश्वरका क्रोध पहिचानता है वह क्रोधरहित होता है। जो ईश्वरकी क्षमा पहिचानता है वह क्षमावान् होता है।

—विनोबा

ईश्वरसे प्रेम करो, वह तुम्हारे साथ रहेगा, ईश्वराज्ञा पालो, वह तुमपर अपने गहनतम राज़ रोशन कर देगा।

—रॉबर्टसन

ईश्वर कल्पवृक्ष है; जो उसके समक्ष कहता है—'हे प्रभो, मेरे पास कुछ नहीं है'—उसे सचमुच कुछ नहीं मिलता, लेकिन जो कहता है—'हे भगवन्, तूने मुझे सब कुछ दिया है'—उसे सब कुछ मिल जाता है।

—रामकृष्ण परमहंस

ईश्वरके दो निवासस्थान हैं—एक वैकुंठमें, और दूसरा नम्र और कृतज्ञ हृदयमें।

—आइज़ाक वाल्टन

ईश्वरके रहस्यको तू तभी समझ सकेगा जबकि अपने दिलको साफ़ बना लेगा।

—जामी

हवनकी सामग्री भी ब्रह्म है। घी भी ब्रह्म है, आग भी ब्रह्म है, हवन करनेवाला भी ब्रह्म है, और जो आदमी इस ब्रह्म-कर्ममें लगा हुआ है, वह ब्रह्म ही को पहुँचता है।

—गीता

शारीरिक काम ज़्यादा करो। .... सब काम करनेमें ईश्वरके दर्शन करो, क्योंकि ईश्वर सबमें भरा है।

—गांधी

कोई कहते हैं 'ईश्वर अज्ञेय है' अगर 'अज्ञेय' है तो 'है' किस परसे? अगर 'है' तो 'अज्ञेय' कैसा?

—अज्ञात

ईश्वर लोगोंको गहरे पानीमें डुबानेके लिये नहीं—साफ़ करनेके लिये लाता है।

—औवे

दृश्य ईश्वर क्या है? ग़रीबकी सेवा।

—गांधी

ईश्वर भौतिक सृष्टिका उपद्रष्टा, नैतिकताका अनुमन्ता, आस्तिकोंका भर्ता, निष्कामियोंका भोक्ता और भक्तोंका महेश्वर है।

—विनोबा

जबतक कोई हमेशा सच न बोले ईश्वरको नहीं पा सकता, क्योंकि ईश्वर सत्यकी आत्मा है।

—रामकृष्ण परमहंस

जो ईश्वर तेरा पिता है तो मनुष्य तेरा भाई है।

—अज्ञात

ईश्वरके नाम तो अनेक हैं, लेकिन एक ही नाम ढूँढ़ें तो वह है सत्-सत्य। इसलिये सत्य ही ईश्वर है।

—गांधी

मनुष्य जिसका ध्यान करता है, उसके मार्फ़त ईश्वरको निश्चित देखता है।

—गांधी

जो मनुष्य ईश्वरसे डरता है, उसके कामोंका फल अच्छा हुआ करता है, और ईश्वर उसे प्रत्येक बुराईसे बचाता है।

—अबुल-फ़तह-बुस्ती

अल्लाह कहता है—कि मैं ऊपर या नीचे, ज़मीनमें या आसमानमें या अर्श पर कहीं नहीं समा सकता, पर मैं मोमिन (विश्वासी भक्त) के दिलमें रहता हूँ, जो मुझे ढूँढ़ना चाहे वहीं ढूँढ़ ले।

—मुहम्मद

तू अल्लाहको मख़लूक़ यानी दुनियासे अलग मत देख और न मख़लूक़ (आदमियों, जानवरों और सब चीज़ों) को अल्लाहके सिवा किसी दूसरे रूपका समझ।

—सूफ़ी मुहीउद्दीन इब्न

अगर तुम ईश्वरको देखना चाहते हो, तो तुम्हें ईश्वर बन जाना पड़ेगा।

—बर्नार्ड शा

जो मुझे (ईश्वरको) सब जगह और सब चीज़ोंको मेरे अन्दर देखता है, वह न कभी मुझसे अलग होता है और न मैं उससे अलग होता हूँ। जो आदमी एकदिल होकर सब जानदारोंके अन्दर सबके घटमें रहनेवाले ईश्वरकी पूजा करता है वह योगी चाहे कहीं भी रहे ईश्वरके अन्दर है।

—गीता

ईश्वर हमको कभी नहीं भूलता, हम उसको भूलते हैं वही सच्चा दुःख है।

—गांधी

मैं ही मिठाइयोंकी मिठास हूँ, मैं ही बादामके अन्दर रोगन हूँ, कभी मैं बादशाहोंका ताज होता हूँ, कभी होशियारोंकी होशियारी और कभी मुफ़लिसोंकी मुफ़लिसी।

—मौलाना रूमीकी मसनवी

जो अपने सब काम ईश्वरके ऊपर छोड़कर बे लगाव होकर काम करता है उसे पाप नहीं लगता।

—गीता

जो अल्लाह पर तवक्कुल करता है [सब कुछ उसी पर छोड़ देता है] उसके लिये अल्लाह काफ़ी है।

—क़ुरान

सन्तोंकी वाणी सुनो, शास्त्र पढ़ो, विद्वान् हो लो, लेकिन अगर ईश्वरको हृदयमें स्थान नहीं दिया तो कुछ नहीं किया।

—गांधी

मैं पानी जैसी चीजों में रस हूँ, सूरज और चाँदकी रोशनी हूँ, वेदोंमें 'ॐ' हूँ, आकाशमें आवाज़ हूँ, लोगोंमें उनकी हिम्मत हूँ, ज़मीनमें खुशबू हूँ, आगमें उसकी दमक हूँ, तपस्वियोंका तप हूँ और सब जानदारोंकी जान हूँ।

—कृष्ण

अगर मुझे यह विश्वास हो जाता कि मैं हिमालयकी किसी गुफामें ईश्वरको पा सकता हूँ, तो मैं तुरन्त वहाँ चल देता। पर मैं जानता हूँ कि मैं इस मनुष्यजातिको छोड़कर उसे और कहीं नहीं पा सकता।

—गांधी

ईश्वर-कृपा उनपर होती है जिनके दिमाग़ साफ़ हैं और हाथ मज़बूत।

—वार्ड बीचर

जिसने यह समझा कि ईश्वर नहीं जाना जा सकता वही जानता है, उसे जाननेका दावा करनेवाले असलमें उसे नहीं जानते, उसे वे ही जानते हैं जो उसे जाननेका दावा नहीं करते।

—सामवेद

'वह मेरे दिलमें है और मेरा दिल उसके हाथमें है, जिस तरह आइना मेरे हाथमें है और मैं आइनेमें हूँ।'

—एक सूफ़ी

वह आप ही प्याला है, आप ही कुम्हार है, आप ही प्यालेकी मिट्टी है और आप ही उस प्यालेसे पीनेवाला है। वह खुद आकर प्याला खरीदता है और खुद ही प्यालेको तोड़कर चल देता है।

—एक सूफ़ी

ईश्वर हमारा आश्रय है, वही हमारा बल है और वही आपत्तिके समयमें हमारी रक्षा करता है—

—('साम' ४६–१), बाइबिल

ईश्वर सत्य और नित्य यानी हक़ और लाज़वाल है, बाक़ी सब असत्य और अनित्य यानी बातिल और फ़ानी है, यह समझते हुए अपने सब फ़र्ज़ोंको पूरा करना ही असली 'यज्ञ' है।

—गीता

वही सब कुछ जानता है और जो उसे जान जाय वह भी सब कुछ जानता है।

—गीता

यह सभी उसका 'विश्वरूप' है। इसलिये आदमीको चाहिये कि दुनियाके सब प्राणियोंके साथ दोस्ती और मेल रखे (निर्वैरः सर्वभूतेषु)।

—गीता

आदमी सिर्फ़ 'आत्मयोग'के ज़रिये यानी अपने नफ़्सको क़ाबूमें करके और 'अनन्य-भक्ति'के ज़रिये ही उसे जान सकता है, ठीक ठीक देख सकता है और उसीमें लय होकर समा सकता है।

—गीता

ईश्वर ही सत्य है, दुनिया माया है।

—स्वामी रामतीर्थ

सब भूतोंके हृदय-प्रदेशमें रहनेवाला ईश्वर सब भूतोंको, अपनी मायासे, यंत्रपर बैठे हुओं की तरह चला रहा है।

—गीता

ईश्वर सब लोगोंमें है, मगर सब लोग ईश्वरमें नहीं हैं और इसलिये वे दुःखी हैं।

—स्वामी रामकृष्ण

ईश्वर ही ईश्वरको समझ सकता है।

—डॉक्टर यंग

ईश्वर आत्माकी दुलहिन या दूल्हा है।

—एमर्सन

ईश्वर सबसे भिन्न है, फिर भी सबमें समाया हुआ है।

—अज्ञात

मानवताकी सेवाके द्वारा ही ईश्वरके साक्षात्कारका प्रयत्न मैं कर रहा हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि ईश्वर न तो स्वर्गमें है और न पातालमें, बल्कि हर एकके हृदयमें है।

—गांधी

न मैं कैलाशमें रहता हूँ न वैकुण्ठमें, मेरा वास भक्तोंके हृदयमें है।

—शिवस्तोत्र

जैसा मेरा हृदय है, वैसा ही मेरा ईश्वर है।

—ल्यूथर

ईश्वर-स्मरण

अखंड ईश्वर-स्मरण माने अखंड कर्त्तव्यजागृति।

—विनोबा

विपत्तियाँ विपत्तियाँ नहीं हैं, सम्पत्ति सम्पत्ति नहीं है, ईश्वरका विस्मरण ही विपत्ति है और ईश्वरका स्मरण ही सम्पत्ति है।

—अज्ञात

ईश्वर-शरणता

ईश्वर-शरणताकी मूर्ति फलका त्याग ।

—विनोबा

ईश-विमुख

आगमें पड़े हुए होने पर भी ईश्वर-विमुख मनुष्योंके हाथ का ठंडा पानी होठोंसे न लगाना ।

—शाक्सतरी

ईश्वरार्पण

मनुष्य कब ईश्वरार्पण हो सकता है ? जब कि वह अपने आपको—अपने हर एक कामको बिलकुल भूल जाय, सर्वभावसे उसका आसरा ले ले और उसके सिवा किसी दूसरेसे न तो आशा रखे, न सम्बन्ध रखे ।

—जुन्नुन

ईश्वर-सिद्धि

खोजनेवालोंकी लगनसे नहीं, खोजनेवालोंके अन्धेपनसे ईश्वर सिद्ध होता है ।

—पास्कल

ईश्वरेच्छा

ईश्वरकी मंशाको इस तरह पूरा कर, मानो वह तेरी ही मंशा हो और वह तेरी मंशाको इस तरह पूरी करेगा, मानो कि वह उसकी ही मंशा हो

—रब्बी

ईश-समान

जिसके दिलमें स्त्रीकी आँखोंके तीरोंने असर नहीं किया, घोर क्रोधकी काली रातमें जो जागृत रहा, लोभके फंदेमें जिसने अपना गला नहीं बँधने दिया, वह आदमी भगवान्‌के समान है। वह गुण साधनसे नहीं, ईश-कृपासे मिलता है।

—रामायण

ईश-साक्षात्कार

यह नहीं हो सकता कि तुम दुनियाके मज़े ले सको, कि तुम तुच्छ, निकृष्ट, शर्मनाक, गन्दे सांसारिक इन्द्रियभोगोंके मज़े भी लेते रहो और ईश-साक्षात्कारके भी दावेदार बन सको।

—स्वामी रामतीर्थ

मुझे अपने परमात्माकी प्राप्ति इसी जन्ममें करनी है। हाँ, मैं उसे तीन दिनमें प्राप्त कर लूँगा, नहीं, उसके नामको सिर्फ़ एक बार लेनेसे ही मैं उसे अपने तक ज़रूर खींच लूँगा,—ऐसे उत्कट प्रेमसे परमात्मा तुरन्त खिंचा चला आता है और उसकी अनुभूति हो जाती है, अर्ध-विदग्ध प्रेमियोंको अगर वह मिला भी तो युगोंके बाद मिलता है।

—रामकृष्ण परमहंस

ईर्ष्या

ईर्ष्या करनेवालेके लिये ईर्ष्याकी बला ही काफ़ी है; उसके दुश्मन उसे छोड़ भी दें तो भी उसकी ईर्ष्या ही उसका सर्वनाश कर देगी।

—तिरुवल्लुवर

अगर हम तुलनाएँ न करें तो हमें अपनी ही वस्तुएँ खुश रखती हैं; वह कभी सुखी नहीं हो सकता, जो अपनेसे अधिक सुखी को देखकर क्लेश पाता है ।

—अज्ञात

सच पूछो तो ईर्ष्याका तात्पर्य यही है कि ईर्ष्यावान् जिसकी ईर्ष्या करता है उसको अपनेसे बड़ा मानता है ।

—जान हापर

ईर्ष्या चारों ओरसे दूसरोंकी कीर्तिके प्रकाश-मण्डलसे घिरी रहती है जिसके भीतर यह बिच्छूकी तरह जो ज्वालासे घिर गया हो अपनेको आप ही डंक मारती हुई मर मिटती है ।

—लुक़मान

लक्ष्मी ईर्ष्या करनेवालेके पास नहीं रह सकती, वह उसको अपनी बड़ी बहन (दरिद्रता) के हवाले करके चली जायेगी ।

—तिरुवल्लुवर

वह फूल जो अकेला है उसे उन काँटोंपर रश्क करनेकी क्या ज़रूरत है जो तायदादमें बेशुमार हैं ?

—टैगोर

दुष्टा ईर्ष्या दरिद्रतादानवीको बुलाती है और आदमीको नरकके द्वार तक ले जाती है ।

—तिरुवल्लुवर

[उ]

उच्च

उच्च आदमी सत्कर्मका विचार करता है, तुच्छ आदमी आरामका, उच्च आदमी नियमकी पाबन्दियों का विचार करता है, तुच्छ आदमी उन मेहरबानियोंका जो उसे प्राप्त हो सकती हैं।

—कनफ्यूशियस

उच्चता

उच्चपद तक टेढ़ी-मेढ़ी सीढ़ीके बगैर नहीं पहुँचा जा सकता।

—लॉर्ड बेकन

उजड्डपन

कोई हो और कहीं हो, वह हमेशा गलती पर है अगर वह उजड्डपनसे पेश आता है।

—मौरिस बेरिंग

नियम ले लो कि अपने हृदयकी नेकी और दयालुताको बाहरी उजड्डपनके पर्देमें कभी न छिपाओगे।

—अज्ञात

उत्कटता

साधन अल्प भले ही हों परन्तु उत्कटता तार देगी।

—विनोबा

उत्कर्ष

समाजका महान् उत्कर्ष व्यक्तिगत चारित्र्यमें है।

—चैनिंग

उत्कृष्टता

बुरा काम करना कमीनापन है, बिना खतरा उठाये अच्छा काम करना, साधारण बात है, लेकिन उत्कृष्ट मनुष्य ही है जो कि महान् और नेक कामोंको, अपना सब कुछ होमकर भी, कर दिखाता है।

—प्लुटार्क

उत्तरायण

असत्यसे सत्यकी ओर, अँधेरेसे उजालेकी ओर, मृत्युसे अमृतकी ओर ये साधकका उत्तरायण है।

—अज्ञात

उत्साह

उत्साह अत्यन्त बलवान है, उत्साह सरीखा दूसरा बल नहीं, उत्साही पुरुषको लोकमें कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

—रामायण

अनन्त-उत्साह—बस यही तो शक्ति है, जिसमें उत्साह नहीं है वे और कुछ नहीं, केवल काठके पुतले हैं।

—तिरुवल्लुवर

उत्साह प्रेमका फल है। जिसमें सच्चा प्रभु-प्रेम होता है वही उसके दर्शनके लिये उत्सुक रहता है।

—अनुरूभान

बिना उत्साहके आदमी महज़ एक पुतला है

—अज्ञात

उत्साह जवानोंको जवान बनाये रखता है और बुड्ढोंको जवान बनाता है।

—अज्ञात

उत्तर

'कुछ जवाब न देना भी एक जवाब है।

—कहावत

'मूर्खको उसकी मूर्खताके अनुरूप ही उत्तर न दो, नहीं तो तुम भी उसीके अनुरूप हो जाओगे।

—अज्ञात

उतावली

"उतावला सो बावला, धीरा सो गंभीरा।" प्रतिक्षण इसका सत्य देखा जाता है।

—गांधी

उत्साह

उत्साह आदमीकी भाग्यशीलताका पैमाना है।

—तिरुवल्लुवर

उदार

दिलदार आदमीका वैभव गाँवके बीचोबीच उगे हुए और फलोंसे लदे हुए वृक्षके समान है।

—तिरुवल्लुवर

'यह मेरा यह दूसरेका'—ऐसा तंगदिल लोग गिनते हैं। उदार-चित्त वाले तो सारी दुनियाको कुटुम्बरूप समझते हैं।

—हितोपदेश

विजेता आतंक जमाता है, ज्ञानीका हम आदर करते हैं, लेकिन उदार मनुष्य ही हमारा स्नेह-भाजन होता है।

—फ्रेंचसे

उदार मनवाले विभिन्न धर्मोंमें सत्य देखते हैं; संकीर्ण मनवाले सिर्फ़ फ़र्क़ देखते हैं।

—चीनी कहावत

जिसके पास जो है उसीसे उदार नहीं है, तो वह यह सोचकर कि ज़्यादा मिलनेपर उदार बनूँगा, अपने आपको सिर्फ़ धोखा देता है।

—गुमर

जो वास्तवमें उदार है वही वास्तवमें ज्ञानी है, और वह जो कि दूसरोंसे प्रेम नहीं करता, बरकतहीन ज़िंदगी बसर करता है।

—होम

केवल उदार हृदयवाले सच्चे मित्र हो सकते हैं। नीच और कायर मनुष्य सच्ची मित्रताको नहीं जानता।

—चार्ल्स किंग्सले

उदारता

उदारता अधिक देनेमें नहीं बल्कि समझदारीसे देनेमें है।

—फ्रैंकलिन

जलप्रपात गाता है, "मैं ख़ुशीमें अपना सारा पानी देता हूँ, गोकि प्यासेके लिये इसका ज़रा-सा ही काफ़ी है।"

—टैगोर

उदारताके समान सद्‌गुण नहीं है और कृपणताके समान कोई अवगुण नहीं है।

—अज्ञात

उदार आदमी जब तक जीता है आनन्दसे जीता है; और तंगदिलवाला ज़िंदगी भर दुःखी रहता है।

—क़ैस बिन-इब्न ख़तीम

जब कि मुझपर लक्ष्मीकी कृपा रहती है, तब मेरी सारी सम्पत्ति औरोंके लिये होती है। पर जब मैं द्रव्यहीन हो जाता हूँ तो उनकी करुणाका पात्र नहीं बना करता।

उद्यम

अपने अमूल्य समयकी एक एक घड़ी उद्यममें गुज़ारनी चाहिये। यही आनन्द है। इससे कोई क्षण ऐसा नहीं रह पाता जब कि हमें पछतावा या सोच करना पड़े।

—एमर्सन

एक उद्यमी मज़दूर यह नहीं समझता कि उसका उद्यम उसे उस महान् मज़दूरके कितना नज़दीक पहुँचाता है जो रात दिन व्यस्त रहता है।

—व्हिटमैन

शरीरको बचानेके लिये बहुत उद्यम करता हूँ, आत्माको पहचाननेके लिये इतना करता हूँ क्या?

—गांधी

उद्योग

शारीरिक उद्योग करना मनुष्यका धर्म है। जो उद्योग नहीं करता वह चोरीका अन्न खाता है।

—गांधी

उद्योग प्रत्यक्ष है और भाग्य अनुमान है, अनुमानकी अपेक्षा प्रत्यक्षका महत्त्व अधिक है।

—गुरु वशिष्ठ

अन्तःकरणकी पवित्रता, दृढनिश्चय और धीर वृत्ति इतनी ही पूँजीसे उद्योग शुरू कर देना चाहिये।

—विवेकानन्द

उद्योग तो करना ही चाहिये। फल उसी तरह मिलेगा। जिस तरह कि उस बिल्लीको मिलता है, जिसके अगर्चे गाय नहीं है मगर दूध रोज़ पीती है।

—अज्ञात

उद्योग न करनेसे एक ही बात संभव है कि उस उद्योगसे मिलनेवाला फल न मिले; परन्तु उद्योग करते रहनेसे फल प्राप्त होना व न होना ये दो संभावनायें हैं।

—अज्ञात

उद्योग न करनेवाले दरिद्री मनुष्यपर हमेशा संकट पड़ते रहते हैं।

—अज्ञात

सतत उद्योग करनेवाला अक्षय सुख प्राप्त करता है।

—महाभारत

सतत उद्योग लक्ष्मीका, लाभका और कल्याणका मूल है।

—अज्ञात

उद्योग ही उत्कर्ष है।

—अज्ञात

उद्धार

'सम्पूर्ण भारतके उद्धारका भार बिना कारण सिर पर मत लो। अपना निजका ही उद्धार करो। इतना भार काफ़ी है। सब कुछ अपने व्यक्तित्व पर ही लागू करना चाहिये। हम स्वयं ही भारतवर्ष हैं, बस यही माननेमें आत्माका बड़प्पन है। तुम्हारा उद्धार ही भारतवर्षका उद्धार है। शेष सब व्यर्थ है, ढोंग है। तुमसे सच्चे आत्म-प्रेमका रस उत्पन्न हो इसीमें तुम डूबे रहो। शेषकी चिन्ता तुमको और मुझको करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। दूसरेकी चिन्ता करते करते कुछ हाथ न आयेगा।

—गांधी

सद्धर्मीको बहुत ही यंत्रणायें सहनी पड़ती हैं, परन्तु प्रभु उसे उन सबसे तार देता है।

—बाइबिल

चतुर मनुष्यको चाहिये कि हर प्रयत्न करके दीन स्थितिसे अपना उद्धार करे।

—अज्ञात

ज़मानेके उद्धार करनेवाले तुम कौन? क्या तुम, अपना उद्धार कर चुके हो?

—अज्ञात

जो स्वयं संसारकी वासनाओंमें मुग्ध है, वह दूसरोंका उद्धार कैसे कर सकता है?

—आचार्य विजयधर्म सूरि

उद्वेग

उद्वेग ज़रा भी न रखना चाहिये। 'जो होता है सो भलेके लिये' ऐसा समझकर धैर्य और शौर्यसे सन्तोषका सेवन करना चाहिये। इससे पहाड़ सरीखे संकट भी दूर हो जाते हैं।

—अज्ञात

उधार

जिसे उधार लेना प्रिय लगता है, उसे अदा करना अप्रिय लगता है।

—अज्ञात

न उधार दो न लो; क्योंकि उधार देनेसे अक्सर पैसा और मित्र दोनों खो जाते हैं; और उधार लेनेसे किफ़ायतशारी कुंठित हो जाती है।

—शेक्सपियर

उधार माँगना भीख माँगनेसे ज्यादा अच्छा नहीं है।

—लैसिंग

उधार लिया हुआ पैसा शीघ्र ही ग़मका सामान हो जाता है।

—अज्ञात

उन्नति

किसी भी राष्ट्रको उन्नतिके रास्ते जाना हो तो सत्य और अहिंसाका उसे आश्रय लेना चाहिये।

—गांधी

आत्माको पहिचाननेसे, उसका ध्यान धरनेसे और उसके गुणोंका अनुसरण करनेसे मनुष्य ऊँचे जाता है। उलटा करनेसे नीचे जाता है।

—गांधी

मुझे अपने गुणोंपर बढ़ना चाहिये, न कि दूसरोंकी कृपापर, मेरे गुण मुझे बढ़ायेंगे, उसकी कृपा उसे बढ़ावेगी।

—अज्ञात

जो लड़ेगा सो चढ़ेगा

—अज्ञात

चरित्र-सम्बन्धी उन्नतिके माने हैं 'खुदी'से 'खुदीको' मिटानेकी ओर बढ़ना।

—कार्लाइल

अगर एक मनुष्यकी आध्यात्मिक उन्नति होती है तो उसके साथ सारी दुनियाकी उन्नति होती है; और एक व्यक्तिका पतन होता है तो संसारका भी पतन होता है।

—गांधी

उपकार

क्षुद्रजन भी जिसने पहले उपकार किया हो उसके उपस्थित होने पर उसका सत्कार करता है, फिर सज्जनका क्या कहना!

—कालिदास

नीच मनुष्यके प्रति किया गया उपकार भी अपकारका फल देता है। साँपको दूध पिलानेसे केवल विषवर्धन ही होता है।

—अज्ञात

जिसने पहले तुम्हारा उपकार किया हो, वह यदि बड़ा अपराध करे तो भी उसके उपकारको याद करके उसका अपराध क्षमा करना।

—महाभारत

क़ारूँ बादशाहको हज़रत मूसाने उपदेश किया कि भलाई वैसी हो गुप्त रीतिसे कर जैसे मालिकने तेरे साथ की है। उदारता वही है जिसमें निहोरेका मेल न हो तभी उसका फल मिलता है। सच्चे उपकारके पेड़की डालियाँ आकाशके परे पहुँचती है।

—सादी

जो स्वयं संसारकी वासनाओंमें लिप्त है वह दूसरोंका उपकार नहीं कर सकता।

—अज्ञात

महान् पुरुष जो उपकार करते हैं, उसका बदला नहीं चाहते। भला, जल बरसानेवाले बादलोंका बदला दुनिया कैसे चुका सकती है।

—तिरुवल्लुवर

वृक्ष अपने सिरपर गरमी सह लेता है, परन्तु अपनी छाया से औरोंको गरमीसे बचाता है।

—कालिदास

हार्दिक उपकारसे बढ़कर कोई चीज़ न तो इस संसारमें मिल सकती है न स्वर्गमें।

—तिरुवल्लुवर

उपकार करना मनुष्यत्वका उच्च गुण है; परन्तु उपकार चाहना मनुष्यताकी पामरता है।

—अज्ञात

उपदेश

अपनी ज़बानकी अपेक्षा अपने जीवनसे तुम बेहतर उपदेश दे सकते हो।

—अज्ञात

कुछ आदमी अतिलम्बे उपदेश देकर लोगोंकी जानको आ जाते हैं। सुननेकी शक्ति बड़ी नाज़ुक चीज़ है, वह शीघ्र ही थक जाती और छक जाती है।

—ल्यूथर

अपने उपदेशोंमें पहिले तार्किकता ला, और फिर गर्मजोशी; बिना तार्किकताके गर्मजोशी उस दरख़्तके मानिन्द है जिसमें पत्तियाँ और कलियाँ तो हैं मगर जड़ नहीं।

—सेल्डन

मुझे वह गम्भीर उपदेशक पसन्द है, जो मेरे लिये बोलता है न कि अपने लिये; जिसे मेरी मुक्ति वांछनीय है, न कि अपनी थोथी शान।

—मैसीलन

जिस बातको तू न जानता हो उसके विषयमें दूसरेको उपदेश न दे।

—अज्ञात

जो उपदेश आत्मासे निकलता है, आत्मापर सबसे ज्यादा कारगर होता है।

—फुलर

'परोपदेशे पाण्डित्यं' से ही नैतिक दरिद्रता होती है।

—स्वामी रामतीर्थ

ममतारतसे ज्ञान कहानी कहना, अतिलोभीसे विरति बखानना, क्रोधीको शमका उपदेश देना, कामीको हरिकथा सुनाना ऐसा है जैसे ऊसरपर बीज बोकर फल पानेकी उम्मीद रखना।

—रामायण

उपदेश वह उत्तम नहीं है जिसे सुनकर श्रोतालोग एक दूसरेसे बातें करते और वक्ताकी तारीफ़ करते हुए जायें, बल्कि वह जिसे सुनकर वे विचारपूर्ण और गम्भीर होकर जायें और जल्दीसे एकान्त तलाशें।

—बिशप बर्नेट

वह देवतुल्य है जो अपनी नसीहतोंपर खुद अमल करता है, मैं बीस आदमियोंको आसानीसे सिखा सकता हूँ कि क्या करना अच्छा है, लेकिन मेरी ही नसीहतपर अमल करनेवाले उन बीसमेंसे एक होना मुश्किल है।

—शेक्सपियर

हम उपदेश सुनते हैं मनभर, देते हैं टनभर पर ग्रहण करते हैं कनभर।

—अलजर

अक़्लमन्द आदमी नीतिका उपदेश समझदारको ही देता है।

—यज़ीद-बिन-हुक्म-उल सक़फ़ी

पेट भरेपर उपवासका उपदेश देना सरल है।

—इटालियन कहावत

नीतिका उपदेश दो, तो संक्षेपमें देना।

—होरेस

यदि वयस्क लोग उन उपदेशोंपर स्वयं अमल करें जो वे बच्चोंको देते हैं, तो दुनिया अगले सोमवारको ही स्वर्ग तुल्य हो जाय।

—आर-किंग

यह कितनी ग़लत बात है कि हम मैले रहें और दूसरोंको साफ़ रहनेकी सलाह दें।

—गांधी

जिसे हर एक देता है पर विरला ही कोई लेता है, ऐसी चीज़ क्या है? उपदेश, सलाह।

—स्वामी रामतीर्थ

दूसरोंको उपदेश देनेके बजाय अगर कोई उस समय ईश्वरकी आराधना करे तो यही पर्याप्त उपदेश है। जो अपनेको स्वतन्त्र करनेका प्रयास करता है वही सच्चा उपदेशक है।

- रामकृष्ण

मेरे उपदेश देनेमें खास बात यह है कि मैं सख्त दिलको तोड़ता हूँ और टूटे हुए को जोड़ता हूँ।

—जॉन न्यूटन

धर्म और नीतिका उपदेश उसे ही देना चाहिये जिसे कीर्ति, ऐश्वर्य और सङ्गति प्रिय हो।

—रामायण

जिसने अपनेको समझ लिया वह दूसरोंको समझाने नहीं जायेगा।

—धम्मपद

जो आदमी बिना आप पूरा हुए दूसरोंको उपदेश देता है वह बहुतोंका गला काटता है; पर जो आप पूरा होकर दूसरोंको शिक्षा नहीं देता उसके विषयमें भी यह कहा जा सकता है कि उसने बहुतोंकी बलि दे दी।

—जापान

आध घंटेसे ज़्यादा उपदेश देनेके लिये आदमी या तो खुद फरिश्ता हो या सुननेके लिये फ़रिश्ते रक्खे।

—व्हाइट फील्ड

उपद्रव

अगर तू आकस्मिक उपद्रवोंको स्थान देता है तो तू अपने तत्त्वज्ञानका कोई इस्तेमाल नहीं कर रहा।

—शेक्सपियर

उपदेशक

साहसहीन उपदेशक चिकनी रेतीके समान है, भोथरे चाकूकी तरह; वह ऐसे सन्तरीकी तरह है जिसे अपनी बन्दूक छोड़नेमें डर लगता है।

—गैरनाल

ऐ उपदेशक, अगर तेरे पास दैविक प्रेरणाका बिल्ला नहीं है तो चाहे तू बोल बोलकर अपनी जान तक दे दे, मगर सब फ़िज़ूल जायेगा।

—रामकृष्ण

अगर उपदेशक इस दुनियामें एक क़दम चलेगा तो उसके सुननेवाले दो चलेंगे।

—सैसिल

सनकी और शौला-नुमा उपदेशक न बनो।

—एमर्सन

सम्प्रदायोंमें जो सबसे ओछा है वही उपदेशकका काम करेगा।

—हज़रत मुहम्मद

लोग पेशेवर उपदेशकको फ़रिश्तेकी तरह मानते हैं। हमारी भी मान्यता है कि वह इन्सान नहीं।

—अज्ञात

उपाय

सहज उपाय कहे देता हूँ कि दोषको पहिचानकर उसे दूर करना।

—अज्ञात

उपयोग

दूसरेका उपयोग कर लेनेकी बनिस्वत अपना उपयोग होने दे। यही सच्चा आत्मसमर्पण या स्वार्थ-विस्मृति है।

—अज्ञात

उपयोगी

जो अपने लिये उपयोगी नहीं, वह किसीके लिये उपयोगी नहीं।

—डेनिश कहावत

उलझन

छुड़ानेके फंदेमें न पड़ो, खुद ही उलझ जाओगे।

—शीलनाथ

उपवास

प्रकाश और तपके लिये उपवास महान् आदरणीय संस्था है।

—गांधी

आरोग्य-रक्षाका मुख्य उपाय है उपवास।

—अज्ञात

अगर तू स्वस्थ शरीर चाहता है, तो उपवास और टहलने का प्रयोग कर; अगर स्वस्थ आत्मा, तो उपवास और प्रार्थना-का—टहलनेसे शरीरको व्यायाम मिलता है, प्रार्थनासे आत्माको व्यायाम मिलता है; उपवास दोनोंको शुद्ध करता है।

—कर ल्स

उपासक

ईश्वरपर श्रद्धा रखनेवाला काहिल, सुस्त, निकम्मा और निष्क्रिय नहीं रह सकता। अनन्त, अखण्ड, अक्षय, अनवरत चैतन्य शक्ति वाले ईश्वरका उपासक मन्द व जड़ कैसे हो सकता है?

—हरिभाऊ उपाध्याय

उपसर्ग

आधि, व्याधि, उपाधि और समाधि यह उपसर्ग चतुष्टय है।

—विनोबा

उपहास

उपहास करके हम मनुष्यको नीचा दिखाते हैं, अपनेसे दूर ढकेलते हैं।

—अज्ञात

यदि मैं मूर्ख हूँ तो तू मेरा उपहास करके अपनी दुष्टताका परिचय क्यों देता है।

—अज्ञात

उपहार

जिन उपहारोंकी बड़ी आस लगी होती है वे भेंट नहीं किये जाते, अदा किये जाते हैं।

—फ्रैंकलिन

वह मुझे सुन्दर उपहार देता है जो मुझे अपूर्व विचार सुनाता है।

—बूवी

उपहार लेना स्वतंत्रता खोना है।

—सादी

बहुत-से लोग अपने ऋण चुकानेकी अपेक्षा उपहार देनेमें खुशी मनाते हैं।

—सर फ़िलिप सिडनी

उपादान

बुरे फ़ौलादसे कभी अच्छा चाक़ू नहीं बना।

—फ्रैंकलिन

उपासना

उपासना माने देवके नज़दीक बैठना, याने बैठनेकी जगह देवको ले आना।

—विनोबा

कोड़ोंकी मार पड़नेपर भी उपासकको मालूम न हो तभी समझना चाहिये कि वह उपासना में पूर्ण रूपसे मग्न है।

—[illegible]

मेरे धर्ममें उपासना ऐच्छिक है, और इसलिये अनिवार्य है।

—अज्ञात

गुणवंतकी उपासना सगुण कही जाय तो गुणकी उपासना निर्गुण कही जायेगी।

—विनोबा

जो मनुष्य ईश्वरको छोड़कर अन्य देवकी उपासना करता है, वह कुछ नहीं जानता। वह विद्वानोंमें पशु तुल्य है।

—शास्त्र

जिसने अपने मन और इन्द्रियोंको वशमें नहीं किया उसकी उपासना ऐसी समझनी चाहिये जैसे हाथीका नहाना कि इधर तो नहाया उधर शरीरपर धूल डालकर फिर ज्योंका त्यों हो गया।

—हितोपदेश

परमात्माकी ही उपासना करनी चाहिये। जो कोई परमात्माके अलावा किसी और को उपास्य देव कहे उससे कहो कि तू जिसे प्रिय ईश्वर जानता है वह तुझे रुलायेगा। ब्रह्मकी ही उपासना करनी चाहिये, क्योंकि जो परमात्माकी उपासना करता है उसका कभी अहित नहीं होता।

—अज्ञात

उद्देश्य

जीवनका उद्देश्य मनुष्यको अपनेपनका ज्ञान कराना प्रतीत होता है।

—अज्ञात

जीवनके लिये एक उद्देश्य ही एक पाने लायक़ ख़जाना है और वह दूर देशोंमें नहीं वल्कि हृदय में।

—अज्ञात

जिसका उद्देश्य ऊँचा है उसे आरामतलबी और हरदिल-अज़ीज़ीसे ख़ौफ़ खाना चाहिये।

—एमर्सन

उपेक्षा

भोंकते कुत्तेके ठोकर मारो तो वह और भी ज़्यादा भोंकेगा उसकी तरफ़ क़तई तवज्जह न दो, तो वह चुप हो जायेगा।

—अज्ञात



[ऊ]

ऊँचा

पहाड़ी सरीखा ऊँचा होना मुझे सुखकर नहीं लगता। मेरी मिट्टी आसपासकी ज़मीन पर फैल जाय इसीमें मुझे आनन्द है

—विनोबा

ऊँचाई

वह ऊँचाई ऊँचाई नहीं है जिसका आधार सच्चाई नहीं है।

—अज्ञात

[ऋ]

ऋषि

जिसके जीवनकला मालूम है वह ऋषि है

—स्वामी रामतीर्थ

[ए]

एक

एक ही देवताकी आराधना करनी चाहिये—केशवकी या शिवकी; एक ही मित्र करना चाहिये—राजा या तपस्वी; एक ही जगह बसना चाहिये—नगरमें या वनमें; एकसे ही विलास करना चाहिये—सुन्दरी नारीसे या कन्दरासे।

—भर्तृहरि

ऐ दोस्त, सिर्फ़ नामका फ़र्क़ है। असलमें सब एक ही है जो साफ़ पानी लहरमें दिखाई देता है उसीकी चमक बुलबुलेमें नज़र आती है।

—अज्ञात

एकभुक्त

एक वक़्त खाना शेर तकके लिये पर्याप्त होता है, इन्सानके लिये तो वह ज़रूर काफ़ी होना चाहिये।

—डाक्टर जॉर्ज फ़ोर्डिस

एक भुक्त सदा रोग-मुक्त।

—अज्ञात

एकाग्रता

अनिश्चितमना पुरुष भी मनको एकाग्र करके जब सामना करनेको खड़ा होता है तो आपत्तियोंका लहराता हुआ समुद्र भी दबकर बैठ जाता है।

—तिरुवल्लुवर

चित्तकी एकाग्रता योगकी समाप्ति नहीं है। वहाँसे योगकी शुरूआत है।

—विनोबा

वह एकाग्रताकी ही शक्ति थी जिसने नेपोलियनको यह विश्वास करा दिया कि 'सूरज-तले' कुछ भी नामुमकिन नहीं है।

—अज्ञात

अपने सामने एक ही साध्य रखना चाहिये। उस साध्य के सिद्ध होने तक दूसरी किसी बातकी तरफ़ तवज्जह नहीं देनी चाहिये। रात दिन सपने तकमें—उसीकी धुन रहे, तभी सफलता मिलती है।

—विवेकानन्द

जबतक आशा लगी हुई है तबतक एकाग्रता नहीं होती।

—स्वामी रामतीर्थ

झूठ, कपट, चोरी, व्यभिचार आदि दुराचारोंकी वृत्तियोंके नष्ट हुए बिना चित्तका एकाग्र होना कठिन है और चित्त एकाग्र हुए बिना ध्यान और समाधि भी कठिन है।

—मनु

एकान्त

एकान्त अच्छी पाठशाला है, परन्तु दुनिया सबसे अच्छी रंगशाला है।

—जे० टेलर

सच्चा एकान्त कब हो ? जब कि ओछे और निंद्य जीवनसे परे हो जाओ।

—जुन्नुन

बहुत-कुछ अकेले रहना ही महान् आत्माओंका भाग्य है।

—शोपेनहोर

अगर तू आलसी ही रहना चाहता है या जीवनके मोहमें पड़ा है, तो ज़मीनमें एक गुफा बना ले, या आसमान पर सीढ़ी लगाकर चढ़ जा, जिससे तू एकांतवासी बन जाय।

—अबु-इस्माइल तुग़राई

किसीने कहा है—जब कभी मैं आदमियोंमें जाता हूँ, मैं जो कुछ था उससे कम ही होकर लौटा हूँ।

—अज्ञात

जो एकान्तमें ख़ुश रहता है वह या तो पशु है या देवता।

—अज्ञात

बाहरी एकान्त वास्तविक एकान्त नहीं। मनमें चिन्ता और शंकाका प्रवेश न हो वही सच्चा एकान्त है।

—आविस

संस्कृति और महत्ताके तमाम रास्ते एकान्त कारावासकी ओर जाते हैं।

—एमर्सन

निर्जनतामें निवास करके देख तेरा प्रेम निर्जनता पर है या प्रभुपर ? यदि एकान्त ही से प्रेम है तो वहाँसे हटते ही प्रेम भी हट जायेगा और यदि ईश्वर पर प्रेम होगा तो पर्वत, वन, बस्ती सब स्थानों पर वह यकसाँ रहेगा।

—हयहया

रातको एकान्त मिलेगा यह जानकर मुझे प्रसन्नता होती है और दिन होने पर लोगोंका हो-हल्ला मच जायगा यह जानकर मुझे दुःख होता है। लोग आ आकर मुझे बातोंमें लगाते हैं, यह मैं बिल्कुल नहीं चाहता।

—फ़ज़ल अयाज़

एकान्त मूर्खके लिये क़ैदखाना है, ज्ञानीके लिये स्वर्ग।

—अज्ञात

एहसान

सिर्फ़ वही शख़्स फ़य्याज़ीसे एहसान कर सकता है जो एक मरतबा एहसान करके बिल्कुल भूल जाता है।

—ऑन्सन

हम सूखी रोटी और गुदड़ीसे सन्तोष कर लेंगे क्योंकि संसार के एहसानके भारसे अपने दुःखका भार हलका है।

—अज्ञात

[ऐ]

ऐश्वर्य

खुद्को हीन माननेवालेको उत्तम प्रकारके ऐश्वर्य प्राप्त नहीं होते।

—महाभारत

ऐश्वर्यके मद्से मत्त मनुष्य ऐश्वर्यसे भ्रष्ट होने तक होशमें नहीं आता।

—अज्ञात

पापकी कमाईसे कभी बरकत नहीं होती।

—कहावत

ऐश्वर्यके मद्से मत्त हर व्यक्ति "सर्वोऽहं" ऐसा मानता है।

—रामायण

ऐश्वर्य यह ईश्वरका विशेष गुण है।

—विनोबा

धन न भी हो तो भी आरोग्य, विद्वत्ता, सज्जनमैत्री, महाकुलमें जन्म, स्वाधीनता मनुष्यके महान् ऐश्वर्य हैं।

—अज्ञात



[औ]

औलाद

किसी आदमीके पैदा होनेसे क्या अगर उसके मृत पूर्वजोंको नागवार गुज़रता रहे कि हम कैसी औलाद छोड़ आये।

—सर फिलिप सिडनी

औषधि

शरीरके लिए किसी औषधिकी ज़रूरत ही न हो, अगर खाया हुआ खाना हज़म हो जानेके बाद नया खाना खाया जाय।

—तिरुवल्लुवर

तमाम औषधियोंमें सर्वोत्तम औषधियाँ विश्राम और उपवास हैं।

—फ्रैंकलिन

औरत

नेक आदमीके घरमें ख़राब औरत इसी दुनियामें उसके लिए नरक-तुल्य है।

—सादी

उस मकानपर सुखके दरवाज़े बन्द कर दो जिसमेंसे औरतकी आवाज़ बुलन्द स्वरोंमें निकलती हो।

—सादी

[क]

क़र्ज़

क़र्ज़ वह मेहमान है जो एक बार आकर जानेका नाम नहीं लेता।

—अज्ञात

ग़रीबी कष्टकर है मगर क़र्ज़ा भयावह है।

—अज्ञात

दोस्तको क़र्ज़ न दो वरना मुहब्बतका ख़ात्मा समझो।

—सुक़रात

आदमीके लिये क़र्ज़ ऐसा है जैसा चिड़ियाके लिये साँप।

—अज्ञात

क़र्ज़ देना मानो किसी भारी चीज़को पहाड़की चोटीसे नीचे ढकेलना है, मगर उसका वसूल करना उस चीज़को चोटी तक चढ़ाना है।

—टॉलस्टाय

क़र्ज़ा सबसे बुरी ग़रीबी है।

—अज्ञात

कंजूस

धनिक कंजूस ग़रीबसे भी ग़रीब है।

—अरबी कहावत

कंजूसको इत्मीनान है कि वह एक मर्ज़से तो नहीं मरेगा, वह है 'दिलका बढ़ जाना।'

—अज्ञात

कंजूस, मक्खीचूस, होना ऐसा दुर्गुण नहीं है जिसकी गिनती दूसरी बुराइयोंके साथ की जा सके: उसका दर्जा ही बिल्कुल अलग है—

—तिरुवल्लुवर

कंजूसी

कंजूसी मनुष्यके सद्गुणोंको चुरानेवाली है।

—अगर-बिन अक़सम्

कटुता

सुबह-दम बुलबुलने नये खिले हुए फूलसे कहा कि 'नाज़ कम कर; इस बाग़में तुझसे बहुत खिल चुके हैं।' फूल हँसकर बोला, 'मैं सच्ची बात पर रंज नहीं करता। मगर बात यह है कि कोई आशिक़ अपने माशूक़से सख़्त बात नहीं कहा करता।'

—हाफ़िज़

कड़वी बात 'कहना' एक चीज़ है, व 'लगना' दूसरी चीज़। 'कहनेमें' ज़िम्मेवारी हमारी है, 'लगनेमें' दूसरे की।

—अज्ञात

कठिन

संसारमें जीवोंको इन चार श्रेष्ठ अंगोंका प्राप्त होना बड़ा कठिन है—मनुष्यत्व, धर्म-श्रवण, श्रद्धा और संयममें पुरुषार्थ।

—महावीर

कठिनाई

किसी कठिनाईसे बाहर निकलनेके लिये पहला क़दम यह है कि हम कुछ जानकारी इस बातकी प्राप्त करें कि हम उसमें पड़ कैसे गये थे।

—एनन

जैसे मेहनतसे शरीर बलवान् होता है वैसे ही कठिनाइयोंसे मन।

—सैनेका

न रगड़के विना रत्नपर पालिश होती है, न कठिनाइयोंके विना आदमीमें पूर्णता आती है

—चीनी कहावत

क़ुदरत जब कठिनाई बढ़ा देती है, समझदारी भी बढ़ा देती है

—एमर्सन

कठिनाइयाँ हमें आत्मज्ञान कराती हैं वे हमें दिखा देती हैं कि हम किस मिट्टीके बने हैं।

—ज० नेहरू

कठोर

यदि तू मेरे प्रति कठोर होता है तो अभी तुझे अपने प्रति ही अधिक कठोर होनेकी ज़रूरत है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

हृदयके कठोर मनुष्यको उत्तमसे उत्तम त्यागीका उपदेश भी असर न करे तो इसमें उपदेश देनेवालेका या उस उपदेश का दोष नहीं, उस मनुष्यकी कमनसीबीका ही अपराध है

—अज्ञात

कठोरता

जब तक ग़लती करनेवालेके प्रति तेरे मनमें कठोरता है तब तक तू साधु नहीं हुआ।

—अज्ञात

कड़ी

कड़ी टूटी कि लड़ी टूटी।

—जर्मन कहावत

कर्त्तव्य

प्रत्येक कर्त्तव्य जिसे हम नज़र-अन्दाज़ कर देते हैं किसी न किसी सत्यको आच्छादित कर देता है जिसका कि ज्ञान हमें हो जानेवाला था।

—रस्किन

वक्त थोड़ा है, तुम्हारे कर्त्तव्य असंख्य हैं। क्या तुमने घर व्यवस्थित और बच्चे सुरक्षित कर दिये, दुखियोंको राहत दी, ग़रीबोंकी खबर ली, धर्मके काम कर डाले?

—अज्ञात

अनासक्त चित्तसे और अपनी सुखकल्पनामें पड़े बिना प्राप्त हुए कामोंको केवल ईश्वरकी आज्ञा समझकर पूरा करना व फल उसीको अर्पण करना यही कर्त्तव्यकी व्याख्या है।

—विवेकानन्द

भली भाँति अपने कर्त्तव्यका पालन करके सन्तुष्ट हो जाओ और दूसरोंको अपने विषयमें इच्छानुसार कहनेके लिये छोड़ दो।

— पथागोरस

छोटे छोटे कामोंको यथार्थ रूपसे करना प्रसन्नताका आश्चर्य-जनक स्रोत है।

—फ़ेबर

कर्त्तव्य करते शरीरको भी जाने देना चाहिये यह नीति है। परन्तु शक्तिसे बाहर कुछ उठा लेना और उसे कर्त्तव्य मानना राग है।

—गांधी

जब तुम कर्त्तव्यके आगे इच्छाका बलिदान करो तब लोगोंको अगर वे चाहें, हँसने दो; तुम्हें आनन्दित होनेके लिये अनंतकाल पड़ा है।

—थ्योडोर पार्कर

ज्ञानीको अपने बड़े कर्त्तव्योंका भी पालन करना चाहिये, हमेशा छोटे छोटोंका ही नहीं; क्योंकि जो अपने बड़े कर्त्तव्योंका पालन न करके सिर्फ़ छोटे कर्त्तव्योंका ही पालन किया करता है, भ्रष्ट हो जाता है।

—अज्ञात

जो वर्तमान कर्त्तव्यके प्रति झूठा है, वह कर्घेका एक धागा तोड़ता है और दोष उसे तब मालूम होगा जब कि वह शायद उसके कारणको भूल जायगा।

—बीचर

उस कर्त्तव्यका पालन करो, जो तुम्हारे निकटतम है।

—गेटे

कार्य बिगड़े या सुधरे, इसकी मुझे क्या फ़िक्र? उस पर सब भार डालकर वह इशारा करे उधर जाना इतना ही मेरे बसमें है।

—विवेकानन्द

'कर्त्तव्य' और 'सौदे' में दिन-रातका अन्तर है कर्त्तव्य, बदले या पुरस्कारकी अभिलाषा नहीं रखता; सौदा तो पूरा बल्कि अधिक बदला चाहता है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

उस सितारेकी तरह जो बिना इज़्तराब और बिना आराम दूरी पर चमकता है, हर आदमी अपना काम स्थिरतापूर्वक और यथाशक्ति करे।

—गेटे

एक कर्त्तव्य पूरा कर देनेका पुरस्कार दूसरेको कर सकनेकी शक्तिका प्राप्त कर लेना है।

—अज्ञात

जो कर्त्तव्यको छोड़कर अकर्त्तव्यको करते हैं उनका चित्त मलिनसे मलिनतर होता जाता है।

—बुद्ध

जिसे अपना कर्तव्य नहीं सूझता वह अन्धा है।

—अज्ञात

कृति

कृतियाँ पुल्लिंग हैं, शब्द स्त्रीलिंग।

—इर्यालियन काग्वन

कृपा

नीच लोगोंका कृपा-पात्र बननेके बदले, मैं अपने लिये यह अच्छा समझता हूँ कि पुराने कपड़ोंमें नंगा रहकर दिन काटूँ और थोड़ी सी जीविकापर ही सन्तोष करूँ।

—मुहम्मद बिन बशीर

जो साधुओंका उपदेश सुनता है परन्तु उनकी सेवा नहीं करता वह उनकी कृपासे वंचित रह जाता है।

—अबुअब्दीम असद

ईश्वरकी कृपा ईश्वरका काम करनेसे आती है। ईश्वरके काम शरीरसे, मनसे और वाणीसे दुःखीकी सेवा करनेसे होते हैं।

—गांधी

कृतज्ञता

मेरे मित्र, कृत्योंसे मुझे धन्यवाद दो, शब्दोंसे नहीं।

—कोर्नर

कृतज्ञताका माप, किये हुए उपकारसे नहीं, उपकृत व्यक्तिकी शराफ़तसे होता है।

—तिरुवल्लुवर

प्रभुने जो धन-दौलत दी है उसे पाप-कार्यमें लगाकर अपराधी बननेसे बचना ही सच्ची कृतज्ञता दिखाना है।

—जुन्नेद

कृति

अपनी कृति, सरस हो अथवा अति फीकी, किसको अच्छी नहीं लगती? जो दूसरोंकी कृति सुनकर हर्षित होते हैं, ऐसे श्रेष्ठ पुरुष जगत्‌में बहुत नहीं हैं।

—रामायण

लफ़्ज़ोंको जाने दो, कृतियोंको जवाब देने दो।

—नेपोलियन

हर आदमीको लगता है कि दुनियाकी तमाम सुन्दर भावनायें एक सुन्दर कृतिसे हलकी हैं।

—लॉवेल

कर्तव्य

पराई आगमें न कूदो।

—कहावत

तेरी बुद्धिको और हृदयको जो सच मालूम हो वही तुझे करना चाहिये।

—गांधी

कर्तव्यके आगे प्रेमका भी बलिदान दे देना चाहिये।

—अज्ञात

कर्तव्यमें मिठास है।

—गांधी

आज इंग्लेण्ड हर व्यक्तिसे कर्त्तव्यपालनकी आशा रखता है, इंग्लेण्ड ही क्यों ?

—नेलसन

जो कर्त्तव्यसे बचता है, लाभसे वंचित रहता है।

—थ्योडोर पार्कर

मौजूदा क्षणके कर्त्तव्यका पालन करनेसे आनेवाले युगों तकका सुधार हो जाता है।

—गार्फील्ड

बड़ा काम यह नहीं कि हम दूरकी धुँधली हक़ीक़तको देखें, बल्कि यह कि हम उस फ़र्ज़को बजायें जो नज़रके सामने है।

—कार्लाइल

हर आदमी काममें संलग्न रहे, अपने स्वभावानुकूल सर्वोच्च कार्यमें संलग्न रहे, और इस चेतनाके साथ मरे कि उसने हद दर्जे किया।

—सिडनी स्मिथ

कर्त्तव्यपालन

कर्त्तव्यपालन स्वभावतः आनन्दमें पुष्पित होता है।

—फ़िलिप्स ब्रुक्स

विश्वमें कुछ नहीं जिससे मैं डरती होऊँ, सिवाय इसके कि मैं अपने सम्पूर्ण कर्त्तव्यको न जान पाऊँ व उसके पालन करनेमें असफल रहूँ।

—मेरी ल्योन

जब आत्मा हर कर्त्तव्यका तुरन्त पालन करना चाहे तो उसे ईश्वरकी उपस्थितिका भान है।

—बेकन

कर्त्तव्यपालन किये बग़ैर यहाँ कोई आनन्द नहीं पाता।

—अज्ञात

कर्ता

जो कर्ता संग-रहित, अहंता-रहित, धैर्यवान और उत्साही हो और सफलता निष्फलतामें हर्ष शोक न करे उसे सात्त्विक कर्ता कहते हैं।

—गीता

जगका कर्ता कौन ? मेरे जगका मैं ही कर्ता हूँ। दूसरे जगका मुझे परिचय नहीं है।

—विनोबा

अपनी इच्छासे नटवरके हाथकी गुड़िया बनजानेपर फिर चर्चा किस लिये ? उसे जैसे नचाना होगा वैसे वह नचायेगा। मुख्य बात तो नाचनेकी है न ? जिसे हमेशा नाचनेको मिलेगा उसे और दूसरा क्या चाहिये ?

—गांधी

कर्तव्य-मार्ग

जिस बातमें झगड़े टंटे ज्यादा हों, उसी हिसाबसे उसकी सिद्धि भी ज्यादा दिनोंमें होगी। इसलिये जिस मार्गमें खार-खड्डे कम हों उसी मार्गको स्वीकार करना इष्ट है।

—विवेकानन्द

कथन

सोचो चाहे जो कुछ, कहो वही जो तुम्हें कहना चाहिये।

—फ्रांसीसी कहावत

जो कुछ कहना है उसको जहाँ तक हो सके, संक्षेपमें कहो; वरना पढ़नेवाला उसको छोड़ता जायेगा; और जहाँ तक हो सके सादा लफ़्ज़ोंमें कहो वरना वह उसका मतलब न समझेगा।

—रस्किन

कपड़ा

कपड़ा अंगको ढकनेके लिये है। ठंडी-गर्मीसे उसकी रक्षा करनेके लिये है, उसे सजानेके लिये नहीं है।

—महात्मा गांधी

कपटी

सुवेषको देखकर मूर्ख ही भुलावेमें आ जाते हैं, चतुर लोग नहीं। मोर देखनेमें सुन्दर लगता है, अमृत सरीखी मीठी बोली बोलता है मगर उसका आहार साँप है।

—रामायण

क़ब्र

हर क़ब्र, जहाँ मिले, आत्माको एक संक्षिप्त सर्मन (प्रवचन) सुनाती है।

—[illegible]

हर आदमीको अपनी क़ब्रमें ऐसे लेटना होगा कि वह अपनी जगह पर करवट तक न बदल सकेगा।

—[illegible]

कमज़ोर

कमज़ोर होना दुखी होना है।

—मिल्टन

कमज़ोरी

तीखे और कड़ए शब्द कमज़ोर पक्षकी निशानी है।

—विक्टर ह्यूगो

कर्म

कर्म ज्ञानका प्रज्वलन है। ज्ञानाग्नि अखंड जलती रखनेके लिये कर्मरूप प्रज्वलन अखंड रखना चाहिये।

—विनोबा

वस्त्रसे छाना हुआ जल पीना और मनसे शुद्ध जाना हुआ काम करना चाहिये ।

—अज्ञात

सूरज हमेशा रोशनी और गर्मी देता है । मगर जो सूरजसे भागकर ठंढमें ठिठुरे, और अँधेरेमें घुसे, उनके लिये सूरज भी क्या करे ?

—गांधी

सचमुच, कर्मकी जगह ही कर्मफल भी उत्पन्न होते हैं। इसलिये जैसा फल चाहिये, वैसा कर्म कर ।

—अज्ञात

संसारमें कर्तृत्वहीन मनुष्य न तो पुरुष है न स्त्री ।

—देवी रानी विदुला

हम अपनेको जानना कैसे सीखेंगे ; विचार से ? कभी नहीं; सिर्फ़ कर्मसे अपना फ़र्ज़ पूरा करनेकी कोशिश कर, तभी तू जान पायेगा कि तेरे अन्दर क्या है ।

—गेटे

ईश्वर मनुष्यके अच्छे और बुरे कर्मोंके अनुसार फल देता है, जो कर्म करता है उसे ही फल मिलता है ।

—रामायण

गतिशील दुनियाको देखो, उसके तमाम प्राणी अपने अपने स्वभावके अनुसार कर्म कर रहे हैं, इसलिये तुझे भी कर्म तो करना ही पड़ेगा, अकर्मण्यको सफलता नहीं मिलती ।

—अज्ञात

कर्मके आरम्भमें ही उसके फलकी गुरुता-लाघवता अथवा उसके दोषको जो नहीं विचारता वह केवल बालक है ।

कर्म माने प्रत्यक्ष सेवा, भक्ति माने सेवाभाव।

—विनोबा

सर्वोच्च स्थितिमें जानेका कर्म ही एक उपाय है और यह कर्म पूर्ण मुक्तिके बाद भी रहता है।

—अरविन्द घोष

चिड़िया तब उड़ सकती है जब दोनों पंखोंको इस्तेमाल करती है, उसी तरह ज्ञान और कर्मसे परम पद प्राप्त होता है।

—अज्ञात

कर्म करूँगा तो फल भी लूँगा—यह रजोगुण, फल छोड़ूँगा तो कर्म भी छोड़ूँगा—यह तमोगुण, दोनों एक ही हैं।

—विनोबा

कर्मकी परिसमाप्ति ज्ञानमें, और कर्मका मूल भक्ति अर्थात् सम्पूर्ण आत्मसमर्पणमें है।

—अरविन्द घोष

दुपायों, चौपायों, अपने खेत, अपना मकान, अपनी दौलत, अपना अनाज, और हर चीज़को, अपनी इच्छाके खिलाफ़ छोड़कर और सिर्फ़ अपने कर्मोंको साथ लिये यह जीव अच्छी या बुरी योनिमें जाता है।

—अज्ञात

यह छोटा आदमी करनेके लिये कोई छोटा काम ढूंढ़ता है, उसे देख लेता है और कर देता है, यह ऊँचा आदमी, जिसे किसी बड़े काममें लगना है, मर जाता है पेश्तर इसके वह उसे जान पाता।

—अज्ञात

दुनियामें कर्म प्रधान है, जो जैसा करता है वैसा फल भोगता है।

—रामायण

अच्छी तरह सोचना अक्लमन्दी है, अच्छी योजना बनाना, और भी बड़ी अक़्लमन्दी, अच्छी तरह करना सर्वोत्तम और सबसे बड़ी अक़्लमन्दी।

—ईरानी कहावत

अपनी करनी कभी निष्फल नहीं जाती, सात समुद्र भी आड़े आए तो भी आगे आकर मिलती हैं।

—कबीर

कर्म छोड़ना अशक्य है क्योंकि छोड़ना भी कर्म ही है।

—विनोबा

किसी अड़चनसे हताश न होकर, आत्मविश्वास न खोकर, अखण्ड कार्यरत रहना ही तुम्हारा कर्त्तव्य है, अगर यह किया तो इसके सुन्दर फल दिन दिन बढ़ते हुए प्रमाणमें तुम्हारी नज़र पड़ेंगे।

—विवेकानन्द

कर्मकाण्ड

कर्मकाण्डसे मुक्ति नहीं मिलती।

—स्वामी रामतीर्थ

कर्मठ

जैसे आप महान् विचारक हैं वैसे ही महान् करके-दिखा-देनेवाले बनें।

—शेक्सपियर

कर्मठता

अपने काहिल मनन और अध्ययनके लिये नहीं, धार्मिक भावनाओंको सेनेके लिये नहीं, ज़िंदगी तुझे कर्मठ होनेके लिये दी गई थी, और तेरे कामोंसे ही तेरा मूल्य आँका जा सकता है।

कर्मनाश

दुष्कर्मके नाशका सच्चा उपाय सद्विचार और सदाचार है।

— अज्ञात

कर्म गिन गिनकर नष्ट नहीं किये जाते, ज्ञानी तो एक साथ सबका नाश कर देता है।

—अज्ञात

कर्मपाश

कर्मपाश अपने आप नहीं कट जाता, काटोगे तब कटेगा।

— शीलनाथ

कर्मफल

तमाम शास्त्र यह ही सबक़ सिखाते हैं कि 'जैसा करोगे वैसा भरोगे'।

अज्ञात

हँड़ियामें जो डाला होगा, चमचेसे वही निकाल सकोगे।

अज्ञात

कर्मफलकी इच्छा करनेवाले अपनी दीनताका परिचय देते हैं।

— अज्ञात

जो कोई जिस हालतमें रहनेका पात्र हो गया उसको वह हालत न होने देनेकी ताक़त किसीमें नहीं है।

विवेकानन्द

कर्मफलत्याग

ध्यानकी अपेक्षा कर्मफलत्याग श्रेष्ठ कहा है, क्योंकि ध्यानमें भी सूक्ष्म स्वार्थ है।

— विनोबा

कर्मभोग

कोई किसीको सुख-दुःख देनेवाला नहीं है, सब अपने किये हुए कर्मोंका फल भोगते हैं ।

—रामायण

कर्मवीर

चकनाचूर कर देनेवाली चोट लगानेके पहले मेंढ़ा एक दफ़े पीछे हट जाता है; कर्मवीरकी निष्कर्मण्यता ठीक इसी तरहकी होती है ।

—तिरुवल्लुवर

कर्मयोगी

कर्मयोगी सूर्यकी तरह अखंड कर्म करता है। संन्यासी सूर्यकी तरह ज़रा भी कर्म नहीं करता ।

—विनोबा

कर्मयोगी—सफ़ेद दूधकी काली गाय, संन्यासी—सफ़ेद दूधकी सफ़ेद गाय

—विनोबा

अगर दो कर्मयोगियोंमेंसे एकको किसी साम्राज्यका संचालन करने, और दूसरेको किसी सड़क पर झाड़ू लगाने भेजा जाय, तो उनको अपना काम बदलनेकी कोई इच्छा न होगी ।

—अज्ञात

कर्मरेख

ऐसा विचार करके अफ़सोस मत करो कि विधाताका लिखा हुआ मिट नहीं सकता ।

—रामायण

कर्मण्यता

सौ वर्षके आलसी और हीनवीर्य जीवनकी अपेक्षा एक दिनकी दृढ़ कर्मण्यता कहीं अच्छी है।

—अज्ञात

कमाई

काम किये बिना कमाई नहीं होने की।

—अज्ञात

अपने हाथकी कमाईका भरोसा रक्खो, औलादका नहीं—मसल है कि एक बाप दस बेटोंका पालन कर सकता है पर दस बेटे एक बापका पालन नहीं कर सकते।

—पिथागोरस

धन-दौलत कमानेके पीछे क्यों पड़े हुए हो? तुम्हारी ज़रूरियातको पूरा करने और तुम्हारी देखभाल रखनेका भार तो उस ईश्वर ही ने ले रखा है, यदि उसका भरोसा करोगे तो सब तरहसे शांति और सुख पाओगे।

—जुन्नैद

कमाल

कमाल सस्ता नहीं है, और जो सस्ता है वह कमाल नहीं है।

—ऑगमन

अगर कोई आदमी अपने पड़ोसीसे बेहतर किताब लिख सकता है, या बेहतर उपदेश दे सकता है, या बेहतर चूहेदानी बना सकता है, तो चाहे वह अपना घर जंगलोंमें बना ले, दुनिया उसके दरवाज़ेपर बराबर हाज़िरी बजाती रहेगी।

—एमर्सन

कमी

जो आदमियोंकी कमियोंसे झगड़ा करता है वह खुदापर इलज़ाम लगाता है।

—बर्क

कमीन

उससे दोस्ती कर लो जिसने हत्या की हो, उस शख़्सकी अपेक्षा जो किसी बार भी, कमीनापन जतला सका हो।

—स्टर्न

करामात

लोग कहते हैं कि मुहम्मदको उसके रबकी तरफ़से करामात दिखानेको क्यों नहीं मिलती? उनसे कह दो कि करामात सिर्फ़ अल्लाहके पास है, मैं तो सिर्फ़ बुरे कामोंके नतीजोंसे खुले तौरपर आगाह करनेवाला हूँ।

—मुहम्मद

कल

जो कालको अपना दोस्त कह सके, या जो उससे बच सके, या जो जानता है कि वह मरेगा नहीं, ऐसा आदमी भले ही निर्णय करे—यह कल किया जायेगा।

—अज्ञात

कलको कलतक रहने दो।

—अज्ञात

इन्सानी ज़िंदगीका कितना हिस्सा इन्तज़ारीमें निकल जाता है। कल भी तो आज सरीखा ही होगा। ज़िंदगी बर्बाद होती जाती है और हम जीनेकी तैयारीमें ही लगे रहते हैं।

—एमर्सन

जो आजकी ईमानदारीको कलपर उठा रखता है, वह बहुत करके अपने कलको क़यामत तक उठा रक्खेगा।

—लैंडर

कला

जो कला आत्माको आत्मदर्शन करनेकी शिक्षा नहीं देती वह कला ही नहीं है।

—गांधी

सच्ची कला ईश्वरका भक्तिपूर्ण अनुसरण है।

—ट्रायन एडवर्ड्स

कला वही है जो सौन्दर्यका सबक़ सिखाती है।

—अज्ञात

कला विचारको मूर्तिमन्त करती है।

—एमर्सन

कला मुझे उसी अंशतक स्वीकार्य है जिस अंशतक वह कल्याणकारी एवं मङ्गलकारी है।

—गांधी

तमाम महान् कला ईश्वरके, न कि अपने, काममें–आदमीका हर्ष प्रदर्शन है।

—रस्किन

हर कलाका सबसे बड़ा काम रूपद्वारा उच्चतर वास्तविकताकी माया पैदा करना है।

—गेटे

सच्ची कलाकृति दैविक परिपूर्णताकी महज़ छाया है।

—अज्ञात

कलाकी परिपूर्णता कलाके छिपानेमें है।

—अज्ञात

किसी कलाकृतिका फ़ैसला उसके दोषोंसे न करो।

—अज्ञात

कलाका मिशन प्रकृतिका प्रतिनिधित्व करना है, न कि उसकी नक़ल।

—अज्ञात

साधारण सत्य, या निरा तथ्य, कलाओंका ध्येय नहीं हो सकता—सत्यकी भूमिपर माया-सृजन, यह है ललित कलाओं-का रहस्य।

—अज्ञात

कला प्रकृतिकी नक़ल नहीं करती, बल्कि प्रकृतिके अध्ययन-को अपना आधार बनाती है—वह प्रकृतिमेंसे चुन-चुनकर वे चीज़ें लेती है जो कि उसकी अपनी मंशाके अनुकूल हों, और तब उनको वह बख़्शती है जो कि प्रकृतिके पास नहीं है, यानी आदमीका मन और आत्मा।

—बलवर

कलाका ध्येय यह है कि वह भावनाको विचारमें लाये और तब उसे रूपमें जड़ दे।

—अज्ञात

पण्डित कलाका कारण समझते हैं, अपण्डित उसका आनन्द लेते हैं।

—अज्ञात

उत्तम जीवनकी भूमिकाके बिना कला किस प्रकार चित्रित की जा सकती है?

—गांधी

ज्ञानी हम सब हैं, लोगोंमें फ़र्क़ ज्ञानका नहीं, बल्कि कला का है।

—एमर्सन

कलाका अंतिम और सर्वोच्च ध्येय सौन्दर्य है।

—गेटे

कला तो सत्यका केवल शृङ्गार है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

विशुद्ध कलाकृतिके लिये कलाकारका अन्तःकरण निर्दोष होना चाहिये।

—अज्ञात

'कलाके लिये कला' यह तो नास्तिकोंका सूत्र है, कला तो जनसमाजको उन्नत करनेके लिये है।

—अज्ञात

कला प्रकृतिकी नक़ल करनेमें नहीं है—प्रकृति वह सामग्री देती है जिसके ज़रिये वह सौन्दर्य प्रकट किया जाता है जो अभी तक प्रकृतिमें अप्रकट था—कलाकार प्रकृतिमें वह देखता है जिसका स्वयं प्रकृतिको भान न था।

—एच० जेम्स

सारी कला सौन्दर्य सृजनके लिये कठिनाईको पार करनेमें समाई हुई है।

—विलियम एलेन व्हाइट

कलामें मुझे रस तो मालूम होता है, किन्तु ऐसे कितने ही रसोंका मैंने त्याग किया है—मुझे करना पड़ा है। सत्यकी खोजमें जो रस मिले उन्हें मैंने छककर पिया, और मिलें तो पीनेके लिये तैयार हूँ।

—गांधी

मैं कलाको कलाकारकी विकसित आत्माका प्रतिबिंब मानता हूँ और सुसृष्टिके लिये महात्मा होना आवश्यक समझता हूँ।

—उग्र

सबसे बड़ा काम जो कला कर सकती है वह यह है कि वह हमारे सामने शरीफ़ इन्सानकी सही तसवीर पेश करे।

—रस्किन

जिसमें छिपाने लायक कुछ है वह कला नहीं है—

—गांधी

उपयोगी कलाओंकी जननी है आवश्यकता, ललित कलाओंकी है विलासिता। पहली पैदा हुई बुद्धिसे और दूसरी प्रतिभासे।

—शोपेनहोर

सर्वोच्च कला हमेशा अत्यन्त धर्ममय होती है, और महत्तम कलाकार हमेशा भक्त होता है।

—अज्ञात

कलाकार ईश्वरके निकटतम होते हैं। उनकी आत्माओंमें वह अपना चैतन्य फूँकता है, और उनके हाथोंसे वह सुन्दर, कलामय रूपोंमें निकलकर दुनियाको बरकत देता है।

—अज्ञात

कलाकार

सबसे महान् कलाकार वह है जो अपने जीवनको ही कलाका विषय बनाये।

—सत्यभक्त

जीवन समस्त कलाओंसे श्रेष्ठ है जो अच्छी तरह जीना जानता है वही सच्चा कलाकार है।

—गांधी

कलाकार वह है जो लोगोंके समूहके साथ इस तरह खेले जिस तरह कोई उस्ताद प्यानोके पर्दोंसे खेलता है।

—एमर्सन

सच्चा कलाकार अपनी पत्नीको भूखों मरने देगा, बच्चोंको नंगे पैर घूमने देगा और अपनी माँको सत्तर सालकी उम्रमें अपनी जीविकाके लिये मारे मारे फिरनेको छोड़ देगा, लेकिन वह कलाकी आराधनाके अलावा कोई काम नहीं करेगा।

—बर्नार्ड शा

अत्यन्त पवित्र है कलाकारका पेशा, उसका ईश्वरकी कृतियोंसे सीधा सम्बन्ध रहता है और वह मानव जातिको सृष्टिकी शिक्षाका तात्पर्य बताता है। वह मानो ईश्वरके समक्ष, उन विचारोंको सीखता है जो उस पर रोशन किये जाते हैं।

—अज्ञात

कलाकार जब कलाको कल्याणकारी बनाएँगे और जन साधारणके लिये उसे सुलभ कर देंगे तभी उस कलाको जीवनमें स्थान रहेगा...वही काव्य और वही साहित्य चिरञ्जीवी रहेगा जिसे लोग सुगमतासे पा सकेंगे, जिसे वे आसानीसे पचा सकेंगे।

—गांधी

कलाकार बननेके लिये मुख्य शर्त है मानव मात्रके प्रति प्रेम, न कि कला-प्रेम।

—रामकृष्ण

कलाकार तथ्यको पेश करनेका हर्गिज़ नहीं, बल्कि सत्यके आदर्शभूत प्रतिबिम्बको चित्रित करनेका प्रयास करता है।

—अज्ञात

कलंक

कलंक सज़ामें नहीं जुर्ममें है।

—अलफ़ीरी

क़लम

दुनियामें दो ही ताक़तें हैं, तलवार और क़लम, और अन्तमें तलवार हमेशा क़लमसे शिकिस्त खाती है।

—नैपोलियन

कल्याण

युद्ध द्वारा मानव जातिके उत्थानकी बात ऐसी है जैसे घर जलाकर खाने पकानेकी बात।

—एनन

कल्याण सार्वजनिक है, वह व्यक्तिका हो नहीं सकता।

—अज्ञात

आजका दिन सर्वश्रेष्ठ गिनकर अपनी आत्माके कल्याणार्थ यथाशक्ति कार्य करना और शत्रुओंको भी सन्तुष्ट करना।

—हातिम हासम

'अधिकसे अधिक लोगोंका अधिकसे अधिक कल्याण' और जिसकी लाठी उसकी भैंस ये नियम मुझे मान्य नहीं है। 'सबका कल्याण—सर्वोदय और 'निर्बल प्रथम' ये मनुष्यके लिये नियम हैं। हम पशुओंका स्वभाव अबतक छोड़ नहीं सके हैं, उसे छोड़नेमें ही धर्म है।

—गांधी

कल्पना

मेरे विचारोंसे इतिहासकी अपेक्षा कल्पनाका स्थान ऊँचा है, तुलसीदासने कहा है कि रामकी अपेक्षा नाम बढ़कर है, इसका यही अर्थ हो सकता है

—गांधी

कवि

कविका उद्देश्य है और होना चाहिये, 'प्रसन्न करके सिखाना'।

—कार्लाइल

कवि वह बुलबुल है जो अंधकारमें बैठकर अपने ही एकान्तको मधुर ध्वनियोंसे प्रसन्न करनेके लिये गाता है।

—शैली

जो, किसी रोशन और साहित्यिक समाजका महान् कवि बननेकी महत्त्वाकांक्षा रखता है, उसे पहले एक छोटा बच्चा बनना पड़ेगा।

—मैकॉले

वह सच्चा कवि है जो कविताकी अनुभूतिमें उत्कृष्ट और उच्च आनन्द पाता है, चाहे उसने अपनी तमाम ज़िन्दगीमें कविताकी एक लाइन भी न लिखी हो।

—श्रीमती ब्राउनिंग

कविकी उँगलियोंके स्पर्शसे शब्द चमक उठते हैं।

—जौबर्ट

कवि वे हैं जो फूलोंसे महकते विचारोंको उतने ही रंगीन शब्दोंमें लिखते हैं।

—श्रीमती कुकनर

सच्चा दार्शनिक और सच्चा कवि एक ही हैं, सुन्दर सत्य और सच्चा सौन्दर्य दोनोंका उद्देश्य है।

—एमर्सन

हे प्रभो! मुझे अभी तक प्रकाश नहीं मिला, तो क्या मैं केवल एक कवि बनकर रह जाऊँ?

—संत तुकाराम

कविकी आँख, एक लाजवाब दीवानगीमें घूम घूमकर, भूतलसे स्वर्ग और स्वर्गसे भूतल तकको देख लेती है और ज्यों ही कल्पना अनजानी चीज़ोंकी शक्लोंको साकार बनाने लगती है, कविकी क़लम उनको मूर्तिमान करने लगती है और हवाई शून्यको यहींका घर और नाम दे देती है।

—शेक्सपियर

अल्लाह, अल्लाह रे हस्ती-ए-शायर क़ल्ब ग़ुंचेका आँख शबनम की।

—जिगर

हमारी अन्तःस्थ भावनाओंको जागृत करनेकी सामर्थ्य जिसमें होती है; वह कवि है।

—गांधी

हृदयसे सब आदमी कवि हैं।

—एमर्सन

कवि आत्माका चित्रकार है।

—आइज़क डिसराइली

ये कवि सौन्दर्यके ईश्वरीय दूत हैं,।

—ब्राउनिंग

वे कवि हैं जो प्रेम करते हैं, —जो महान् सत्योंकी अनुभूति करते हैं और उन्हें कहते हैं।

—बेली

अथवा, मैं दिखा दूँगी कि उसकी कविता क़तई कविता नहीं है।

—ऐलिज़ाबैथ शैफ़र्ड

देखता हूँ कि हर देशमें कविका एक ही स्वरूप है—वर्तमानका आनन्द लेना, भविष्यके प्रति लापरवाही, समझदारकी सी बातें, बेवक़ूफ़की सी हरकतें ।

गोल्डस्मिथ

पहले शरीफ़ आदमी हुए बिना कोई अच्छा कवि नहीं हो सकता ।

—बेन जॉन्सन

आवाज़ें उसका दिन-रात पीछा करती हैं और वह सुनता है और जब देव कहता है, 'लिख!' तो लाज़िमी तौरसे उसे यह आज्ञा माननी पड़ती है ।

शैली

कवि हमें हिला देता है और पिघला देता है, फिर भी हम नहीं जानते कि कहाँसे था और क्यों ।

शेली

कविका एक और शाही लक्षण है उसकी खुशमिज़ाजी, जिसके बग़ैर कोई कवि नहीं हो सकता—क्योंकि उसका उद्देश्य सौन्दर्य है । उसे साधुशीलता प्यारी है, इसलिये नहीं कि वह जरूरी है, वल्कि उसकी मनोहरताके कारण, वह दुनियामें पुरुषमें, स्त्रीमें आनन्द लेता है, उस लावण्यमयी आभाके कारण जो उनसे छिटकती है । आनन्द और मस्तीकी देवी सुन्दरताको वह विश्वमें फैलाता रहता है ।

—एमर्सन

कवि महान् और ज्ञानकी बातें कहते हैं जिनको कि वे स्वयं नहीं समझते ।

—प्लेटो

महान् कवि होनेसे दोयम चीज़ किसी कविको समझनेकी शक्ति है ।

—लॉंगफ़ैलो

कवि लिखनेके लिये तब तक क़लम नहीं उठाता जब तक उसकी स्याही प्रेमकी आहोंसे शराबोर नहीं हो जाती।

—शेक्सपियर

कवियोंका काम आनन्दका काम है, और उनके लिये मनकी शांति आवश्यक होती है।

—ओविड

ओ कवि, तू जल थल नभका सच्चा स्वामी है।

—एमर्सन

समालोचक, दार्शनिक, असफल कवि है।

—एमर्सन

कविका प्रधान उद्देश्य सौन्दर्य होता है, दार्शनिकका सत्य।

—एमर्सन

कोई आदमी अच्छा आदमी हुए बग़ैर अच्छा कवि नहीं हो सकता।

—बेन जॉन्सन

लोग कैम्पों और क़स्बोंमें इकट्ठे रहते हैं, मगर कवि अकेला रहा करता है।

—एमर्सन

कविता

कविता भावनाओंसे रँगी हुई बुद्धि है।

—प्रोफेसर विल्सन

तमाम देशोंके महान् कवियोंकी सर्वोत्तम कृतियाँ वे नहीं हैं जो राष्ट्रीय हैं, बल्कि वे जो कि सार्वभौम हैं।

—लौंगफ़ैलो

कविता ईश्वरकी इस प्रकार सेवा करनेमें है कि शैतान नाराज़ न हो।

—फुलर

जो कविता वासना से पैदा होती है हमेशा नीचे गिराती है; वास्तविक हार्दिकतासे पैदा हुई कविता हमेशा शरीफ़ और ऊँचा बनाती है।

—ए० ए० हॉपकिन्स

मेरा ख़्याल है कि मैं ऐसा सुन्दर पद्य कभी न देख सकूँगा जैसा कि वृक्ष है। पद्य तो मुझ सरीखे मूर्ख भी बना लेते हैं, लेकिन वृक्षको ईश्वर ही बना सकता है।

—जाइस किलमर

कविताकी एक ख़ूबीसे किसीको इन्कार न होगा।। वह गद्यकी अपेक्षा थोड़े शब्दोंमें अधिक कहती है।

—वोल्टेर

वही कविता है वही स्त्री है जिसके सुनने देखनेसे कवि-हृदय या पतिहृदय तुरन्त सरल और तरल हो जाय।

—अज्ञात

कविता छाया खड़ी करनेकी कला है; वह किसी चीज़को हस्ती प्रदान नहीं करती।

—बर्क

कविता विचारका संगीत है, जो हम तक वाणीके संगीतमें आता है।

—मैन्सफील्ड

उत्कृष्ट कविकी लाजवाब कविता भी बिना राम नामके शोभा नहीं देती जैसे कि सब तरहसे सजी हुई सर्वांगसुन्दरी चन्द्रमुखी स्त्री बिना वस्त्रके शोभा नहीं पाती और अगर किसी कुकविकी सब गुण रहित वाणी राम नामके यशसे अंकित हो तो बुधजन उसे सादर सुनते सुनाते हैं और संत लोग मधुकर की तरह उसके गुणको ग्रहण करते हैं।

—रामायण

कविता आत्माका संगीत है और सबसे ज़्यादा महान् और अनुभूतिशील आत्माओं का।

—वोल्टेर

कविता किससे बनी है? एक भरे हुए हृदयसे, जो कि एक सद्भावनासे लबालब भरा हो।

—गेटे

कविता शैतानकी शराब नहीं, ईश्वरकी शराब है।

—एमर्सन

कविताके जजों और समझनेवालोंकी अपेक्षा हमें कवि ज़्यादा मिलते हैं–एक अच्छासा पद्य समझनेकी अपेक्षा एक रद्दीसा पद्य लिखना आसान है।

—मॉन्टेन

कविता स्वयं ईश्वरकी चीज़ है–उसने अपने पैग़म्बरोंको कवि बनाया; और हम कविताकी अनुभूति करते हैं। प्रेम और शक्तिमें ईश्वरके समान बन जाते हैं।

—बेली

कविता सर्वाधिक आनन्दमय और सर्वोत्तम मनस्वियोंके सर्वोत्तम और सर्वाधिक आनन्दमय क्षणोंका रिकार्ड है।

—शैली

कविता अपने दैवी स्रोतके सबसे ज़्यादा अनुरूप तब होती है जब कि वह धर्मकी शांतिमयी विचारधारा बहाती है।

—वर्ड्स्वर्थ

जिससे आनन्द प्राप्त न हो वह कविता नहीं है।

—जोबर्ट

कविता मनके विशाल क्षेत्रमें बड़ी कष्टकर यात्राओंके बाद पैदा होती है।

—बालज़क

कविताकी कला भावनाओंको छूना है और उसका कर्त्तव्य उन्हें सद्‌गुणकी ओर ले जाना है।

—कूपर

कविता स्वयं ही मेरे लिये अतीव महान् पुरस्कार साबित हुई है। उसने मुझे अपने आसपासकी चीज़ोंमें अच्छाई और सौन्दर्य देखनेकी आदत दी है।

—कॉलरिज

कविता गहरे हृदय-गम्य सत्यका आलाप है—सच्चा कवि बहुत कुछ पैग़म्बरके समान है।

—ई० एच० चैपिन

आप कवितासे सत्यपर पहुँचते हैं; मैं कवितापर सत्यसे पहुँचता हूँ।

—जॉबर्ट

कविता स्वयं ही शक्ति और आनन्द है; ख्वाह सारी मानव-जाति उसे सिंहासनपर विठाये, या वह अपने जादूके तपोवनमें अकेली रहे।

—स्टर्लिंग

कविताका काम हमें ठीक तरह सोचनेके लिये नहीं, ठीक तरह अनुभव करनेके लिये विवश करना है।

—एफ० डब्ल्यू० रॉबर्टसन

कविताका जामा पहिनकर सत्य और भी चमक उठता है।

—पोप

कविता अपनी नाजुक और कोमल भावनाओंके सजीव चित्रणसे, और अपने पैग़म्बराना नज़्ज़ारोंके चमकीलेपनसे, विश्वासको भावी जीवनके प्राप्त करनेमें सहायता देती है।

—चैनिंग

शायरी ग़मकी बहिन है; हर आदमी जो दुःख सहता है और रोता है, शायर है; हर आँसू एक गाना है, और हर दिल एक नज़्म।

—ऐन्ड्री

लोकहृदयको जीत सकनेवाली कविता रचनेकी शक्ति हो तो फिर राजसत्ता भोगनेकी क्या ज़रूरत है।

—भर्तृहरि

जिस कृतिका बुद्धिमान आदर न करें उसके रचनेमें बालकवि वृथा श्रम करते हैं। उसी सरल कविता और विमल कीर्तिका सुजान लोग आदर करते हैं जिसकी दुश्मन भी, स्वाभाविक वैरको भूलकर, तारीफ़ करने लगें।

—रामायण

सत्यसे सत्यको सुन्दरसे सुन्दर रूप देना कविता है।

—श्रीमती ब्राउनिंग

कविता सुन्दरको सुन्दर रूपसे कहना है।

—प्रोफ़ेसर डॉब्सन

कविता सिर्फ़ वही है जो मुझे निर्मल और पुरुषार्थी बनाती है।

—एमर्सन

कविताको अगर हम अपने अन्दर नहीं लिये तो वह कहीं नहीं मिलनेवाली।

—जोबर्ट

कविता केवल कहनेका सबसे सुन्दर और प्रभावक तरीक़ा है, और इसीलिये उसकी महत्ता है।

—मैथ्यू आरनोल्ड

कविता थोड़े शब्दोंकी महान् शक्ति बताती है।

—एमर्सन

हर महान् कविता नियमसे सीमित होती है, परन्तु अपने संकेतोंमें निस्सीम और अनन्त।

—लॉग.फेलो

सबसे अच्छी कविता वह है जो हृदयको सबसे ज्यादा हिला दे। वह उस ईश्वरके सबसे निकट आ जाती है जो कि तमाम शक्तिका श्रोत है।

—लेंडर

गद्य = शब्द सबसे अच्छी तरतीबमें
पद्य = सबसे अच्छे शब्द सबसे अच्छी तरतीबमें।

—कॉलेरिज

कविताका सार है खोज; ऐसी खोज, जो अप्रत्याशित बात कहकर, आश्चर्यचकित और आनन्दित कर देती है।

—सैमुएल जॉन्सन

कविता तमाम मानवीय ज्ञान, विचारों, भावों, अनुभूतियों, और भाषाकी खुशबूदार कली है।

—कॉलेरिज

कविताका महान् लक्ष्य यह है कि वह लोगोंकी चिन्ताओंको शांत करने और उनके विचारोंको उन्नत करनेमें मित्रका काम करे।

—कीट्स

कविता शब्दोंका संगीत है, और संगीत ध्वनिकी कविता है।

—फुलर

समस्त देशोंके महान् कवियोंकी कृतियोंका वह अंश सर्वोत्तम नहीं है जो कि राष्ट्रीय है, बल्कि वह जो कि सार्वभौम है।

—लॉगफेलो

जिसे वीररसपूर्ण कविता लिखनी है, उसे अपना समूचा जीवन वीररसपूर्ण बना डालना होगा।

—मिल्टन

कविता सत्यका उच्चार है—गहरे, हार्दिक सत्यका। सच्चा कवि बहुत कुछ पैग़म्बरके समान है।

—चैपिन

कष्ट

छोटे लोगोंको छोटी तकलीफ़ें बड़ी लगती हैं।

—कहावत

सच्चा कष्ट यदि सचाईके साथ सहन किया जाय तो वह पत्थर जैसे हृदयको भी पानी-पानी कर डालता है।

—गांधी

हज़रत मोहम्मदको तीव्र ज्वरमें बेचैन देखकर उनकी पत्नी रोने लगी। मोहम्मद साहबने कड़ककर कहा—"ख़ामोश! जिसे ईश्वरपर विश्वास है वह कभी इस तरह नहीं रो सकता। हमारे कष्ट हमारे पापोंका प्रायश्चित्त हैं। निस्सन्देह यदि किसी ईश्वरके विश्वासीको एक काँटा भी चुभता है। तो अल्लाह उसका रुतबा बढ़ा देता है और उसका एक पाप धुल जाता है। जिसका जितना पक्का विश्वास होता है उसे उतने ही कष्ट भी दिये जाते हैं यदि विश्वास कमज़ोर है तो कष्ट भी वैसे ही होते हैं किन्तु किसी सूरतमें भी कष्टोंमें उस समय तक कोई माफ़ी न होगी जब तक कि मनुष्यका एक एक पाप धुलकर पृथ्वीपर वह निष्कलंक होकर न विचरने लगे"।

—अज्ञात

क्रोध प्रीतिका नाश करता है; मान विनयका नाश करता है; माया मैत्रीका नाश करती है; और लोभ सबका विनाश करता है।

—भगवान महावीर

कषाय

लोग अपनी ज़िंदगियाँ कषायोंकी सेवामें गुज़ार देते हैं, बजाय इसके कि वे कषायोंको अपनी ज़िंदगियोंकी सेवामें जोतें।

—[illegible]

जब कषाय सिंहासनपर होती है विवेक घरसे बाहर होता है।

—हेनरी

कषाय मनकी मादकता है।

—स्पेन्सर

कषायका अन्त पश्चात्तापकी शुरूआत है।

—फ्रैंकलिन

कसरत

मुझे हर एक काममें सफलता इसलिये मिली है कि मैं प्रातःकाल उठता और कसरत करता था।

—तेलके बादशाह, धनकुबेर राकफैलर

कहावत

कहावतें युगोंका सद्ज्ञान है।

—जर्मन कहावत

कहावतें दैनिक अनुभवकी पुत्रियाँ हैं।

—डच कहावत

किसी भी राष्ट्रकी प्रतिभा, कुशाग्रता और आत्माका पता उसकी कहावतोंसे लगता है।

—बेकन

कांटा

तीक्ष्ण काँटा तुम्हारे अन्दर चुभा हुआ है और उससे तुम पीड़ित हो रहे हो, आश्चर्य है कि इस दुःख-पीड़ामें भी तुम्हें नींद आ रही है! प्रज्ञा और अप्रमादके द्वारा यह काँटा निकाल लो ना?

—बुद्ध

क्रान्ति

इस ज़मानेके दुःखों और जुर्मोंका एक सर्वाधिक घातक स्रोत इस मान्यतामें है कि चूँकि हालात अर्सा-ए-दराज़से ग़लत रहे हैं, यह ग़ैर-मुमकिन है कि वे कभी भी ठीक किये जा सकें।

—रस्किन

बड़ी क्रान्तियाँ शमशीरोंकी अपेक्षा सिद्धान्तोंकी कृतियाँ हैं, और वे पहले नैतिक क्षेत्रमें की जाती हैं, और बादमें भौतिकमें।

—मैज़िनी

निम्नतर वर्गोंकी क्रान्तियाँ हमेशा उच्चतर वर्गोंके अन्यायका परिणाम होती हैं।

—गेटे

कान

दो भले कान सौ ज़बानोंको सुखाकर खुश्क कर सकते हैं।

—फ्रेंकलिन

क़ानून

यहाँ क़ानून ग़रीबोंपर शासन करते हैं और अमीर क़ानूनोंपर शासन करता है।

—प्रो० गोल्डस्मिथ

क्या बिल्ली कभी चूहोंके लिये उचित क़ानून बना सकती है ?

—जॉन ब्राइट

क़ानून दुष्टों द्वारा दुष्टोंके लिये बनाये जाते हैं।

—इटालियन कहावत

नये क़ानून, नये स्वामी, नये धोखे !

—कहावत

मक्कारों और ग़द्दारोंके लिये कोई क़ानून नहीं है; वे गर्तमें पड़नेसे नहीं रोके जा सकते; ज़मीन आख़िरकार उन्हें निगल जाती है। गुरुत्वाकर्षणके सिवाय उनके लिये कोई नियम नहीं है।

—रस्किन

क़ाबू

जो अपने विचारोंपर क़ाबू नहीं रक्खेगा ... जल्द अपनी कृतियोंपरसे क़ाबू खो बैठेगा।

—अज्ञात

काम

जो छोटे छोटे कामोंके पीछे अज़हद पड़े रहते हैं, वे अक्सर बड़े कामोंके लिये नाक़ाबिल बन जाते हैं।

—रोशे

वही काम करना ठीक है, जिसे करके पछताना न पड़े, और जिसके फलको प्रसन्न मनसे भोग सकें।

—बुद्ध

मैंने पचास साल तक औसतन् रोज़ाना बारह घंटे काम किया है।

—वैब्स्टर

यह ग़ैर-मुमकिन है कि आदमी बहुतसे कामोंको करनेकी कोशिश करे और उन सबको अच्छी तरह कर सके।

—ज़ेनोफ़न

काम जीनेका साधन है, मगर वह जीना नहीं है।

—जे० जी० हॉलेंड

सर्वोत्तम काम कभी क़तई धनकी ख़ातिर नहीं किया जाता और न कभी किया जायेगा।

—रस्किन

अगर कोई काम नहीं करता तो उसे खाना भी नहीं चाहिये।

—बाइबिल

हर अच्छा काम पहले असम्भव दिखता है।

—कार्लाइल

अपना काम किये जाओ; उसकी मक़बूलियतका ख़्याल रखकर नहीं बल्कि उसके जमाल व कमालका लिहाज़ रखकर।

—एमर्सन

इनसानकी सिरमौर ख़ुशक़िस्मती यह है कि वह किसी कामके लिये पैदा हुआ हो जिसमें वह लगा और आनन्द पाता रह सके, ख़्वाह वह काम टोकरियाँ बनाना हो या नहरें खोदना, मूर्तियाँ बनाना हो या गाने रचना।

—एमर्सन

उन लड़कोंमेंसे आधे जिन्हें मैं इतने परिश्रमसे अक्षरज्ञान कराता हूँ, खेतीके काममें लगा दिये जायँ तो अधिक अच्छा हो।

—[illegible]

किसीने एक ऋषिसे पूछा— मैं क्या करूँ? उसने उत्तर दिया—वह प्रभु क्या करता है?

—[illegible]

कर्मरततामें ही हमें अपनी खुशी और शान पाना चाहिये; और मेहनत, अन्य हर अच्छी चीज़की तरह, स्वयं अपना इनाम है।

—[illegible]

तुम कहीं हो, दाताकी स्थितिमें रहो याचककीमें नहीं; ताकि तुम्हारा काम सार्वभौम हो सके, व्यक्तिगत ज़रा भी नहीं।

—स्वामी रामतीर्थ

कर्मशील लोग शायद ही कभी उदास रहते हों—कर्मशीलता और ग़मगीनी साथ साथ नहीं रहतीं।

—[illegible]

जुगनू तभी तक चमकता है जब तक उड़ता रहता है; यही हाल मनका है। जब हम रुक जाते हैं, हम अँधेरेमें पड़ जाते हैं।

—[illegible]

तुम जो काम करना चाहते हो, वह सर्वथा अनिन्द्य होना चाहिये; क्योंकि दुनियामें उसकी बेक़दरी होती है जो अयोग्य काम करनेपर उतारू हो जाता है।

काम करनेसे आनन्द हमेशा न भी मिले; मगर बिना काम किये आनन्द नहीं है।

—डिसराइली

शरीरके लिये काम ढूँढ़ लो, मनको ख़ुशी अपने आप मिल जायगी।

—कहावत

वह घोड़ा जिसे चरा-चराकर चर्बीला बनाया जाता है मगर जोता नहीं जाता, लतख़ना हो जाता है।

—इटालियन कहावत

वह अभागा है, और सर्वनाशके मार्गपर है, जो वह नहीं करता जिसे वह कर सकता है, बल्कि वह करनेकी महत्त्वाकांक्षा रखता है जिसे वह नहीं कर सकता।

—गेटे

काम मानो बोलीमें "घुला" रहता है। आदमीके बोलनेसे पता चल जाता है कि उससे क्या काम होगा।

—कार्लाइल

ईश्वर उस शख़्सको कभी मदद नहीं देता जो काम नहीं करता।

—सोफ़ोकिल्स

लोगोंके काम उनके विचारोंके सर्वोत्तम परिचायक हैं।

—लौके

बुरा काम करना नीचता है। बिना ख़तरा मोल लिये अच्छा काम करना मामूली बात है। मगर महान् और शरीफ़ाना काम करना सज्जनका ही भाग है। ख़्वाह, उनके करनेमें उसे सब कुछ ख़तरेमें डाल देना पड़े।

—प्लूटार्क

हर कामको करते वक़्त ऐसी मह्वियत हो मानो दुनियामें और कोई चीज़ है ही नहीं।

—अज्ञात

हम जितना ज़्यादा करें उतना ज़्यादा कर सकते हैं; हम जितने ज़्यादा मशग़ूल होते हैं उतनी ही ज़्यादा फ़ुरसत हमें मिलती है।

—हैज़लिट

कामके मानी हैं अपने वास्तविक स्वरूपसे सामञ्जस्य और ब्रह्माण्डसे एकरूपता।

—स्वामी रामतीर्थ

सच्चा काम अहंकार और स्वार्थको छोड़े बिना होता नहीं।

—स्वामी रामतीर्थ

हर घड़ी काम कर, 'पेड' या 'अनपेड': बस देख यह कि तू काम करता है।

—[illegible]

लोगोंकी जीवनियोंमें निस्स्वार्थ और शरीफ़ाना काम सबसे रोशन वर्क़ हैं।

—थॉमस

अपने कामको चाँद, तारों और सूरजके कामकी तरह निस्स्वार्थ बना दो तभी सफलता मिलेगी।

—स्वामी रामतीर्थ

यदि तुम गन्दगीसे और दुनिया भरके पापोंसे बचना चाहो; तो खूब दृढ़तापूर्वक काम करो, चाहे तुम्हारा काम अस्तबल साफ़ करना ही क्यों न हो।

—थोरो

अगर हमें बड़े ही काम करने हैं, तो आओ हम अपने ही कामोंको बड़े बनायें। हर काम असीम लचक रखता है और छोटेसे छोटा भी दैविक वायुसे भरकर इतना बड़ा हो सकता है कि वह सूरज और चाँदपर ग्रहण डाल दे।

—एमर्सन

कामना

अगर तुम्हें किसी बातकी कामना करनी ही है तो जन्मोंके चक्रसे छुटकारा पानेकी कामना करो; और वह छुटकारा तभी मिलेगा जब तुम कामनाको जीतनेकी कामना करोगे।

—तिरुवल्लुवर

अगर किसी अच्छे ठिकानेपर पड़े रहनेसे किसीकी सारी मनःकामनाएँ पूरी हो सकती हैं तो सूरज हमेशा एक अच्छे स्थानमें ही पड़ा रहता।

—अबूइस्माइल तुग़ाई

कामनाको संतुष्ट नहीं करना अच्छा है। लेकिन शुरू करने के बाद उसे रोकना असंभव नहीं तो कठिन तो है ही।

—गांधी

कामना एक बीज है जो जन्मोंकी फ़सल प्रदान करती है।

—तिरुवल्लुवर

जिसने अपनी कामनाओंका दमन करके मनको जीत लिया और शान्ति पाई तो चाहे वह राजा हो या रंक उसे संसारमें सुख ही सुख है।

—हितोपदेश

कामान्ध

उल्लूको दिनको नहीं दीखता; कौएको रातको नहीं दीखता। मगर कामान्ध अजीब अन्धा है जिसे न दिनको सूझता है न रात को!

—अज्ञात

कामी

कामसे जो पुरुष आर्त्त है वह जीव और जड़में भेद नहीं कर सकता है।

—कालिदास

दुनियामें जितने कामी और लोभी लोग हैं वे कुटिल कौवेकी तरह सबसे डरते हैं।

—रामायण

कामिनी

तू मृगनयनियों और उनकी चर्चासे विमुख हो जा; दो टूक बात कह और हँसी-ठट्ठेसे मुँह मोड़।

—इब्न उल्-वर्दी

कार्य

मनुष्यको अपने कार्यका स्वामी बनना चाहिये; कार्यको अपना स्वामी नहीं बनने देना चाहिये।

—अज्ञात

बाहरी काम अन्दरूनी इरादेका पता दे देते हैं।

—लैटिन सूत्र

कार्य-कारण

कार्य-कारणका महान् सिद्धान्त अटल है।

—अज्ञात

जिस तरह बबूलके पेड़पर आम नहीं लग सकते; मिर्चके पौधेपर गुलाबके फूल नहीं आ सकते; उसी तरह बुरे कामोंका नतीजा कभी सुखकर नहीं हो सकता।

—अज्ञात

एक मनुष्यकी वर्तमान दशा इस अटल नियमका अवश्यम्भावी परिणाम है कि जैसा वह बोता है वैसा काटेगा; जैसा वह काटता है वैसा उसने बोया भी था।

—अज्ञात

कायर

कायर तभी धमकी देता है जब सुरक्षित होता है।

—गेटे

कायर होनेके कारण ही हम दूसरोंके खूनका विचार करते हैं।

—गांधी

जो भागा सो पछताया।

—शीलनाथ

अगर कोई बुज़दिल होकर अहिंसाको लेता है तो अहिंसा उसका नाश करेगी।

—गांधी

जो भय मानता है उसे मानसिक कायर समझना चाहिए और जिस वस्तुसे उसे भय है वह उसे ज़रूर धर दबायेगी।

—अज्ञात

कायरता

अत्याचार व भय दोनों कायरताके दो पहलू हैं।

—अज्ञात

मैं कायरता तो किसी हालतमें नहीं कर सकता। आप कायरतासे मरें, इसकी अपेक्षा आपका बहादुरीसे प्रहार करते हुए और सहते हुए मरना मैं कहीं बेहतर समझूँगा।

—गांधी

कायरताकी अपेक्षा बहादुरीके साथ शरीर-बलका प्रयोग करना कहीं श्रेयस्कर है।

—गांधी

सच तो यह है कि कायरता खुद ही एक सूक्ष्म, और इसलिये भीषण प्रकारकी, हिंसा है; और शारीरिक हिंसाकी अपेक्षा उसे निर्मूल करना बहुत ही मुश्किल है।

—गांधी

कारण

कारणको दूर कर दो, कार्य बन्द हो जायेगा।

—अंग्रेजी कहावत

जैसे अनुभव लेता हूँ, पाता हूँ कि आदमी अपने आप अपने सुख दुःखका कारण है।

—गांधी

काल

'मेरे पास यह है; मेरे पास वह नहीं है; मुझे यह करना चाहिये; मुझे वह नहीं करना चाहिये!' आदमी इस सुरमें बोलता रहता है कि काल-डाकू उसे खींच ले जाता है। कैसी हिमाक़त है यह!

—अज्ञात

सुबह और शामके आने और जानेने छोटेको जवान और बूढ़ेको नष्ट कर दिया।

—सुलतान-उल्-अबदी

कालकी आपदाओंसे व्याकुल न हो क्योंकि व्याकुल होना मूर्खोंका काम है।

—हज़रत अली

कालेज

कॉलेज पत्थरके टुकड़ोंको तो चमकदार बनाते हैं, किन्तु हीरोंपर ज़ंग चढ़ा देते हैं।

—हंगर सॉल

काहिल

काहिल आदमी ऐसी घड़ी है, जिसमें दोनों सुइयोंकी कमी है। चलती भी है तो उतनी ही निरर्थक जितनी कि बन्द रहने पर।

—अज्ञात

उस काहिल आदमीको ज्ञान कभी नहीं मिलता जो कि जवान और बलवान् होते हुए भी ठीक वक़्तपर नहीं उठता, जो प्रमादी है, जिसका मन निरर्थक विचारोंसे भरा रहता है, जो कि निकम्मा और सुस्त है।

—अज्ञात

काहिली

काहिली एक मज़ेदार मगर कष्टप्रद हालत है; आनन्दित होनेके लिये हमें कुछ न कुछ करते रहना चाहिये।

—हैज़लिट

काहिलीसे कोई अमर नहीं हुआ।

—अज्ञात

क़ुदरतके अटल और उचित क़ानूनोंके मुताबिक़, जहाँ काहिली शुरू हुई कि आनन्दोल्लास ख़त्म हो जाता है।

—पोलक

काहिली ज़िंदा आदमीका मदफ़न है।

—जैरेमी टेलर

काहिली और खामोशी मूर्खके गुण हैं।

—फ्रैंकलिन

काहिली, बीमारियाँ लाकर ज़िन्दगीको निहायत छोटी कर देती है। काहिली, ज़ंगकी तरह, परिश्रमकी अपेक्षा अधिक विनाशक है। जो चाभी इस्तैमालमें आती रहती है हमेशा चमकीली रहती है।

—फ्रैंकलिन

काहिली दुर्बल मनोंकी शरण है, और मूर्खोंकी छुट्टी।

—कहावत

काहिली शुरूमें मकड़ीका जाला होती है, अन्तमें फ़ौलादी ज़ंजीर बन जाती है।

—कहावत

किताब

मनुष्यजातिने जो कुछ किया, सोचा और पाया है वह पुस्तकोंके जादू-भरे पृष्ठोंमें सुरक्षित है।

—कार्लाइल

अच्छी किताब वह है जो आशासे खोली जाय और लाभसे बन्द की जाय।

—एमॉस ब्रॉन्सन ऑलकॉट

बुरी किताबसे बढ़कर डाकू नहीं है।

—इटली कहावत

प्रसिद्ध किताबोंमें बेहतरीन विचार और घटनायें हैं।

—एमर्सन

मालूम हुआ है कि हर ज़मानेको अपनी किताबें खुद लिखनी चाहिये।

—एमर्सन

किताबोंपर कामिल यक़ीन करनेसे बेहतर है कि इन्सानके पास कोई किताब ही न हो।

—अज्ञात

कुछ किताबें चखनेके लिए हैं, कुछ निगले जानेके लिये और कुछ थोड़ी सी चबाये जाने और हज़्म किये जानेके लिये।

—बेकन

पुराना कोट पहनो और नई किताब ख़रीदो।

—अज्ञात

अगर यूरोपके तमाम ताज इस शर्तपर मुझे पेश किये जायें कि मैं अपनी किताबें और पढ़ना छोड़ दूँ, तो मैं ताजोंको ठुकराकर दूर फेंक दूँगा और किताबोंका तरफ़दार रहूँगा।

—फेनेलन

किताबें महज़ रद्दी काग़ज़ हैं अगर हम विचारसे प्राप्त ज्ञानपर अमल न करें।

—बुलवर

जब मुझे कुछ पैसा मिलता है, मैं किताबें ख़रीदता हूँ; और अगर कुछ बच रहता है, तो खाना और कपड़े ख़रीदता हूँ।

—इरसमस

बिना किताबोंका कमरा बिना आत्माका शरीर है।

—अज्ञात

किताबें बुद्धिका क़ैदख़ाना हैं, बहुत पुस्तकें पढ़नेसे हमारा दिमाग़ स्वतंत्र विचार ही नहीं कर सकता। खुद विचार करनेकी शक्ति ग़ायब हो जाती है।

—अज्ञात

किफ़ायत

गरीबोंका किफ़ायतशारीका उपदेश देना भोंडा और अपमानजनक है।

—आस्कर वाइल्ड

अगर तुम जितना पाते हो उससे कम ख़र्च करना जानते हो, तो तुम्हारे पास पारस पत्थर है।

—फ्रैंकलिन

किफ़ायत इसमें नहीं है कि कोई कितना कम खर्चा कर सके, बल्कि इसमें कि वह कितनी अक़्लमंदीके साथ उसे ख़र्च कर सकता है।

—अज्ञात

क्रियाशीलता

काहिलोंको काहिलीके लिये भी वक़्त नहीं मिलता, न परिश्रमीको विश्रामके लिये। या तो हम कुछ करते रहें या दुखी बने रहें।

—ज़िमरमन

जुगनू तभी तक चमकता है जबतक उड़ता है; यही बात मनके लिये है; हम रुके कि प्रकाशहीन हुए।

—बेली

क्रियाशीलता यहीं आनन्दरूप है; और बिना क्रियाशीलताके कोई स्वर्ग हो नहीं सकता।

—बॉस

धन्य है वह पुरुष, जो काम करनेसे कभी पीछे नहीं हटता। भाग्य लक्ष्मी उसके घरकी राह पूछती हुई आती है।

—तिरुवल्लुवर

क़िस्मत

किसीकी क़िस्मतकी डोर दूसरेके हाथमें नहीं है।

—अज्ञात

कीर्ति

माना कि श्रेष्ठ कार्यमें मिहनत पड़ती है, मिहनत शीघ्र माप्त हो जाती है, परन्तु कीर्ति अमर रहती है; जब कि नीच कामभें, चाहे उसके करनेमें मज़ा भी आता रहा हो, मज़ा शीघ्र चला जाता है, लेकिन कलंक हमेशा लगा रहता है।

—जॉन स्टुअर्ट

क़ीमत

जो विद्वान् हो और सरल हो उससे मिलो; जो विद्वान् हो और दुष्ट हो उससे सचेत रहो; जो मूर्ख हो और सरल हो उसपर दयाभाव रखो; जो मूर्ख हो और दुष्ट हो उससे हमेशा बचो।

—अज्ञात

अगर तू अपनी क़ीमत आँकना चाहता है, तो अपनी दौलत, ज़मीन, पदवियोंको अलग रखकर अपने अन्तरंगकी जाँच कर।

—सेनेका

यह है जवाहिरातकी दुकान; और इस रत्न, इस ध्येय, इस स्वर्गके लिये तुम्हें अपना सर देना होगा, अपनी नीचता त्यागनी होगी। अगर तुम यह क़ीमत अदा नहीं कर सकते तो हट जाओ यहाँसे।

—स्वामी रामतीर्थ

आपकी क़ीमत वह है जो आपने अपने लिये स्वयं आँक रक्खी है।

—अज्ञात

हर आदमीकी क़ीमत ठीक उतनी है जितनी उन चीज़ोंकी क़ीमत जिनमें वह संलग्न है।

—ऑरिलियस

अक्सर, इस दुनियामें आदमीकी क़ीमतका अन्दाज़ा इससे लगता है कि खुद उसकी नज़रमें उसकी क़ीमत क्या है।

—ला ब्रुयर

"तुम्हें क्या चाहिये?" ईश्वरने पूछा, "क़ीमत दो और ले लो"।

—कहावत

कुकर्म

कुकर्म करते वक़्त मीठे और सुखदायी लगते हैं और कर्म-फल भोगते वक़्त दुःखदायी।

—धम्मपद

अगर तुम वह करते हो जो तुम्हें नहीं करना चाहिये, तो तुमको वह सहना पड़ेगा जो तुम्हें नहीं सहना पड़ता।

—फ्रैंकलिन

किसी महात्माका वचन है कि दिनभर कुविचार और कुकर्मोंसे बचना रातभरके भजन-वंदगीसे बढ़कर है।

—डिमासथिनीज़

कुटुम्ब

तमाम प्राणिवर्ग परमात्माका कुटुम्ब है, और उन सबमें परमात्माको सबसे प्यारा वह है जो परमात्माके इस कुटुम्बका भला करता है।

—हज़रत मुहम्मद

जो मनुष्य पापके द्वारा कुटुम्बका भरण-पोषण करता है, वह महाघोर नरकका भागी होता है।

—अज्ञात

क़ुदरत

क़ुदरतके क़ानून न्याय्य ही नहीं भयंकर हैं। उनमें दुर्बल दया नहीं है।

—लौंगफ़ैलो

क़ुदरत कोई ग़लतियाँ माफ़ नहीं करती। उसकी हाँ हाँ है, और उसकी नहीं, नहीं।

—अज्ञात

जब मनुष्य सत्पथपर चलता है तो सारी क़ुदरत उसकी मुक्तिके लिये प्रयत्नशील हो जाती है।

—अज्ञात

क़ुदरतन् तुम जो कुछ हो, उसपर साबित-क़दम रहो; अपनी व्यक्तिगत विशेषताकी लाइन कभी न छोड़ो। वही बनो जिसके लिये कि क़ुदरतने तुम्हें बनाया है, और तुम कामयाब होगे; अगर कुछ और बने तो तुम अवस्तुसे दस हज़ार गुना बदतर होगे।

—सिडनी स्मिथ

क़ुदरतके सब काम धीरे-धीरे होते हैं ।

—बेकन

क़ुदरतको भला-बुरा न कहो उसने अपना फ़र्ज़ पूरा किया, तुम अपना करो।

—मिल्टन

कुपथ

जो निहायत तेज़ चलता है, लेकिन ग़लत रास्ते चलता है, रास्तेसे सिर्फ़ दूर-दूर होता जाता है ।

—प्रायर

कुपन्थ

जो कुपन्थमें पैर रखते हैं उनमें ज़रा भी बुद्धिबल नहीं रह जाता ।

—रामायण

कुमारी

कुमारियोंको मृदुल और लजीली, सुननेमें तेज और बोलनेमें मन्द होना चाहिये ।

—कहावत

क़ुरबानी

जो जानवर क़ुरबान किये जाते हैं उनका गोश्त या उनका खून अल्लाहको नहीं पहुँचता; अल्लाह तुमसे सिर्फ़ तुम्हारा तक़वा (बुराईसे बचे रहना) क़बूल करता है ।

—क़ुरान

कुरीति

कुरीतिके अधीन होना पामरता है उसका विरोध करना पुरुषार्थ है ।

—गांधी

कुलीन

मैं कुलीन पैदा हुआ हूँ, जिसे कोई अपनी जायदाद नहीं बना सकता; जिसपर कोई हकूमत नहीं कर सकता; संसारके किसी भी राज्यका मैं कठपुतली या नमकहलाल नौकर सिद्ध नहीं हो सकता।

—थोरो

सच्चे कुलीन सज्जनमें ये चार गुण पाये जाते हैं—हँसमुख चेहरा, उदार हाथ, मृदु भाषण और स्निग्ध निरभिमान।

—तिरुवल्लुवर

"मैं मज़दूर हूँ—तुम मालिक हो। मैं दिनभर मिहनत करके थोड़ा-सा लेता हूँ—तुम मेरा सब कुछ लेकर थोड़ा-सा मुझे देते हो।......तुम कुलीन और मैं अछूत हूँ क्योंकि तुम अपने घरों को गन्दा करते हो और मैं उन्हें साफ़ करता हूँ।"

—अज्ञात

कुशलता

हमारी सारी कठिनाइयाँ अपनी अकुशलतामें हैं। कुशलता आई कि हमें आज जो कष्टकारक प्रतीत होता है वही आनन्द देनेवाला मालूम होगा। तंत्र सुव्यवस्थित और सात्त्विक होगा तो कभी कष्ट मालूम न होना चाहिये।

—गांधी

कुसंग

लायक लोग बुरी सोहबतसे डरते हैं, मगर छोटी तबीयत के आदमी बुरे लोगोंसे इस तरह मिलते-जुलते हैं मानो वे उनके ही कुटुम्बवाले हैं।

—तिरु

नरकवास अच्छा; ईश्वर दुष्टोंकी संगति न दे।

—रामायण

कुसंगति पाकर कौन नष्ट नहीं हो जाता? जो नीच लोगों की रायपर चलता है उसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है।

—रामायण

कुसंगति शैतानका जाल है।

—अज्ञात

कूटनीति

कूटनीति कुदरती इन्सानी गुणोंके खिलाफ़ एक ऐसा दुर्गुण है जिसने दुनियाके बड़े हिस्सेको गुलामीकी जंजीरोंमें जकड़ रक्खा है और जो मानवताके विकासमें सबसे बड़ी बाधा है।

—रोम्या रोलाँ

क्रूरता

मूक पशुओंके प्रति क्रूरता निम्नतम और कमीनतम लोगों-का एक खास पाप है।

—जोन्स

क्रोध

जो क्रोधके मारे आपेसे बाहर है वह मृतक-तुल्य है; किन्तु जिसने क्रोधको त्याग दिया है वह सन्त-समान है।

—तिरुवल्लुवर

शांत रहे; क्रोध युक्ति नहीं है।

—डेनियल वेब्स्टर

क्रोध करना दूसरेके अपराधोंका बदला अपनेसे लेना है।

—अज्ञात

बहुतोंने क्रोधमें ऐसी बातें कहीं और की हैं जिन्हें अगर वे फेर ले सकें तो अपना सर्वस्व वार दें !

—अज्ञात

बलवानको जल्दी गुस्सा नहीं आता।

—अज्ञात

क्रोधका सबसे बड़ा इलाज विलम्ब है।

—सैनेका

क्रोध करना बरोंके छत्तेमें पत्थर मारना है।

—मलाबारी कहावत

क्रोध भूलको दोष बनाता है और सत्यको अविवेक बनाता है।

—अज्ञात

क्रोधसे सबसे अच्छी तरह वह बचा रहता है जो याद रखता है कि ईश्वर उसे हर वक्त देख रहा है।

—प्लेटो

जब क्रोध उठे, तो उसके नतीजोंपर विचार करो।

—कन्फ्यूशियस

क्रोध करके हम दूसरेको उसकी ग़लती नहीं समझाते हैं, अपनी पशुताकी स्वीकृति उससे कराना चाहते हैं।

—हरिभाऊ उपाध्याय

क्रोध धनवानको घृणित और निर्धनको अत्यन्त घृणित बना देता है।

—अज्ञात

सारी दुनियाको एक कर देनेकी कल्पना शोध निकालना आसान है, परन्तु अपने मनके अन्दरका क्रोध जीतना कठिन है।

—विनोबा

जिस आगको तुम दुश्मनके लिये जलाते हो वह अक्सर तुमको ही ज़्यादा जलाती है।

—चीनी कहावत

यदि किसीने अवज्ञा की है, या कोई काम बिगाड़ा है, तो उसपर क्रोध करना आगमें पड़े हुए पर तेल छिड़कना नहीं तो क्या है ?

—हरिभाऊ उपाध्याय

क्रोध मूर्खतासे शुरू होता है और पश्चात्तापपर खत्म होता है।

—पिथागोरस

क्रोधसे बचा तो तू पापसे भी बचा रहेगा।

—अज्ञात

आदमीकी तमाम कामनायें तुरन्त पूरी हो जाया करें अगर वह अपने क्रोधको दूर कर दे।

—तिरुवल्लुवर

'सारथी' मैं उसीको कहता हूँ जो रास्ता छोड़कर जानेवाले रथकी तरह क्रोधके पैदा होते ही उसे वशमें कर ले। बाक़ी तो सब रास थामनेवाले हैं।

—अज्ञात

क्रोधका अन्त पाश्चात्तापका प्रारम्भ है।

—[illegible]

क्रोध, समझदारीको घरसे बाहर निकाल देता है और दरवाज़ेकी चटखनी लगा देता है।

—फुलर

जिस तरह खौलते पानीमें अपना प्रतिबिम्ब दिखाई नहीं दे सकता, उसी तरह क्रोधाभिभूत मनुष्य यह नहीं समझ सकता कि उसका आत्महित किसमें है।

—बुद्ध

क्रोधमें समुन्दरकी तरह बहरा; आगकी तरह उतावला।

—शेक्सपियर

स्वर्ग उन लोगोंके लिये है जो अपने क्रोधको वशमें रखते हैं।

—क़ुरान

अग्नि उसीको जलाती है जो उसके पास जाता है मगर क्रोधाग्नि सारे कुटुम्बको जला डालती है।

—तिरुवल्लुवर

क्रोध हँसीको हत्या करता है और ख़ुशीको नष्ट कर देता है।

—तिरुवल्लुवर

प्रभुकी आज्ञा है कि मेरा भक्त कभी क्रोध न करे।

—मलिक दिनार

ग़ुस्सा [क्रोध] और शहवत [काम] आदमीको अंधा कर देते हैं और उसे उसकी ठीक हालतसे भटका देते हैं।

—मौलाना रूम

महात्माओंके क्रोधकी शान्ति उनको प्रणाम करनेसे होती है।

—कालिदास

इस बातपर ख़फ़ा न होओ कि तुम दूसरोंको वैसा नहीं बना सकते जैसा तुम चाहते हो, क्योंकि तुम स्वयं अपनेको भी वैसा नहीं बना पाते जैसा तुम बनना चाहते हो।

—थॉमस कैम्पी

जिस मनुष्यने उच्च पद प्राप्त किया है, उसके हृदयमें द्रोहका बोझ नहीं हुआ करता। और जिसके स्वभावमें क्रोध हो, वह उच्च पद नहीं प्राप्त कर सकता।

—अज्ञात

क्रोधी

घमंडीका कोई खुदा नहीं ; ईर्ष्यालुका कोई पड़ोसी नहीं ; क्रोधीका वह खुद भी नहीं।

—बिशप हॉल

कोमलता

तू किसीकी कोमल बातोंसे धोखेमें न आ जा। साँपकी कोमलतासे दूर रहना ही उचित है।

—दुनरल-बर्दी

कोमल शब्द सख़्त दिलोंको भी जीत लेते हैं।

—अज्ञात

सच्ची कोमलता, सच्ची उदारताकी तरह, अपने प्रति किये गये दुर्व्यवहारकी अपेक्षा अपने द्वारा किये गये दुर्व्यवहारसे ज़्यादा ज़ख़्मी होती है।

—ग्रेविले

कोशिश

सही कोशिश किसे कहें? एक बात यह है कि सही कोशिशसे बहुत वक़्त हमें इच्छित फल मिलता है। इसलिये फलसे ही कहा जाता है कि कोशिश सही थी। लेकिन अनुभवसे मालूम होता है कि ऐसा हमेशा नहीं बनता। सही कोशिश यह है कि साधनकी योग्यताके बारेमें निश्चय है और विपरीत फल देखनेपर भी साधन बदलता नहीं, न उद्यम बदलता है या कम होता है।

—गांधी

शान तो कोशिशमें है, इनाममें नहीं।

मिल्नर

हम कोशिशसे सन्तुष्ट रहें, बशर्ते कि कोशिश सही और यथा शक्ति हो। परिणाम सिर्फ़ कोशिशपर निर्भर नहीं रहता। और चीज़ें होती हैं जिसपर हमारा कोई अंकुश नहीं होता।

—गांधी

लोग हमारी कोशिशोंकी कामयाबीसे फ़ैसला देते हैं। ईश्वर कोशिशोंको ही देखता है।

—चार्लट एलिजाबेथ

कौशल

करनेका कौशल करनेसे आता है।

—एमर्सन

कृतघ्नता

आदमी, बिलाशक, अशरफ़-उल-मखलूक़ात है, और सबसे निकृष्ट जानवर कुत्ता है, परन्तु सन्त इस बातपर सहमत हैं कि कृतघ्न आदमीसे कृतज्ञ कुत्ता बेहतर है।

—सादी

कृत्य

कृत्योंमें बोलो, लफ़्फ़ाज़ीका समय चला गया, सिर्फ़ काम ही काफ़ी है।

—ह्विटर

कृतज्ञ

किसी दार्शनिकको शब्दोंकी इतनी कमी कभी महसूस नहीं हुई जितनी कि कृतज्ञको।

—कोल्टन

कृतज्ञता

कृतज्ञता शाब्दिक धन्यवादसे कहीं बढ़कर है और कार्य शब्दोंसे अधिक कृतज्ञता प्रकट करता है।

—स्वैल

जिसने कभी उपकार किया हो उससे बड़ा अपराध हो जाय तो भी उसके उपकारके एवज़में उसे क्षमा कर देना चाहिये।

—अज्ञात

कृतघ्नताके बाद सहनेमें सबसे कष्टप्रद चीज़ कृतज्ञता है।

—एच० डब्लू० बीचर

कृपा

मुझे ऐसा लगता है कि मेरी प्रभुपर जितनी भक्ति है उसकी अपेक्षा प्रभुकी मुझपर कृपा अधिक है।

—विनोबा



[ख]

ख़र्च

जो अपनी आमदनीसे ज़्यादा ख़र्च करे और उधारका रुपया न चुकावे उसे उसी वक़्त जेलखाने भेज देना चाहिये, चाहे वह कोई हो।

—थैकरे

बुद्धिमानीके साथ ख़र्च करता हुआ आदमी थोड़े ख़र्चेसे भी अपनी गुज़र कर सकता है। मगर फ़िज़ूलख़र्चीसे सारे ब्रह्माण्डकी सम्पदा भी नाकाफ़ी हो सकती है।

—अज्ञात

जो आदमी अपने धनका ख़्याल न रखकर उसे खुले हाथों लुटाता है, उसकी सम्पत्ति शीघ्र ही समाप्त हो जायेगी।

—तिरुवल्लुवर

भरनेवाली नाली अगर तंग है तो कोई परवाह नहीं, बशर्ते कि खाली करनेवाली नाली ज़्यादा चौड़ी न हो।

—तिरुवल्लुवर

ख़ज़ाना

साँप हवा खाकर रहते हैं मगर वे दुर्बल नहीं होते, जंगली हाथी सूखी घास खाकर जीते हैं मगर कितने बलवान् होते हैं। साधुलोग कन्द-मूल-फल खाकर अपना समय गुज़ारते हैं। सन्तोष ही इन्सानका बेहतरीन ख़ज़ाना है।

—अज्ञात

ख़तरा

ख़तरा गया, ख़ुदा भूला।

—कहावत

ख़तरेकी जगह बेतहाशा दौड़ पड़ना बेवकूफ़ी है, बुद्धिमानोंका यह भी एक काम है कि जिससे डरना चाहिये, उससे डरें।

—तिरुवल्लुवर

बड़े कामोंके, जिन्हें हम नहीं कर सकते और छोटे कामोंके, जिन्हें हम नहीं करना चाहते, बीच ख़तरा यह है कि हम कुछ नहीं करेंगे।

—अज्ञात

ख़तरा तो ज़िन्दगीकी रूह है। ख़तरेका पूर्ण अभाव मौतके बराबर है।

—अज्ञात

हमेशा डरते रहनेसे ख़तरेका एकबार सामना कर डालना अच्छा।

—नीतिसूत्र

ख़तरनाक

डायोनीज़से पूछा गया कि किन जानवरोंका काटा सबसे ख़तरनाक होता है। उसने जवाब दिया कि जंगलियोंमें निन्दकका और पालतुओंमें चापलूस का।

—अज्ञात

खरा

कठोर मगर हितकी बात कहने और सुननेवाले बहुत थोड़े हैं।

—रामायण

ख़रीद

छातीपर पिस्तौल रखकर धान्य छीनना और सोनेकी मुहर देकर ख़रीदना, इनमें अक्सर ज़रा भी फेर-फ़र्क नहीं होता।

—विनोबा

ख़ामोशी

ख़ामोश रहो, या ऐसी बात कहो जो ख़ामोशीसे बेहतर है।

—पिथागोरस

जैसे कि हमें हर प्रमादपूर्ण बकवासका जवाब देना होगा उसी तरह हर प्रमादभरी ख़ामोशीका भी।

—फ्रैंकलिन

जब कि बोलना चाहिये उस वक़्त ख़ामोश रहनेसे लोगोंका 'ख़ात्मा' हो सकता है, जब कि ख़ामोश रहना चाहिये—उस वक़्त बोलनेसे हम अपने शब्दोंको फ़िज़ूल खर्च करते हैं। अक़्लमन्द आदमी सावधानतापूर्वक दोनों ग़लतियोंसे बचता है।

—कन्फ्यूशियस

जब कहनेसे कुछ नहीं होता, तब पवित्र मासूमियतकी ख़ामोशी, अक्सर कारगर होती है।

—शेक्सपियर

खादी

खादी देशके सब प्रजाजनोंकी आर्थिक स्वतन्त्रता और समानताके आरम्भकी सूचक है।

—गांधी

खाना

एक वक़्त खाना शेरके लिये काफ़ी होता है, आदमीके लिए तो होना ही चाहिए।

—फ़ोर्डिस

पशु चरते हैं, आदमी खाता है, समझदार आदमी ही जानता है कि किस तरह खाना चाहिये।

—ब्रिलेट सेवेरिन

भीख माँगनेसे भी अधिक अप्रिय उस कंजूसका जमा किया हुआ खाना है, जो अकेला बैठकर खाता है।

—तिरुवल्लुवर

वे भले आदमी जो दूसरोंको देकर बचा हुआ खाना खाते हैं, सब पापोंसे छूट जाते हैं, और जो पापी लोग सिर्फ़ अपने लिये ही खाना पकाते हैं वह पाप ही खाते हैं।

—गीता

ख़ान्दान

धुआँ आस्मानसे शेख़ी बघारता है और राख ज़मीनसे, कि वे आगके ख़ान्दानवाले हैं।

—टैगोर

ख़िताब

बेवक़ूफ़को सचमुच ख़िताबकी ज़रूरत है, उससे लोग उसे 'रायबहादुर' और 'सर' कहना सीख जाते हैं और उसके असली नाम, 'बेवक़ूफ़', को भूल जाते हैं।

—क्राउन

ख़िताब आदमियोंकी शोभा नहीं बढ़ाते, बल्कि ख़िताबोंकी शोभा आदमियोंसे है।

—मैकियावेली

ख़ुश

सबको ख़ुश कर सकना असम्भव है, यह जीवनका लक्ष्य भी नहीं है।

अज्ञात

तुझे इस बातका ख़्याल बारबार क्यों आता है कि फ़लाँ मुझसे खुश है या नहीं? तू सदा यही देख कि तेरी अन्तरात्मा तुझसे खुश है या नहीं?

—हरिभाऊ उपाध्याय

खुश करनेकी कला खुश होने में है। प्रिय बनना अपनेसे और दूसरोंसे सन्तुष्ट होना है।

—हैज़लिट

ख़ुश करना

बहुतोंको खुश करना ज्ञानियोंको नाखुश करना है।

—प्लुटार्क

जो लोग हर शख़्सको खुश करनेका नियम बना लेते हैं, शायद ही किसीके लिये हृदय रखते हों। उनकी खुश करनेकी इच्छाका रहस्य खुद-पसन्दी है, और उनका मिज़ाज अक्सर चंचल और जफ़ाकार होता है।

—अज्ञात

ख़ुशकिस्मत

जो खुशकिस्मत हैं वे पुराने लोगोंकी बातोंसे नसीहत हासिल करते हैं, और जो बदकिस्मत हैं उनकी बातोंसे दूसरे नसीहत हासिल करते हैं।

—अज्ञात

ख़ुशगोई

विवेक दुर्लभ है, खुशगोईकी भरमार है।

—यंग

ख़ुशमिज़ाज

ख़ुशमिज़ाज लोगोंके सहवासमें ताज़गी मिलती है, हम यह खुशी दूसरोंको प्रदान करनेका हार्दिक प्रयास क्यों न करें? देखेंगे कि आधी लड़ाई फ़तह हो गई अगर हम कोई 'मुहर्रमी' बात कभी न कहा करें।

—श्रीमती चाइल्ड

ख़ुशमिज़ाज वही हो सकता है, जो ज्ञानवान् और नेक है।

—बोवी

दुनियाको अब आवश्यकता है, ज्यादा ख़ुशमिज़ाज साधुओं-की।

—अज्ञात

बिना ख़ुशमिज़ाजीके चतुर आदमी बिना हेंडिलकी बाल्टी के मानिन्द है—उसमें चीज़ें अमा सकती हैं, लेकिन उससे आपको अधिक सहूलियत नहीं मिलती।

—अज्ञात

तुमने हर फ़र्ज़ पूरा नहीं किया जबतक कि तुमने ख़ुश-मिज़ाजी और ख़ुशगवारीका फ़र्ज़ पूरा नहीं किया।

—बक्सटन

ख़ुशमिज़ाजी एक बेहतरीन पोशाक है जिसे कोई सोसाइटी में पहिन सकता है।

—थैकरे

सम्यक्ज्ञान और सत्कर्मसे ख़ुशमिज़ाजी स्वभावतः पैदा होती है।

—ब्लेर

ख़ुशमिजाजी तन्दुरुस्ती है, ग़मगीनी बीमारी।

—हैलिबर्टन

खुशमिज़ाजीसे दिलमें एक क़िस्मका उजाला रहता है जो कि चेहरेपर प्रतिबिम्बित रहता है।

—अज्ञात

खुशीकी नज़रें हर रक़ाबीको दावत बना देती हैं, और वे ही स्वागतकी सिरताज हैं।

—मैसिंजर

.खुशहाली

आदमीकी खुशहालियाँ उसकी सच्चरित्रताका फल है।

—एमर्सन

.खुशामद

खुशामद्से जो चीज़ मिलती है उससे कायाको सुख परन्तु आत्माको दुःख होता है।

—अज्ञात

.खुशामदी

कमीना आदमी एक ही है, और वह है खुशामदी।

—अज्ञात

.खुशी

हर खुशीके पहले कुछ क्रियाशीलता रही होती है।

—शोपेनहोर

सब खुशियोंमें परिश्रमका फल मधुरतम है।

—वौविनर्ग

खुशियोंसे सावधान रह!

—यंग

दुनियामें दिखलाई देनेवाली खुशीमें से अधिकांश खुशी नहीं, कला है।

—साउथ

खुशी परिश्रमसे आती है न कि असंयम और काहिलीसे। इन्सान कामसे प्रेम करता है, तो उसका जीवन सुखी है।

—रस्किन

इन्सानोंको खुशीसे ज्यादा क्या चाहिये? खुशमिज़ाज आदमी बादशाह है।

—निकर स्टाफ

सारी खुशी देनेमें है, चाहने या माँगनेमें नहीं।

—स्वामी रामतीर्थ

तमाम दुनियाकी खुशियाँ उपभोगके समय इतनी मधुर नहीं होतीं जितनी आशाके वक्त, परन्तु तमाम आध्यात्मिक खुशियाँ आशाकी अपेक्षा फलित होकर अधिक आनन्द देती हैं।

—फैलथम

उस खुशीसे बच, जो तुझे कल काटे।

—हरबर्ट

खुशीको हम जितनी लुटायेंगे उतनी ही हमारे पास अधिक होगी।

—विक्टरह्यूगो

ख़ुदगर्ज़ी

हममें खुदगर्ज़ीकी मौज़ूदगी, हैवानियतकी निशानी है।

—अज्ञात

ख़ुद-पसन्दी

ख़ुद-पसन्दी बिना तलीका प्याला है, उसमें तुम चाहे तमाम बड़ी बड़ी झीलोंका पानी उँड़ेल दो, भर कभी नहीं पाओगे।

—होम्स

ख़ुदा

महज़ परम्परागत विश्वासोंका ख़ुदा विश्वकी महा ग़ैर-हाज़िर-मुतलक़ चीज़ है।

—डब्ल्यू० आर० एलजर

हालाँ कि ख़ुदाकी चक्की बड़ी धीरे धीरे पीसती है, लेकिन बड़ा ही बारीक पीसती है!

—लौंगफ़ेलो

जैसा आदमी होता है, वैसा ही उसका ख़ुदा होता है, इसीलिये ख़ुदाकी अक्सर खिल्ली उड़ती रही।

—गेटे

इस दुनियाका ख़ुदा दौलत, ऐश और अहंकार है।

—ल्यूथर

अपने रबका नाम याद रक्खो और सब (चीज़ोंसे) बे लगाव होकर उसीकी तरफ़ लगे रहो।

—क़ुरान

ख़ुदाके पानेका रास्ता सिवाय ख़ल्क़की यानी दूसरोंकी ख़िदमतके और कोई नहीं है। माला लेकर 'अल्लाह, अल्लाह' रटनेसे, चटाई बिछाकर नमाज़ पढ़नेसे या गुदड़ी ओढ़ लेनेसे अल्लाह नहीं मिल सकता।

—एक सूफ़ी

ख़ुदी

जो ख़ुदीसे भरा हुआ है, बिलकुल ख़ाली है।

—अज्ञात

पापकी सारी जड़ ख़ुदीमें है।

—गीता

जहाँ ख़ुदी है वहाँ ख़ुदा नहीं है।

—अज्ञात

आदमी आप ही अपना दोस्त है और आप ही अपना दुश्मन। जिस किसीने अपने आपे (ख़ुदी) को जीत लिया वह अपना दोस्त है और जिसका आपा उसपर सवार है। वह आप अपना दुश्मन है।

—गीता

ख़ुशियाँ

क्षणिक ख़ुशियोंको त्यागकर सर्वोच्च हितके रास्ते लग।

—अज्ञात

हमारी ख़ुशियाँ वास्तवमें कितनी कम हैं, अफ़सोस है कि उनकी ख़ातिर हम अपने चिरंतन कल्याणको ख़तरेमें डाल देते हैं।

—शेली

पापमय और ममनूअ ख़ुशियाँ ज़हरीली रोटियोंकी तरह हैं, उनसे उस वक़्त भूख भले ही मिट जाय, मगर आख़िरश उनमें मौत है।

—टायरन एडवर्ड्स

ख़ूबसूरती

तन्दुरुस्ती और ख़ुशमिज़ाजीसे ख़ूबसूरती बनी है।

—सर बेंटी

खूबसूरतीको बाहरी गहनोंकी मददकी ज़रूरत नहीं होती, वह तो सिंगार बिना ही सबसे अधिक शोभा पाती है।

—थोम्सन

किसीने अरस्तूसे पूछा, 'खूबसूरती क्या है?' उसने जवाब दिया, 'यह सवाल अन्धोंसे पूछो'।

—अज्ञात

खेती

किसी राष्ट्रके लिये धन प्राप्त करनेके सिर्फ़ तीन तरीके दिखाई देते हैं, पहिला है लड़ाईसे, जैसा कि रोमनोंने अपने विजित पड़ोसियोंको लूटकर किया था—यह डकैती है, दूसरा व्यापारसे, जो कि अमूमन् धोकाज़नी है, तीसरा खेतीसे, जोकि एकमात्र ईमानदार तरीक़ा है, जिसमें कि आदमी ज़मीनमें डाले हुए बीजकी वास्तविक वृद्धि पाता है, एक क़िस्मका अभीक्ष्ण चमत्कार, जिसे ईश्वर उसकी मासूम ज़िंदगी और पुण्यमय उद्योगके लिये इनामके तौरपर उसके हक़में दिखलाता है।

—फ्रंकलिन

जो कोई अनाजकी एक बालकी जगह दो या घासकी एक पत्तीकी जगह दो उगाता है, ज्यादा खुशहालीका मुस्तहक़ है, और तमाम राजनीतिज्ञोंकी समूची जातिकी बनिस्बत वह देशकी ज्यादा ज़रूरी सेवा करता है।

—स्विफ्ट

वह सुन्दरी जिसे लोग धरणी बोलते हैं, अपने मन ही मन हँसा करती है जब कि वह किसी काहिलको यह कह रोते हुए देखती है—'हाय, मेरे पास खानेको कुछ भी नहीं है।'

—तिरुवल्लुवर

खेल

जो अपनी सारी ज़िंदगी खेलमें गुज़ारता है वह उस शख़्सकी तरह है जो सिर्फ़ किनारियाँ पहिनता है, और सिर्फ़ चटनियाँ खाता है।

—रिचार्ड फ़ुलर

खोना

पूरे तौरसे पाना सबसे अच्छा है, लेकिन अगर वह असम्भव हो तो उसके बाद सबसे अच्छी चीज़ पूरे तौरसे खोना है।

—टैगोर

खोज

दुनिया शब्दोंसे सन्तुष्ट रहती है, वस्तु-स्वरूपकी खोज करने विरले ही निकलते हैं।

—पास्कल

आकाशमें एक नया ग्रह खोज निकालनेकी अपेक्षा पृथ्वीपर आनन्दके एक नये स्रोतका पता लगाना अधिक महत्त्वपूर्ण है।

—अज्ञात

पेश्तर इसके कि दुनिया तुम्हें खोजे तुम्हें अपने आपको खोज लेना होगा।

—अज्ञात

[ग]

गंगा

वह देश धन्य है, जहाँ गंगा है।

—रामायण

गङ्गा इसलिये महान् है कि वह मैल छुड़ाती है। सच्ची महत्ता दूसरोंका उद्धार करने में है।

—अज्ञात

गणवेष

ओफ़, गणवेष एक तुच्छ आदमीको भी किस क़दर ग़रूरसे भर देता है !

—एन० डगलस

गति

आहिस्ता चलनेसे न डर, सिर्फ़ चुपचाप खड़ा रहनेसे।

—चीनी कहावत

गदहा

गदहा रेशमी वस्त्र पहिन ले तो भी लोग उसे गदहा ही कहेंगे।

—अज्ञात

गधा

गधेको बहुत रेंकना पड़ेगा पेश्तर इसके कि वह सितारों को हिलाकर गिरा दे।

—जॉर्ज ईलियट

ग़प

ग़पकी क्या ख़ूब परिभाषा की गई है कि वह दो और दो को मिलाकर पाँच बनाती है।

—अज्ञात

गमन

दावतवाले घरकी बनिस्बत मातमवाले घर जाना बेहतर है।

—अज्ञात

ग़रज़

आदमीको किसी भी दूसरेसे अपनी ग़रज़ पूर्ण करानेकी इच्छा नहीं रखनी चाहिये।

—गीता

ग़लतियाँ

मैंने जो ज़रा दुनिया देखी है उससे यही सीखा है कि दूसरोंकी ग़लतियोंपर अफ़सोस करूँ न कि ग़ुस्सा।

—लौंग फ़ैलो

गवर्नमेंट

गवर्नमेंटका सर्वोच्च ध्येय लोगोंको संस्कृत बनाना है।

—एमर्सन

ग़रीब

१. किसी भी ग़रीब आदमीका अपमान न करो। अपनी आपदाके कारण वह दयाका पात्र है अपमानका नहीं।

—अज्ञात

ग़रीब वह नहीं है जिसके पास कम है, बल्कि वह जो अधिक चाहता है।

—डैनियल

वही ग़रीब है जिसकी तृष्णा विशाल है। मन अगर सन्तुष्ट हो तो कौन धनी है कौन दरिद्री।

—अज्ञात

धनवान होते हुए भी जिसकी धनेच्छा दूर नहीं हुई है, वह सबसे अधिक ग़रीब है।

—इब्राहिम आदम

'मैं ग़रीब हूँ' ऐसा कहकर किसीको पापकर्ममें लिप्त न होना चाहिये; क्योंकि ऐसा करनेसे वह और भी कंगाल हो जायेगा।

—तिरुवल्लुवर

ग़रीबी

दो तीक्ष्ण काँटे शरीरको सुखा डालते हैं—ग़रीबकी इच्छा और कमज़ोरका ग़ुस्सा।

—अज्ञात

ग़रीबीका लाज़िमी नतीजा पराधीनता है।

—जॉन्सन

ग़रीबीकी शर्म उतनी ही बुरी है जितना धनका अहङ्कार।

—अँग्रेज़ी कहावत

इस दुनियामें ग़रीबी पाप है।

—अज्ञात

तमाम प्रचारित धूर्ततापूर्ण उपदेशोंमें इससे ज़्यादा सड़ा हुआ कोई नहीं है कि ग़रीबी चारित्रको निर्मल करती है।

—एल० मैरिक

दुष्ट होनेसे निर्धन होना अच्छा ।

—कहावत

संसार न्यायनिष्ठ और नेक आदमीकी ग़रीबीको हेय दृष्टिसे नहीं देखता ।

—तिरुवल्लुवर

ग़रीबी तन्दुरुस्तीकी माँ है ।

—पुरानी अंग्रेज़ी कहावत

ग़रीबी ऐसा बड़ा पाप है और इतने अधिक प्रलोभन और दुःखसे ओत-प्रोत है, कि मैं दिलोजानसे चाहूँगा कि तुम इससे बचकर रहो ।

—डॉक्टर जॉन्सन

मैंने ग़रीबीके समान अन्य कोई वस्तु युवकके लिये अधिक दुःखदायी नहीं देखी ।

—अबू नशानाश

ग़रीबी नहीं, ग़रीबीसे शर्मिन्दा होना शर्मकी बात है ।

—फ्रैंकलिन

ग़रीबी और मौतमें मुझे मौत पसन्द है । मरनेकी तकलीफ़ थोड़ी है, दरिद्रताका दुःख अनन्त है ।

—अज्ञात

ग़रूर

ग़रूर ऐश्वर्यकी उपज है ।

—अज्ञात

ग़लती

ग़लतीको खुले तौरसे मान लेना ग़लती करनेवालेके लिये आरोग्यप्रद औषधके समान है ।

—कहावत

ग़लतीका बचाव ग़लतीसे ही किया जा सकता है।

—बिशप जिवेल

ग़लती तो कोई आदमी कर सकता है, लेकिन सिवाय बेवक़ूफ़के उसमें लगा कोई नहीं रहेगा।

—सिसरो

ग़लतियाँ सबसे होती हैं, उसका दुःख न मानना चाहिये।

—गांधी

अपनी ग़लतीको मान लेना कोई अपमान नहीं है।

—गजको

दूसरोंकी ग़लतियोंके लिये उन्हें दोष देनेकी बजाय उनसे सबक़ लो।

—स्पेनिश कहावत

कोई आदमी बहुत सी और बड़ी बड़ी ग़लतियाँ किये बग़ैर कभी महान् या भला नहीं बना।

—ग्लेड्स्टन

गहने

चाहे जैसे हलके और ख़ूबसूरत क्यों न हों हर हालतमें गहने त्याज्य हैं।

—अज्ञात

गहराई

ईश्वर आत्माकी गहराईको पसन्द करता है उसके कोलाहलको नहीं।

—वर्ड्सवर्थ

ग्रहण

मेरी समझसे जिससे हम कुछ भी नहीं ले सकते, ऐसा संसारमें कोई नहीं है।

—गांधी

ग्रन्थ

ग्रन्थोंका काम जिज्ञासा उत्पन्न करना मात्र है। मगर उसे तृप्त करनेका एक ही उपाय है, और वह है स्वानुभव।

—विवेकानन्द

ग्रन्थके मानी हमेशा सद् शास्त्र नहीं होते, अक्सर उसके मानी निकलते हैं 'ग्रन्थि' (गाँठ)।

—रामकृष्ण परमहंस

गाना

वह गाना जो मैं गाने आया था, आज तक बे गाया पड़ा है।

—टैगोर

मुझे राष्ट्रके सरल गाने लिखने दो, और मुझे इसकी परवाह नहीं कि उसके क़ानून कौन बनाता है।

—फ्लैचर ऑफ़ साल्टन

गाय

यह ईश्वरके द्वारा करुणापर लिखी गई कविता है।

—गांधी

गाली

मुझे तुम चाहे जितनी गालियाँ दो; यह अक्सर ईज़ाकी बनिस्बत फ़ायदा ज़्यादा करती है।

—अज्ञात

जो धीर, वीर और अक्षोभ हैं वे गाली देते हुए शोभा नहीं पाते।

—रामायण

एक नीच और दुष्ट आदमी द्वारा अश्लील गालियाँ दिये जानेपर कैटोने उससे शान्तभावसे कहा—'मेरा तेरा मुक़ाबला बड़ी ना बराबरीका है, क्योंकि तू दुर्वचन आसानीसे सह सकता है, और ख़ुशीसे लौटा सकता है; लेकिन मेरे लिये उसका सुनना असामान्य है, और बोलना नाख़ुश गवार है।'

—अज्ञात

गुण

कौवेकी चोंचको सोनेसे मढ़िये, उसके पैरोंको माणिकसे जड़िये, और उसके हर एक पंखमें मोती पिरोइये, तो भी वह कौआ ही रहेगा, राजहंस नहीं हो जायेगा।

—अज्ञात

साधारण गुणोंसे असाधारण साधु बनते हैं।

—अज्ञात

गुणसे ही उच्चता प्राप्त होती है, ऊँचे आसनपर बैठनेसे नहीं। महलके शिखरपर बैठ जानेसे कौआ गरुड़ हो जाता है क्या?

—अज्ञात

शत्रुके गुण ग्रहण कर लो, और गुरुके दुर्गुण छोड़ दो।

—अज्ञात

जिसे तुम दूसरोंमें देखकर ख़ुश होते हो, वह तुममें हो तो अक्सर दूसरोंको ख़ुश करे।

—चैष्टरफ़ील्ड

मनुष्यमें अक्सर वह अच्छे या बुरे गुण होते हैं जिन्हें वह मनुष्यजातिमें देखता है।

—शेन्स्टन

गुणसे कोई स्पृहणीय होता है न कि रूप से।

—अज्ञात

अक्सर उस आदमीमें ही वे अच्छाइयाँ या बुराइयाँ होती हैं जिन्हें वह मनुष्यजातिपर आरोपित करता है।

—शेन्स्टन

अगर किसीमें गुण होंगे तो वे खुदबखुद प्रकाशित हो उठेंगे; कस्तूरीको अपनी मौजूदगी क़सम खाकर नहीं साबित करनी पड़ती।

—अज्ञात

गुण-गान

ईश्वरने कहा है—'हे नारद, न मैं वैकुण्ठमें रहता हूँ और न तो योगियोंके हृदयमें ही रहता हूँ किन्तु मेरे भक्त जहाँ पर मेरे गुणोंका गान करते हैं मैं वहीं रहता हूँ।'

—अज्ञात

ईश्वरने कहा है—हे सत्यनिष्ठजनो, संसारमें गुणगान करके सम्पत्तिवान बनो। मेरा गुणगान इस लोकमें सम्पत्ति-दायक और परलोकमें भी लाभदायक है।

—मलिक दिनार

गुण-ग्राहक

गुणीका क़द्रदाँ भी गुणी है।

—अज्ञात

गुण-ग्राहकता

एक चीज़ है जो कि योग्यतासे कहीं ज्यादा विरल, सूक्ष्म और दुर्लभ है। वह है योग्यताको पहिचाननेकी योग्यता।

—अज्ञात

गुणवान

गुणवान मनुष्योंको कष्ट आते हैं, निर्गुणी सुखसे रहते हैं। तोतेको पिंजड़ेमें बन्द रहना पड़ता है परन्तु कौआ आज़ादीसे उड़ता फिरता है।

—अज्ञात

गुणी

सद्गुणशील, मुंसिफ़ मिज़ाज और दानिशमंद आदमी तब तक नहीं बोलता जब तक ख़ामोशी नहीं हो जाती।

—सादी

गुनाह

गुनाह छिपा नहीं रहता। वह मनुष्यके मुखपर लिखा रहता है। उस शास्त्रको हम पूरे तौरसे नहीं जानते, लेकिन बात साफ़ है।

—गांधी

गुप्त

दिलकी ऐसी कोई गुप्त बात नहीं है जिसे हमारे काम प्रकट न कर देते हों।

—मोलियर

अगर तू सफलता और मनःकामनाकी पूर्तिका इच्छुक है, तो हर अमीर और ग़रीबसे अपनी बातोंको छिपाये रख।

—सलाह-उद्दीन सफ़दी

गुर

चार हज़ार वचनोंमेंसे मैंने चार गुर चुने हैं जिनमेंसे दो को सदा याद रखना चाहिये यानी मालिक और मौत, और दो को भूल जाना चाहिये यानी भलाई जो तू किसीके साथ करे और बुराई जो कोई तेरे साथ करे।

—लुक़मान

गुरु

शिष्यके ज्ञानपर 'सही' करना यही गुरुका काम है, बाक़ीके लिये शिष्य स्वावलम्बी है।

—विनोबा

गहरी प्रार्थना, सच्ची हार्दिकता और तीव्र लालसासे जो स्वयं ही ईश्वर तक पहुँच सकता है, उसके लिये गुरुकी आवश्यकता नहीं है। लेकिन आत्माकी ऐसी लगन बहुत दुर्लभ है, इसलिये गुरुकी आवश्यकता है।

—रामकृष्ण परमहंस

धर्माचरण सिखानेवाला सच्चा गुरु अनुभव है।

—विवेकानन्द

एक मात्र ईश्वर ही विश्वका पथ-प्रदर्शक और गुरु है।

—रामकृष्ण परमहंस

गुरुभक्त

सच्चा गुरुभक्त किसी रोज़ सारी दुनियाको भारी पड़ जायेगा।

—विवेकानन्द

गुलाम

गुलाम वह है जिसने अपने विचार या मतकी आज़ादी खो दी है।

—अज्ञात

वह कोई आदमी गुलाम नहीं है जिसकी इच्छा-शक्ति स्वतंत्र है।

—अज्ञात

जिसकी सङ्कल्प-शक्ति आज़ाद है, वह गुलाम नहीं है।

—टाइरियस

जिसकी अपनी कोई राय नहीं है, लेकिन दूसरोंकी राय और रुचिपर निर्भर रहता है, गुलाम है।

—क्लॉपस्टॉक

कुछ गुलाम बाहरी कोड़ोंसे काममें जुतते हैं, शेष अन्य अपनी अशांति और महत्त्वाकांक्षाके अन्दरुनी कोड़ों से।

—रस्किन

एक गुलाम जिसे अपनी गुलामीका ज्ञान है और वह अपनी गुलामीकी ज़ंजीरोंको तोड़नेकी कोशिश नहीं करता तो वह पशुके समान है।

—गांधी

देहसे ही नहीं जो दिलसे भी गुलाम हो गये हैं वे कभी आज़ादी हासिल नहीं कर सकते।

—गांधी

मुझे वह आदमी दो जो कषायका गुलाम नहीं है तो मैं उसे अपने हृदयकी कोरमें रखूँगा। अरे, हृदयके हृदयमें रखूँगा।

—शेक्सपियर

बहुतसे आदमी गुलाम हैं क्योंकि वे 'नहीं' का उच्चारण नहीं कर सकते।

—अज्ञात

होमरका कथन है कि 'जिस दिन आदमी गुलाम बनता है अपने आधे सद्गुण खो बैठता है', वह सचाईके साथ, यह और कह सकता था कि वह आधेसे ज़्यादा खो सकता है जब कि वह गुलामोंका मालिक बनता है।

—व्हेटले

सबसे बड़े गुलाम वे हैं जो अपनी कषायोंकी गुलामीमें लगे रहते हैं।

—डॉजिनीज

गुलामी

इस तथ्यको आप चाहे जितना छिपायें, गुलामी फिर भी कड़वा घूँट है।

—स्टर्न

अरे आदमियो, गुलामीके लिये तुम अपनेको कैसा तैयार करते हो।

—टेसिटस

अपनी कषायोंका दासत्व करते रहना सबसे बड़ी गुलामी है।

—कहावत

ईश्वरपर निर्भर रहकर ही दुनियाकी गुलामीसे छूटा जा सकता है। धर्मके अनुष्ठानसे जो फल मिले उसे भी प्रभुप्रेमके लिये विसर्जन कर दो। ईश्वराज्ञा पालन करने पर ही सच्चा आनन्द मिलेगा।

—हयहया

जो भी हृदयसे प्रार्थना करता है, वह कभी गुलामीको क़बूल नहीं कर सकता।

—गांधी

गुलामीमें रहना इन्सानकी शानके खिलाफ़ है। जिस गुलामको अपनी दशाका भान है और फिर भी अपनी ज़ंजीरोंको तोड़नेका प्रयास नहीं करता वह पशुसे हीन है। अन्तःकरणसे प्रार्थना करनेवाला गुलामीको हर्गिज़ गवारा नहीं कर सकता।

—अज्ञात

गुलामीको एक घंटेके लिये भी रहने देना अन्याय है।

—विलियम पिट

गुलामीसे मौत अच्छी है।

—अज्ञात

कोई पाँच ही रुपये महीनेपर दासत्व स्वीकार करते हैं, कोई बड़ी तनख़्वाहपर; लेकिन कोई ऐसे भी होते हैं कि लाख रुपयेपर भी ग़ुलामी मंज़ूर नहीं करते।

—अज्ञात

ग़ुस्सा

गुस्सेमें हो, तो बोलनेसे पहिले दस तक गिनो; अगर बहुत गुस्सेमें हो, तो सौ तक।

—जफ़रसन

जब कभी तुम गुस्सेमें हो, तो यक़ीन रखो कि वह सिर्फ़ मौजूदा बेहूदगी ही नहीं है, बल्कि यह कि तुमने एक आदत बढ़ा ली।

—एपिक्टेटस

गुस्सा बिना सबब नहीं होता, मगर शायद ही कभी माक़ूल सबबसे होता हो।

—फ्रैंकलिन

गुस्सा करनेके मानी हैं आत्माकी शांति खोना, अपने ऊपर क़ाबू खोना, विचारकी स्पष्टता खोना, परिस्थितिकी पकड़ खोना, और अक्सर निकटवर्ती लोगोंका मान खोना।

—अज्ञात

जिस वक़्त आप गुस्सेमें हों उस वक़्त सामनेवाले आदमीको दो बात सुनाना बड़ा मँहगा पड़ जाता है।

—अज्ञात

गुस्सेका दौरा आत्मगौरवके लिये ऐसा विघातक है जैसा ज़िंदगीके लिये संखिया।

—जे० जी० हालैंड

गोपनीय

मनुष्यको गुप्त रूपसे भी वह बात न कहनी चाहिये जो वह प्रत्येक सभामें नहीं कह सकता।

—अज्ञात

गौरव

जो मनुष्य दर्प, क्रोध और विषय-लालसाओंसे रहित है, उसमें एक प्रकारका गौरव रहता है, जो उसके सौभाग्यको भूषित करता है।

—तिरुवल्लुवर

सुख-समृद्धि ईर्ष्या करनेवालोंके लिये नहीं है, ठीक उसी तरह गौरव दुराचारियोंके लिये नहीं है।

—तिरुवल्लुवर

गृहस्थ

दुष्टके सामने मान झुकानेवाला गृहस्थ दुनियामें दुष्टपनेको बढ़ानेका कारण होता है।

—विवेकानन्द



[घ]

घर

वह घर दुःखी है जहाँ मुर्गेकी अपेक्षा मुर्गी ज़्यादा बुलन्द आवाज़से बाँग देती है।

—अज्ञात

अच्छे घरसे स्वर्ग ज़्यादा दूर नहीं है।

—एनन

राजा हो या किसान, सबसे सुखी वह है जो कि अपने घरमें शान्ति पाता है।

—गेटे

घंटी

गिर्जेकी घंटी औरोंको बुलाती है, मगर खुद उपदेशपर लक्ष्य नहीं देती।

—फ्रैंकलिन

घमण्ड

किसी भी हालतमें अपनी शक्तिपर घमंड न कर यह बहुरूपिया आसमान हर घड़ी हज़ारों रंग बदलता है।

—हाफ़िज़

घुड़दौड़

घुड़दौड़ें प्रधानतः मूर्खों, गुंडों और चोरोंकी खुशी और मुनाफ़ेके लिये चलाई जाती हैं।

—जी० गिसिंग

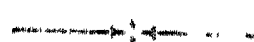
घृणा

घृणा या बदला लेनेकी इच्छासे मानसिक रोग उत्पन्न होते हैं।

—अज्ञात

सत्यपरायण मनुष्य किसीसे घृणा नहीं करता।

—नैपोलियन



हमारे अन्य सुरुचिपूर्ण प्रकाशन

[हिन्दी ग्रंथ]

१७. दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियाँ—डा० जगदीशचन्द्र जैन एम० ए० ३)

१८. आधुनिक जैन कवि—श्रीमती रमारानी जैन ३।।।)

१९. हिन्दी जैन साहित्यका संक्षिप्त इतिहास—श्री कामताप्रसाद जैन २।।।=)

२०. कुन्दकुन्दाचार्यके तीन रत्न—(अध्यात्म विषयका अमूल्य ग्रंथ) २)

[संस्कृत ग्रंथ]

२१. मदनपराजय— (हिन्दीसार और प्रस्तावना सहित) ८)

२२. तत्त्वार्थवृत्ति—(हिन्दीसार और विस्तृत प्रस्तावना सहित) १६)

२३. न्यायविनिश्चयविवरण[भाग १]—(विस्तृत हिन्दी प्रस्तावनाके साथ) १५)

२४. कन्नड़ प्रान्तीय ताड़पत्रीय ग्रंथ सूची १३)

[प्राकृत ग्रंथ]

२५. महाबन्ध [भाग १]—(हिन्दी अनुवाद सहित) १२)

२६. करलक्खण—[सामुद्रिकशास्त्र] १)

यू० पी० सरकारसे १००० रु० से पुरस्कृत

श्री शान्तिप्रिय द्विवेदीकी अमर कृति

२७. पथचिह्न

इसमें लेखकने अपनी स्वर्गीया बहिनके दिव्य संस्मरण लिखे हैं, साथ ही साथ साहित्यिक, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक समस्याओंका वर्णन भी किया है। इसकी भाषा और शैली हृदयको बरबस छू लेती है।

मूल्य दो रु०

गोयलीयजीकी नवीनतम कृति मुद्रित हो रही है

२८. शेर-ओ-सुख़न

प्रारंभसे ई० सन् १९०० तककी उर्दू शायरीका प्रामाणिक इतिहास, निष्पक्ष आलोचना और इस अवधिके प्रायः सभी शायरोंकी श्रेष्ठतम रचनाओंका संकलन और परिचय

संक्षिप्त विषय-सूची:—

अवतरण—

प्रारंभिक युग—

मध्यवर्त्ती युग—

अर्वाचीन युग—

 पृष्ठ लगभग ७००

[च]

चर्खा

मुझे शांतिकी तमाम शक्ति चर्खेसे मिलती है।

—गांधी

चमत्कार

बुद्धिका चमत्कार देखना हो तो शास्त्रोंको देखो। हृदयका जादू देखना हो तो कलाओंके पास जाओ।

—अज्ञात

पूर्ण त्याग और ईश्वरमें पूर्ण विश्वास ही हर चमत्कारका रहस्य है।

—रामकृष्ण परमहंस

बुद्धि कोई सन्तोषजनक उत्तर दे या न दे, जो ईश्वरपर सच्ची श्रद्धा रखता है वह क़दम क़दमपर चमत्कारोंका अनुभव कर सकता है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

चरित्र

सच तो यह है कि ग़रीब हिन्दुस्तान स्वतन्त्र हो सकता है लेकिन चरित खोकर धनी बने हुए हिन्दुस्तानका स्वतन्त्र होना मुश्किल है।

—गांधी

क्या तुम यह जानना चाहते हो कि अमुक मनुष्य उदार-चित्त है या क्षुद्र-हृदय? आचार-व्यवहार चरित्रकी कसौटी है।

—तिरुवल्लुवर

चरित्र मनुष्यके अन्दर रहता है, यश उसके बाहर।

—अज्ञात

चलन-व्यवहार

चलन-व्यवहार माने उधारका एक प्रकार।

—विनोबा

चाकरी

नौकर यदि चुप रहता है तो मालिक उसे गूँगा कहता है; यदि बोलता है तो उसे बकवादी कहता है; यदि पास रहता है तो ढीठ कहता है; यदि दूर रहता है तो उसे मूर्ख कहता है; यदि खोटी-खरी सह लेता है तो उसे डरपोक कहता है; और यदि नहीं सहता है तो उसे नीच कुलका कहता है। मतलब यह कि पराई चाकरी बड़ी ही कठिन है: योगियोंके लिये भी अगम्य।

—भर्तृहरि

चापलूस

तमाम जंगली पशुओंमें मुझे अत्याचारीसे बचाओ; और तमाम पालतू जानवरोंमें चापलूससे।

—बेन जान्सन

चापलूस उन बिल्लियोंकी तरह हैं जो सामनेसे चाटती हैं, और पीछेसे खसोटती हैं।

—जर्मन कहावत

चापलूस सबसे बुरे दुश्मन हैं।

—टैसीटस

चापलूस मित्र सरीखे दिखते हैं, जैसे भेड़िये कुत्ते सरीखे दिखते हैं।

—अज्ञात

चापलूसी

चापलूसी बेवक़ूफ़ोंका आहार है।

—अज्ञात

मुश्किलसे कोई आदमी होगा जिसपर चापलूसीका असर न पड़ता हो; लेकिन जब वह किसी खोखे मूर्खपर आज़माई जाती है तो वह उसे चालीसगुना ज़्यादा मुतलक़तर अहमक़ बना देती है।

—ईसप

चापलूसी मीठा ज़हर है।

—अज्ञात

चापलूसीसे दोस्ती, और सचाईसे दुश्मनी पैदा होती है।

—कहावत

चापलूसी लेने और देनेवाले दोनोंको भ्रष्ट करती है।

—बर्क

चारित्र

प्रकृतिमें वास्तविक सज्जनके चारित्रसे प्रियतर कुछ भी नहीं है।

—क्लार्क

जीवनका लक्ष्य सुख नहीं, चारित्र है।

—बीचर

चारित्र ही धर्म है।

—जैनाचार्य

चारित्रका कारख़ाना दैनंदिन जीवन है।

—अज्ञात

अगर आप सोचते हैं कि अपनी किताबोंपर उधर बैठे रहकर वीरता निर्माण कर लेंगे तो यह वह मूढ़तम कल्पना है जो नवयुवकोंको कुम्हलाकर उनका सर्वनाश किया करती है। आप सपने देखदेखकर चारित्रवान् नहीं बन सकते। अपने चारित्रका निर्माण आपको गढ़गढ़कर और ढालढालकर करना होगा।

—फ्रॉड

मनुष्यको कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिये जिससे वह अपने आपको छोटा और हीन समझने लगे।

—डॉ० गणेशप्रसाद

दुनियाकी निन्दा-स्तुतिके भरोसे चलनेवालेकी मौत है, अपने हृदयपर हाथ रखकर चल।

—अज्ञात

उत्तम व्यक्ति शब्दोंमें सुस्त और चारित्रमें चुस्त होता है।

—कन्फ्यूशियस

दुर्बल चारित्रवाला उस सरकंडेकी तरह है जो हवाके हर झोंकेपर झुक जाता है।

—माघ

बुद्धिसे चारित्र बढ़कर है।

—एमर्सन

मैं अपने कैम्पमें चारित्रहीन मनुष्यकी अपेक्षा चेचक, पीला बुखार, हैज़ा और ताऊनका आना ज्यादा पसन्द करूँगा।

—कैप्टिन जॉन ब्राउन

आदमीके वर्तनमें कोई हरकत ऐसी नहीं है, ख्वाह वह कितनी ही सरल और नगण्य हो, जिसमें कुछ ऐसी लघु विचित्रतायें न दिखें जो उसके गुप्त चारित्रको प्रगट कर देती हैं। कोई बेवक़ूफ़ बुद्धिमान् और समझदारकी तरह न तो कमरेमें आता है, न जाता है, न बैठता है, न उठता है, न चुप रहता है, न खड़ा होता है।

—ब्रूयर

चारित्र संग-साथमें विकसित होता है और बुद्धि एकान्तमें।

—गेटे

बिना चारित्रके ज्ञान शीशेकी आँखकी तरह है—सिर्फ़ दिखलानेके लिये, और एकदम उपयोगिता-रहित।

—स्विनॉक

यश वह है जो कि लोग-लुगाइयाँ हमारे विषयमें सोचते हैं; चारित्र वह है जो ईश्वर और देव हमारे विषयमें जानते हैं।

—पेन

चारित्र एक ऐसा हीरा है जो हर किसी पत्थरको घिस सकता है।

—अज्ञात

तुम्हारी एक प्रधान आवश्यकता है—जो ठीक है वह करते रहना, चाहे ऐसा कितनी ही मजबूरीमें करना पड़े, जब तक कि तुम वैसा बिना मजबूरीके न करने लग जाओ। और तब तुम आदमी हो।

—रस्किन

चारित्र-बल

अब तो ज्ञानबल भो चारित्र-बलके लिये स्थान छोड़ता जा रहा है।

—अज्ञात

चारित्रवान

जिसे दूसरे बुद्धि और वक्तृत्व-बलसे कर पाते हैं, चारित्रवान उसे अपने प्रभावसे कर देता है।

—अज्ञात

मज़बूत चारित्रवाला ध्येयकी तरफ़ सीधा जाता है।

—अज्ञात

चाल

यदि तू चाल चल जाता है और मैं तुझसे इसकी शिकायत नहीं करता तो यह न समझ कि मैं बेवक़ूफ़ हूँ।

—अज्ञात

आहिस्ता चलोगे तो दूरकी मंज़िल तै कर लोगे।

—अज्ञात

चालाकी

जहाँ योग्यताका अभाव है वहाँ चालाकी पैदा हो जाती है।

—फ़्रैंकलिन

चाह

यदि मुझे किसी भौतिक वस्तुकी चाह नहीं है तो फिर मुझे अनुचित रूपसे किसीके सामने दबनेकी क्या आवश्यकता है?

—अज्ञात

चिकित्सक

संयम और परिश्रम इन्सानके दो सर्वोत्तम चिकित्सक हैं; परिश्रमसे भूख तेज़ होती है और संयम अतिभोगसे रोकता है।

—रूसो

चित्तकी प्रसन्नता

चित्तकी प्रसन्नतासे आत्मामें एक प्रकारकी धूप रहती है जो कि उसे एक अभीक्ष्ण और अविनाशी प्रशान्तिसे ओतप्रोत रखती है।

—एडीसन

चित्रकला

चित्रकला महान् है; नहीं, ईश्वर चित्रकार है।

—एमर्सन

चित्रकार

चित्रकार अपने कामके करनेके लिहाज़से मिकैनिक है; लेकिन अपनी धारणा, भावना और डिज़ाइनकी दृष्टिसे कवि तकसे कम नहीं है।

—शिलर

चिन्ता

चिन्ता आपत्तिका वह सूद है जिसे वाजिबुलअदा होनेसे पहले ही अदा कर दिया जाता है।

—डीन इंगे

जो दूसरेके कामकी चिन्ता नहीं करता, वह आराम और शान्ति पाता है।

—इटालियन कहावत

मुझे निश्चय है कि चिन्ता जीवनकी शत्रु है।

—शेक्सपियर

बेफ़िक्र दिल भरी थैलीसे अच्छा है।

—अरबी कहावत

हमारी चिन्तायें हमेशा हमारी कमज़ोरियोंके कारण होती हैं।

—जोबर्ट

भक्त लोग अन्न और वस्त्रकी व्यर्थ चिन्ता करते हैं, जो देव तमाम विश्वको पालता है वह क्या अपने भक्तोंकी उपेक्षा करेगा?

—शौनक

बिस्तरेपर चिन्ताओंको ले जाना अपनी पीठपर गट्ठर बाँधकर सोना है।

—हॅलिबर्टन

चुगली

मुँहसे कोई कितनी ही नेकीकी बातें करे, मगर उसकी चुगलखोर ज़बान उसके हृदयकी नीचताको प्रकट कर ही देती है।

—तिरुवल्लुवर

जो आदमी सदा बुराई ही करता है और नेकीका कभी नाम भी नहीं लेता, उसको भी प्रसन्नता होती है, जब कोई कहता है—'देखो, यह किसीकी चुगली नहीं खाता।'

—तिरुवल्लुवर

चुनाव

मधुमक्षिकाकी तरह गुलाबसे मधु ले लो और काँटे छोड़ दो।

—अमेरिकन कहावत

चुप

दूसरे को चुप करनेके लिये पहले खुद चुप हो जाओ।

—अज्ञात

चुम्बन

अपने प्रेममें ईश्वर सान्तको चूमता है और आदमी अनन्तको।

—टैगोर

चेहरा

जिस तरह बिल्लौरी पत्थर पासवाली चीज़का रंग धारण करता है, उसी तरह चेहरा भी दिलकी बातको प्रगट करने लगता है।

—तिरुवल्लुवर

शानदार रौबीला चेहरा किस कामका जब कि दिलके अन्दर बुराई भरी हुई है और दिल इस बातको जानता है?

—तिरुवल्लुवर

अच्छे चेहरेके पीछे भद्दा दिल छिपा हो सकता है।

—कहावत

चेहरा हृदयका प्रतिबिंब है।

—अज्ञात

अगर तुम्हारा चेहरा मुस्कराना चाहता है, मुस्कराने दो; अगर नहीं, तो उसे मजबूर करो।

—अज्ञात

आईनेमें चेहरा देखकर एक निगाह दिलपर भी डाल।

—अज्ञात

एक टोपीके नीचे दो चेहरे मत लिये फिरो।

—अज्ञात

चोर

चोर सबको चोर समझता है।

—अज्ञात

जो शारीरिक परिश्रम करके माक़ूल बदला चुकाये बग़ैर खाता है चोर है।

—गांधी

जो दूसरोंके लिये चुराता है अपने लिये फाँसीपर चढ़ा दिया जायेगा।

—अज्ञात

जो दूसरोंका ख़याल नहीं रखता वह 'चोर' है।

—गीता

क्या हम नहीं जानते कि हम छोटे चोरोंको फाँसी देते हैं, और बड़े चोरोंके आगे सलाम झुकाते हैं?

—जर्मन कहावत

बड़े चोर छोटे चोरोंको फाँसीपर चढ़ाते हैं।

—कहावत

जो अपने हिस्सेका काम किये बिना ही भोजन पाते हैं वे चोर हैं।

—गांधी

चोरी

जिस वस्तुकी हमें आवश्यकता नहीं है उसे रखना, लेना भी चोरी है।

—गांधी

अगर कोई आदमी मेहनतके रूपमें क़ीमत चुकाये बग़ैर ज़मीनसे फल लेकर खाता है तो वह चोरी करता है।

—अज्ञात

उस चीज़का भी इस्तैमाल करना जो कि मानी तो हमारी जाती है लेकिन जिसकी हमें ज़रूरत न हो, चोरी है।

—गांधी

शारीरिक उद्योग करना मनुष्यका धर्म है, जो उद्यम नहीं करता वह चोरीका अन्न खाता है।

—गांधी



[छ]

छल

वह सभा नहीं है जिसमें वृद्ध पुरुष न हों, वे वृद्ध नहीं हैं जो धर्म ही की बात नहीं बोलते, वह धर्म नहीं है जिसमें सत्य नहीं और न वह सत्य है जो कि छलसे युक्त हो।

—महाभारत

छलछंद

छलछंद और विवेकमें उतना ही अन्तर है जितना लंगूर और आदमीमें।

—अज्ञात

छिछला

छिछले दिमागका इससे ज्यादा अचूक लक्षण दूसरा नहीं कि वह हमेशा वस्तुओंके 'हास्यास्पद' पहलूके देखनेका आदी होता है। चूँकि हास्यास्पद, जैसा कि अरस्तूने कहा है, 'हमेशा सतहपर ही होता है।'

—अज्ञात

छिछलापन

लोग भड़कते हैं, जोशोखरोश दिखाते हैं, निश्चयात्मक होते हैं, क्योंकि वे छिछले होते हैं।

—एमील

छिद्रान्वेषण

ऐ मेरे कथनमें अवगुण निकालनेवाले, जान ले कि गुलाबकी सुगन्धि भी गुबरीलेके लिये दुःखदायी होती है।

—[illegible]—वर्दी

छूट

विकारोंके अधीन होकर अत्यन्त निर्दोष मालूम होनेवाली छूट भी जो कोई लेता है वह गड्ढेमें गिरता है और दूसरोंको भी गिराता है।

—गांधी

[ज]

जगत्

आत्मा एक, माया शून्य। इस एक और शून्यके संयोगसे असंख्य जग हैं।

—विनोबा

जो अज्ञानीको जगत्‌रूप दिखता है वही ज्ञानीको भगवान्‌रूप दिखता है।

—अज्ञात

जगत्‌में जो कुछ है वह भगवान्‌का प्रकाश है।

—अरविन्द घोष

जड़ता

किसी किसी अति कठिन रोगकी भी दवा है मगर जड़ताकी कोई औषधि नहीं है।

—क़ैस-बिन-इल खतीम

जनहित

जनहितके लिये उत्साह बाइज़्ज़त और शरीफ़ आदमीका गुण है; और उसे निजी .खुशियों, मुनाफ़ों और अन्य तृप्तियोंका स्थान ले लेना चाहिये।

—स्टील

जन्म

हमारा मानव-अवतार इसलिये हुआ है कि हमारे अन्तरमें जो ईश्वर वसता है उसका साक्षात्कार हम कर सकें।

—गांधी

जन्म-मरण

जो जन्म-मरणकी बात सही हो, और है, तो हम मृत्युसे ज़रा भी क्यों डरें, दुखी हों, और जन्मसे खुश हों? प्रत्येक मनुष्य यह सवाल अपनेसे करे।

—गांधी

जप

इस कलियुगके योग्य वास्तविक भक्तिमय और आध्यात्मिक अभ्यास प्रेमके प्रभुका नाम जपना है।

—रामकृष्ण परमहंस

ज़बान

मिल्टनसे पूछा गया, 'क्या आपका इरादा अपनी दुख्तरको मुख़्तलिफ़ ज़बानें सिखानेका है?' जवाबमें वे बोले, "ना भाई! औरतके लिये एक ज़बान काफ़ी है!"

—अज्ञात

लम्बी ज़बान, छोटी ज़िंदगी।

—अरबी कहावत

दसमें से नौ सूरतोंमें बदज़बानी दुष्टता या निराशाके कारण होती है।

—बेनक्रॉफ़्ट

मनुष्य जब तक ज़बानपर क़ाबू नहीं पा लेता तब तक शेष इन्द्रियोंको बसमें कर लेनेपर भी पूरा जितेन्द्रिय नहीं होता; जिसने रसना जीत ली उसने सब कुछ जीत लिया।

—अज्ञात

ज़बानको इतना तेज़ न चलने दो कि मनसे आगे निकल जाय।

—अरबी कहावत

इन्सानमें सर्वोत्तम गुण ज़बानको क़ाबूमें रखना है।

—चिलो

ज़बान सिर्फ़ तीन इंच लम्बी है, फिर भी छह फ़ीट ऊँचे आदमीको मार सकती है।

—जापानी कहावत

मूर्खतापूर्ण और बुद्धिमत्तापूर्ण ज़बानमें वही फ़र्क़ है जो घड़ीकी सुइयोंमें है—एक बारहगुना तेज़ चलती है, लेकिन दूसरी बारहगुना दर्शाती है।

—अज्ञात

और किसीको तुम चाहे मत रोको, मगर अपनी ज़बानको लगाम दो; क्योंकि बेलगाम ज़बान बहुत दुःख देती है।

—तिरुवल्लुवर

जिसे अपनी ज़बानपर क़ाबू नहीं है, उसके हृदयमें सौम्यता नहीं है।

—अज्ञात

आगका जला हुआ तो अच्छा हो जाता है, मगर ज़बानका लगा हुआ ज़ख़्म सदा हरा बना रहता है।

—तिरुवल्लुवर

ज़बान देखकर वैद्य शरीरके रोग जान लेते हैं, और दार्शनिक मन और हृदयके रोग।

—जस्टिन

भरी ज़बान और ख़ाली दिमाग़ शायद ही कभी अलग होते हों।

—क्वार्ल्स

ऐ ज़बान, खाने और बोलनेमें संयत रह ; क्योंकि इनमेंसे एक की भी अति फ़ौरन् प्राण ले लेती है।

—अज्ञात

ज़बान जिनका अस्त्र है, रक्षाके लिये वे अमूमन् पैरोंसे काम लेते हैं।

—सर फ़िलिप सिडनी

चाबुककी मार गोश्तपर निशान बनाती है; लेकिन ज़बानकी मार हड्डियाँ तोड़ती है।

—अज्ञात

अगर तू अक़्लमन्द समझा जाना चाहता है, तो इतना अक़्लमन्द तो बन कि अपनी ज़बानपर क़ाबू किये रह।

—क्वार्ल्स

ज़माना

शताब्दीके साथ रहो, लेकिन उसके कीड़े न बनो; अपने समकालीनोंके लिये वह दो जिसकी उन्हें ज़रूरत है, वह नहीं जिसकी वे तारीफ़ करें।

—शिलर

कोई आदमी सत्रहवीं और उन्नीसवीं सदीमें एक साथ नहीं रह सकता।

—कार्लाइल

ज़मीन

ज़मीनका मालिक तो वही है जो उसपर मेहनत करता है।

—गांधी

ज़मीर

सच्चे आनन्दका फ़व्वारा अन्तरात्मामें है।

—सैनेका

अन्तरात्मा तमाम सच्चे साहसकी जड़ है; अगर किसीको वीर बनना है तो वह अपने अन्तरका कहा माने।

—अज्ञात

अन्तःकरणकी आवाज़ ही सबसे बड़ा धर्म और राजकीय नियम है।

—अज्ञात

इन्सानका ज़मीर ख़ुदाका पैग़म्बर है।

—बायरन

जिसकी सदसद्विवेक बुद्धि शुद्ध है वह आक्षेपोंसे नहीं डरता।

—अज्ञात

ज़मीर आत्माकी आवाज़ है, जैसे कि कषायें शरीरकी आवाज़ हैं: कोई ताज्जुब नहीं कि वे अक्सर एक दूसरेके विरोधी होते हैं।

—रूसो

जहाँ मेरी राय ख़त्म हो जाती है वहाँसे ज़मीरकी शुरू होती है।

—नैपोलियन

कोशिश करो कि तुम्हारे हृदयमें दैनिक ज्ञानाग्निकी वह चिनगारी रोशन रहे जिसे ज़मीर कहते हैं।

—अज्ञात

जिसे हम ज़मीर कहते हैं वह अक्सर कानिस्टबलका संभ्रान्त भय मात्र होता है।

—बूवी

निर्मल अन्तःकरणको जिस समय जो लगे, वही सत्य है। उसपर दृढ़ रहने से शुद्ध सत्य मिल जाता है।

—गांधी

अगर तुम ज़मीरकी नहीं सुनोगे तो वह तुम्हें ज़रूर कोसेगा।

—अज्ञात

मधुरतम सन्तोष अन्तरात्माकी सहमतिसे उमड़ता है।

—मैसन

कोई गवाह ऐसा खौफ़नाक नहीं, कोई आक्षेपक ऐसा शक्तिशाली नहीं, जैसा कि ज़मीर जो कि हर एक के दिलमें रहता है।

—पोलीबियस

मैं अपने अन्दर एक ऐसी शान्ति अनुभव करता हूँ जो समस्त सांसारिक विभूतियोंसे बढ़कर है, एक स्थिर और शान्त अन्तरात्मा।

—शेक्सपियर

ज़रूरत सिर्फ़ इसकी है कि आदमी अपने ज़मीरकी आवाज़ सुने, फिर उसके क़दम सीधे ही पड़ेंगे।

—'लाइट ऑन दी पाथ'

ज़मीर एक निहायत ग़ैर-रिश्वतख़ोर कारकुन है, वह जानता ही नहीं कि ग़लत रिपोर्ट देना क्या चीज़ होती है।

—बिशप रेनॉल्ड्स

ज़रूरत

जो वह ख़रीदता है जिसकी उसे ज़रूरत नहीं है, उसे अक्सर वह बेचना पड़ता है जिसकी उसे सख़्त ज़रूरत है।

—अँग्रेज़ी कहावत

तेरे पास मज़बूत दिल है और मज़बूत हाथ हैं, तू अपनी ज़रूरतोंको पूरी कर सकता है।

—लौंगफ़ैलो

ज़रूरी

जो कुछ आदमीके लिये ज़रूरी है वह उसके पास है।

—थोरो

धैर्यके बिना लक्ष्मी नहीं; शौर्यके बिना सफलता नहीं; ज्ञानके बिना मुक्ति नहीं; दानके बिना यश नहीं।

—अज्ञात

जल्दबाज़ी

क़ुदरत कभी जल्दबाज़ी नहीं करती।

—एमर्सन

हलबली और जल्दबाज़ी कामको बिगाड़नेवाली है। जल्द चलनेवाला जल्द थक जाता है।

—सुलैमान

जवानी

जवानी ज़िंदगीका कोई समय नहीं है, वह तो मनकी एक अवस्था है। इन्सान उतना ही जवान है जितना उसका विश्वास और उतना ही बूढ़ा है जितना उसका सन्देह।

—अज्ञात

जवानी रंजका साथ नहीं करती।

—यूरीपिडीज़

नदीकी बाढ़ें, वृक्षोंके फूल, चन्द्रमाकी कलाएँ नष्ट होकर फिरसे आती हैं, मगर देह-धारियोंकी जवानी नहीं।

—अज्ञात

जवानीका एक भी घंटा ऐसा नहीं कि जिसमें कोई भावी न हो ; एक भी पल ऐसा नहीं है कि जिसके एक बार चले जानेपर उसका निर्धारित काम बादमें कर सकें। गरम लोहे पर चोट न कर पाएँ तो फिर ठंडे लोहेको पीटना पड़ता है।

—रस्किन

जवाब

ललकारका जवाब दिया जाना चाहिये।

—अज्ञात

ज़ंजीर

पद और दौलत सोनेकी ज़ंजीरें हैं, लेकिन फिर भी हैं ज़ंजीरें।

—रफ़िनी

जागरण

यह जीव जब विषय-विलाससे विरक्त हो जाय तभी समझो कि वह जाग गया है।

—रामायण

स्वप्नकी विविधता जगनेपर 'एक' हो जाती है ; उसी तरह इस जाग्रत संसारकी विविधता 'ब्रह्ममें जगने' पर 'एक' हो जाती है।

—अज्ञात

जाग्रति

यह एक स्वप्न है जिसमें चीज़ें बिखरी हुई हैं और परेशान करती हैं। जब मैं जागूँगा उन्हें तुझमें एकत्रित पाऊँगा और मुक्त हो जाऊँगा।

—टैगोर

जाति

मनुष्य कर्मसे ब्राह्मण होता है; कर्मसे क्षत्रिय होता है; कर्मसे वैश्य होता है; कर्मसे शूद्र होता है।

—भगवान् महावीर

आखिरकार जाति सिर्फ़ एक है—मानवजाति

—जॉर्ज मूर

जान

मनुष्य जितना ही अधिक अपनी जान देता है उतना अधिक वह उसे बचाता है।

—गांधी

जानकारी

आप अपना काम कीजिये और मैं आपको जान जाऊँगा।

—एमर्सन

हिमालयके उत्तरमें क्या है ? मैंने उसे उत्तरमें ही रहने दिया है क्योंकि मैं कल उसके उत्तरमें जाकर बैठूँगा तो वह दक्षिणकी ओर हो ही जायेगा।

—विनोबा

जो तुम दिखलाई देते हो उसे हर कोई देखता है, परन्तु यह कौन जानता है कि तुम क्या हो ?

—मेकियावैली

जाँच

हर इन्सानकी जाँचका बेहतरीन तरीक़ा यह है कि उसकी पसन्द उससे पूछी जाय। तुम मुझे बताओ कि तुम्हें क्या पसन्द है और मैं तुमको बता दूँगा कि तुम क्या हो।

—रस्किन

जितेन्द्रिय

जो अच्छा या बुरा छूकर, खाकर, सूँघकर, देखकर, सुनकर, न तो खुश होता है न नाखुश, उसको जितेन्द्रिय पुरुष जानना।

—मनु

ज़िंदगी

हर आदमीकी ज़िंदगी ऐसी डायरी है जिसमें वह एक कहानी लिखना चाहता है और लिखता है दूसरी।

—अज्ञात

काहिल, कम-अक़्ल, कम-उम्रकी रातें सोनेमें जाती हैं और दिन व्यर्थ कामों में।

—अज्ञात

हम हमेशा शिकायत करते रहते हैं कि हमारे दिन थोड़े हैं और काम ऐसे करते रहते हैं मानो उनका अन्त कभी न होगा।

—एडीसन

किसी नेक आदमीकी ज़िंदगीका सबसे अच्छा हिस्सा उसके प्रेम और दयाके छोटे छोटे, नामरहित, भूले हुए काम हैं।

—वर्ड्सवर्थ

कोई आदमी ज़िंदगीका सच्चा मज़ा नहीं चखता, सिवाय उसके जो उसे छोड़नेके लिये तैयार और रज़ामन्द रहता है।

—सेनेका

'लटके' रहकर जीना दुःखदायी वस्तु है: वह तो मकड़ीकी ज़िंदगी है।

—स्विफ़्ट

ज़िंदगी बरबाद होती जाती है जब कि हम जीनेकी तैयारी करते जाते हैं।

—एमर्सन

ज़िंदगी समुन्दरका पानी है, और वह उसी वक़्त तक साफ़-सुथरी रह सकती है जब तक आस्मानकी तरफ़ उठती रहे।

—अज्ञात

ऐसे आदमी बनो और ऐसी ज़िंदगी बसर करो कि अगर हर आदमी तुम सरीखा हो जाय, और हर ज़िंदगी तुम्हारी ज़िंदगीके सदृश हो जाय, तो यह दुनिया ईश्वरका स्वर्ग बन जाय।

—फ़िलिप्स ब्रुक्स

ख़तरोंका मुक़ाबला करनेका नाम ज़िंदगी है।

—अज्ञात

आदमीकी ज़िंदगीमें सबसे महान् समय वह नहीं है जब दुनिया उसके कमालको मानती है, बल्कि वह वक़्त जब कि बाधाओं और परिस्थितियोंके साथ भीषण रणमें, उसकी शक्ति उसका मार्ग रोकनेवाली हर चीज़पर हावी आ जाती है।

—अज्ञात

सिर्फ़ ज्ञानीके लिये ही ज़िन्दगी एक उत्सव है।

—एमर्सन

ज़िन्दगी आधी गुज़र जाती है पेश्तर इसके कि हम जानें कि ज़िन्दगी क्या है।

—फ्रांसीसी कहावत

कुछ लोग ज़िन्दगीकी फ़िज़ूलियात मुहय्या करनेके इस क़दर पीछे पड़ते हैं कि वे इस अहमक़ाना दौड़में उसकी ज़रूरियातको क़ुर्बान कर देते हैं !

—गोल्डस्मिथ

ऐ ज़िन्दगी, दुखीके लिये तू एक युग है, सुखीके लिए एक क्षण !

—बेकन

ज़िन्दा

रणमें क़दम न रखनेवाला भी मर जाता है, और घनघोर युद्ध करनेवाला भी ज़िन्दा रहता है ।

—अज्ञात

ज़िम्मेदारी

अपनी तमाम ज़िम्मेदारी ईश्वरपर डालकर, दुनियामें अपना काम करो ।

—रामकृष्ण परमहंस

जिस्म

जब रूह जिस्मको छोड़ देती है तो मुर्दा गोश्त और हड्डियोंमें कीड़े पड़ जाते हैं ; ऐ नादान इन्सान, फ़ानी जिस्म और जवानीकी मस्तियोंपर इस क़दर नाज़ाँ न हो । यह सिर्फ़ कीड़ोंकी ख़ूराक है !

—अज्ञात

जिहाद

सबसे उत्तम जिहाद वह है जो आत्म-विजयके लिये किया जाय ।

—मुहम्मद

जिह्वा

संसारका मित्र होनेका सूत्र जिह्वामें है।

—अज्ञात

जिसके भोजनका आशय केवल जीवके निर्वाहका और वचनका आशय सत्यके प्रकाशका है उसका मार्ग लोक-पर-दोनोंमें सीधा और सुगम है।

—हितोपदेश

जीना

इस तरह जी कि तेरी जवान और दमकती हुई छाती बेना आहके मौतका ख़्याल कर सके।

—एलिज़ा कुक

आज ऐसे जिओ मानो यह आख़िरी दिन हो।

—बिशप कैर

जीना तीन प्रकारका है–आत्माका शरीरमें जीना, आत्माका आत्मामें जीना, आत्माका परमात्मामें जीना।

—सन्त ऑगस्टाइन

जो जीवनका लोभ छोड़कर जीता है, वही जीता है।

—गांधी

बहुतसे लोग तत्त्वदर्शियोंकी तरह बातें करते हैं और मूर्खोंकी तरह जीते हैं।

—अँग्रेज़ी कहावत

जीवन

'दुनिया क्या कहेगी', 'मुझपर कोई हँसेगा या क्या', ऐसे दुर्बल विचारोंको न आने देकर अपनेको योग्य लगे वैसा काम हमेशा करना चाहिये। यही सारे जीवनका रहस्य है।

—विवेकानन्द

जीवन पुष्प-शय्या नहीं है पर उसे रण-भूमि भी होनेकी ज़रूरत नहीं है।

—अज्ञात

जिस तरह दीप "स्नेह-सूत्र-वैश्वानर" इन तीनोंसे मिलकर होता है, उसी प्रकार जीवन यह ज्ञान, भक्ति और कर्मसे मिलकर होता है।

—विनोबा

जिस मनुष्यका जीवन ईश्वरीय है उसकी वाणी ऐसी मृदुल होगी जैसा कि मानसरोवरका कलकल निनाद।

—अज्ञात

जो अच्छी तरह जीना चाहता है उसे सत्यको पाना चाहिये, और तभी, उससे पहले नहीं, उसके दुःखका अन्त हो जायगा।

—प्लेटो

बहुतसे लोग ऐसे हैं जो मर गये, मगर उनके गुण नहीं मरे; और बहुतसे लोग ऐसे हैं जो जीवित हैं, किन्तु सर्व-साधारणकी दृष्टिमें मृतक हैं।

—अज्ञात

उन्हींका जीवन सफल है जो खुद तंग हालमें होते हुए भी दूसरोंकी ज़रूरतोंको अपनेसे पहले पूरा करने की कोशिश करते हैं।

—क़ुरान

जो अपनी इन्द्रियों के सुख में लगा रहता है उसका जीना निकम्मा और पाप है।

—गीता

वह अति सुखमय जीवन जो तूने भोगा था बीत चुका; पर उसका पाप अभी बाक़ी है।

—इब्न-उल-वर्दी

ज़िंदगी चन्दरोज़ा है। वह छिद्रान्वेषी ताक-झाँक, या उजड्ड बकवास, झगड़ा या डाँट-फटकार के लिये नहीं है। शीघ्र ही अन्धकार छा जानेवाला है।

—एमर्सन

जीवन क्रियाशीलता का महज़ दूसरा नाम है।

—जी.एस. हिलार्ड

ख़ुद मरकर औरों को जीवित रहने देने की तैयारीमें ही मनुष्यकी विशेषता है।

—गांधी

प्रेम और मित्रता से श्रेष्ठतर जीवन में कोई ख़ुशियाँ नहीं हैं।

—जॉनसन

जीवन

अगर हम सच्चा जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो मानसिक आलस्य छोड़कर हमें मौलिक विचार करना होगा। परिणाम यह होगा कि हमारा जीवन बहुत सरल हो जाएगा।

—गांधी

जीवनको वही समझता है जो प्रेम करता है और दान करता है।

—स्टीफ़न ज़्विग

निश्चय करनेवाला दिल, योजना बनानेवाला मन, और अमल करनेवाला हाथ।

—गिबन

हम सब किसीको प्रसन्न करनेकी आशासे जीते हैं।

—जॉनसन

सड़कोंपर कोई आदमी ऐसा नहीं है जिसकी जीवनीसे मैं परिचित न होना चाहूँ।

—एनन

जीना मानी मौज नहीं—खाना, पीना, कूदना नहीं—बल्कि ईश्वरकी स्तुति करना अर्थात् मानवजातिकी सच्ची सेवा करना।

—गांधी

यह बात कुछ महत्त्व नहीं रखती कि आदमी कैसे मरता है, बल्कि यह कि वह जीता किस तरह है।

—जॉनसन

आदमी अपनी आधी ज़िंदगी बर्बाद करके अपनी ग़लतियोंको छोड़ता है और अपने सबक़ोंसे फ़ायदा उठाना शुरू करता है।

—जेन टेलर

जीवन जागनेके लिये है और इसके समान जीवनमें कोई आनन्द नहीं है। सम्पत्ति और वैभव मनुष्यको सुख देंगे यह भ्रम है। सौन्दर्य और आनन्दमें ही सुख है। वास्तविक सौंदर्य, शान्त प्रकृति, पवित्र आचार और पवित्र विचारमें है। ये बातें जिस मनुष्यमें हैं वही सुखका भोक्ता है। इस सुखको प्राप्त करनेके लिये मनुष्यको अहर्निश संघर्ष करना चाहिये, यही जीवन है।

—प्लेटो

अपना जीवन लेनेके लिये नहीं देनेके लिये हैं।

—विवेकानन्द

मानव जीवन नश्वर है; उसमें आयुष्य तो बहुत ही परिमित है। एकमात्र मोक्षमार्ग ही अविचल है। यह जानकर काम-भोगोंसे निवृत्त हो?

—भगवान् महावीर

अगर हम एक दूसरेकी ज़िंदगीकी मुश्किलें आसान नहीं करते तो फिर हम जीते ही किस लिये हैं?

—जॉर्ज ईलियट

जीवन एक गम्भीर काम है; कोई आदमी 'खिलखिलानेकी खुराक'से कभी बड़ा या भला आदमी नहीं बना।

—अज्ञात

मुझे ज़िंदगीसे जीवन ज़्यादा प्यारा है।

—अज्ञात

मुझे आशा है कि मैं सत्य और अहिंसाके व्रतको—जिसके कारण जीवन मेरे लिये जीने योग्य है—झुठलाऊँगा नहीं।

—गांधी

ज्ञानी आदमी जीवन जैसा उसे मिलता है ले लेता है। लेकिन सिर्फ़ काहिल आदमी उसे वैसा ही छोड़कर जाता है जैसा कि उसे मिला था।

—अज्ञात

जिस तरह जबसे दुनिया शुरू हुई है कोई सच्चा काम कभी फ़िज़ूल नहीं गया, उसी तरह जब से दुनिया शुरू हुई है कोई सच्चा जीवन कभी असफल नहीं हुआ।

—एमर्सन

जीवनका लक्ष्य ईश्वरके समान होना है, और जो आत्मा परमात्माका अनुसरण करती है वह उसीके समान हो जायगी।

—सुक़रात

प्रभुमय जीवन माने प्रभुकी तमाम शक्ति सम्पादन करना, ईश्वरके समस्त ऐश्वर्यको प्राप्त करके जीवन उत्कृष्ट करना।

—अरविन्द घोष

बुरे आदमी खाने-पीनेके लिये जीते हैं। भले आदमी इसलिये खाते-पीते हैं कि वे जी सकें।

—सुक़रात

जब हम न केवल मिथ्या और पापपूर्ण चीज़ोंके लिये "नहीं" कह सकें, बल्कि ऐसी खुशगवार, फ़ायदेमंद और अच्छी चीज़ोंके लिये भी कह सकें जो हमारे महान् कर्त्तव्यों और हमारे प्रधान काममें बाधा या रोक डालें, तब हम अधिक अच्छी तरह समझेंगे कि ज़िंदगीकी क़ीमत क्या है और किस तरह उसका अत्यधिक उपयोग किया जाय।

—स्टॉडर्ड

जीवन अधिकांशतः झाग-बुलबुला है; दो चीज़ें पत्थरके समान खड़ी हैं—दूसरेके दुःखमें दया, और अपने दुःखमें हिम्मत।

—अज्ञात

वह सबसे अधिक जीता है जो सबसे अधिक सोचता है, उत्कृष्टतम भावनाएँ रखता है, सर्वोत्तम रीतिसे कार्य करता है।

—बेली

बहुत कम लोग समझते हैं कि मानव जीवनका उद्देश्य परमात्मा को देखना है।

—अज्ञात

वह आदमी जिसने अन्दरसे गम्भीरतर जीवन शुरू कर दिया बाहरसे सरलतर जीवन शुरू कर देता है।

—बुवन्स

भूलोंके साथ संग्राम करना ही जीवन है।

—गांधी

जीवन अच्छाईसे भरा हुआ है अगर हम उसकी तलाश करें।

—अज्ञात

जब कि मैं जानता हूँ कि मेरा जीवन केवल एक क्षण मात्र है, तो मैं क्यों उसे ईश्वरकी स्तुति-प्रार्थना-उपासनामें न लगाऊँ ?

—सुलैमान बाज़ी

कर्म का ही दूसरा नाम जीवन है ; निकम्मेका अस्तित्व है, पर वह जीवित नहीं।

—हिलर्ड

पवित्र जीवन एक आवाज़ है ; वह तब बोलती है जब ज़बान ख़ामोश होती है।

—अज्ञात

वे ही लोग जीते हैं जो निष्कलंक जीवन व्यतीत करते हैं ; और जिनका जीवन कीर्ति-विहीन है, वास्तवमें वे ही मुर्दे हैं।

—तिरुवल्लुवर

जो मानवताके लिए जीता है उसे अपनेको खोकर सन्तोष मानना चाहिये।

—ओ० बी० फ़ौथिंग्टन

जिसका कोई घरबार नहीं, उसीका घर सारी दुनिया है। जिसने जीवनके बन्धनोंको काट डाला है, उसीके हिस्सेमें सच्चा जीवन आया है।

—स्टीफ़न ज़्विग

तुम गौरव और सम्मानके साथ रहो। खिलवाड़ और विनोद दरबारियोंके लिये छोड़ दो।

—अज्ञात

पहले ईश्वरको प्राप्त करो, और तब धन प्राप्त करो; इससे उल्टा करनेकी कोशिश न करो। अगर, आध्यात्मिकता प्राप्त करनेके बाद, तुम सांसारिक जीवन बसर करोगे, तो तुम मनकी शांतिको कभी नहीं खोओगे।

—रामकृष्ण परमहंस

अगर कोई आदमी यह प्रतिज्ञा कर ले कि वह हर रोज़ अपनी शक्तिभर काम करेगा और पवित्र तथा उपकारी जीवन बिताने में कोई दक़ीक़ा उठा न रखेगा, तो मैं विश्वास करता हूँ कि उसका जीवन अभीक्ष्ण और आशातीत उत्साहसे लबरेज़ हो जायगा।

—बुकर टी० वाशिंगटन

जीवनका स्वाद लेनेके लिये हमें जीवनके लोभका त्याग कर देना चाहिये।

—गांधी

जीवन-कला

जीनेकी कला अधिकांशमें इसमें है कि हम उन तुच्छ बातोंको झाड़ मार सकें जो हमें चिढ़ा सकती हैं।

—अज्ञात

हम सतहोंमें रहते हैं, और जीवनकी सच्ची कला उनपर ख़ूबीसे उतराने में है।

—एमर्सन

जीवन-चरित्र

प्राचीन कालके सुप्रसिद्ध महापुरुषोंके जीवनसे अपरिचित रहना अपनी ज़िंदगीको बच्चेपनकी हालतमें गुज़ारना है।

—प्लुटार्क

जीवन-पथ

अगर हम जीवन-पथपर फूल नहीं बखेर सकते, तो कमसे कम उसपर हम मुस्कानें तो बखेर सकते हैं।

—चार्ल्स डिकेन्स

जीवनोद्देश्य

अपनी टिमटिमाती मेहरबानी और प्रेमकी छायासे मेरी आत्माको तंग मत करो। मुझे कठोर 'इन्कार' की बेरहम आज़ादीमें छोड़ दो। मुझे भयंकरतम निराशामें होकर वीरता-पूर्वक जीवनोद्देश्यको प्राप्त करने दो।

—टैगोर

जीवन्मुक्त

अगर किसीको यह विश्वास हो जाय कि ईश्वर ही यह सब कुछ कर रहा है, तो वह जीवन्मुक्त हो जाता है।

—रामकृष्ण परमहंस

जीविका

बहुत से पंडित व मूर्ख लोग कपटाचरण से जीविका उपार्जन करने में लुब्ध हैं और वे निर्दोष लोगों को ही नहीं, साक्षात् बृहस्पति को भी कमअक़्ल समझते हैं।

—महाभारत

वही जीविका श्रेष्ठ है जिससे अपने धर्मकी हानि न हो; और वही देश उत्तम है जिससे कुटुम्ब का पालन हो।

—शुक्रनीति

जीवित

जीवित कौन? जो सत्य के लिये हर वक़्त मरने को तैयार है वह।

—स्वामी रामतीर्थ

जुआ

इन्सान की ज़िंदगी में दो वक्त हैं जब कि उसे जुआ नहीं खेलना चाहिये; एक तो जब वह खेल नहीं सकता और दूसरे जब वह खेल सकता हो।

—सेम्युएल क्लीमेंस

जुल्म

जहाँ तुम जुल्म देखो, तो अत्यधिक सम्भावना यह है कि सत्य मज़लूम की तरफ़ है।

—बिशप लैटीमर

जेब

मेरी जेब पर हमला हुआ कि मेरा दिल फटा।

—एनन

जोगी

तनका जोगी और है, मनका जोगी और।

—शीलनाथ

ज़ोरदार

ज़ोरदार वह है जो न दबे; न दूसरों को दबने दे। बल्कि जो दबाया जाता हो उसे सहारा भी दे।

यदि मैं तुझसे इसलिये दबता हूँ कि तू ज़ोरदार है, मुझे नुक़सान पहुँचा देगा, तो मैं तुझे मनुष्य नहीं ज़ालिम और राक्षस समझता हूँ।

और मेरे इस प्रकार सिरके झुकाने से तू राज़ी रहता है तो तेरे बराबर मूर्ख नहीं।

—हरिभाऊ उपाध्याय

जोश

आदि गर्म, मध्य नर्म, अन्त सर्द।

—जर्मन कहावत

ज्योति

मैंने गुरुकी सेवामें निवेदन किया कि मेरी स्मरण-शक्ति बिगड़ गई, इस पर उन्होंने मुझे यह उपदेश दिया कि पापों को छोड़ दे; क्योंकि विद्या ईश्वर की ज्योति है, और ईश्वर की ज्योति पापी को नहीं मिला करती।

—इमाम शाफ़ई

ज्योतिषी

ज्योतिषियों के कहनेपर विश्वास मत रख। उनका कहना सच हो तो भी उसे समझने से कोई लाभ नहीं, हानि स्पष्ट है।

—गांधी



[झ]

झगड़ा

आदमी गूदेकी अपेक्षा छिलके पर ज्यादा झगड़ते हैं।

—जर्मन कहावत

झुकाव

हर आदमीमें एक नया झुकाव होता है जिसका उसे अवश्य अनुसरण करना चाहिये।

—एमर्सन

लोग नैतिक या भौतिक झुकावको लेकर पैदा होते हैं।

—एमर्सन

झूठ

आधा सच अक्सर महान् झूठ होता है।

—फ्रेंकलिन

भयंकरतम झूठ वह नहीं जिसे बोला जाता है बल्कि वह जिसपर जिया जाता है।

—क्लार्क

किसीने अरस्तूसे पूछा, 'आदमी झूठ बोलकर क्या पाता है?' 'यह कि जब वह सच बोलता है उसका कभी विश्वास नहीं किया जाता।' उसने जवाब दिया। —अज्ञात

जितनी कमज़ोरी उतना झूठ। शक्ति सीधी जाती है। दुर्बल तो झूठ बोलेंगे ही।

—रिचटर

बुज़दिलोंके सिवाय और कोई झूठ नहीं बोलते।

—मर्फ़ी

क्या बात है कि हम सामान्यतया भी झूठसे नहीं बचते, भले वह शर्म या डरके मारे क्यों न हो? क्या यह अच्छा नहीं होगा कि हम मौन ही धारण करें या आपस आपसमें निडर होकर जैसा हमारे दिलमें है वैसा ही कहें?

—गांधी

थोड़ा-सा झूठ भी मनुष्यका नाश करता है जैसे दूधको एक बूँद ज़हर भी।

—गांधी

झूठा

झूठेसे देव और मनुष्य दोनों घृणा करते हैं। झूठा अक्सर बुज़दिल होता है, क्योंकि वह सचाईको तसलीम करनेकी हिम्मत नहीं कर पाता।

—सर वाल्टर रेले

ईश्वर झूठोंसे नाखुश और सच्चोंसे खुश रहता है।

—बाइबिल

जो झूठ बोलता है वह नाशको प्राप्त होगा।

—बाइबिल



[ठ]

ठगी

कहनीके समान रहनी न हो इसीका नाम ठगी है।

—अज्ञात

ठोकर

सत्यपर चलनेवाला ज़रा भी टेढ़ा चला कि ठोकर खाई। यही उसका सौभाग्य है। यह उसपर ईश्वरी कृपा है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

ठोकरें सिर्फ़ धूल ही उड़ाती हैं, ज़मीनसे फ़सलें नहीं उगातीं।

—टैगोर

दूसरेके अनुभवसे होशियारी सीखनेकी मनुष्यको इच्छा नहीं होती उसको स्वतंत्र ठोकर चाहिये।

—विनोबा



[त]

तक़दीर

सिर्फ़ तक़दीर और इत्तिफ़ाक़की बातें यह दर्शाती हैं कि हम कार्य-कारणके सिद्धान्तोंको कितना कम जानते हैं।

—होसिया बैलन

तजुर्बा

तजुर्बा उस क़ीमती कंघेके मानिन्द है जो किसीको उस वक़्त दिया जाय जब कि उसके तमाम बाल उड़ गये हों।

—तुर्की कहावत

तटस्थ

तटस्थ आदमी शैतानके साथी हैं।

—चैपिन

तटस्थ वृत्ति

तटस्थ वृत्तिके बिना सृष्टिका रहस्य नहीं खुल सकता।

—विनोबा

तत्परता

पूर्ण तत्परता सब कुछ है और उससे कम कुछ भी नहीं।

—चार्ल्स डिकेन्स

तत्त्वज्ञान

तत्वज्ञान भी 'कर्त्तव्य क्या है' यही दर्शाता है।

—अज्ञात

तत्त्व

जब तत्त्व आचरणमें उतरता दिखाई नहीं देता तब समझना चाहिये कि हमने तत्त्व ठीक नहीं पहिचाना। शुद्ध तत्त्व आचरणमें आना ही चाहिये। सम्पूर्णतः कोई भी तत्त्व आचरणमें आ ही नहीं सकता। किन्तु जो आचरण तत्त्वके निकट नहीं जाता वह अशुद्ध और त्याज्य है।

—गांधी

तत्त्वविचार

तत्त्वका विचार उत्तम है, शास्त्रोंका विचार मध्यम है, मंत्रोंकी साधना अधम है, और तीर्थोंमें फिरना अधममें अधम है।

—अज्ञात

तन्दुरुस्ती

जिस तरह तन्दुरुस्ती उस आदमीको ढूँढ़ती है जो पेट ख़ाली होने पर ही खाना खाता है, उसी तरह बीमारी उसको ढूँढ़ती फिरती है जो हदसे ज़्यादा खाता है।

—तिरुवल्लुवर

सबसे बड़ी मूर्खता स्वास्थ्यको किसी अनिश्चित लाभके पीछे बरबाद कर देना है।

—शोपेनहोर

तन्दुरुस्ती बग़ैर ज़िंदगी ज़िंदगी नहीं है, बेजान ज़िंदगी है।

—अज्ञात

तन्दुरुस्ती, जिसके बग़ैर ज़िंदगी जीने लायक़ नहीं, सवेरे उठने, व्यायाम करने, गंभीरता और मिताहारसे क्यों न हासिल होगी ?

—कॉबेट

तन्मयता

जो अपने काममें तन्मय हो गया है उसे बोझ या नुक़सान कुछ नहीं मालूम होता। जिसे काममें प्रेम नहीं उसे थोड़ा भी अधिक मालूम होता है, जैसे क़ैदियोंको एक दिन वर्षकी तरह मालूम होता है, भोगियोंको एक वर्ष एक दिनकी तरह।

—गांधी

तप

तप समस्त कामनाओंको यथेष्ट रूपसे पूर्ण कर देता है, इसीलिये लोग दुनियामें तपस्याके लिये उद्योग करते हैं।

—तिरुवल्लुवर

'शान्तिपूर्वक दुःख सहन करना और जीव-हिंसा न करना', बस इसीमें तपस्याका समस्त सार है।

—तिरुवल्लुवर

तप और ताप की विभाजक रेखा पहचानना ज़रूरी है।

—विनोबा

जो धनी होकर दान न करे, और निर्धन होकर तप न करे उसे गलेमें पत्थर बाँधकर डुबा देना चाहिये।

—विदुर

तप ही परम श्रेय है, इतर सुख मोह करनेवाला है।

—रामायण

तपः स्वधर्मवर्तित्वम्।

(तप माने अपने कर्त्तव्यका पालन करना।)

—अज्ञात

तपश्चर्या

शुद्ध तपश्चर्याके बलसे अकेला एक आदमी भी सारे जगत्को कँपा सकता है, मगर इसके लिये अटूट श्रद्धाकी आवश्यकता है।

—गांधी

तपस्या जीवनकी सबसे बड़ी कला है।

—गांधी

तर्क

तर्कका इसलिये तिरस्कार किया जाता है कि वह मनुष्यों और राष्ट्रोंको काले और गोरोंमें नहीं बाँटता।

—एनन

तर्क बड़ा हलका सवार है, कषायोंके घोड़े उसे आसानीसे पटक देते हैं।

—स्विफ्ट

तर्क करते समय शान्त रहिये, क्योंकि भयानकता ग़लतीको अपराध बना देती है और सत्यको बदतहज़ीबी।

—हरबर्ट

तर्कमें संगीत रहित ध्वनि न आने दे।

—बैन जॉन्सन

केवल तर्क अनर्थ है, केवल भावना अन्ध है, भावनाघाती तर्क दुष्ट है, तर्क-शत्रु भावना अनिष्ट है।

—अज्ञात

तर्कशील

निरा तर्कशील मन उस चाक़ू जैसा है जो फल ही फल है वह उसे इस्तैमाल करनेवाले हाथको लोहूलुहान कर देता है।

—टैगोर

तर्क-वितर्क

अगर तुझे निरर्थक तर्क-वितर्क में मज़ा आया करता है, तो हो सकता है कि तू सोफ़िस्ताइयों (मिथ्यावादियों) से भिड़ने लायक़ हो, परन्तु इसका तुझे भान भी न हो कि मनुष्योंसे प्रेम किस तरह किया जाता है।

—सुक़रात

तर्कशक्ति

हमारी तर्कशक्ति उसके लिये बहाने खोज निकालती है जिसे हम करना चाहते हैं, और उसके लिये युक्तियाँ गढ़ लेती है जिसपर हम विश्वास करना चाहते हैं।

—एनन

तलमल

सच्चा साधन एक ही है 'तलमल'। सच्ची सिद्धि एक ही है 'तलमल'।

—विनोबा

'तलमल' शांत होनेके लिये देवका प्रत्यक्ष स्पर्श चाहिये। थोड़ा अन्तर भी सहन नहीं होता। पेटके बिल्कुल नज़दीक रखे हुए पानीसे क्या प्यास बुझ जाती है?

—विनोबा

तलाक़

ध्यान रखो कि जिस चीज़को अल्लाह सबसे ज़्यादा नापसन्द करता है वह तलाक़ है।

—ह० मुहम्मद

तलाश

मैं अपने ज़ख़्मे दिलके मरहमकी तलाश उस सड़कपर कर रहा हूँ, जहाँ सैकड़ों ईसा ज़ख़्मी पड़े हुए हैं।

—अज्ञात

उत्तम व्यक्ति जिसकी तलाश करता है वह उसके अन्दर है, तुच्छ आदमी जिसकी तलाशमें है वह दूसरोंमें है।

—कन्फ्यूशियस

तहज़ीब

सद्गुण भी यदि बद-तहज़ीबीके साथ हों, अप्रिय लगते हैं।

—मिडिल्टन

तामस

तामस नम्रताकी, क्षमाकी, व सहिष्णुताकी कौड़ीकी भी क़ीमत नहीं। उससे कौड़ीका भी फ़ायदा नहीं।

—अरविन्द घोष

तारनहार

तमाम धर्मग्रन्थ फ़िज़ूल हैं जब तक कि पति-पत्नियाँ एक दूसरेके तारनहार न बन जायें।

—स्वामी रामतीर्थ

तारीफ़

लानत है तुझपर अगर सब लोग तेरी तारीफ़ ही तारीफ़ करें।

—बाइबिल

तिरस्कार

दूसरोंका तिरस्कार करना और उन्हें नीचा मानना तो बड़ा भारी मानसिक रोग है।

—अबु-उसमान

तुच्छ

छोटी छोटी बातोंका ख़्याल महान चीज़ोंका मदफ़न है।

—वोल्टेर

दीन हीन बेइज़्ज़त आदमी घासके तिनकेके बराबर है।

—अज्ञात

तुच्छ मनुष्य जो बात तुझसे कहे उसे तुच्छ मत जान, क्योंकि मधुमक्खी एक मक्खी ही है, परन्तु मधुकी स्वामिनी है।

—इस्माईल-इब्न-अबीबकर

तुच्छता

तुच्छ लोग तुच्छ चीज़ोंसे खुश रहते हैं।

—ओविड

तूफ़ान

जब तुम सख़्त परेशानीमें पड़ जाओ और हर बात तुम्हारे ख़िलाफ़ जाती हो, यहाँ तक कि तुम्हें ऐसा लगने लगे कि अब तुम एक मिनट भी और नहीं ठहर सकोगे, उस समय कभी धीरज न छोड़ो, क्योंकि ठीक वही मुक़ाम और वक़्त है कि तूफ़ान पलटा खायेगा।

—अज्ञात

तृष्णा

जो कर्तव्य कर्म समझ लेता है और उसके अनुसार आचरण करता है, उसकी तृष्णा नष्ट-सी हो जाती है। जिसकी तृष्णा मरी नहीं उसे अपने कर्तव्य कर्मका ध्यान ही नहीं रहता। ...... तृष्णाके त्यागका अर्थ ही है कर्तव्यका ध्यान।

—गांधी

तृष्णा इस क़दर अन्धा बना देनेवाली शक्ति है कि दुनियाकी तमाम दलीलें आदमीको यह विश्वास नहीं दिला सकतीं कि वह तृष्णावान है।

—अज्ञात

जो सतृष्ण होकर दौलत और इज़्ज़तके पीछे पड़ा हुआ है वह तृषा-रोगी समुद्र-जलसे अपनी प्यास बुझाना चाहता है। जितना ज़्यादा पीता है उतना ही ज़्यादा और पीना चाहता है; आख़िरश पीते पीते मर जाता है।

—अरबी कहावत

जो मनुष्य तर्क-वितर्क आदि संशयोंसे पीड़ित है और तीव्र रागमें फँसा हुआ है तथा सुख ही सुखकी अभिलाषा करता है, उसकी तृष्णा बढ़ती ही जाती है और वह प्रतिक्षण अपने लिये और भी मज़बूत बंधन तैयार करता जाता है।

—बुद्ध

जिसने तृष्णा जीत ली, उसने अटल स्वर्ग जीत लिया।

—महाभारत

मनुष्य ऐश्वर्य मिलनेपर राज्य पानेकी इच्छा करता है, राज्य पानेपर देवत्वकी; देवत्व पानेपर इन्द्रपदकी भी।

—महाभारत

तृष्णाको उखाड़ फेंकनेवालेका पुनर्जन्म नहीं।

—बुद्ध

इस दुर्जय तृष्णा पर जो क़ाबू पा लेता है, उसके शोक इस प्रकार झड़ जाते हैं जैसे कमलके पत्ते परसे जलके बिन्दु।

—बुद्ध

यह ज़हरीली तृष्णा जिसे जकड़ लेती है, उसके शोक वीरन घासकी तरह बढ़ते ही जाते हैं।

—बुद्ध

मेरुकी उपमा दिये जाने लायक़, बुद्धिमान्, शूरवीर वा धीर हो उसे भी एक तृष्णा तृणके समान बना देती है ।

—अज्ञात

चाँदी और सोनेके असंख्य हिमालय भी यदि लोभीके पास हों तो भी उसकी तृप्तिके लिये वे कुछ भी नहीं ! कारण कि तृष्णा आकाशके समान अनन्त है ।

—अज्ञात

तेज

जब कि और लोग छिप जाते हैं, उस वक़्त भी तू मुझे सूरजके समान पायेगा, जो कभी किसी स्थानमें छिपा नहीं करता ।

—अहवस-बिन-मुहम्मद-अनसारी

मुखपर प्रसन्नता व दिव्य तेज त्यागवृत्तिके बग़ैर प्राप्त नहीं होते ।

—स्वामी रामतीर्थ

तेज और क्षमा ये एक दूसरेकी व्याख्या हैं ।

—विनोबा

सिंह चाहे शिशु अवस्थामें ही हो, मदसे मलिन कपोलों-वाले उत्तम गजके मस्तकपर ही चोट करता है । यही तेज-स्वियोंका स्वभाव है । निस्सन्देह अवस्था तेजका कारण नहीं होती ।

—भर्तृहरि

तोबा

सच्चे दिलसे गुनाहसे तोबा करनेवाला बेगुनाहके बराबर है ।

—ह० मुहम्मद

त्याग

इस दुनियामें हम जो लेते हैं वह नहीं, बल्कि जो देते हैं वह, हमें धनवान बनाता है।

—बीचर

त्यागसे पाप पलटता है। दानसे पापका ब्याज चुकता है।

—विनोबा

त्याग और योगकी पक्की 'निरगाँठ' बैठी हुई है, आसक्तिसे बाहरी चीज़ोंका त्याग किया भी तो वह त्याग 'भोगका भोग' होकर बैठता है।

—विनोबा

पवित्रताकी भावना ही त्यागका स्वरूप है।

—स्वामी रामतीर्थ

जिस त्यागसे अभिमान उत्पन्न होता है वह त्याग नहीं है। त्यागसे शान्ति मिलनी चाहिये। आखिरश अभिमानका त्याग ही सच्चा त्याग है।

—विनोबा

जो मनुष्य हर हालतमें अपनेको और तमाम वस्तु-स्थितियोंको भगवानमें ही देखता है, वही तमाम वस्तुओंकी इच्छाका त्याग कर सकता है।

—अज्ञात

धनसे नहीं और सन्तानसे भी नहीं; अमृत स्थितिकी प्राप्ति केवल त्यागसे ही होती है।

—विवेकानन्द

त्यागसे अनेकों प्रकारके सुख उत्पन्न होते हैं, इसलिये अगर तुम उन्हें अधिक समय तक भोगना चाहो तो शीघ्र त्याग करो।

—तिरुवल्लुवर

त्यागेगा सो पायेगा।

—अज्ञात

त्याग आत्माको ख प्रदान करता है।

—अज्ञात

संभोगजन्य आनन्दका भी जनक त्याग ही है।

—स्वामी रामतीर्थ

कुलके लिये व्यक्तिका, गाँवके लिये कुलका, देशके लिये गाँवका, और आत्माकी ख़ातिर पृथ्वी तकका त्याग कर देना चाहिये।

—हितोपदेश

जिस तरह हाथसे साँप छोड़नेसे सुख होता है, उसी तरह धर्मभ्रष्ट पापमति पुरुषको त्यागनेसे सुख होता है।

—रामायण

जो अपने आराम, अपने खून, अपनी दौलतका कुछ हिस्सा दूसरोंके भलेके लिये नहीं देता, वह एक कँगला, कठोर कमीना है।

—जोनाबेली

यदि हमें जीवनका सदुपयोग करना है, और उसे बर्बाद नहीं करना है, तो वीरतापूर्वक त्याज्य को त्यागनेका निश्चय करें।

—एनन

त्याग यह नहीं है कि मोटे और सख़्त कपड़े पहिन लिये जायँ और सूखी रोटी खाई जाय। त्याग तो यह है कि अपनी आरज़ू, इच्छा और ख़्वाहिशको जीता जावे।

—सूफ़ियान सौरी

जिन्होंने सब कुछ त्याग दिया है, वे मुक्तिके मार्गपर हैं, बाक़ी सब मोहजालमें फँसे हुए हैं।

—तिरुवल्लुवर

मनुष्यने जो चीज़ त्याग दी, उससे पैदा होनेवाले दुःखसे उसने अपनेको मुक्त कर लिया। वांछित वस्तुको प्राप्त करनेकी चिन्ता, खो जानेकी आशंका, न मिलनेसे निराशा और भोगाधिक्यसे जो दुःख होते हैं, उनसे वह बचा हुआ है।

—तिरुवल्लुवर

प्राणी कर्मका त्याग नहीं कर सकता; कर्मफलका त्याग ही त्याग है।

—गीता

त्यागी

जिसने इच्छाका त्याग किया उसको घर छोड़नेकी क्या आवश्यकता है, और जो इच्छाका बँधुआ है उसको वनमें रहनेसे क्या लाभ हो सकता है? सच्चा त्यागी जहाँ रहे वही वन और वही भजन-कंदरा है।

—महाभारत

जिसमें त्याग है वही प्रसन्न है। बाक़ी सब ग़मका असबाब है।

—उमर ख़य्याम

त्रुटि

अपनी त्रुटिका पता चलनेके बाद उसे मिटानेमें थोड़ा भी समय न खोना चाहिये। इसीमें हम कुछ करते हैं; यही नहीं बल्कि सच्चा काम करते हैं। इसके विपरीत आचरण करके अपने धर्मको भूल जाना सचमुच बुरेसे बुरा काम है।

—गांधी

[द]

दक्ष

जो बुद्धिमान है, प्रज्ञावान है, नीतिशास्त्र-विशारद है वह चाहे घोर आफ़तमें भी फँस जाय फिर भी उसमें डूबता नहीं है।

—अज्ञात

दख़ल

जिस बातसे तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं उसमें दख़ल न दो।

—नैतिक सूत्र

दया

दयासे लबालब भरा हुआ दिल ही सबसे बड़ी दौलत है; क्योंकि दुनियावी दौलत तो नीच आदमियोंके पास भी देखी जाती है।

— तिरुवल्लुवर

मनुष्यको दयालुओंके ही पड़ोसमें रहना चाहिये। जो दयालु और चिन्तारहित हैं, वही श्रेष्ठ पुरुष हैं।

—कन्फ़्यूशियस

दयापात्र होनेसे ईर्ष्यापात्र होना अच्छा।

—कहावत

दयावान वह है जो पशुओंके प्रति भी दयावान हो।

—बाइबिल

दयाके शब्द संसारके संगीत हैं।

—फ़ेबर

जब दुःख भोगे बिना छुटकारा ही नहीं है तो फिर क्यों दूसरेकी दयाका भिखारी बनता है ?

—अज्ञात

जो दूसरे आदमीके दुःखमें दया दिखाता है वह स्वयं दुःखसे छूट जायेगा; और जो दूसरेके दुःखकी अवगणना करता है या उसपर हर्ष मनाता है वह कभी-न-कभी उसमें स्वयं जा पड़ेगा।

—सर वाल्टर रैले

दयालुहृदय ख़ुशीका फ़व्वारा है, जो कि अपने पासकी हर चीज़को मुस्कानोंसे भरकर ताज़ा बना देता है।

—वाशिंग्टन इर्विंग

जहाँ दया नहीं वहाँ अहिंसा नहीं, अतः यों कह सकते हैं कि जिसमें जितनी दया है, उतनी ही अहिंसा है।

—गांधी

दया वह भाषा है जिसे बहरे सुन सकते हैं और गूँगे समझ सकते हैं।

—अज्ञात

जो ख़ुदाके बन्दोंके प्रति दयालु है, ख़ुदा उसके प्रति दयालु है।

—मुहम्मद

भयसे व्याप्त इस संसारमें वही निर्भय रह सकता है जो सब पर दया करता है।

—अज्ञात

जिसका चित्त सब जीवों पर दयासे पिघल जाता है, उसे ज्ञान, मोक्ष, जटा, भस्म-लेपनकी क्या ज़रूरत है ?

—हितोपदेश

दया करना ऊँचा उठना है; परन्तु दया-पात्र बनना अपने तेजको कम करना है।

—अज्ञात

विरोध और अपमान एक चीज़ नहीं है। विरोध बुरे कार्य और बुरे विचारका होता है, परन्तु अपमान तो सारे व्यक्तिका होता है।

—अज्ञात

दयाशील अन्तःकरण प्रत्यक्ष स्वर्ग है।

—विवेकानन्द

दया धर्मसे हीन धर्म पाखण्ड है। दया ही धर्मका मूल है, और उसका त्याग करनेवाला ईश्वरका त्याग करता है। रंकका त्याग करनेवाला सबका त्याग करता है।

—गांधी

दया ज्ञानकी ध्वजा है और क्रोध मूर्खताकी भुजा।

—अज्ञात

भारी तलवार कोमल रेशमको नहीं काट सकती; दयालुता और मीठे शब्दोंसे हाथीको जहाँ चाहे ले जाओ।

—सादी

दुखित हृदयको न दुखा।

—अज्ञात

मुझे केवल दयाके लिये भेजा गया है, शाप देनेके लिये नहीं।

—हज़रत मुहम्मद

दयालु

अगर तुम हर जीवके प्रति यत्नपूर्वक दयालु नहीं हो तो तुम बहुधा बहुतोंके प्रति क्रूर होगे।

—रस्किन

हर एक के लिये मृदुल और दयालु बनो; लेकिन अपने लिये कठोर।

—अज्ञात

दयालुता

दयालुता, बन्दानवाज़ी, बड़ी लाजवाब चीज़ है, लेकिन अजीब बात है कि उसकी ख़ुशी किस क़दर इकतरफ़ा होती है।

—आर० एल० स्टीवेन्सन

दयावान

कितने देव, कितने मज़हब, कितने पंथ चल पड़े हैं, लेकिन इस ग़मगीन दुनियाको सिर्फ़ दयावानोंकी ज़रूरत है।

—विलकॉक्स

दरबार

दरबार शरीफ़ और मशहूर भिखमँगोंकी जमाअत है।

—अज्ञात

दरबारी

इटलीके दरबारियोंके साथ मिठाई खानेकी अपेक्षा ग्रीसके दार्शनिकोंके साथ भूसा खाना अच्छा।

—फ्रैंकलिन

दरबारीके लिये जिन ख़ास खूबियोंकी ज़रूरत है, वे हैं—लचकदार अन्तरात्मा और ग़ैर-लचीली भद्रता।

—लेडी ब्लैसिंग्टन

दरिद्र

गुणवान दरिद्र भी अगुण धनियोंके समान होता है।

—अज्ञात

दरिद्रता

दरिद्रता मानो दुःखोंकी टकसाल ही है

—अज्ञात

जो मनुष्य दरिद्रतासे डर कर हमेशा धन कमानेमें लगा रहता है, उसका यह काम स्वयमेव दरिद्रता है।

—मुतनब्बी

जहाँ पशुओंको कष्ट होता है; जहाँ स्त्रीका अनादर होता है और जहाँ भाई भाई लड़ते हैं वहाँ दरिद्रताका आना सुनिश्चित है।

—अग्निपुराण

दरिद्रता आलस्यका पुरस्कार है।

—डच कहावत

दरिद्रता बहुधा मनुष्यको सम्पूर्ण साहस और धर्मसे हीन कर देती है।

—बेंजामिन फ्रेंकलिन

दरिद्रता और द्रव्य, इन दोनों बातोंको छिपा और धन कमा, कठिन परिश्रम कर और निर्बुद्धियों और शासनकर्ताओंकी संगतिसे दूर रह।

—इब्न-उल-वर्दी

दुनियामें दरिद्रताके बराबर कोई दुःख नहीं है।

—रामायण

जिसको रोग हुआ है उसीको औषधि लेनी चाहिये। अपनी दरिद्रता स्वयं ही दूर करनी चाहिये।

—अज्ञात

दरिद्रनारायण

मैं तो यह जानता हूँ कि परमात्मा उच्च समाज और बड़े-बड़े लोगोंकी अपेक्षा अधिकांशतः उस सृष्टिमें मिलता है, जिसे हम सबसे हीन समझते हैं। मैं उन्हींके स्तर पर पहुँचनेकी साधना कर रहा हूँ। उनकी सेवाके बिना मैं वहाँ तक नहीं पहुँच सकता; यही कारण है कि मैं दलितोंका सेवक हूँ।

—गांधी

दरिद्री

दरिद्री जीवित मुर्दा है।

—अज्ञात

दरियादिली

दूसरोंका बहुत-कुछ ख़्याल रखना, और अपना न-कुछ; खुदग़र्ज़ी छोड़कर दरियादिल हो जानेमें ही मानवस्वभावकी परिपूर्णता है।

—आदम स्मिथ

विजेता भयका संचार करता है; ज्ञानी हमारे आदरणीय बनते हैं; मगर दरियादिल ही है जो हमारे प्रेमको जीतता है।

—अज्ञात

दर्शन

मुझे मार्क्स क्या कहता है इससे, या सेंट लूथर क्या कहता है इससे, किसीसे मतलब नहीं। मेरा आदेश तो स्पष्ट यह है कि जीवनको अपनी आँखोंसे देखो और अपने निर्णय सरल भाषामें रख दो।

—सिंक्लेयर

किसी वस्तुको उसके मूल स्वरूपमें देखना ही उसका वास्तविक दर्शन है।

—जुन्नेद

हम दूसरोंके आर-पार देखना चाहते हैं, परन्तु खुद अपने आर-पार देखा जाना पसन्द नहीं करते।

—ला रोशे

हम सब स्वप्न-द्रष्टा हैं और हम वस्तुओंमें अपनी ही आत्माका प्रतिबिम्ब देखते हैं।

—एमील

दर्शनशास्त्र

दर्शनशास्त्रके दो सबसे महत्त्वपूर्ण उद्देश्य हैं—सचाईकी खोज और भलाई पर अमल।

—वोल्टेर

दर्शनशास्त्र जीवन-कला है।

—प्लुटार्क

विपत्ति-समयका मीठा दूध, दर्शनशास्त्र।

—शेक्सपियर

दलील

अगर मैं आपके दलको जानता हूँ तो मैं आपकी दलीलको पहिलेसे ही ताड़ लेता हूँ।

—एमर्सन

दवा

अच्छी हालतमें दवा न लो, वर्ना बेहतर होनेके लिये कहीं तुम्हें मरना न पड़ जाय।

—इटालियन कहावत

दवा कुत्तोंको फेंक दो, मैं उसे क़तई नहीं लूँगा।

—शेक्सपियर

दण्ड

शरीरके किसी भी दण्डसे आत्माकी बीमारी नहीं जाती।

—जेरेमी टेलर

कोई भी किसीके बारेमें निर्णय देनेका अधिकारी नहीं। दण्ड देना ईश्वरके हाथकी बात है, मनुष्यके हाथकी नहीं।

—स्टीफ़न ज़्विग

साधु पुरुषके साथ अनुचित व्यवहार करनेवालेको दंड मिले बिना नहीं रहता।

—अज्ञात

दाता

चार तरहके आदमी होते हैं—(१) मक्खीचूस : जो न आप खाय न दूसरेको दे, (२) कंजूस : जो आप तो खाय, पर दूसरेको न दे, (३) उदार : जो आप भी खाय और दूसरेको भी दे, (४) दाता : जो आप न खाय और दूसरेको दे। सब लोग अगर दाता नहीं बन सकते तो उदार तो ज़रूर बन सकते हैं।

—अफ़लातून

सौमें एक शूरवीर, हज़ारमें एक पंडित, दस हज़ारमें एक वक्ता होता है। परन्तु दाता लाखमें कोई हो और न भी हो।

—अज्ञात

दान

जिसकी ज़रूरत हो रक्खो, जिसको दे सकते हो दे डालो, पर एक बार खोई हुई या दी हुई चीज़के वापिस आनेकी उम्मीद न रक्खो।

—रस्किन

जितना जितना तू देता रहेगा, उतना उतना ही दूसरोंको लूटनेका पाप धोता जायेगा।

—पालशिरर

दो; यदि हो सके तो, ग़रीब आदमीको हाथ पसारनेकी शर्मसे बचाओ।

—ड्राइडरट

ख़ैरातसे मालमें कमी नहीं आती।

—ह० मुहम्मद

सबसे ऊँचे प्रकारका दान आध्यात्मिक-ज्ञान-दान है।

—विवेकानन्द

दान परिग्रहका प्रायश्चित्त है, इसमें अभिमानको अवकाश नहीं है।

—विनोबा

नाक-भौं चढ़ाकर देना सभ्यताके साथ इनकार करनेसे बुरा है।

—अज्ञात

उस दानमें कोई पुण्य नहीं है जिसका विज्ञापन हो।

—मसीलन

कोई कृतघ्न हो तो यह उसका क़सूर है, लेकिन अगर मैं न दूँ तो क़सूर मेरा है।

—सेनेका

निहाईकी चोरी करके सुईका दान करना! और आसमानकी तरफ़ देखते रहना कि स्वर्गसे विमान कब आते हैं।

—अज्ञात

लकड़हारेकी कुल्हाड़ीने दरख़्तसे अपने लिये बेंटा माँगा। दरख़्तने दे दिया।

—टैगोर

सब दानोंमें अभयदान श्रेष्ठ है। और उसके देनेकी सामर्थ्य मुक्तके सिवाय—माने ईश्वर के सिवाय—किसीमें नहीं है।

—अज्ञात

मौतसे बढ़कर कड़वी चीज़ और कोई नहीं है; मगर मौत भी उस वक़्त मीठी लगती है, जब किसीमें दान करनेकी सामर्थ्य नहीं रहती।

—तिरुवल्लुवर

दानकी सफ़ेद चादरसे हम अपने असंख्य पाप छिपाते हैं।

—बीचर

दान लेना बुरा है, चाहे उससे स्वर्ग ही क्यों न मिलता हो। और दान देनेवालेके लिये चाहे स्वर्गका द्वार ही क्यों न बन्द हो जाय, फिर भी दान देना धर्म है।

—तिरुवल्लुवर

अपने दानको अपनी दौलतके अनुसार बना, वरना क़ुदरत तेरी दौलतको तेरी दुर्बल दानशीलताके अनुसार बना देगी।

—क्वार्ल्स

देना ही सचमुच पाना है।

—स्पर्जियन

जीवनका अनुरोध-भरा पाठ, चाहे इसे हम जल्दी सीखें या देरसे, यह है कि देनेसे दाताकी पहले और सबसे अधिक श्रीवृद्धि होती है और उसमें साधुशीलता आती है।

—अज्ञात

जो ग़रीबको देता है, ईश्वरको उधार देता है।

—अज्ञात

सबसे उत्तम दान वे हैं जो आदमीको इस योग्य बना दें कि वह दानके बिना काम चला सके।

—अज्ञात

ईश्वर दानसे दसगुना देता है।

—इस्लाम

उदार दानसे भी बढ़कर है मधुर वाणी, स्निग्ध और स्नेहार्द्र दृष्टि।

—तिरुवल्लुवर

बादल, तुम बिना गरजे हुए भी चातकको वर्षाजलसे तृप्त करते हो। सज्जनका यही स्वभाव है कि बिना कुछ कहे याचकोंकी माँग पूरी करे।

—कालिदास

तुम्हारे पास कितना धन है—इस बातका ख़्याल रक्खो, और उसके अनुसार ही दान-दक्षिणा दो; योग-क्षेमका बस यही तरीक़ा है।

—तिरुवल्लुवर

बादलोंके समान सज्जन भी जिस वस्तुका ग्रहण करते हैं उसका दान भी करते हैं।

—कालिदास

फ़क़ीरोंका एक लक्ष्य होता है, वह है ईश्वर। आपदा आनेपर भी उनका मन ईश्वरसे नहीं हटता। जिनका मन दुनियाकी चीज़ोंमें फँसा है, वैसे हज़ारोंको दान देनेकी अपेक्षा एक ऋषिको दान देना उत्तम है; कारण, उससे उनका मन ईश्वर ही में लगा रहनेमें समर्थ बनता है।

—अज्ञात

दी हुई वस्तु मैं वापस नहीं ले सकता।

—सादिक़

ग़रीबोंको देना ही दान है; और सब तरहका देना उधार देनेके समान है।

—तिरुवल्लुवर

दानसे धन घटता नहीं, बढ़ता है। अंगूरोंकी शाखें काटनेसे और ज्यादा अंगूर आते हैं।

—सादी

दाम

प्रथम काम; बादमें, मिले तो, काम जितना दाम। यह तो हुई परमात्माकी सेवा। अगर दाम पहले माँगोगे तो वह हुई शैतानकी सेवा।

—गांधी

दानत

अपनी दानत यही अपना सर्वस्व है, यही अपना धन है और यही अपनी सामर्थ्य है।

—विवेकानन्द

दानव

जो स्वार्थके लिये दूसरोंका बिगाड़ करते हैं वे नरपिशाच हैं, लेकिन जो फ़िज़ूल दूसरोंको नुक़सान पहुँचाते हैं उन्हें क्या कहा जाय ?

—अज्ञात

दानवता

मानवकी मानवके प्रति दानवता असंख्यातोंको रुलाती है।

—बर्न्स

दानशीलता

हमारी दानशीलता घरसे शुरू होती है, और अक्सर वह वहीं ख़त्म हो जाती है जहाँसे शुरू हुई थी।

—अज्ञात

दानशीलता देकर धनवान बनती है; तृष्णा संग्रह करके ग़रीब बनती है।

—जर्मन कहावत

दार्शनिक

दार्शनिकका यह काम है कि वह हर रोज़ कषायोंको दबाता रहे, और पूर्वग्रहोंको हटाता रहे।

—एडीसन

महज़ दाढ़ी रखा लेनेसे कोई दार्शनिक नहीं हो जाता।

—कहावत

दावत

आजकी दावत कलका उपवास।

—अज्ञात

जो अपने शरीरको लज़ीज़ दावतें देता है और अपनी आत्माको आध्यात्मिक आहारके बिना भूखों मारता है, वह उस शख़्सके मानिन्द है जो अपने गुलामको दावतें देता है और अपनी घरवालीको भूखों मारता है।

—अज्ञात

दासत्व

अगर तुम किसी ग़ुलामकी गरदनमें ज़ंजीर डालो तो उसका दूसरा सिरा खुद तुम्हारी गरदनका फंदा बन बैठता है।

—कहावत

मनुष्यके आधे गुण तो उसी समय बिदा हो जाते हैं जब वह दूसरेका दासत्व स्वीकार करता है।

—होमर

दिखावा

गुणी बननेका यत्न करना चाहिये; दिखावा करनेसे क्या फ़ायदा? बिना दूधकी गायें गलेमें घंटियाँ बाँध देनेसे नहीं बिक जातीं।

—अज्ञात

दिन

शरीरकी जो रात है वह आत्माका दिन है।

—स्वामी रामतीर्थ

दिन हमेशा उसका है जो उसमें शांति और महान उद्देश्योंसे काम करता है।

—एमर्सन

दिमाग़

एक अच्छा सिर सौ मज़बूत हाथोंसे बहतर है।

—कहावत

अच्छे दिमाग़के सौ हाथ होते हैं।

—रूसी कहावत

दिल

जो सर्वोच्चता प्राप्त करता है वह मन नहीं दिल है।

—अज्ञात

दिलसे निकली बात ही दिल तक जाती है।

—ट्राइन

दिलके वे आँखें हैं जिनका दिमाग़को क़तई पता नहीं।

—पार्क हर्स्ट

बहतरीन दिमाग़ोंकी दानिश्मन्दी अक्सर बहतरीन दिलोंकी नज़ाकतसे शिकस्त खा जाती है।

—फ़ील्डिंग

एक अच्छा दिल दुनियाके तमाम दिमाग़ोंसे अच्छा है।

—अज्ञात

जहाँ सन्देहका मुक़ाम हो वहाँ सज्जनोंके लिये उनके दिलकी आवाज़ अचूक प्रमाण है।

—अज्ञात

सिवाय जब कि मनुष्यका दिल गूँगा हो, आस्मान कभी बहरा नहीं होता।

—क्वार्ल्स

हर दिल एक दुनिया है। जो कुछ बाहर है वह सब तुम्हारे अन्दर है। जो दुनिया तुम्हें घेरे हुए है तुम्हारे अन्दरकी दुनियाका प्रतिबिम्ब है।

—लेवेटर

दिवा-स्वप्न

दिवा-स्वप्नमें बैठ, और उन लहरोंके बदलते हुए रंगको देख जो मनके काहिल किनारेपर आ आकर टकराती हैं।

—लौंगफ़ैलो

दिव्यदृष्टि

यदि तेरी दैवी आँख खुल जायेगी तो संसारके तमाम परमाणु तुझसे रहस्यकी बातें करने लगेंगे।

—अज्ञात

दिशा

अगर तुम सच्ची दिशामें काम करो तो बस इतना काफ़ी है।

—एमर्सन

दीनता

तुझको बहुत कुछ मिला है; मैं दीन हीन हूँ। क्या इसीलिये मेरे मनुष्यत्वको तेरे सामने गिड़गिड़ाना चाहिये ?

—अज्ञात

भिखारीको सारी दुनिया दे दी जाय फिर भी वह भिखारी ही रहेगा।

—फ़ारसी कहावत

दीर्घजीवन

यदि तू जीवनका सदुपयोग करना जानता है तो वह पर्याप्त लम्बा है।

—सेनेका

हैरत है कि लोग जीवनको बढ़ाना चाहते हैं, सुधारना नहीं!

—कोल्टन

जो अपने भोजनकी मात्रा जानता है और उससे ज़्यादा नहीं खाता, उसे क़ब्ज़की तकलीफ़ नहीं होती और वह दीर्घ काल तक जवान रहता है।

—बुद्ध

दीर्घजीवी

दीर्घ-जीवी लोग ख़ासकर मिताहारियोंमें पाये जाते हैं।

—अर्बथनाट

ख़ूब खानेवाले कभी दीर्घजीवी नहीं होते।

—अज्ञात

दीर्घसूत्रता

काम शुरू करने पर दीर्घसूत्रता उचित नहीं है।

—अज्ञात

दीर्घसूत्री

कुशल बन, दीर्घसूत्री नहीं।

—जैन उपदेश

दुई

जो शख़्स एक साथ दो ख़रगोशोंके पीछे दौड़ता है वह एक को भी पकड़नेमें कामयाब नहीं होता।

—फ्रैंकलिन

कोई दो मालिकोंकी सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि या तो वह एक से घृणा करेगा और दूसरेसे प्रेम, या फिर वह एक के प्रति आसक्ति रक्खेगा और दूसरेसे नफ़रत करेगा। तुम ईश्वर और कुबेरकी पूजा एक साथ नहीं कर सकते।

—टालस्टाय

दुनिया

तुम्हारे मरनेके बाद दुनिया तुम्हारे बारेमें क्या कहेगी यह जानना हो तो दूसरे जो मर गये हैं उनके बारेमें दुनिया क्या कहती है, उसे सुनो।

—अज्ञात

कहीं विद्वानोंकी सभा है, कहीं शराबियोंकी कलह, कहीं वीणा-वादन है, कहीं "हाय, हाय" का रोदन; कहीं हुस्नकी देवियाँ हैं, कहीं बुढ़ापेका जर्जर तन; न जाने संसार अमृतमय है कि विषमय।

—अज्ञात

हमारे इर्द गिर्द फैली हुई ईश्वरकी दुनिया बिला शक शानदार है, मगर हमारे अन्दर रहनेवाली ईश्वरकी दुनिया उससे भी ज़्यादा शानदार है।

—लौंगफ़ैलो

दुनियाका तरीक़ा है मरे हुए साधुओंकी प्रशंसा करना, और जीवित साधुओंको यंत्रणा देना।

—होव

दुनियामें रहो; दुनियाको अपनेमें न रहने दो।

ज्ञात

दुनिया तीन चीज़ोंसे शासित है—ज्ञान, अधिकार और शक्ति। ज्ञान विचारवानोंके लिये, अधिकार हृश आदमियोंके लिये और शक्ति उन बहुसंख्यक छिछले आदमियोंके लिये जो सिर्फ़ बाहरी रूप देख सकते हैं।

—अज्ञात

दुनियाकी तमाम चीज़ें उसी एक अल्लाहके अलग अलग मज़ाहिर हैं।

—गुलशने-राज़

अगर यह दुनिया एक नहीं होती तो मैं उसमें रहना न चाहूँगा, अलबत्ता अपने जीते जी मैं इस सपनेको सच करना चाहूँगा।

—गांधी

ऐ लोगो, दिलको दुनिया और उसके शृङ्गारसे दूर रक्खो क्योंकि दुनियाकी सफ़ाई ही गंदगी है, और उसका मिलाप ही वियोग है।

—अबुल फ़तह बुस्ती

सावधान रहना, यह दुनिया शैतानकी दूकान है!

—हयहया

हम दुनियासे नफ़रत भले ही करें लेकिन उसके बग़ैर हमारा काम नहीं चलता।

—फ्रांसीसी कहावत

दुनिया 'मूर्ख' कहे तो परवाह नहीं। इस बातका हमेशा ध्यान रक्खो कि वह तुम्हें 'दुष्ट' न कहे।

—अज्ञात

दुनियावी दानिश्मन्दी महज़ अज्ञानका बहाना है।

—स्वामी रामतीर्थ

ऐ दुनिया, हम कितने थोड़े बरस जीते हैं! काश, जो जीवन तू देती है वास्तविक जीवन होता !

—लौंगफ़ैलो

जो दुनियाको सबसे अच्छी तरह समझता है, वह उसे सबसे कम चाहता है।

—फ्रैंकलिन

दुनियादारी

दुनियामें रह, मगर दुनियादार मत बन।

—रामकृष्ण परमहंस

दुराग्रह

अपने पूर्वजोंके खोदे हुए कुएँका खारा पानी पीकर, दूसरेके शुद्ध जलका त्याग करनेवाले बहुतसे बेवक़ूफ़ दुनियामें घूमते फिरते हैं।

—विवेकानन्द

दुराचार

दुराचार मनुष्यको कमीनोंमें जा बिठाता है।

—तिरुवल्लुवर

दुराचारी

असंयमी और दुराचारी मनुष्य राष्ट्रका अन्न व्यर्थ खाता है, इससे तो यह अच्छा कि वह लोहेका लाल गरम गोला खा जाय।

—बुद्ध

दुराशा

अगर सेवक सुख चाहे, भिखारी मान चाहे, व्यसनी धन चाहे, व्यभिचारी शुभ गति चाहे, लोभी यश चाहे, तो समझ लो कि ये लोग आकाशसे दूध दुहना चाह रहे हैं।

—रामायण

दुर्गुण

क्या कारण है कि कोई शख़्स अपने दुर्गुणोंको नहीं मानता ? क्योंकि वह उनमें लिप्त है। जाग्रत आदमी ही अपना स्वप्न कह सकता है।

—सेनेका

दुर्जन

सर्प क्रूर है, दुष्ट भी क्रूर है; मगर साँपसे दुष्ट क्रूरतर है। साँप तो मन्त्रसे वशमें भी आ जाता है मगर दुष्टका कोई इलाज नहीं।

—अज्ञात

दुर्जनको चाहे जितना उपदेश दो, वह सज्जन नहीं होगा। गदहेको नदीके जलसे चाहे जितना धोओ, क्या वह घोड़ा हो जायगा ?

—अज्ञात

जिस तरह क़साई पशुओंको वधस्थलपर ले जाता है उसी तरह दुष्ट आदमी अपने शिकारोंको सन्मानकी रस्सीमें बाँधकर नाशकी ओर ले जाता है।

—अज्ञात

साँपके दाँतमें ज़हर होता है, मक्खीके सिरमें ज़हर होता है, बिच्छूकी पूँछमें ज़हर होता है, लेकिन दुर्जनके तमाम शरीर में ज़हर भरा होता है।

—अज्ञात

दुर्जन चाहे प्रिय ही बोले फिर भी उसका विश्वास नहीं करना चाहिये। उसकी ज़बानमें शहद और दिलमें ज़हर होता है।

—अज्ञात

दुर्जन यदि विद्याभूषित भी हो तो भी त्याज्य है। क्या मणिसे अलंकृत साँप भयंकर नहीं होते?

—भर्तृहरि

दुर्जन जब सन्त होनेका ढोंग करता है, तो और भी बदतर हो जाता है।

—बेकन

दुर्जन अपने आश्रयदाता तकको नाशके घाट उतारता है।

—अज्ञात

दुष्टों और काँटोंके दो ही इलाज हैं—या तो उनके मुँहको जूतोंसे कुचला जाय, या उनसे दूर रहा जाय।

—अज्ञात

दुष्ट आदमी हमेशा दूसरोंको कष्ट देनेमें लगा रहता है। इसके लिये उसे कारणकी ज़रूरत नहीं होती, क्योंकि उसे वह अपना फ़र्ज़ समझकर करता है।

—अज्ञात

नज़रानों और सम्मानोंसे दुष्ट लोग कैसे जीते जा सकते हैं? विषवृक्षोंको चाहे अमृतसे सींचो, खाने-लायक़ फल नहीं दे सकते।

—अज्ञात

नीच लोग उत्सवोंकी अपेक्षा झगड़ोंसे ज़्यादा खुश होते हैं।

—अज्ञात

दुष्ट आदमी दूसरेकी बरबादीसे सिर्फ़ इसलिये खुश होता है कि वह दुष्ट है।

—अज्ञात

जो दुर्जनका सत्कार करता है वह आकाशमें निवास करना चाहता है, पवनपर चित्र खींचना चाहता है, जलपर लिखना चाहता है।

—अज्ञात

नागफनीपर चाहे आप परम दयालुतासे ही हाथ फेरें, फिर भी वह आपको डंक मारेगी।

—कहावत

दुष्ट आदमीकी बुद्धि अतिमलिन काम करनेमें खूब तेज़ चलती है। उल्लुओंकी दृष्टि अँधेरेमें ही काम करती है।

—अज्ञात

चाहे कितना ही सत्कार किया जाय, दुष्ट लोग सज्जनोंसे कलह ही करते हैं। कौवेको दूधसे कितना ही नहलाओ, कभी हंसके सौन्दर्यको नहीं पा सकता।

—अज्ञात

दुर्बल

यदि कोई मनुष्य विद्वत्तामें बढ़ा-चढ़ा हो तो उसके दुबले-पतले होनेसे उसे कोई हानि नहीं पहुँचती।

—आसिम

दुर्बलता

आदमियोंकी दुर्बलता हमेशा सत्ताधीशोंकी उद्धतताको आमंत्रित करती रहती है।

—एमर्सन

अपने दिलकी इस कमज़ोरीको छोड़कर खड़ा हो जा और लड़। यह कमज़ोरी तुझे शोभा नहीं देती।

—कृष्ण

अगर तुझे अपनी दुर्बलतापर विजय पाना है तो उसकी तुष्टि कदापि न कर।

—पैन

तुम्हारा मन अत्यन्त दुर्बल—क़रीब क़रीब मृत्पिण्ड—हुए बग़ैर कोई तुमपर क़ाबू नहीं पा सकता।

—विवेकानन्द

मनकी दुर्बलतासे अधिक भयंकर पाप और कोई नहीं है।

—विवेकानन्द

दुर्भाग्य

इन्सानकी समूची बदबख़्तीका कारण उसका इकलखुरापन है।

—कार्लाइल

दुर्भाव

मैं किसीके भी प्रति दुर्भाव नहीं रखता। मैं केवल उस सर्वशक्तिमानके बन्दोंकी तरह जीना चाहता हूँ।

—डिकेन्स

दुर्भावना

दुर्भावना अपने ज़हरका आधा भाग स्वयं पीती है।

—सैनेका

दुर्भावनाको मैं मनुष्यत्वका कलंक मानता हूँ।

—गांधी

दुर्लभ

दूसरोंको नसीहत देना सबके लिये आसान है। मगर वह महात्मा दुर्लभ है जो अपने कर्तव्यपालनमें लगा रहता है।

—रामायण

जो मनुष्य मानवता, धर्मश्रवण, श्रद्धा और संयममें पराक्रम को दुर्लभ जानकर संयमको धारण करता है वह शाश्वत सिद्ध होता है।

—महावीर

वह मनुष्य दुर्लभ है जो, प्रताप और नैपोलियनकी तरह पस्तहिम्मती अपने खूनमें नहीं रखते; जो पराजयको नहीं मानते; जहाँ दूसरे निराशा देखते हैं वे वहाँ आशा, और जहाँ दूसरे सर्वनाश वहाँ वे विजय देखते हैं।

—अज्ञात

दुनियामें दो चीज़ें बहुत ही कम पाई जाती हैं। एक तो शुद्ध कमाईका धन और दूसरे सत्य-शिक्षक मित्र।

—अबुल जवायज़

जो अप्रिय वचनोंके दरिद्री हैं, प्रिय वचनोंके धनी हैं, अपनी ही स्त्रीसे सन्तुष्ट रहते हैं और पराई निन्दासे बचते हैं,—ऐसे पुरुषोंसे कहीं कहींकी ही पृथ्वी शोभायमान है।

—भर्तृहरि

दुर्वचन

दुर्वचन पशुओं तकको नागवार ख़ातिर होते हैं।

—बुद्ध

मूर्ख लोग दुर्वचन बोलकर खुद ही अपना नाश करते हैं।

—बुद्ध

दुश्मन

दोस्त हमारा जितना हित कर सकते हैं एक दुश्मन उससे ज़्यादा हानिकर हो सकता है।

—नीति

क्या आपके पचास दोस्त हैं ?—यह काफ़ी नहीं है। क्या आपका एक दुश्मन है?—यह बहुत ज़्यादा है।

—इटैलियन कहावत

हर शख़्स खुद ही अपना बदतरीन दुश्मन है।

—शेफ़र

हर आदमी एक दुश्मन अपने दिलमें लिये फिरता है।

—डेनिश कहावत

आदमीसे पाप करानेवाली दो ही चीज़ें हैं। ये दो ही इस दुनियामें आदमीकी दुश्मन हैं—एक 'काम' और दूसरा 'क्रोध' जिस तरह धुआँ आगको ढक लेता है और गर्द शीशेको अन्धा कर देती है, इसी तरह ये दोनों आदमीकी अक़्ल पर पर्दा डाल देते हैं।

—गीता

अपने दुश्मनके लिये अपनी भट्टीको इतना गर्म न कर कि वह तुझे ही भूनकर रख दे।

—शेक्सपियर

हिरन, मछली और सज्जन ये तीनों केवल घास, जल और सन्तोष सेवन कर अपनी रोज़ी चलाते हैं। फिर भी इस दुनियामें शिकारी, धीवर और दुर्जन उनके नाहक़ दुश्मन बनते हैं।

—भर्तृहरि

दुश्मनी

किसीसे दुश्मनी करना मेरे लिये मौत है; मैं इससे घृणा करता हूँ, और तमाम शरीफ़ आदमियोंके प्रेमका अभिलाषी हूँ।

—शेक्सपियर

दुष्कर्म

दुष्कर्मका एक फल तो तत्काल यह मिलता है कि आत्मा एक 'वज़न', पतनको, महसूस करती है। दूसरेके दिलको दुखाकर आत्मा सुख लाभ नहीं करती। इसी तरह चोर अपने चुराये धनको कभी आनन्दोल्लाससे नहीं भोग सकता।

—अज्ञात

ज़िंदगी लगातार मौतकी तरफ़ खींची जा रही है; बुढ़ापा इन्सानके जोशको काफ़ूर कर देता है। मेरे शब्दों पर ध्यान दे, भयानक कर्म मत कर।

—अज्ञात

दुष्ट

दुष्ट एक घूमघुमारा मूर्ख है।

—कॉलेरिज

दुष्टोंकी शत्रुता अच्छी, न मित्रता।

—रामायण

अगर मूर्ख न होते तो दुष्ट भी न होते।

—कहावत

लज्जावानोंको मूर्ख, व्रत-उपवास करनेवालोंको ठग, पवित्रतासे रहनेवालोंको धूर्त्त, शूरवीरोंको निर्दयी, चुप रहनेवालोंको निर्बुद्धि, मधुर-भाषियोंको दीन, तेजस्वियोंको अहंकारी, वक्ताओंको बकवादी और शांत पुरुषोंको असमर्थ कहकर दुष्टोंने गुणियोंके कौनसे गुणको कलंकित नहीं किया?

—भर्तृहरि

हो सकता है कि कोई मुस्कराये, और मुस्कराये, और फिर भी दुष्ट हो।

—शेक्सपियर

दुष्टोंका पता हमेशा किसी न किसी तरह लग ही जाता है। जो भेड़िया है, वह लाज़िमी तौरपर भेड़ियेकी तरह वर्तन करेगा ही।

—ला फौन्टेन

अति-मलिन कार्यमें दुष्ट मनुष्यकी बुद्धि अत्यन्त निपुण बन जाती है, जिस तरह उल्लूकी दृष्टि अँधेरेमें बहुत तीक्ष्ण हो जाती है।

—अज्ञात

वे सचमुच कालके भी काल हैं जिनको प्राणिवध खेल है, मर्मवेधी वाणी बोलना खिलवाड़ है, दूसरोंको कष्ट देना ही काम है।

—अज्ञात

दुष्ट आदमी हर्गिज़ हर्गिज़ विवेकी नहीं है।

—होमर

दुष्टोंके दोषोंकी चर्चा करनेसे अपना चित्त प्रक्षुब्ध ही होता है इसलिये उसके वर्तनकी ओर लक्ष्य न देकर अथवा उसकी चर्चा करते न बैठकर उसके प्रति उपेक्षा दृष्टिसे देखना ही अपने लिये श्रेयस्कर है।

—विवेकानन्द

कौवेको कितने ही प्रेमसे पालिये, वह कभी मांस खाना नहीं छोड़ सकता।

—रामायण

दुष्टको उपकारसे नहीं, अपकारसे ही शान्त करना चाहिये।

—कालिदास

कोई अपनेको दुष्ट नहीं बतलाता।

—कहावत

दुष्टता

दुष्टता दुष्टको पछाड़ डालती है; और अत्याचारकी चरीका चारा अत्याचारीके अनुकूल नहीं होता।

—यज़ीद-बिन-हुक्म-उल-सक़फ़ी

हर दुष्टता निर्बलता है।

—मिल्टन

जब तक तुझे दूसरेकी फ़ज़ीहत पर गुदगुदी होती है, तब तक तुझमें दुष्टता बाक़ी है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

दुःख

एक समयमें एक दुःखसे अधिक कभी न सहन करो। कुछ लोग हैं जो तीन क़िस्मके एक साथ सहन करते हैं—वे तमाम जो आज तक उनपर पड़े, वे तमाम जो इस वक़्त पड़ रहे हैं, और वे तमाम जिनके पड़नेकी वे आस लगाये बैठे हैं।

—अज्ञात

जिस वक़्त हमको दुःखकी प्राप्ति होती है, उस वक़्त किसी और को दोष देनेका कारण नहीं। अपना ही दोष ढूँढ़ निकालना, ज्ञानवीरोंका काम है।

—विवेकानन्द

तुम जो कुछ भी करो, अगर वह ईश्वरकी आज्ञाके अनुसार नहीं है तो तुमको दुःख ही मिलेगा।

—अज्ञात

दुःख यह एक प्रकारका छूतका रोग है। हम अगर लटका हुआ मुँह लेकर किसीसे मिलें तो उसका उल्लास कम हो जाता है।

—विवेकानन्द

जो मरे हुए, नष्ट हुए या गुज़रे हुए का शोक करता है वह दुःख ही पाता है। इस तरह वह अपने दुःखको दुगुना करता है।

—अज्ञात

एक बात जो मैं दिनकी तरह स्पष्ट देखता हूँ यह है कि दुःखका कारण अज्ञान है और कुछ नहीं।

—विवेकानन्द

अगर यह चाहते हो कि दुःख दुबारा न आये, तो फ़ौरन् सुनो कि वह क्या सिखा रहा है।

—बर्ग

जिसने कभी दुःख नहीं उठाया वह सबसे भारी दुखिया है और जिसने कभी पीर नहीं सही वह बड़ा बेपीर है।

—मेनसियस

लोग नाना प्रकारके दुःख इसलिये भोग रहे हैं कि अधिकांश जन-समाज धर्महीन जीवन व्यतीत कर रहा है।

—टालस्टाय

दुःखको न तो नातेदार बँटाते हैं न रिश्तेदार, न मित्र न पुत्र। मनुष्य उसे अकेला ही भोगता है; क्योंकि कर्म तो करनेवालेके ही पीछे लगते हैं।

—अज्ञात

पाप और दुःख एक दूसरेसे जुदा नहीं किये जा सकते।

—अज्ञात

दुःखका माप विपत्तिके स्वरूपसे नहीं, बल्कि सहनेवालेके स्वभावसे करना चाहिये।

—एडीसन

दुःखका कारण हमारी चित्त-वृत्तियोंका प्रभाव ही है।

—कृष्ण

मिथ्या और अनित्य पदार्थोंको सत्य समझनेसे ही मनुष्यको दुःखमय जीवन भोगना पड़ता है।

—तिरुवल्लुवर

हाय, कि चन्द सिरचढ़ोंकी चालबाज़ियोंका शिकार होकर करोड़ों दुःखवहन और तीव्र पश्चात्ताप करते रहें !

—बाघ

उस सरीखा दुःखी कोई नहीं जो चाहता सब-कुछ है, करता कुछ नहीं।

—कलॉडियस

ईश्वरके मार्गमें विरोधक वस्तुओंपर आसक्त होना प्रकृतिकी सज़ा भोगनेके लिये तैयार होना है।

—अबु मुर्ताज़

महान दुःखोंमें आत्माको विशाल करनेकी महान शक्ति है।

—विक्टर ह्यूगो

ज्यों-ज्यों काम, क्रोध और मोह छूटते जाते हैं, दुःख भी उनका अनुसरण करके धीरे धीरे नष्ट होते जाते हैं।

—तिरुवल्लुवर

दुःख नतीजा है पाप का।

—बुद्ध

आदमी वहीं तक दुःखी है जहाँ तक वह अपनेको ऐसा मानता है।

—अज्ञात

देखो; जो पुरुष मुक्तिके साधनोंको जानता है और सब मोहोंको जीतनेका प्रयत्न करता है, उसके सब दुःख दूर हो जाते हैं।

—तिरुवल्लुवर

दुःखसुख

जो बाहरी चीज़ोंके आधीन है वह सब दुःख है; और जो अपने अधिकारमें है वह सुख है।

—मनु

जिस सुखके अन्तमें दुःख है, वह वस्तुतः सुख नहीं दुःख ही है और जिस दुःखके अन्तमें सुख है, वह दुःख नहीं सुख है।

—अज्ञात

दुःख और सुख दोनों कालरूप हैं।

—शीलनाथ

दुःखी

ईर्ष्या करनेवाला, घृणा करनेवाला, सदा असन्तुष्ट रहनेवाला, सदा कोप करनेवाला, सदा वहममें डूबा रहनेवाला, और दूसरोंके भाग्य-भरोसे जीनेवाला—ये छह सदा दुःख भोगते हैं।

—अज्ञात

दुःखी आदमी बदहवास हो जाता है—उसे अच्छे-बुरेका भान नहीं रहता।

—रामायण

दुःखी लोग कौन-सा पाप नहीं करते?

—रामायण

सब दुखियोंमें कर्त्तव्यच्युत सबसे अधिक दुखी है।

—अज्ञात

दूध

समस्त प्राणियोंके दूधका त्याग करना यह धर्म दीपककी तरह मुझे दिखाई दे रहा है।

—गांधी

दूर

जिनसे तुम्हारा जी नहीं मिलता उनसे दूर रहो।

—बुद्ध

दूरदर्शी

दूरदर्शी पुरुष आनेवाली आपत्तिका पहले ही से निराकरण कर देता है।

—तिरुवल्लुवर

दूषण

गृहस्थोंके लिये जो भूषणरूप है, साधुओंके लिये वह दूषण-रूप है।

—अज्ञात

दृढ़ता

अमुक मार्गसे जानेका एक बार निश्चय किया कि फिर जान जानेकी नौबत आजाय तो भी पीछे क़दम नहीं रखना चाहिये।

—विवेकानन्द

दृढ़प्रतिज्ञ

वह दृढ़प्रतिज्ञ आदमी जो प्राणोत्सर्गके लिये तैयार है ब्रह्माण्ड तकको हाथोंपर उठा सकता है।

—रोम्याँ रोलाँ

दृष्टि

मेरी आँखें रिवाज, आदर्श और स्वार्थसे अन्धी हो गई थीं।

—जॉन न्यूटन

ख़्याल रक्खो कि तुम किस तरफ़ देख रहे हो; क्योंकि जिनकी आँखें भटकती रहती हैं उनका दिल भटकता रहता है।

—अज्ञात

कोई आदमी दूर तक नहीं देखता; अधिकांश लोग तो फ़क़त अपनी नाक तक देखते हैं।

—कार्लाइल

इन आँखोंसे क्या फ़ायदा जब कि हियेकी फूटी हुई हों ?

—अरबी कहावत

कवि, दार्शनिक और तपस्वीके लिये सब वस्तुएँ पवित्र हैं, सब घटनायें लाभदायक हैं, सब दिन पवित्र हैं और सब मनुष्य देवता-तुल्य।

—एमर्सन

प्रार्थनामें आँखें बन्द रखें तो नींद आती है, खुली रखें तो एकाग्रता बिगड़ती है, इसलिये अर्धोन्मीलित दृष्टि रखनी चाहिये।

—अज्ञात

अर्द्धोन्मीलित दृष्टि माने 'अन्तर हरि बाहर हरि।'

—विनोबा

दुर्योधनको यज्ञके सब ब्राह्मण दुष्ट ही दुष्ट दिखाई दिये और धर्मराजको भले ही भले; यही दोनोंमें अन्तर था।

—हरिभाऊ उपाध्याय

जिसने अपने भीतर नहीं देखा, दुनियाको ही देखा, उसे दुनियाके हाँके हँकना पड़ेगा।

देर

जिसको बेवक़ूफ़ देरसे करता है, अक़्लमन्द उसे शुरूमें करता है।

—स्पेनिश कहावत

वक़्त न टालो, देरका नतीजा भयंकर है।

—शेक्सपियर

जहाँ कर्तव्य स्पष्ट है वहाँ देर मूर्खतापूर्ण और ख़तरनाक है।

—अज्ञात

देर करनेमें हम अपने प्रकाशोंको बर्बाद करते हैं; जैसे दिनके चिराग़।

—शेक्सपियर

देव

'भूतमात्र हरि' जिसका यह सूत्र छूट गया उसका देव खो गया।

—विनोबा

लोगोंकी रक्षा करनेके लिये देव लोग, पशुपालोंकी तरह डंडा नहीं रखते; लेकिन वे जिसकी रक्षा करना चाहते हैं उसे बुद्धि दे देते हैं।

—अज्ञात

जब तक हमारी कषाय नहीं मर जाती, हम हर्गिज़ देव-तुल्य नहीं हो सकते।

—डैकर

स्वरूप, विश्वरूप, अरूप ये देवके तीन रूप हैं।

—अज्ञात

स्मरणीयकी विस्मृति यह मानसिक आलस्यका लक्षण है।

—अज्ञात

देवता

बिना कहे समझ जावे उसका नाम देवता, कहेसे समझ जावे उसका नाम आदमी, कहे से भी नहीं समझे उसका नाम गधा।

—शीलनाथ

देश

महान देश वे हैं जो महान व्यक्तियोंको जन्म देते हैं।

—डिसराइली

देश-प्रेम

तेरा देश-प्रेम एक खुला बोदापन है। यदि तू यात्रार्थ विदेशमें जायेगा, तो कुटुम्बियोंके बदले तुझे कुटुम्बी मिल जायँगे।

—इब्न-उल-वर्दी

देह

नखसे लेकर शिखापर्यन्त यह सारा शरीर दुर्गन्धसे भरा हुआ है, फिर भी मनुष्य बाहरसे इस पर अगरु, चन्दन, कर्पूर आदिका लेप करता है।

—शंकराचार्य

मार्गमें पड़ी हुई हड्डीको देखकर मनुष्य उससे छू जानेके डरसे बचकर चलता है, परन्तु हज़ारों हड्डियोंसे भरे हुए अपने शरीरको नहीं देखता।

शंकराचार्य

दैन्य

दैन्यकी अपेक्षा मरण अच्छा।

—अज्ञात

दैववादी

दैववादी मनुष्य तत्काल विनष्ट होता है, इसमें संशय नहीं।

—अज्ञात

दोष

बहुतसे आदमी उन लोगोंसे नाराज़ हो जाते हैं जो उनके दोष बताते हैं, जबकि उन्हें नाराज़ होना चाहिये उन दोषोंसे जोकि उन्हें बताये जाते हैं।

—वैनिंग

निर्दोष पत्थरसे सदोष हीरा अच्छा।

—चीनी कहावत

अपना दोष कोई नहीं देख पाता। अपना व्यवहार सभीको अच्छा मालूम देता है। लेकिन जो हर हालतमें अपनेको छोटा समझता है वह अपना दोष भी देख सकता है।

—अबु उस्मान

अपना भला चाहनेवालेको छह दोष टालने चाहियें—अतिनिद्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध, आलस और दीर्घसूत्रता।

—अज्ञात

सबसे बड़ा दोष; किसी दोषका भान न होना है।

—कार्लाइल

हज़ार गुणोंका सम्पादन कर लेना आसान है, एक दोष दुरुस्त कर लेना मुश्किल।

—ब्रूयर

रात्रिके पूर्वार्द्धमें जब तुम जगे हुए हो अपने दोषों पर विचार करो, और दूसरोंके दोषों पर रात्रिके उत्तरार्द्धमें जबकि तुम सोये हुए हो।

—चीनी कहावत

जबकि हमारे दोष हमें छोड़ते हैं, तो हम यह मानकर अपनी चापलूसी करते हैं कि हम उन्हें छोड़ते हैं।

—रोशे

ईश्वर उसका भला करे जो मुझपर मेरे दोष ज़ाहिर कर दे।

—अज्ञात

मुझे तो ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं दीख पड़ता जो अपने दोष स्वयं देख सके और अपनेको अपराधी माने।

—कन्फ़्यूशियस

अपने पड़ोसीके सौ दोष सुधारनेकी अपेक्षा अपना एक दोष सुधार लेना अच्छा।

—अज्ञात

अपने दोषोंको अपनेसे पहले मरने दे।

—फ्रैंकलिन

चरित्रवाल अपने दोषोंको सुनना पसन्द करते हैं। दूसरी श्रेणीके लोग नहीं।

—एमर्सन

जो तुम्हारे दोषोंको दिखाता है उसे गड़े हुए धनका दिखानेवाला समझो।

—अज्ञात

दोषदर्शन

जब कभी मुझे दोष देखनेकी इच्छा होती है तो मैं अपने से आरम्भ करता हूँ और इससे आगे बढ़ने ही नहीं पाता।

—डैविड ग्रेसन

जो दोषोंको ही ढूँढ़ते हैं और कुछ नहीं देखते।

—अज्ञात

दोषान्वेषण

अगर तुम दूसरोंमें दोष निकालोगे, दुनिया तुम्हें अच्छी नज़रसे नहीं देखेगी ।

—निज़ामी

अपने पड़ोसीकी छत पर पड़े हुए बर्फ़की शिकायत न करो, जब कि तुम्हारे ख़ुद्के दर्वाज़ेकी सीढ़ी गन्दी है ।

—कन्फ़्यूशियस

दोषारोपण

क्या तुमने उस आदमीके विषयमें नहीं सुना जो सूर्यको इसलिये दोष देता था कि वह उसकी सिगरेट नहीं जलाता ?

—कार्लाइल

दोस्त

मैं अपने दुश्मनोंसे ख़बरदार रह सकता हूँ; ओ ईश्वर, मुझे मेरे दोस्तोंसे बचा !

—मिकियावेली

दानिशमंद और वफ़ादार दोस्तसे बढ़कर कोई रिश्तेदार नहीं ।

—फ्रैंकलिन

कभी कमज़र्फ़ और ओछे इन्सानको दोस्त न बनाओ ।

—अज्ञात

इन्सानका सबसे अच्छा दोस्त उसका ज़मीर है ।

—अज्ञात

बाहर-भीतरसे जागा हुआ मन एक ऐसे दोस्तका काम देता है कि फिर किसी दूसरे दोस्तकी ज़रूरत ही नहीं रह जाती।

—राबिया

हर एकको जो दोस्तीका दम भरता हो अपना दोस्त न समझ।

—अज्ञात

देखो, जो यह सोचते हैं कि हमें उस दोस्तसे कितना मिलेगा, वे उसी दर्जेके लोग हैं कि जिनमें चोरों और बाज़ारू औरतोंकी गिनती है।

—तिरुवल्लुवर

यदि तुमने ईश्वरको पहचान लिया है तो तुम्हारे लिये एक वही दोस्त काफ़ी है। यदि तुमने उसको नहीं पहचाना है तो उसे पहचाननेवालोंसे दोस्ती करो।

—जुन्नुन

दानिशमन्द दोस्तके मानिन्द ज़िन्दगीमें कोई बरकत नहीं।

—एपिक्टेटस

ऐसे दोस्त न रक्खो जो तुम्हारे समान न हों।

—कन्फ्यूशियस

सच्चे दोस्तसे जी खोलकर हाल कहनेसे सुख दूना और दुःख आधा हो जाता है।

—अज्ञात

जिस दोस्तको तुम्हें ख़रीदना पड़े वह उस क़ीमतका भी नहीं है जो तुमने उसके लिये अदा की, ख़्वाह वह कितनी भी हो।

—जॉर्ज प्रेंटिस

कोई दोस्त दोस्त नहीं है जब तक कि वह अपनेको दोस्त साबित करके न दिखा दे।

—बोमेंट और फ़्लैचर

मेरे दोस्तो! दोस्त हैं ही नहीं।

—अरस्तू

चिढ़ता हुआ दोस्त मुस्कराते हुए दुश्मनसे अच्छा है।

—एनन

मग़मूम जीवको अपना जिगरी दोस्त न बना, वह अवश्य तेरी कम्बख़्तीको बढ़ायेगा और खुशहालीको कम करेगा। वह हमेशा भारी बोझ लिये चलता है; और उसका आधा तुझे ले चलना पड़ेगा।

—फ़ुलर

जो ईश्वरका दुश्मन है वह इन्सानका सच्चा दोस्त नहीं हो सकता।

—यंग

वाल्दैन इत्तिफ़ाक़से मिलते हैं, लेकिन दोस्त अपनी पसन्द से।

—डिलाइली

सच्चे दोस्तोंकी न ख़ुशी अकेली होती है न रंज अकेला।

—चैनिंग

दोस्ती

इस दुनियामें लोगोंकी दोस्ती बाहरसे देखनेमें सुन्दर, पर भीतरसे ज़हरीली होती है।

—मलिक दिनार

मुझे ऐसी दोस्ती नहीं चाहिये, जो मेरे पाँवोंमें उलझकर आगे चलनेमें बाधक हो।

—गोर्की

ज़रूरत सिर्फ़ इस बातकी है कि हम औरोंके लिये उतने ही सच्चे हों जितने हम अपने लिये हैं; ताकि दोस्तीके लायक़ हो सकें।

—थोरो

एक कुत्ता जो कि हड्डी लिये हुए है किसीसे दोस्ती नहीं पालता।

—अज्ञात

तेरा रास्ता अगर किसीको मालूम है तो दिलको; इसलिये उसीसे दोस्ती कर।

—निज़ामी

जहाँ सच्ची दोस्ती है वहाँ तकल्लुफ़की ज़रूरत नहीं।

—अज्ञात

दरिद्रकी श्रीमन्तसे, मूर्खकी विद्वान्से, शूरकी नामर्दसे क्या दोस्ती ?

—महाभारत

जो तुमसे बहतर नहीं है उससे कभी दोस्ती न करो।

—कन्फ़्यूशियस

दोस्ती करनेमें रफ़्तार धीमी रक्खो; लेकिन जब दोस्ती हो जाय तो फिर मज़बूतीसे यकसाँ जारी रक्खो।

—सुक़रात

नज़रानोंसे दोस्ती न ख़रीदो; जब तुम नज़राने देना बन्द कर दोगे तो ऐसे दोस्त प्रेम करना छोड़ देंगे।

—फ़ुलर

दौलत

दुष्टोंकी दौलतसे सज्जनकी निर्धनता अच्छी है।

—बाइबिल

दौलतकी कामना न कर। सोनेमें ग़मका सामान है; उसमें एक कीड़ा है जो दिलकी कलीको खाता है; उसकी मौजूदगीमें प्रेम स्वार्थपूर्ण और ठंढा हो जाता है, और घमंड और दिखावेका बुख़ार चढ़ जाता है।

—नीति

सिवाय उसके जिसे लोग अपने अन्दर लिये हुए हैं कोई चीज़ उन्हें धनवान और बलवान नहीं बनाती। दौलत दिलकी है, हाथकी नहीं।

—मिल्टन

नीतिमान पुरुष ही देशकी सच्ची दौलत हैं।

—अज्ञात

अज्ञानीके पास दौलत ऐसे है जैसे गोबरके ढेरपर हरियाली।

—अज्ञात

दानके तुल्य निधि नहीं है। लोभके समान शत्रु नहीं है। शीलके समान भूषण नहीं है। सन्तोषके समान धन नहीं है।

—नीति

तुम्हारी वास्तविक दौलत सिर्फ़ उतनी है जिसे तुम सत्पात्रको देते हो और जिसका कि दिन ब दिन उपभोग करते हो। शेष भाग दूसरोंका है; तुम तो उसके महज़ रखवाले हो।

—अज्ञात

क्या तुम धन चाहते हो? तो इन छह दोषोंको छोड़ दो; निद्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध, आलस्य और दीर्घसूत्रता।

—नीति

अन्यायसे पैदा किया हुआ धन ज़्यादासे ज़्यादा दस वर्ष टिकता है। ग्यारहवाँ वर्ष लगते ही समूल नष्ट हो जाता है।

—नीति

वह सच्ची दौलत है जिससे दूसरोंको उपकृत किया जाय।

—नीति

वह आदमी जो धनसंचय करता है मगर उसे भोगता नहीं है, उस गधेके मानिन्द है जो सोना ढोता है और काँटे खाता है।

—अज्ञात

मेरे प्रभो, मुझसे वह दौलत दूर रख जिससे आँसू, आहें और शाप चिमटे हुए हैं। ऐसे धनसे निपट निर्धनता अच्छी।

—क्रिश्चियन स्क्राइवर

दौलत इन्सानको अहंकार, अय्याशी और मूढ़ताके सामने ला पटकती है।

—एडीसन

अगर तुम्हारी दौलत तुम्हारी है, तो तुम उसे अपने साथ दूसरी दुनियाको क्यों नहीं ले जाते?

—अज्ञात

ईश्वर आम तौरसे बेवक़ूफ़ लोगोंको दौलत दे देता है, पर उनको और कुछ नहीं देता।

—ल्यूथर

दौलतका रास्ता ऐसा स्पष्ट है जैसा बाज़ारका रास्ता। यह ख़ासकर दो चीज़ोंपर निर्भर है, मेहनत और किफ़ायत।

—फ्रेंकलिन

दौलतमन्द

कोई दौलतमन्द विख्यात आविष्कारक या प्रसिद्ध ग्रन्थकार नहीं हुआ।

—अज्ञात

द्रोह

द्रोहीसे द्रोह करना द्रोहको दूना करता है। द्रोहका जतन प्यार है।

—धम्मपद

द्वन्द्व

जगत् द्वन्द्वसे भरपूर है। इस द्वन्द्व से हटना अनासक्ति है। द्वन्द्वको जीतनेका उपाय द्वन्द्वको मिटाना नहीं है, लेकिन द्वन्द्वातीत, अनासक्त होना है।

—गांधी

द्विधा

नेल्सनने कहा था कि, "जब मुझे सूझ नहीं पड़ता कि लड़ूँ या न लड़ूँ तो मैं हमेशा लड़ता हूँ"।

—अज्ञात

द्वेष

हज़रत अलीने खुदाके नामपर अपने मुख़ालिफ़को पछाड़ दिया। जब उसने अलीके मुँहपर थूक दिया तो उन्होंने उसे क़त्ल करनेका इरादा छोड़ दिया व उसकी छातीपरसे उतर पड़े। मुख़ालिफ़ने सबब पूछा तो बतलाया—पहले मैं खुदाके कामके लिये तुझे क़त्ल करना चाहता था, अब तूने जो मुझपर थूक दिया इससे मेरा व्यक्तिगत द्वेष उभर सकता है। उससे उत्तेजित होकर तुझे मारूँगा तो वह गुनाह होगा।

—हरिभाऊ उपाध्याय

द्वैत

द्वैत दर्शनकी उपेक्षा करो; शास्त्रमें भेददर्शनको हेय माना है।

—अज्ञात



[ध]

धन

संसारमें सबसे निर्धन वह है जिसके पास सिर्फ़ धन है और कुछ नहीं।

—अज्ञात

ख़्वाहिशसे परहेज़ करना ही दौलत है।

—अरबी कहावत

क्या तुम जानना चाहते हो कि धन क्या है? जाओ कुछ उधार ले आओ।

—कहावत

निर्धन आदमी ऐसा है जैसा बिना पंखोंका पक्षी या बिना मस्तूलोंका जहाज़।

—अज्ञात

धनी हृदयके बिना धनवान एक भद्दा भिखारी है।

—एमर्सन

मायडास जिस चीज़को छूता था सोनेकी हो जाती थी। इन दिनों आदमीको सोनेसे छू दीजिये, बस वह चाहे जिस चीज़में बदल जायेगा।

—अज्ञात

धन एक सापेक्ष वस्तु है; क्योंकि, जिसके पास कम है, परन्तु और भी कम चाहता है, वह उससे अधिक धनवान है जिसके पास ज़्यादा है मगर और भी ज़्यादा चाहता है।

—कोल्टन

धनकी तीन गति हैं—दान, भोग और नाश। जो न देता है, न भोगता है, उसकी तीसरी गति होती है।

—भर्तृहरि

लोगोंका महज़ उनके धनके कारण आदर न करो, बल्कि उनकी उदारताके कारण; हम सूरजकी क़द्र उसकी ऊँचाईके कारण नहीं करते, बल्कि उसकी उपयोगिताके कारण।

—बेली

धन अनर्थकारक है ऐसी निरन्तर भावना कर। सचमुच उसमें सुखका लेश भी नहीं है। धनवानको पुत्र तकसे डरना पड़ता है, यह रीति सर्वत्र जानी हुई है।

—अज्ञात

मूढ़, धन पानेकी तृष्णाका त्याग कर। सद्‌बुद्धिसे मनको तृष्णा रहित कर। अपने कर्मसे जो कुछ धन मिल जाय उससे अपने चित्तको प्रसन्न रख।

—अज्ञात

आश्चर्य! जीवनकी वास्तविक आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिये कितने कमकी ज़रूरत है।

—एण्ड्रू कारनेगी

अपना कुल धन निर्धनोंमें बँटवाकर मुहम्मद साहबने कहा—"अब मुझे शांति मिली। निस्सन्देह यह शोभा नहीं देता था कि मैं अपने अल्लाहसे मिलने जाऊँ और यह सोना मेरी मिल्कियत रहे।"

—अज्ञात

धनसे तुमको सिर्फ़ रोटी मिल सकती है; इसे ही अपना उद्देश्य और साध्य न समझो।

—रामकृष्ण परमहंस

दुनियामें सबसे वाहियात ख़ामख़्याली यह है कि पैसा आदमीको सुखी बना सकता है। मुझे अपने धनसे तब तक कोई तृप्ति नहीं मिली जब तक मैंने उससे नेक काम करने शुरू न कर दिये।

—प्रैट

ख़ुदपर ख़र्च किया हुआ पैसा गलेका पत्थर हो सकता है; दूसरोंपर ख़र्च किया हुआ हमें फ़रिश्तोंके पंख दे सकता है।

—हिचकॉक

जो धनका स्वामी है, पर इन्द्रियोंका नहीं, वह इन्द्रियोंको वश न रखनेसे धनसे भ्रष्ट हो जाता है।

—विदुर

धर्मार्थके लिये ही क्यों न हो, धनकी इच्छा शुभावह नहीं है। कीचड़को बादमें धोनेकी अपेक्षा उसके स्पर्शसे दूर रहना ही अच्छा।

—अज्ञात

धन बड़ी ज़बरदस्त उपाधि है। ज्योंही आदमी धनी हुआ कि बिल्कुल बदल जाता है।

—रामकृष्ण परमहंस

बेईमानके धनसे ईमानदारकी ग़रीबी अच्छी।

—अज्ञात

आत्माकी किसी भी आवश्यक चीज़के ख़रीदनेके लिये धनकी ज़रूरत नहीं है।

—थोरो

जिसे धनका ग़रूर है वह बेवक़ूफ़ है।

—अज्ञात

धनकी चाह सब बुराइयोंकी जड़ है ।

—अज्ञात

कोई आदमी धन कमाकर मर जाय और हरामखोरोंके लिये लड़ने-खानेको छोड़ जाय—इससे बड़ा गुनाह नहीं। मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि अपनी ज़िन्दगीमें ही अपने सारे धनको परोपकारमें लुटा दूँगा ।

—कारनेगी

जो धनका अतिसंचय करते हैं, वे उसे दूसरोंके लिये ही इकट्ठा करते हैं । मधुमक्खियाँ बड़ी मिहनतसे शहद इकट्ठा करती हैं, मगर उसे पीते और ही हैं ।

—अज्ञात

अन्यायोपार्जित धन विषके समान होता है, जो अन्यायसे धन कमाते हैं, उनके चारों तरफ़ विष ही विष है ।

—उड़िया बाबा

अमीर बनना है तो एक कोनेमें बैठ जाओ और विचार करो । कोई भी चीज़ हो, यह ज़रूरी नहीं कि वह कोई बड़ी बात ही हो, बल्कि जो चीज़ तुम्हें दिखे उसीपर सोचने लग जाओ । और अगर तुम उससे पैसा नहीं कमा सकते तो यक़ीन रक्खो तुम्हारे दिमाग़में फ़ॉसफ़ोरसका एक कण भी नहीं है

—फ़ोनोग्राफ़का निर्माता एडीसन

जीवनके अतिरिक्त और कोई धन नहीं है,—जीवन जिसमें प्रेम, आनन्द और प्रशंसाकी समस्त शक्तियोंका समावेश है ।

—रस्किन

धोखा देकर दग़ाबाज़ीसे धन जमा करना बस ऐसा है जैसा कि मिट्टीके कच्चे घड़ेमें पानी भरकर रखना।

—तिरुवल्लुवर

जो धन दया और ममतासे रहित है उसकी तुम कभी इच्छा मत करो और उसको कभी अपने हाथसे मत छुओ।

—तिरुवल्लुवर

बना-बनाया धनिक आदमी पा जाना तो ठीक है, मगर यह हो सकता है कि वह बना-बनाया बेवकूफ़ हो।

—जॉर्ज ईलियट

धन परम ईर्ष्याकी वस्तु है परन्तु न्यूनतम उपभोग की; स्वास्थ्य परम उपभोगकी वस्तु है परन्तु न्यूनतम ईर्ष्या की।

—कोल्टन

धन वह अतल समुद्र है जिसमें इज़्ज़त, ज़मीर और सचाई डुबोये जा सकते हैं।

—काज़ले

मानवहृदयके लिये तंगी और तवंगरी दोनों ही भार हैं, जैसे मानव शरीरके लिये हिम और अग्नि दोनों ही घातक हैं। फ़ाक़ाकशी और पेटूपन दोनों समानरूपसे मनुष्यके हृदयसे ईश्वरको रुख़सत कर देते हैं।

—थ्योडोर पार्कर

अन्यायका धन दस वर्ष ठहरता है; ग्यारहवाँ वर्ष लगनेपर समूल नष्ट हो जाता है।

—अज्ञात

धनिक बालकको पालनेसे ही यह सिखाया जाता है कि उसे एक बड़ी जागीर विरासतमें मिलेगी इसलिये अपनी पुस्तकों पर ध्यान देनेकी ज़रूरत नहीं है।

—डीन स्विफ़्ट

देखो, जो धन निष्कलंकरूपसे प्राप्त किया जाता है उससे धर्म और आनन्दका स्रोत बह निकलता है।

—तिरुवल्लुवर

अन्यायसे कमाया धन वंशका नाश कर देता है।

—महाभारत

सबसे अधिक धनवान वह है जिसकी सबसे कम आवश्यकताएँ हों।

—कहावत

अत्यन्त क्लेशसे, धर्मके त्यागसे और दुश्मनोंके पैरों पड़ने से जो धन मिले वह धन मुझे नहीं चाहिये।

—चाणक्य

टालस्टाय द्रव्यको पाप मानते थे; उनकी पत्नी द्रव्यको ही सर्वस्व मानती थी। इस तरह दोनोंके स्वभावकी असमानता के कारण उनका जीवन कलुषित बन गया था, और टालस्टायने ८२ वर्षकी उम्रमें गृह-त्याग किया। मरते वक़्त उन्होंने कहा—"मेरे मरणके समय मेरी पत्नीको मेरे पास नहीं आने देना।"

—अज्ञात

धन जिनका चाकर है वे बड़भागी हैं; जो धनके चाकर हैं वे अभागी।

—हसन

तुम्हारे रुपयोंकी सत्ता तुम्हारे पड़ौसीकी तंगी पर है। जहाँ तंगी है वहीं तवंगरी रह सकती है।

—गांधी

तमाम पवित्र चीज़ोंमें, धन कमानेमें पवित्रता सर्वोत्तम है।

—मनु

धनके लिये किया गया काम सच्चा काम नहीं है।

—रस्किन

धनका प्रेम सब पापोंकी जड़ है।

—टिमोथी

जहाँ धन ही परमेश्वर है वहाँ सच्चे परमेश्वरको कोई नहीं पूजता।

—अज्ञात

मनुष्यके जीवनमें वह सबसे बुरी घड़ी होती है जब वह बिना परिश्रम किये धन कमाना चाहता है।

—अज्ञात

धनके साथ दो संताप लगे रहते हैं—अहंकार और खुशामदी।

—अज्ञात

धनका दायाँ हाथ परिश्रम और बायाँ हाथ किफ़ायत है।

—अज्ञात

बेवक़ूफ़के पास जितनी ज़्यादा दौलत हो, उतना ही बड़ा बेवक़ूफ़ वह है।

—एनन

जिन्हें धनकी इच्छा हो उन्हें निद्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध, आलस्य और दीर्घसूत्रता— ये दोष त्याग देने चाहियें।

—नीति

धनमद

धनके मदसे मत्त आदमी तब तक होशमें नहीं आता जब तक गिरे नहीं।

—अज्ञात

धनवान

बिना उदारताके धनवान आदमी धूर्त है; और शायद यह साबित करना मुश्किल बात न होगी कि वह बेवक़ूफ़ भी है।

—फ़ील्डिंग

धनिक अपनी सम्पत्तिके कारण देश या राष्ट्रको प्यार करते हैं, वर्ना उनका कोई देश नहीं होता।

—जॉर्ज मेरेडिथ

घोर परिश्रम और अन्तरात्माकी उपेक्षा किसीको भी दौलत-मन्द बना देते हैं।

—जर्मन कहावत

जो ईश्वरको अपना सर्वस्व मानता है वही असली धनवान है और दुनियाकी चीज़ोंमें अपनी सम्पत्ति माननेवाला तो सदा ग़रीब ही रहेगा।

—हयहया

जो दूसरोंको खसोट कर धनवान बना है वह सूतकी है; जो सचाई और ईमानदारीके कारण निर्धन है वह अति शुद्ध।

—सादी

धनवान आदमी अन्यायी आदमी है, या अन्यायीकी संतान।

—अज्ञात

जो अधिक धनाढ्य है वही अधिक मोहताज है।

—सादी

धनवान दूसरेकी तकलीफ़को नहीं जानते।

—अज्ञात

आदमी मालदार होनेसे धनी नहीं कहा जा सकता बल्कि उदार-चित्त होने से।

—सादी

वह मनुष्य जो सत्यके अनुसरणके लिये दृढ़-प्रतिज्ञ है सबसे अधिक धनवान है; पैसेके लिहाज़से चाहे वह निर्धनोंमें सबसे अधिक निर्धन ही क्यों न हो।

—अज्ञात

जो रोटीकी तरफ़से बेफ़िक्र है वह काफ़ी धनवान है।

अज्ञात

जिस तरह बन पड़े उसी तरह लोगोंको धनवान होनेकी शिक्षा देना मानो उन्हें "विपरीत बुद्धि" देना है।

—गांधी

धनवान होकर मरनेके ग़रूरपर जहन्नुमवाले दहाड़ मारकर हँस पड़ते हैं।

—जॉन फ़ॉस्टर

बिलाशक ऐसे बेशुमार आदमी हैं जो अन्यायी, बेईमान धोखेबाज़, जफ़ाकार, फ़रेबी, झूठे और विश्वासघाती बनकर धनवान हुए हैं। क्या यह सोचना पागलपन नहीं है कि ऐसे आदमी सुखी हो सकते हैं? क्या वे इस दौलतके अत्यल्पांशका भी आनन्दसे उपभोग कर सकते हैं? क्या उनका अन्तरात्मा उन्हें दिन-दिन भर और रात-रात भर झिड़की, पीड़ा, संताप और यंत्रणा नहीं देता रहता होगा?

—अज्ञात

अगर तू धनवान है, तो तू कंगाल है; क्योंकि तू उस गधेकी तरह जिसकी कमर बोझसे झुकी जा रही है, अपनी भारी दौलतको ढोये चला जा रहा है, और मौत आकर तेरा बोझा उतारती है।

—शेक्सपियर

धनिक

धनिकोंके आमोद-प्रमोद ग़रीबोंके आँसुओंसे ख़रीदे जाते हैं।

—अज्ञात

मैं ऐसे समयमें हूँ जिसमें श्रीमन्तको उच्च समझा जाता है, उसका सम्मान करना परम धर्म समझा जाता है और निर्धनको तुच्छ समझा जाता है।

—इब्न-उल-वर्दी

धनी

बहतरीन साथी, माम्नूमियत और तन्दुरुस्ती; और बहतरीन दौलत, दौलतसे बेखबरी।

—गोल्डस्मिथ

धनसे धनीके पास द्रव्य होता है; पर उसको वह पद नहीं प्राप्त होता जो कि हृदयके धनीको होता है, चाहे उसके पास कम ही धन क्यों न हो।

—हज़रत अली

मैं तो धनी हूँ क्योंकि ईश्वरके सिवा किसी औरका दास नहीं हूँ; और वस्तुतः निर्बल हूँ पर उसीके सहारे सबल हूँ।

—एक कवि

जहाँ बुद्धिहीन धनियोंका नाम भी नहीं सुना जाता, उस वनको चल।

—भर्तृहरि

रेशमके लबादोंमें कितनी नंगी आत्माएँ पाई जाती हैं।

—थॉमस ब्रुक्स

बिना ज्ञान और विद्वत्ताके धनी लोग सुनहरी ऊनवाली भेड़ों जैसे हैं।

—सोलन

वह आदमी सबसे धनवान है जिसकी खुशियाँ सबसे सस्ती हैं।

—थोरो

धनी बेवक़ूफ़ उस सूअरके मानिन्द है जो अपनी ही चर्बीसे घुट मरता है।

—कन्फ़्यूशियस

धनोपार्जन

प्रत्येक उद्यमी मनुष्यको आजीविका पानेका अधिकार है, मगर धनोपार्जनका अधिकार किसीको नहीं। सच कहें तो धनोपार्जन स्तेय है, चोरी है। जो आजीविकासे अधिक धन लेता है, वह जानमें हो या अनजानमें, दूसरोंकी आजीविका छीनता है।

—गांधी

धन्य

परमेश्वरका दुनियाके प्रति प्रेम ही मातारूपसे प्रकट हुआ है, ऐसा जिसे प्रतीत होता है वह पुरुष धन्य है! परमेश्वरका पितृत्व ही पुरुषरूपसे प्रकट हुआ है ऐसा जिस स्त्रीको प्रतीत है वह स्त्री धन्य है! और माता-पिता केवल परमेश्वरस्वरूप ही हैं ऐसा जिन्हें प्रतीत होता है वे बच्चे भी धन्य हैं!

—विवेकानन्द

धमकी

प्रेम भी यदि धमकी लेकर तेरे सामने आवे तो उसे बैरंग वापिस करदे। धौंस सहनेसे बरबाद हो जाना अच्छा है, धौंस सहना रोज़-रोज़ बरबाद होनेका निमंत्रण देना है।

—अज्ञात

धर्म

मुझसे यह मत पूछो कि धर्मसे क्या फ़ायदा है? बस, एक बार पालकी उठानेवाले कहारोंकी ओर देख लो और फिर उस आदमीको देखो जो उसमें सवार है।

—तिरुवल्लुवर

मनके सभी द्वार सत्यके लिये खुले हों और निर्भयता उसकी पृष्ठभूमिमें हो, उस समय हम जो भी विचारें या करें वह सब तत्त्वज्ञान या धर्ममें समाविष्ट हो जाता है।

—प्रज्ञाचक्षु पं० सुखलालजी

सच्चा धर्म हृदयकी कविता है; वहीं तमाम सद्‌गुण कुसुमित और पुष्पित होते हैं।

—जोबर्ट

यह समझकर कि मानो तू सदा ही इस जगतमें रहेगा, विद्यार्जन कर; और यह समझकर कि मौतने तेरे बाल पकड़ रक्खे हैं, धर्मका अनुष्ठान कर।

—हरडर

पहले धर्म-ज्ञान प्राप्त करो, पीछे और कुछ।

—अबुल अब्बास

धर्म कुछ जीवनसे भिन्न नहीं है, जीवन ही धर्म माना जाय। बगैर धर्मका जीवन मनुष्यजीवन नहीं है, वह पशु-जीवन है।

—गांधी

जैसे हम अपने धर्मको आदर देते हैं ऐसे ही दूसरेके धर्मको दें, मात्र सहिष्णुता पर्याप्त नहीं है।

—गांधी

आप मेरी सारी ज़िंदगीको ग़ौरसे देखिये, मैं कैसे रहता हूँ, कैसे खाता हूँ, कैसे बैठता हूँ, कैसे बातचीत करता हूँ, और आमतौरपर मेरा बर्ताव कैसा रहता है, सो सब आप पूरी तरह देखिये। इन सबको मिलाकर जो छाप आप पर पड़े, वही मेरा धर्म है।

—गांधी

जिसमें मनुष्यता नहीं है उसमें लवलेश धर्मात्मापन नहीं है।

—अरबी कहावत

एक धर्मसे दूसरे धर्ममें लोगोंको लेनेकी प्रथा मुझे ज़रा भी अच्छी नहीं लगती। दो विभिन्न धर्मोंके स्त्री-पुरुषोंमें विवाह होना असंभव अथवा अयोग्य है, ऐसा मैं नहीं मानता।

—गांधी

मेरे लिये सत्यसे परे कोई धर्म नहीं है, और अहिंसासे बढ़कर कोई परम कर्त्तव्य नहीं है।

—गांधी

हर मौक़े और हर हालतमें जो अपना फ़र्ज़ दिखाई दे उसीको अपना "धर्म" समझकर पूरा करना चाहिये, दूसरे किसी "धर्म"की तरफ़ नहीं जाना चाहिए। जैसा भी अपनेसे बन पड़े अपना यह कर्त्तव्य या फ़र्ज़ पूरा करते हुए ही मरना ठीक है।

—गीता

समाजमेंसे धर्मको निकाल फेंकनेका प्रयत्न बाँझके पुत्र पैदा करने जितना ही निष्फल है, और अगर कहीं सफल हो जाय तो समाजका उसमें नाश है।

—गांधी

धर्म परिवर्तनके बारेमें मेरा कहना यह नहीं है कि कभी धर्म परिवर्तन हो ही नहीं; किन्तु एक दूसरेको अपना धर्म बदलनेके लिये प्रेरित न करना चाहिये। मेरा धर्म तो सच्चा और दूसरा झूठा, ऐसे जो विचार ऐसे आमंत्रणके पीछे हैं, उन्हें मैं दूषित समझता हूँ।

—गांधी

धर्म अगर सिर्फ़ बदनकी कसरत, होठोंका हिलाना, घुटनों का झुकाना होता तो लोग स्वर्गको ऐसी आसानीसे चले जाया करते जैसे किसी दोस्तसे मिलने चले जाते हैं, लेकिन दुनियाकी प्यारी चीज़ोंसे अपना मन और आसक्ति हटाना, अपने सब सद्गुणोंको विकसित करना, और उनमेंसे हर एकको अपने अपने कार्यमें लगाना, और तब तक लगाये रखना कि काम हमारे हाथों उन्नत हो जाय, यह, यह है कठिन चीज़।

—बक्स्टर

जो किसी ठोस धर्मका अनुयायी नहीं है उसका कभी विश्वास न करो, क्योंकि जो ईश्वरके प्रति झूठा है वह मनुष्यके प्रति कभी सच्चा नहीं हो सकता।

—लॉर्ड बर्ल

धर्म एक भ्रमात्मक सूर्य है, जो कि मनुष्यके गिर्द तब तक घूमता रहता है, जब तक कि मनुष्य अपने (मनुष्यताके) गिर्द नहीं घूमता।

—कार्ल मार्क्स

यह कल्पना करना धर्मके लिये बड़े कलंककी बात है कि वह खुशी और खुशमिज़ाजीका दुश्मन है, और विचार-निमग्न नज़रों और गंभीर चेहरोंकी सख़्त अपेक्षा रखता है।

—वाल्टर स्कॉट

धर्म कहते हैं, हर चीज़का इस्तैमाल ईश्वरके लिये करने को।

—बीचर

किसी भी लौकिक विद्याकी अपेक्षा धर्मज्ञान श्रेष्ठ है।

—विवेकानन्द

अपने धर्मको दिखने दो। दीपक बोलता नहीं, चमकता है।

—कॉयलर

धर्म—अहिंसा, संयम, तप—सर्वश्रेष्ठ मंगल है। जिसका मन इस धर्ममें लगा रहता है उसे देव भी नमस्कार करते हैं।

—महावीर

कोई आदमी जो धर्मको इसलिये अलग रख देता है कि उसे सोसाइटीमें जाना है, उस आदमीके मानिन्द है जो जूतों को इसलिये उतारकर रख देता है कि उसे काटों पर चलना है।

—सैसिल

उपयोगिता धर्मका शरीर है, चित्त-शुद्धि आत्मा।

—विनोबा

आदमी धर्मके लिये झगड़ेगा; उसके लिये लिखेगा; उसके लिये मरेगा; सब कुछ करेगा मगर उसके लिये जियेगा नहीं।

—कोल्टन

उस आदमीकी ज़िन्दगी हैवानकी ज़िन्दगी है जिसने धर्म, धन और सुख प्राप्त नहीं किया; लेकिन इन तीनोंमें भी धर्म प्रमुख है, क्योंकि धर्मके बिना न धन सम्भव है न सुख।

—अज्ञात

विरोध, युद्ध और हत्या भी धर्मके अंग हो सकते हैं मगर विद्वेष और घृणा धर्मसे बाहर हैं।

—अरविन्द घोष

हृदयमें धर्मके बिना, बुद्धिका विकास सिर्फ़ सभ्य बर्बरता है और पोशीदा शैतानियत है।

—बुनसैन

धर्म इस संसारसे मोक्षको ले जानेवाला पुल है, इसलिये उसका एक पैर संसारमें और एक पैर मोक्षमें है।

—विनोबा

धर्म अपना है—यह एक कल्पना ही है। 'अपना धर्म' क्या है? जैसे महासागर किसीका नहीं वैसेही धर्म भी किसीका नहीं।

—अज्ञात

धर्म जनताके लिए अफ़ीम है।

—कार्ल मार्क्स

तू किसी भी धर्मको मानता हो इसका मुझे पक्षपात नहीं। जिस धर्मसे संसार-मलका नाश हो उसे तू सेवन करना।

—अज्ञात

अगर धर्म आपके मिज़ाजके लिये कुछ नहीं करता तो उसने आपकी आत्माके लिये कुछ नहीं किया।

—क्लेटन

मनुष्यको चिरकालिक जीवन देना यही धर्मका कार्य है।

—विवेकानन्द

दो धर्मोंका कभी भी झगड़ा नहीं होता। सब धर्मोंका अधर्मसे ही झगड़ा है।

—विनोबा

धर्म कलाका मोहताज नहीं है, वह अपनी ही शान पर खड़ा है।

—गेटे

विनयके सामने झुकना धर्म है, ज़ोरो-जब्रके सामने झुकना अधर्म है।

—गांधी

जो परम अर्थ सिद्धि चाहता है उसे शुरूसे ही धर्म पर चलना चाहिये; क्योंकि सच्चा लाभ उसी तरह धर्मसे अलग नहीं है, जिस तरह स्वर्गलोकसे अमृत।

—अज्ञात

धर्म ज्ञानमें नहीं पवित्र जीवनमें है।

—अज्ञात

कोई इच्छा पूरी हो जाय इसलिये, अथवा भयसे, लोभसे, या प्राण बचानेके लिये भी धर्म नहीं छोड़ना चाहिये।

—उपनिषद्

जो काम शुरूसे ही न्याययुक्त हो वही धर्म और जो अनाचार युक्त हो वह अधर्म।

—महाभारत

किसी कामको सिद्ध करनेके हेतुसे या भय अथवा लोभके कारण धर्मका त्याग नहीं करना, आजीविका तकका नाश होता हो तो भी धर्मका त्याग नहीं करना। धर्म नित्य है, सुख-दुःख अनित्य है; जीव नित्य है, शरीर अनित्य है।

—महाभारत

प्राणोत्सर्ग होते देखकर भी धर्मका पालन करना चाहिये।

—अज्ञात

धर्म केवल लोगोंकी सेवामें है; वह तसबीह या मुसल्लामें नहीं है।

—सादी

धर्ममें 'मेरा' 'तेरा' लगाना तो कुफ़्रके झण्डेको काबेसे खड़ा करना है।

—महात्मा भगवानदीन

आनन्द-रहित धर्म, धर्म नहीं है।

—थ्योडोर पार्कर

विज्ञान और धर्म एक दूसरेके उसी तरह अविरोधी हैं जिस तरह प्रकाश और बिजली।

—रिवरेंड फ़ौकी

धर्मके खण्डनका अन्तिम पाठ यह है कि मानवजातिके लिये मानव सर्वश्रेष्ठ सत्त्व है—(इसलिए) उन सभी परिस्थितियोंको खतम कर दिया जाय, जिन्होंने कि मानवको एक पतित, दास, उपेक्षित, घृणास्पद प्राणी बना दिया है।

—कार्ल मार्क्स

जो न्यायके अनुकूल है वह कभी धर्मके प्रतिकूल नहीं हो सकता।

—ग्लेडस्टन

धर्म मानवी अन्तःकरणके विकासका फल है; इसलिये धर्मके प्रामाण्यका आधार पुस्तक नहीं अन्तःकरण है।

—विवेकानन्द

तत्वज्ञान = बौद्धिक तन्मयता
काव्य = भावनामें तन्मयता
धर्म = आचारमें एक वाक्यता

—स्वामी रामतीर्थ

जो धर्म शुद्ध अर्थका विरोधी है वह धर्म नहीं है। जो धर्म शुद्ध राजनीतिका विरोधी है वह धर्म नहीं है। धर्म-रहित अर्थ त्याज्य है। धर्म-रहित राज्य-सत्ता राक्षसी है। अर्थ आदिसे अलग धर्म नामकी कोई वस्तु नहीं है।

—गांधी

अगर आप शिक्षाको धर्मसे वंचित कर देंगे, तो आप चालाक शैतानोंकी एक जाति पैदा करेंगे।

—प्रो० व्हाइटहैड

आप लोग धर्मकी चर्चा मन-भर करते हैं, मगर अमल कण-भर भी नहीं करते। ज्ञानी पुरुषका चाहे समूचा जीवन धर्ममय हो तो भी वह बहुत कम बोलता है।

—रामकृष्ण परमहंस

धर्माचरण अकेले करना चाहिये; इसमें सहायककी ज़रूरत ही नहीं है ।

—अज्ञात

अगर धर्म कल इस दुनियासे बिल्कुल नष्ट हो गया तो क्या होगा? उसमेंसे मनुष्य ही नष्ट हो जायँगे और दुनिया गोया पशुका साम्राज्य हो जायगी। जंगलमें घूमनेवाले पशुओं और ऐसी स्थितिवाले मनुष्योंमें कोई फ़र्क़ नहीं रहनेवाला। केवल इन्द्रियोंकी वासना तृप्त करते बैठना यही मनुष्यका साध्य नहीं है, स्वतः शुद्ध ज्ञानरूप होना यही उसका साध्य है।

—विवेकानन्द

मेरे उपदेशित धर्मको बेड़ेकी तरह जानो, वह पार उतारनेके लिये है, ढोकर ले चलनेके लिये नहीं ।

—बुद्ध

जो धर्मके गौरवको पूज्य मानकर शांत और मग्न होता है उसीको सच्चा शान्त और सच्चा नम्र समझना चाहिये। अपना मतलब साधनेके लिये कौन शांत और नम्र नहीं बन जाता?

—बुद्ध

स्वधर्मपर प्रेम, पर-धर्मपर आदर, अधर्मपर दया—मिलकर धर्म।

— वनोबा

धर्मपालन

धर्मपालन वही कर सकता है जो फाँसीपर भी अपना निश्चय न तोड़े।

—अज्ञात

धर्म-प्रसार

अपने धर्मका प्रचार करनेका बहतरीन तरीक़ा उसे अपने जीवनमें उतारना है।

—अज्ञात

धर्म-मार्ग

जिस जगहपर एक क़दम उठाकर पहुँच जाना चाहिये वहाँ पहुँचनेके लिये एक हज़ार क़दम न उठा। धर्मकार्यमें गिन गिनकर आगे बढ़ेगा तो उस मुक़ाम तक पहुँच ही नहीं पावेगा।

—जुन्नेद

धर्म-वचन

ऐसे हर एक वचनको, जिसके लिये धर्मशास्त्रका वचन होनेका दावा किया गया हो, सत्यकी निहाईपर दयारूपी हथौड़ेसे पीटकर देख लेना चाहिये। अगर वह पक्का मालूम हो और टूट न जाय तो ठीक समझना चाहिये; नहीं तो, हज़ारों शास्त्रवादियोंके रहते हुए भी 'नेति नेति' कहते रहना चाहिये।

—गांधी

धर्मशास्त्र

अपना उल्लू सीधा करनेके लिये शैतान धर्म-शास्त्रके हवाले दे सकता है।

—शेक्सपियर

धर्म-समन्वय

जितना सम्भव था उतना विविध धर्मोंका अध्ययन करनेके बाद मैं इस निर्णयपर आया हूँ कि सब धर्मोंका एकीकरण करना यदि उचित और आवश्यक है, तो उन सबकी एक महाचाबी होनी चाहिये। यह चाबी सत्य और अहिंसा है।

—गांधी

धर्मज्ञान

धर्मज्ञानकी प्राप्ति बाहरी दुनियाके पढ़नेसे नहीं, अन्दरूनी दुनियाके पढ़नेसे होती है।

—विवेकानन्द

धर्मात्मा

मनुष्य धर्मके लिये ज़ोरशोरकी चर्चा करेगा, गीत गायेगा, नाचेगा, धर्मपर बड़ी बड़ी पुस्तकें लिखेगा, लेख लिखेगा, धर्मके लिये जनूनी लड़ाइयाँ लड़ेगा, मरेगा, मारेगा, सब कुछ करेगा मगर जीवनमें धर्म उतारकर स्वयं धार्मिक पुरुष—धर्मात्मा—न बनेगा।

—सत्यभक्त

हर हालतमें पाँच बातें करना पूर्ण धर्मात्मापना है; वे पाँच बातें हैं गम्भीरता, आत्माकी उदारता, मुख़लिसी, लगन और दया।

—कनफ़्यूशियस

धर्मपुस्तकोंके ज्ञानसे मनुष्य धर्मात्मा नहीं होता, किन्तु उनके अनुसार जीवन बितानेवाला व्यक्ति ही धर्मात्मा है।

—टेलर

यदि तुम्हें तुम्हारी सेवा करनेवाले धर्म-परायण मनुष्योंसे मिलना है तो वैसे मनुष्य मिलने तो ज़रूर मुश्किल हैं, किन्तु यदि तुम ख़ुद धर्म-परायण मनुष्योंकी सेवा करना चाहते हो तो वैसे बहुतसे मिलेंगे।

—जुन्नेद

अगर तू दुनियामें धर्मात्मा और पुण्यवान बनना चाहता है तो ऐसे काम कर जिनसे किसीको कष्ट न पहुँचे। मौतका कभी भय मत कर और रोटियोंकी चिन्ता छोड़ दे; क्योंकि यह दोनों चीज़ें वक़्तपर ख़ुद ही हाज़िर हो जाती हैं।

—शब्सतरी

धंधा

अपने धंधेको चला ! वह तुझे न चलाने लगे !

—फ्रैंकलिन

धार्मिक

वही पुरुष शीलवान और धार्मिक है जो अपने या दूसरेके लिये पुत्र, धन आदिकी इच्छा नहीं करता।

—बुद्ध

धीर

समुद्रमंथनसे देवोंको अमूल्य रत्न मिले तो भी संतोष नहीं माना; उसके बाद भयंकर विष निकला उससे डरे नहीं; जब तक अमृत न निकल आया रुके नहीं। धीर पुरुष चाहे जितने प्रलोभन या भयके प्रसंग आवें मगर निश्चित कार्य सिद्ध किये बिना चैनसे नहीं बैठते।

—अज्ञात

नीतिनिपुण लोग निन्दा करें या स्तुति, लक्ष्मी आवे या जावे, मृत्यु आज ही आ जाय या युगान्तरके बाद, परन्तु धीर पुरुषोंका न्यायमार्गसे क़दम नहीं डिगता।

—भर्तृहरि

यथार्थमें धीर पुरुष तो वे ही हैं जिनका चित्त विकार उत्पन्न करनेवाली परिस्थितिमें भी अस्थिर नहीं होता।

—कालिदास

धूर्त

जो यह कहता है कि ईमानदार आदमी नामक कोई चीज़ है ही नहीं, वह खुद धूर्त है।

—बर्कले

मुखमें मधु, हृदयमें हलाहल, धंधा धोकाज़नीका।

—कहावत

वह बिला शक बड़ेसे बड़ा दैत्य है जो बाहरसे भेड़ और अन्दरसे भेड़िया है।

—डेनहम

संसारमें दीर्घ अनुभवके बाद, मैं ईश्वरके समक्ष, दावेके साथ कहता हूँ कि मेरी जानकारीमें कोई ऐसा धूर्त नहीं आया जो कि दुखी न हो।

—जूनियस

निहायत ईमानदार और समझदार आदमी भी धूर्त द्वारा छला जा सकता है।

—जूनियस

हो सकता है कि आदमी मुस्कराये, और मुस्कराये, और धूर्त हो।

—शेक्सपियर

धूर्तता

जब लोमड़ी उपदेश दे, अपनी बतख़ोंकी सँभाल रखना।

—कहावत

धरती उकता गई है, और आस्मान थक गया है सत्ताधीशोंके उन थोथे शब्दोंको सुन सुनकर जिन्हें वे सत्य और न्याय बघारते हुए इस्तैमाल करते हैं।

—वर्ड्सवर्थ

बहुतसे लोग काटनेसे पहले चाटते हैं।

—कहावत

धूल

ईश्वरकी आँखोंमें धूल डालनेकी कोशिश करोगे तो खुद अन्धे हो जाओगे।

—स्वामी रामतीर्थ

धैर्य

शूरवीरताका सबसे नफ़ीस, सबसे शानदार और सबसे नायाब अंग है धीरज। तमाम खुशियों और तमाम शक्तियोंका मूलाधार है धीरज।

—जॉन रस्किन

धैर्य, मनुष्यकी दूसरी वीरता, शायद पहली से भी बढ़कर है।

—एन्टोनियो

मैं अकेला ही संग्राम नहीं करता; बल्कि इस संग्राममें मेरा साथी धैर्य भी है।

—अज्ञात

बीज एक दिनमें वृक्ष नहीं हो जाता।

—अज्ञात

मनुष्यका धैर्य उसकी प्रशंसामें गिना जाता है; और रोना चिल्लाना उसका अवगुण समझा जाता है।

—मुतनब्बी

धोखा

वह जो ईरादतन् अपने मित्रको धोखा देता है, अपने ईश्वर को धोखा देगा।

—लेवेटर

मनुष्य, मनुष्यकी आँखोंमें धूल झोंक सकता है परमात्मा की आँखोंमें नहीं।

—अज्ञात

धोखेबाज़को धोखा देना न्याय्य और उचित नहीं है।

—स्पेनिश कहावत

स्वार्थ छोड़ना ही धार्मिकपनेकी सच्ची कसौटी है।

—विवेकानन्द

अगर कोई आदमी मुझे एक बार धोखा देता है, तो धिक्कार है उसपर; अगर वह मुझे दो बार धोखा देजाता है तो लानत है मुझ पर।

—कहावत

किसी आदमीने ग़ैरसे इतना धोखा कभी नहीं खाया जितना ख़ुद से।

—अज्ञात

जब हम दूसरेको धोखा देते हैं उस वक़्त हम अपने आपको ही धोखा देते हैं।

—अज्ञात

आदमी जितना दूसरोंको धोखा देते वक़्त धोखा खाते हैं उतना कभी नहीं खाते।

—ला रोशे

धोखेबाज़को धोखा देनेमें दुचन्द मज़ा आता है।

—लाफ़ाँ

तमाम धोखोंमें पहला और सबसे बुरा अपने आपको धोखा देना है–इसके आगे शेष पाप कुछ भी नहीं है।

—बेली

किसने तुझे इतनी वार धोखा दिया है जितनी बार ख़ुद तूने अपने आपको ?

—फ़्रेंकलिन

तुम सोचते हो कि अमुक आदमी तुम्हारी धोखेबाज़ीमें आ गया। अगर वह ऐसा ही 'बनता' है तो कौन बड़ा धोखा खा रहा है, वह या तुम ?

—ब्रूयर

ध्यान

क्या तुम्हें मालूम है सात्त्विक (पवित्र) प्रकृतिका मनुष्य कैसे ध्यान करता है ? वह आधी रातको, अपने बिस्तर पर, मशहरीके अन्दर, ध्यान करता है, ताकि और लोग उसे न देख सकें।

—रामकृष्ण परमहंस

जो जिसका मनसे ध्यान करता है, जिसको वाणीसे बोलता है, जिसको कर्मसे करता है, उसीको प्राप्त होता है।

—यजुर्वेद

इच्छाओंसे ऊपर उठ जाना ही ध्यान है।

—स्वामी रामतीर्थ

ध्येय

ध्येयके लिये जीना ध्येयकी ख़ातिर मरनेसे मुश्किल है।

—अज्ञात

यदि परिस्थिति अनुकूल हो तो सीधे अपने लक्ष्यकी ओर चलो; लेकिन अगर परिस्थिति अनुकूल न हो तो उस मार्गका अनुसरण करो जिसमें सबसे कम बाधा आनेकी सम्भावना हो।

—तिरुवल्लुवर

न्याय-परायण रहो और डरो मत; तुम्हारे तमाम ध्येय अपने देश, अपने परमात्मा और सत्यकी ख़ातिर हों।

—शेक्सपियर



[न]

नक़ल

हर मनुष्यके शिक्षणमें एक वक़्त आता है जबकि वह इस निर्णयपर पहुँचता है कि ईर्ष्या अज्ञान है, नक़ल आत्महत्या है !......वह ताक़त जो उसमें निवास करती है प्रकृतिमें नई है और उसके सिवा कोई नहीं जानता कि वह क्या है जिसे वह कर सकता है, और जब तक वह आज़माये नहीं न वही जान पाता है।

—अज्ञात

आदमी दूसरेकी नक़ल करता है। लोग रूढ़िगामी हैं सत्यगामी नहीं।

—अज्ञात

नफ़रत

तू भला है फिर भी बुरेसे नफ़रत मत कर। बुरेसे बुरे आदमीसे भी भलाईकी आशा की जा सकती है।

—जामी

बुलबुलको इसकी क्या परवाह कि मेंढक उसके गानेसे नफ़रत करता है ?

—बीचर

दो चीज़ें हैं जिनसे मैं नफ़रत करता हूँ; नास्तिक विद्वान और मूर्ख भक्त।

—अज्ञात

नफ़रत दिलका दिवानापन है।

—बायरन

हम कुछ लोगोंसे नफ़रत करते हैं क्योंकि हम उन्हें नहीं जानते, और हम उन्हें नहीं जानेंगे क्योंकि हम उनसे नफ़रत करते हैं।

—कोल्टन

अगर तुम अपने शत्रुओंसे घृणा करोगे तो तुम्हारे मनकी एक ऐसी विषाक्त आदत पड़ जायगी जोकि क्रमशः उनपर बरस पड़ेगी जोकि तुम्हारे मित्र हैं या जिनके प्रति तुम समभाव रखते हो।

—प्लुटार्क

नम्रता

भक्तमें ज्ञान न हो तो भी नम्रता होनेसे ज्ञान प्राप्त करना उसके लिये सहज होता है।

—अज्ञात

जो खुद झुक जाता है वह अपनी श्रीको क़ायम रखता है, जिसे दूसरे ज़लील करते हैं वह श्री-हीन हो जाता है।

—अज्ञात

फलके आनेसे वृक्ष झुक जाते हैं, नव वर्षाके समय बादल झुक जाते हैं; सम्पत्तिके समय सज्जन नम्र हो जाते हैं—परोपकारियोंका स्वभाव ही ऐसा है।

—कालिदास

हमें रजकण बनना चाहिये और संसारकी लात सहन करना सीखना चाहिये।

—गांधी

ईश्वरको जाननेपर मनुष्य अपने आप रजकण हो जाता है।

—गांधी

जिन लोगोंने विद्वानोंके चातुरी-भरे शब्दोंको नहीं सुना है, उनके लिये वक्तृताकी नम्रता प्राप्त करना कठिन है।

—तिरुवल्लुवर

तुमसे पूछे उसे नम्रतासे जवाब देना; तुमको गालियाँ दे उसे मीठे बचन कहना; तुमको दुखी करे उसको 'ईश्वर तेरा भला करे' कहना। क्योंकि प्रभुके कामके लिये जिनको निन्दा सहनी पड़ती है, उनकी प्रभुके दरबारमें ज़्यादा क़ीमत है।

—अज्ञात

जिसने सारी बातोंमें नम्रतासे काम लिया है, वह न तो किसी कार्यमें लज्जित हुआ, और न किसीने उसकी निन्दा ही की।

—अबुल-फ़तह-बुस्ती

दुनियाके विरुद्ध खड़े रहनेकी शक्ति प्राप्त करनेके लिये मग़रूर या तुच्छ बननेकी ज़रूरत नहीं है। ईसा दुनियाके ख़िलाफ़ खड़ा रहा। बुद्ध भी अपने ज़मानेके ख़िलाफ़ गया। प्रह्लादने भी वही किया। वे सब नम्रताके पुतले थे। अकेले खड़े रहनेकी शक्ति नम्रता बिना असंभव है।

—गांधी

जब तक मनुष्य अपनी गिनती पृथ्वीके सारे जीवोंके अन्तमें नहीं करेगा, उसे मोक्ष नहीं मिलेगा। नम्रताकी चरम सीमाका नाम ही तो अहिंसा है।

—गांधी

हम महानताके निकटतम होते हैं जब हम नम्रतामें महान होते हैं।

—टैगोर

अहंकार था जिसने फ़रिश्तोंको शैतान बना दिया; नम्रता है जो इन्सानोंको फ़रिश्ते बना देती है।

—ऑगस्टाइन

नम्रता महानताका लक्षण है। महापुरुष अकड़बाज़ नहीं होता। दिखावेसे वह दूर रहता है। अहंकारी सच्ची प्रार्थना नहीं बोल सकता।

—अज्ञात

जिसमें काफ़ी नम्रता नहीं है उसमें काफ़ी इन्सानियत नहीं है।

—अज्ञात

अगर हमें स्वर्गको जाना है तो हमें नम्र होना ही पड़ेगा; वहाँ छत ऊँची है पर दरवाज़ा नीचा है।

—हैरिक

मेरा विश्वास है कि वास्तवमें महान व्यक्तिका पहला लक्षण उसकी नम्रता है।

—रस्किन

उड़नेकी अपेक्षा जब हम झुकते हैं तब विवेकके अक्सर अधिक नज़दीक होते हैं।

—वर्ड्सवर्थ

नम्रता माने लचीलापन, लचीलेपनमें तननेकी भी शक्ति है, जीतनेकी कला है और शौर्यकी पराकाष्ठा है।

—विनोबा

धर्ममें पहली चीज़ क्या है? धर्ममें पहली, दूसरी और तीसरी चीज़—नहीं, सब कुछ—नम्रता है।

—आगस्टाइन

नम्रता तमाम सद्गुणोंकी सुदृढ़ बुनियाद है।

—कन्फ़्यूशियस

नम्रताका अर्थ है अहम् भावका आत्यन्तिक क्षय।

—गांधी

मनुष्य ख़ाकसे पैदा हुआ है, यदि वह ख़ाकसार (नम्र) नहीं है तो मनुष्य नहीं है।

—अज्ञात

अत्यन्त मधुर सुगन्धवाला फूल सलज्ज और विनीत होता है।

—वर्ड्सवर्थ

नरक

आत्माको बरबाद करनेवाले नरकके तीन दरवाज़े हैं—काम, क्रोध और लोभ।

—गीता

अगर तुम नरकको जानना चाहते हो तो समझ लो कि ईश-विमुख अज्ञानी मनुष्यकी सोहबत ही दुनियामें नरक है।

—शब्सतरी

नशा

जो आदमी नशेमें मदहोश है उसकी सूरत उसकी माँको भी बुरी मालूम होती है।

—तिरुवल्लुवर

नसीहत

मूर्खको नसीहत देना ज्ञानकी बर्बादी है; साबुन कोयलेको धोकर सफ़ेद नहीं बना सकता।

—अज्ञात

दुश्मनों तकसे सीखनेमें ख़ैरियत है, दोस्तोंको नसीहत करनेमें नहीं।

—कोल्टन

जिसने कालके चक्रोंसे कोई नसीहत नहीं ली उसे बेचरवाहेके ऊँटोंके साथ चरना चाहिये।

—सलाह-उद्दीन सफ़री

नहीं

एक तात्कालिक और सुनिश्चित "नहीं" न कह सकना महान अभिशाप और दुर्भाग्य है।

—सिमन्स

एक "नहीं" सत्तर बुराइयोंसे बचाती है।

—हिन्दुस्तानी कहावत

"नहीं" कहना सीखो, अँग्रेज़ी पढ़ सकनेकी अपेक्षा यह तुम्हारे लिये ज़्यादा लाभदायक होगा।

—स्पर्जियन

दूसरोंको प्रसन्न करनेके लिये कोई काम न करो। वह वीर है जो 'नहीं' कह सकता है। 'नहीं' कह सकनेसे तुम्हारे चारित्रकी शक्ति प्रकट होती है।

—स्वामी रामतीर्थ

बुरे कामके लिये फुसलाये जानेपर जो निश्चयपूर्वक "नहीं" नहीं कह सकता वह सर्वनाशके मार्गपर है—वह अपने बहकानेवालों तककी नज़रमें हक़ीर हो जाता है।

—हेवीज़

वह आदमी जिसने "नहीं" कहना नहीं सीखा, जब तक जियेगा दरिद्री नहीं तो दुर्बल अवश्य बना रहेगा।

—मैकलेरन

नापाक

नापाक आदमी हर भले आदमीका दुश्मन होता है।

—बीचर

नाम

नाममें क्या है? जिसे हम गुलाब कहते हैं, किसी दूसरे नामसे भी उतनी ही खुशबू देता रहेगा।

—शेक्सपियर

अपने नामको कमलकी तरह निष्कलंक बना।

—लौंगफ़ैलो

नामकी महिमा तुलसीदासने ही गाई हो ऐसा नहीं है। बाइबिलमें मैं वही पाता हूँ। दसवें रोमनके १३ कलममें कहते हैं: 'जो कोई ईश्वरका नाम लेंगे वे मुक्त हो जायेंगे।'

—गांधी

नाम जप

शुद्ध भावसे नाम जपनेवालोंमें श्रद्धा होती ही है······जो जीभसे होता है वह अन्तमें हृदयमे उतरता है। और उससे शुद्धि होती है। यह अनुभव निरपवाद है। 'मनुष्य जैसा विचार करता है वैसा होता है'। नाम जपपर मेरी श्रद्धा अटूट है।

—गांधी

नामुमकिन

नामुमकिन लफ़्ज़ सिर्फ़ बेवक़ूफ़ोंके लुग़तमें मिलता है।

—नैपोलियन

नारी

नारी संसारका सार है।

—कनफ़्यूशियस

नाश

तृष्णासे सब सुखोंका नाश होता है; अभिमानसे पुरुषका नाश होता है; याचना करनेसे गौरव नष्ट होता है; अपनी प्रशंसा करनेसे गुणोंका, चिन्तासे बलका और अदयासे लक्ष्मीका नाश होता है।

—अज्ञात

पराया धन हरनेसे, परस्त्री गमन करनेसे, और मित्रोंके साथ विश्वासघात करनेसे मनुष्य नष्ट हो जाता है।

—विदुर

नाशवान्

जब एक साधुको खबर दी गई कि उसका लड़का मर गया, तो उसने केवल यह कहा—"मैं जानता था वह नाशवान है"।

—अज्ञात

नास्तिकता

नास्तिकता इन्सानके दिलमें नहीं जीवनमें होती है।

—बेकन

क्षणिक जोश, अधैर्य, निराशा और आत्म-विश्वासकी कमी—ये नास्तिकताके चिह्न हैं।

—हरिभाऊ उपाध्याय

स्वार्थ ही वास्तविक नास्तिकता है; निस्स्वार्थता, प्रगतिशीलता, ही वास्तविक धर्म है।

—अज्ञात

नास्तिकता आशाकी मौत और आत्माकी आत्म-हत्या है।

—अज्ञात

निकटता

मैं संसारके लोगोंमें यह बात पाता हूँ कि जो उनके नज़दीक होता जाता है, वह तुच्छ हो जाता है; और जो अपना मान आप करता है, वह प्रतिष्ठाका भागी ठहरता है।

—एक कवि

निकम्मा

निकम्मा कौन है? पेटू।

—बुज़ुरचिमिहर

दुनियाने तुझे निकम्मा ठहरा दिया तो तू क्यों घबराता है? जिसदिन तेरा दिल तुझे निकम्मा ठहरा देगा, उस दिन दुनिया भरकी प्रशंसा तेरे काम नहीं आवेगी।

—अज्ञात

निकृष्ट

संसारमें निकृष्टतम आदमी कौन हैं? वे जो अपने कर्त्तव्य को जानते हैं, और उस पर अमल नहीं करते।

—अज्ञात

निष्कृष्टतम जीव वे हैं जो वस्तुको तीव्रतम, अधिकतम राग-दृष्टिसे ग्रहण करते हैं और न्यूनतमज्ञेय-दृष्टिसे देखते हैं।

—अज्ञात

निगाह

वह शख़्स जो इल्तजाकी निगाहको नहीं समझ सकता उसके सामने अपनी ज़बानको शर्मिन्दा-ए-तकल्लुम न करो।

—अज्ञात

निग्रह

मनोनिग्रहकी अपेक्षा शरीरनिग्रहका अभ्यास अधिक आसान है; इसलिये शरीरनिग्रहके अभ्याससे प्रारम्भ करना श्रेयस्कर है। शरीरनिग्रहका अभ्यास अच्छी तरह दृढ़ होने पर मनोनिग्रहका अभ्यास करना सरल हो जाता है।

—विवेकानन्द

निद्रा

निर्दोष नींद आनेके लिये जाग्रतावस्थामें आचार-विचार निर्दोष होने चाहिये। निद्रावस्था जाग्रतावस्थाकी स्थिति जाँचनेका एक आईना है।

—गांधी

जिसके नीचे नरककी आग दहक रही हो और ऊपर स्वर्गका राज्य जिसे बुला रहा हो, वह नींदमें समय कैसे गँवाये!

—अहमद हर्ब

निधि

अंधकार और दुष्ट शक्तियोंसे युद्ध ही मेरी निधि है।

—गांधी

निन्दक

पक्षियोंमें कौवेको चाण्डाल कहा है; पशुओंमें गधेको; और मनुष्योंमें निन्दकको।

—अज्ञात

सारे संसारमें सबसे अधिक विवेकभ्रष्ट वह आदमी है जो लोगोंकी निन्दामें दत्तचित्त रहता है—जैसे मक्खी रुग्णस्थानोंको ही ताड़ा करती है।

—इस्माईल-इब्न-अबीबकर

हाथी अपने रास्ते चलता जाता है; कुत्ते भौंकते हैं, उन्हें भौंकने दे।

—कबीर

जो कोई तुम्हारे पास दूसरोंके दोष गिनाता हुआ आता है वह निस्सन्देह तुम्हारे दोष दूसरोंके सामने ले जायगा।

—अज्ञात

निन्दा

इन्द्रियासक्त मनुष्य, दुराचारी धनवान और अत्याचारी आचार्य—इनके दोष प्रकट करना निन्दा करना नहीं है।

—हुसेन बसराई

अफ़लातूनने, यह सुनकर कि कुछ लोग उसे बहुत बुरा आदमी बताते हैं, कहा: 'मैं इस तरह जीनेकी एहतियात रक्खूँगा कि उनके कहने पर कोई विश्वास ही नहीं लायेगा।'

—गार्डियन

निन्दा सुननेवाला, बिल्कुल नहीं तो, लगभग उतना ही बुरा है जितना कि बोलनेवाला। उस शख़्सको कोई अख़्तियार नहीं है कि तुम्हें सुनाये और तुम्हें कोई अधिकार नहीं है कि तुम सुनो।

—अज्ञात

पर-निन्दा दुर्गतिका असाधारण कारण है।

—अज्ञात

जो दूसरोंके अवगुण बखानता है वह अपना अवगुण प्रकट करता है।

—बुद्ध

चाहे तुम बर्फ़की तरह निर्मल और निष्पाप हो जाओ तब भी निन्दासे नहीं बच सकते।

—शेक्सपियर

अगर कोई तुमसे कहे कि अमुक आदमी तुम्हारी बुराई करता था, तो जो कुछ कहा गया उसके बारेमें बहाने न बनाओ बल्कि जवाब दो–'वह मेरे और दोषोंको नहीं जानता था वरना वह सिर्फ़ इन्हींका ज़िक्र न करता।'

—एपिक्टेटस

निन्दा किसीकी न करो।

—मुहम्मद

अपनी आलोचना या निन्दामें रुचि होना इस बातका सबूत है कि मैंने अपने घरकी देखभाल शुरू कर दी है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

मालिक देखता है और चुप रहता है; पड़ोसी देखता नहीं पर शोर मचाता है।

—सादी

नेकीसे विमुख हो जाना और बदी करना बेशक बुरा है, मगर सामने हँसकर बोलना और पीठ-पीछे निन्दा करना उससे भी बुरा है।

—तिरुवल्लुवर

लोगोंके विरोध या निन्दासे मुक्त होनेकी मैंने कभी इच्छा नहीं की। सबको बनानेवाला वह ईश्वर भी अश्रद्धालु निन्दकोंकी जीभसे नहीं बच पाया, तो मैं उससे बनानेवाला कौन?

—हुसेन बसराई

दुर्जनोंको निन्दामें ही आनन्द आता है; सारे रसोंको चखकर कौवा गंदगीसे ही तृप्त होता है।

—महाभारत

पीठ-पीछे किसीकी निन्दा न करो, चाहे उसने तुम्हारे मुँह पर ही तुम्हें गाली दी हो।

—तिरुवल्लुवर

ऐ ईमानवालो, दूसरों पर बहुत शक मत करो, सचमुच कभी कभी शक करना भी गुनाह हो जाता है। दूसरोंके नुक़्स ढूँढ़ते मत फिरो, और न पीठ-पीछे किसीकी बुराई करो। पीठ पीछे बुराई करना ऐसा ही है जैसा अपने मुरदा भाईका मांस खाना।

—क़ुरान

दूसरेकी निन्दा करनेमें सज्जनको परिताप और दुर्जनको संतोष होता है।

—अज्ञात

दूसरोंकी कमियोंका बयान करना अक़्लमन्दोंके लिये शर्मनाक है।

—अज्ञात

नीच लोग दूसरोंके यशकी अग्निसे जल-भुनकर और उनकी हैसियतको न पा सकनेके कारण निन्दा करनेपर उतर आते हैं।

—अज्ञात

निन्दा एक ऐसा दोष है जो दुहरी मार मारता है, यह निन्दक और निन्दित दोनोंको ज़ख़्मी करता है।

—सौरिन

सच्चा आदमी अगर वह निन्दा सुनकर विकल हो उठता है तो वह ईश्वरकी नज़रकी अपेक्षा मनुष्यकी ज़बानसे ज़्यादा डरता है।

—कोल्टन

निन्दक और ज़हरीले साँप दोनोंके दो दो जीभ होती है।

—तामिल

संसारमें न किसीकी सदा स्तुति होती है, न निन्दा।

—धम्मपद

अगर लोग हमारे बारेमें कुछ औल-फ़ौल बकते हैं, तो हमें उसका बुरा नहीं मानना चाहिये। जिस तरह कि गिरजाघरकी मीनार अपने इर्द-गिर्द चीलोंके चीखनेका ख़्याल नहीं करती।

—जॉर्ज ईलियट

निमित्त

'निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्'-निमित्तमात्र होना माने दाहिना हाथ थक गया तो बायें हाथसे लड़नेकी तैयारी रखना।

—विनोबा

नियत मार्ग

गंगा अपने नियत मार्गसे बहती है: इसलिये उसका लोगोंको अधिकसे अधिक उपयोग होता है। लेकिन उपयोगी पड़नेके हेतुसे अगर वह अपना नियत मार्ग छोड़कर लोगोंके आँगनमें बहने लगी तो लोगोंकी क्या दशा होगी?

—विनोबा

नियम

क़ुदरतका यह एक साधारण नियम है, जो कभी नहीं बदलेगा, कि योग्य अयोग्योंपर शासन करते रहेंगे।

—डायोनीसियस

बग़ैर नियमके एक भी काम नहीं बनता। नियम एक क्षणके लिये टूट जाय, तो सारा सूर्यमण्डल अस्त-व्यस्त हो जाय।

—गांधी

जो अपने लिये नियम नहीं बनाता उसे दूसरोंके बनाये नियमोंपर चलना पड़ता है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

इस प्रकार काम करो कि तुम्हारी प्रवृत्तियोंका सिद्धान्त सारे संसारके लिये नियम बना दिया जा सके।

—केएट

नियामत

जो पुरुष समझबूझकर ठीक तरहसे अपनी इच्छाओंका दमन करता है, मेधा और दूसरी न्यामतें उसे मिलेंगी।

—तिरुवल्लुवर

निरर्थक

निरर्थक ज़िन्दगी बिन-आई मौत है।

—गेटे

निरामय

हर जगह व हर वक़्त आनन्दित और उत्साही होना पूर्ण निरामय जीवनका रहस्य है।

—स्वामी रामतीर्थ

निराशा

जो अपनेसे निराश हो गया, उससे कौन आशा बाँधेगा।

—सर फ़िलिप सिडनी

निराशा नरककी दलदल है, जिस तरह कि खुशी स्वर्गकी शांति है।

—डॉने

निर्गुण

सर्वभूतहित यह निर्गुण उपासना है।

—विनोबा

निर्णय

जिसका निर्णय दृढ़ और अटल है वह संसारको अपने साँचे में ढाल सकता है।

—गेटे

याद रहे कि तुम्हारी पहुँच तुम्हारे निर्णयसे ज़्यादा ऊँची नहीं हो सकती।

—अज्ञात

निर्दोष

बेदाग़ दिलको आसानीसे ख़ौफ़ज़दा नहीं किया जा सकता।

—शेक्सपियर

निर्धन

निर्धनका अपने प्राणों द्वारा पेटकी आग बुझाना अच्छा, मगर परिभ्रष्ट कृपणसे प्रार्थना करना अच्छा नहीं।

—अज्ञात

ग़रीब आदमीके शब्दोंकी कोई क़द्रोक़ीमत नहीं होती,चाहे वह कमाल-उस्तादी और अचूक ज्ञानके साथ अगाध सत्यकी ही विवेचना क्यों न करे।

—तिरुवल्लुवर

एक तो कंगाल हो और फिर धर्मसे खाली–ऐसे अभागे मरदूदसे तो खुद उसकी माँ तक का दिल फिर जायेगा जिसने कि उसे नौ महीने पेटमें रक्खा।

—तिरुवल्लुवर

निर्धनता

क्या तुम यह जानना चाहते हो कि कंगालीसे बढ़कर दुखदायी चीज़ और क्या है? तो सुनो; कंगाली ही कंगालीसे बढ़कर दुखदायी है।

—तिरुवल्लुवर

निर्धनता मनुष्यकी बुद्धिको भ्रष्ट कर देती है और अतीव दुःखदायी कोड़ेके समान दुःख देती है।

—मुतनब्बी

इतिहासका सबसे बड़ा आदमी सबसे ज्यादा निर्धन था।

—एमर्सन

ललचाती हुई कंगाली, खान्दानी शान और ज़बानकी नफ़ासत तककी हत्या कर डालती है।

—तिरुवल्लुवर

जिस तरह डूबनेसे सूरजको धब्बा नहीं लगता, उसी तरह निर्धनतासे गुणवानको कुछ हानि नहीं पहुँचती।

—इब्न-उल-वर्दी

ज़रूरत ऊँचे कुलके आदमियों तककी आन छुड़ाकर उन्हें अत्यन्त निकृष्ट और हीन दासताकी भाषा बोलनेपर मजबूर करती है।

—तिरुवल्लुवर

निर्बलता

निर्बल वह नहीं है जिसे निर्बल कहा जाता है, बल्कि वह है जो अपनेको निर्बल समझता है।

—गांधी

निर्बुद्धि

वह मनुष्य तो बिल्कुल ही पतित और निर्बुद्धि है जो यह नहीं जानता कि मुझपर कैसी चक्की चल रही है।

—अज्ञात

निर्भय

हज़ारमेंसे केवल एक ऐसा होता है जो संसारकी मायासे मुग्ध नहीं होता, स्वर्गकी लालसा नहीं करता और नरकसे भी भयभीत नहीं होता।

—जुन्नुन

निर्भयता

जहाँ पवित्रता है वहीं निर्भयता रह सकती है।

—गांधी

निर्भय होनेका क्या लक्षण है? संसार-प्रेमी लोगोंसे निस्पृह होना, और मनको साधन-भजनमें लगाकर बड़प्पनके मोहसे दूर रहना।

—जुन्नुन

यह महान्, अजन्मा, अजर, अमर, निर्भय आत्मा ब्रह्म है। ब्रह्म निर्भय है; जो यह जानता है निर्भय ब्रह्म हो जाता है।

—ब्रह्म उपनिषद्

निर्मलता

निर्मल हृदयको आसानीसे भयभीत नहीं किया जा सकता।

—शेक्सपियर

निर्मल अन्तःकरण वाले धन्य हैं, क्योंकि उन्हें ईश्वरके दर्शन अवश्य होंगे।

—बाइबिल

निर्लज्जता

उस निर्लज्जतासे बढ़कर निर्लज्जताकी बात और कोई नहीं है जो यह कहती है कि मैं माँग-माँगकर अपनी दरिद्रताका अन्त कर डालूँगी।

—तिरुवल्लुवर

निर्लिप्त

न किसीसे भय, न किसीसे आशा।

—अज्ञात

निर्लोभ

जो निर्लोभ हो गये हैं, वे धन्य हैं; क्योंकि दुनियाको जिन जिन चीज़ोंका लोभ होता है, वे सब उन्हें अनायास मिल जायँगी।

—पालशिरर

निर्वाण

ब्रह्मनिर्वाण उन्हीं लोगोंके लिये है जिन्होंने अपनी आत्माको जान लिया है।

—गीता

'एक ही एक' ऐसी अनंत, अपौरुषेय विराट् सत्तामें व्यक्तिगत स्वतन्त्र सत्ता डुबा देना ही निर्वाण है। बौद्ध मतानुसार आत्माका लोप नहीं।

—अरविन्द घोष

निर्वाणका आनन्द मनसे परे है।

—अज्ञात

निर्वाण-पथ

जिस तरह आदमी साँपके फनसे दूर रहता है, उसी तरह जो कामोपभोगसे दूर रहता है वह इस विषयकी तृष्णाका त्याग करके निर्वाण-पथकी ओर अग्रसर होता है।

—बुद्ध

निर्वाह

ईश्वरीय ज्ञानका हरएक व्यवहारमें पालन करनेपर निर्वाहके साधन तो अपने आप दौड़े आवेंगे।

—जुन्नेद

निवास

मैं कहाँ रहना चाहता हूँ ?—(१) कहीं भी (२) सत्संगमें (३) आत्मामें।

—अज्ञात

निवृत्ति

निवृत्तिका मतलब अकर्मण्यता नहीं किन्तु वैयक्तिक स्वार्थोंके बन्धनसे छूट जाना है।

—सत्यभक्त

जो सच्ची निवृत्ति चाहता है उसे चाहिये कि तमाम पापोंको और उलटी समझको छोड़ दे।

—अज्ञात

निश्चय

निश्चय किया, कि झंझट खत्म।

—इटालियन कहावत

दृढ़ निश्चय सर्वशक्तिमान है : निश्चय करो कि दुनियामें तुम कुछ होकर रहोगे, और तुम कुछ होकर रहोगे।

—अज्ञात

इष्ट वस्तुकी प्राप्तिके लिये दृढ़ निश्चयवाले मनको और निम्नगामी जलकी गतिको कौन फिरा सकता है ?

—कालिदास

कोई शुभ निश्चय भी मनुष्य भले न करे लेकिन विचार-पूर्वक करे तो उसे कभी न छोड़े।

—गांधी

उस आदमीसे ज़्यादा दुखी कोई नहीं जो कभी किसी निश्चयपर ही नहीं पहुँचता।

—विलियम जेम्स

'करूँगा ही' तै कर लेनेपर ज़मींकी कोई ताक़त इन्सानको नहीं रोक सकती।

—अज्ञात

अनिश्चित मनवालेने कभी कोई महान कार्य नहीं किया।

—अज्ञात

निश्चयहीन

उस निश्चयहीन मनुष्यसे अधिक दयाजनक चीज़ दुनिया में कोई नहीं, जोकि दो भावनाओंके बीच झूल रहा है, और दोनोंको मिलानेको तैयार है, मगर जो यह नहीं देखता कि कोई चीज़ उन दोनोंको नहीं मिला सकती।

—गेटे

निश्चयहीन मनुष्यके लिये यह कभी नहीं कहा जा सकता कि वह खुद अपना मालिक है: वह समुद्रकी एक लहरकी तरह है, या हवामें उड़ते हुए उस पंखकी तरह जिसे हर झोंका इधर से उधर उड़ा देता है।

—जॉन फ़ॉस्टर

निश्चलता

सफलताका रहस्य ध्येयकी निश्चलता है।

—डिसराइली

निषिद्ध

निषिद्ध वस्तुको ग्रहण मत कर क्योंकि उसकी मिठास जाती रहेगी और उसकी कड़वाहट बाक़ी रह जायेगी।

—अज्ञात

निष्कपटता

ऐसे जड़ मानव विरले ही होंगे कि कोमलतासे जिनका प्रेम, निष्कपटतासे जिनका विश्वास, उपेक्षा या तिरस्कारसे जिनकी घृणा न प्राप्त की जा सके।

—ज़िमरमन

निष्क्रियता

क्रियारहित विचार गर्भपातके समान है।

—अज्ञात

निष्ठा

जो मनुष्य किसी एक चीज़ पर एक निष्ठासे काम करता है वह आख़िर सब चीज़ करनेकी शक्ति हासिल करेगा।

—गांधी

निःस्पृह

उदारको धन तृण समान है, शूरवीरको मरण तृण है, विरक्तको स्त्री तृण है और निःस्पृहको जगत तृण बराबर है।

—अज्ञात

पत्थरकी दीवालें जेलखाना नहीं बनातीं, न लोहेकी सलाखें पिंजड़ा; मासूम और शान्त आत्माएँ उसे तपोवन समझती हैं।

—अँग्रेज़ी

नीच

नीच लोग दरवाज़े पर तो टाट भी नहीं लगा सकते, पर बलि और हरिश्चन्द्र जैसे महादानियोंकी निन्दा करते हैं; कर्ण और दधीचि तो इनकी नज़रोंमें कोई चीज़ ही नहीं।

—तुलसीदास

मर जाना अच्छा मगर नीचोंके पास जाना अच्छा नहीं।

—अज्ञात

नीच पराये कामको बिगाड़ना ही जानता है, बनाना नहीं जानता; वायु वृक्षको उखाड़ सकता है, पर जमा नहीं सकता।

—अज्ञात

आमके दिव्य रसको पीकर भी कोयल गर्व नहीं करती, लेकिन कीचड़का पानी पीकर मेंढक टर्राने लगता है।

—अज्ञात

जब नीचको पदवी, चाँदी और सोना मिल जाते हैं तो वास्तवमें उसके सिरको तमाचेकी आवश्यकता होती है।

—अज्ञात

सूर्यका ताप इतना नहीं लगता जितना उसकी गर्मीसे तपी हुई बालूका लगता है। इसी तरह किसी बड़े आदमीसे ऊँची पदवी पाया हुआ नीच आदमी ज़्यादा मग़रूर होता है।

—अज्ञात

नीचकी नम्रता अत्यन्त दुखदायी है। अंकुश, धनुष, साँप और बिल्ली झुककर ही मारते हैं। दुष्टकी प्रिय वाणी ऐसी भयदायक है जैसे अऋतुके फूल।

—रामायण

जो दूसरोंकी ठोकरें खाकर भी चुप रहता है वह क्षमी नहीं, नीच है। जो अपने मित्रके ख़िलाफ़ शस्त्र उठाता है वह तेजस्वी नहीं, दुष्ट है।

—अज्ञात

नीचता

शक्तियोंका एक नियम है जिसके कारण चीज़ें समुद्रमें डूबकर अमुक गहराईसे नीचे नहीं जा सकती; लेकिन नीचताके समन्दरमें जितने गहरे हम जायँ डूबना उतना ही आसान।

—लॉवैल

नीति

नीतितत्त्वका आधार जिसने ईश्वरको बनाया उसने मज़बूत नींवपर इमारत खड़ी की।

—विनोबा

अपनी किताबों और परम्पराओंको भूल जाओ, और अपनी तात्कालिक नैतिक दृष्टिका कहना मानो।

—एमर्सन

कोई चीज़ जो नैतिक दृष्टिसे ग़लत है, राजनीतिक दृष्टिसे भी ठीक नहीं है।

—अज्ञात

अहंकार ही अनीति है व विश्वव्यापकपता ही नीति है।

—विवेकानन्द

नीति ही राजा है और नीति ही क़ानून है।

—विवेकानन्द

नुकताचीनी

दुनियामें सबसे मुश्किल काम अपना सुधार है और सबसे आसान दूसरोंकी नुकताचीनी।

—अज्ञात

नूतन

वह न कीजिये जो किया जा चुका है।

—टेरेंस

क्या कोई ऐसी बात है जिसके बारेमें कहा जा सके कि देखो यह नई बात है। यह सब हमसे पहले के ज़मानेसे चला आ रहा है। दुनियामें कोई चीज़ नई नहीं है।

—इंजील

मैं पुराने धर्म और पुराने नबियोंके उपदेशोंको नष्ट या बरबाद करने नहीं आया, बल्कि मैं उन्हें पूरा करनेके लिये आया हूँ।

—ईसा

मैं सिर्फ़ पिछली बातोंको आगे चला रहा हूँ, मैं कोई नई चीज़ नहीं गढ़ सकता।

—किंग फ़ूत्ज़े

बहुतसे बुद्ध मुझसे पहले आये हैं, और बहुतसे मेरे बाद आवेंगे। मैं पुरानी रोशनीको ही फिरसे फैला रहा हूँ।

—बुद्ध

नेक

दुष्टके बलिदानसे ईश्वर घृणा करता है; परन्तु नेककी प्रार्थना से खुश होता है।

—कहावत

तुम नेक रहो और संसार तुम्हें बुरा कहे—यह अच्छा है, बनिस्वत इसके कि तुम बुरे रहो और संसार तुम्हें अच्छा कहे।

—अज्ञात

जो मनुष्य अपने मनमें भी नेकीसे नहीं डिगता है, उसके रास्तबाज़ होठोंसे निकली हुई बात नित्य सत्य है।

—तिरुवल्लुवर

नेकनामी

नेकनामी मर्द और औरतके लिये उनकी रूहका ज़ेवर है।

—शेक्सपियर

नेकी

नेकी, जितनी ज़्यादा की जाती है, उतनी ही फूलती-फलती है।

—अज्ञात

नेकी उन बाहरी कामोंमें नहीं है जो हम करते हैं, बल्कि इसमें है कि हम अन्दर क्या हैं।

—चैपिन

नेता

मैं पूर्व वैमनस्यको मनमें नहीं लाता; क्योंकि जातिका नेता वह आदमी नहीं हुआ करता जो मनमें कपट रखने-वाला हो।

—अल-मुकन्नआ-उल-किन्दी

उस दिनको खोया हुआ गिन, जिस दिन अस्ताचलको जाता हुआ सूर्य तेरे हाथसे कोई अच्छा काम किया गया न देखे।

—स्टेनफोर्ड

वास्तविक नेकीसे अधिक दुर्लभ कुछ भी नहीं है

—रोची

महान आत्माएँ ही जानती हैं कि नेकीमें कितना गौरव है।

—सोफोकिल्स

नेकीका एक काम करना स्वर्गकी ओर एक क़दम बढ़ाना है।

—जे० जी० हॉलेंड

जो नेकीका प्रेमी है उसके हृदयमें देवोंका वास है, और वह ईश्वरके साथ रहता है।

—एमर्सन

शरारत करनेके मौक़े दिनमें सौ वार मिलते हैं, नेकी करनेका अवसर सालमें एक बार।

वोल्टेर

नेकी

नेकी बिला शक एक आसान चीज़ है: मीठा वचन और भोजन हरएकको दे।

—एक कवि

अगर तू लोगोंके साथ नेकी करेगा तो उनके दिलोंको तू अपना दास बना लेगा।

—अबुल-फ़तह-बुस्ती

नेक काम करनेमें जल्दी करो, ऐसा न हो कि ज़बान बन्द हो जाय और हिचकियाँ आने लगें।

—तिरुवल्लुवर

न तुम्हारी दौलत तुम्हें अल्लाहके नज़दीक ला सकती है। और न तुम्हारे बाल-बच्चे। अल्लाहके नज़दीक वही जा सकता है जो बात मान ले और नेक काम करे।

—कुरान

अगर तुम नेकी चाहते हो तो कामनासे दूर रहो; क्योंकि कामना जाल और निराशा मात्र है।

—तिरुवल्लुवर

सचमुच अल्लाह उन्हींके साथ है जो बुराईसे बचते हैं और जो दूसरोंके साथ नेकी करते हैं।

—मुहम्मद

शहदकी मक्खियाँ सिर्फ़ अँधेरेमें काम करती हैं; विचार सिर्फ़ ख़ामोशीमें काम करते हैं; नेक काम भी गुप्त रहकर ही कारगर होते हैं। अपने बायें हाथको न मालूम पड़ने दे कि तेरा दायाँ हाथ क्या करता है।

—कार्लाइल

नेता

नेताको कोई निजी महत्त्वाकांक्षा नहीं रखनी चाहिये। वह अपने लिये कुछ न चाहे; न तो धन, न अधिकार, न पद, न भोग, न उपभोग। और वह ईश्वरको दिनमें चौबीस घण्टे याद रक्खे।

—गांधी

नैतिकता

सब उपजातियाँ भिन्न-भिन्न हैं, क्योंकि वे मनुष्यसे आई हैं; नैतिकता हर जगह वही है, क्योंकि वह ईश्वरसे आई है।

—वोल्टेर

नौकर

जो अपने नौकरको अपना भेद देता है, वह अपने नौकरको अपना मालिक बनाता है।

—ड्राइडन

अगर तुम्हें वफ़ादार और दिलपसन्द नौकरकी ज़रूरत है तो अपने सेवक स्वयं बनो।

—बेंजामिन फ्रेंकलिन

देखो; जो आदमी नेकी देखता है और बदी भी देखता है, मगर पसन्द उसी बातको करता है जो नेक है, बस उसी आदमीको अपनी नौकरीमें लो।

—तिरुवल्लुवर

नौकरी

श्री रामकृष्ण परमहंस एक नौजवान शिष्यसे बोले, "एक दुनियावी आदमीकी तरह तू तनख़्वाहदार नौकर बन गया है। लेकिन तूने अपनी माँकी खातिर यह किया है, वरना मैं कहता "लानत है! लानत है! लानत है!" उन्होंने इसे सौ एक मरतबा दुहराया और तब कहा, "सिर्फ़ भगवानकी नौकरी कर।"

—अज्ञात

वनमें रहना अच्छा, भीख माँगकर खाना अच्छा, बोझा उठाकर जीना अच्छा, रोगी रहना अच्छा, पर नौकरी करके धन प्राप्त करना अच्छा नहीं।

—अज्ञात

चाकरीके लड्डुओंसे आज़ादीकी घास अच्छी।

—अज्ञात

उसी आदमीको अपनी नौकरीके लिये चुनो जिसमें दया, बुद्धि और द्रुत-निश्चय है, या जो लालचसे आज़ाद है।

—तिरुवल्लुवर

' मुझे यह सुनकर ज़्यादा खुशी होगी कि तुम गंगामें डूब गये और मर गये, बनिस्बत इसके कि तुमने धनकी खातिर या किसी और दुनियावी चीज़की खातिर किसीका नौकर होनेकी नीचता की।

—रामकृष्ण परमहंस

सेवकको सुख और मानका स्वयं परित्याग करना पड़ता है। जिसके लिये वह धन चाहता है वही उसे अलभ्य है।

—अज्ञात

कमर पर सुनहरी चपरास बाँधने और चाकरीमें खड़े रहने की अपेक्षा जौ की रोटी खाना और ज़मीनपर बैठना अच्छा है।

—अज्ञात

' नौकरी आत्महत्यासे भी बड़ा पाप है।

—रामकृष्ण परमहंस

"तुम नौकरी क्यों नहीं कर लेते जिससे मेहनतके कष्टसे छुटकारा पा जाओ ?"

"तुम मेहनत क्यों नहीं करते जिससे चाकरीके अपमानसे मुक्त हो जाओ ?"

—अज्ञात

न्याय

' जब भेड़िया न्यायाधीश हो तो ईश्वर ही भेड़का रक्षक है।

—डेनिश कहावत

हम सत्यमार्ग पर हों तो भी संसारको दंड देनेका भार नहीं लेते, उसका न्याय नहीं करते, बल्कि संसार द्वारा दी हुई सज़ा और न्याय चुपचाप सहन कर लेते हैं। इसीका नाम नम्रता या अहिंसा है।

—गांधी

सत्याग्रही न्याय नहीं माँगता। यहाँ न्याय माने 'जैसेको तैसा'। सत्याग्रह माने 'शठं प्रत्यपि सत्यं'; हिंसाके विरुद्ध अहिंसा; क्रोधके विरुद्ध अक्रोध; अप्रेमके विरुद्ध प्रेम; इसमें न्याय तौलनेके लिये कहाँ जगह है?

—गांधी

जिस वक़्त 'इन्द्राय तक्षकाय स्वाहा' इस न्यायका प्रयोग किया जाता है तब इन्द्र तो मरनेवाला है ही नहीं, मात्र तक्षक अमर हो बैठता है।

—अज्ञात

न्यायमें विलम्ब अन्याय है।

—लैंडर

ईश्वर न्यायवान है! और आख़िरश न्यायकी ही फ़तह होती है।

—लौंगफ़ैलो

न्याय-परायण

अगर कोई यह कहे कि उसने एक न्याय-परायण आदमीको रोटीके लिये मोहताज़ देखा है, तो मैं कहता हूँ कि वह ऐसी जगह था जहाँ दूसरा कोई न्याय-परायण आदमी था ही नहीं।

—सेण्ट क्लीमेंट

न्यायाधीश

हम किसीके न्यायाधीश नहीं हो सकते।

—गांधी

न्यायी

इन्सानका फ़र्ज़ है कि वह उदार बननेसे पहले न्यायी बने।

—डिकेंस



पछतावा

कुकर्मका पछतावा व्यर्थ है जब तक कि प्रण न कर लो कि फिर ऐसा काम न करोगे।

—अज्ञात

पठन

पढ़नेसे सस्ता कोई मनोरंजन नहीं ; न कोई खुशी उतनी स्थायी।

—लेडी मौंटेग्यू

आज पढ़ना सब जानते हैं, लेकिन क्या पढ़ना चाहिये यह कोई नहीं जानता।

—जॉर्ज बर्नार्ड शा

महज़ किताबें पढ़नेका चटख़ारा लगा कि ख़ुदकी सारासार विचारशक्ति कमज़ोर पड़ जानेका डर है; और यह शक्ति एक बार नष्ट हुई कि अपनी सारी ज़िन्दगी कौड़ी क़ीमतकी हो जाती है।

—विवेकानन्द

पड़ौसी

पड़ौसियोंकी ख़ुशहाली अन्तमें हमारी ही हो जाती है। और पड़ौसियोंकी बदहाली भी अन्तमें हमारी ही हो जाती है।

—रस्किन

आजकल अधिकांश लोग सोचते हैं कि पड़ोसीकी सेवा करनेका एकमात्र आशास्पद तरीका यह है कि उससे लोभ उठाया जाय।

—रस्किन

हम अपने मित्रोंके बिना जी सकते हैं, लेकिन अपने पड़ोसियोंके बगैर नहीं।

—अज्ञात

हम पड़ोसीको उसके स्वार्थके लिये इतना प्यार नहीं करते जितना अपने स्वार्थके लिये करते हैं।

—बिशप विल्सन

पड़ोसीके साथ नेकी करना एक प्रशंसनीय गुण है।

—इब्न मातूक

जो आदमी अपने पड़ोसियोंके प्रेमको प्राप्त करनेकी कोशिश नहीं करता, वह मरनेके बाद अपने पीछे क्या चीज़ छोड़ जानेकी आशा रखता है?

—तिरुवल्लुवर

कोई इतना धनिक नहीं है कि पड़ोसीके बगैर काम चला ले।

—डेनिश कहावत

मैंने एक बार एक साधुसे पूछा "आप एक ही झोंपड़ेमें, पहाड़की चोटी पर, आबादीसे मीलों दूर, अकेले रहनेका कैसे साहस करते हैं?" उसने जवाब दिया, "ईश्वर मेरा निकटतम पड़ोसी है।"

—स्टर्न

पड़ोसीके स्वत्वको न भूल; क्योंकि जो इस कर्तव्यसे चूक जाता है, वह उच्च पद नहीं प्राप्त कर सकता।

—हज़रत अली

पतन

सब पतनोंमें बड़ेसे बड़ा पतन आत्माका अविश्वास है।

—अज्ञात

पतित

तुझे इस बातपर शर्म आनी चाहिए कि उस ऊँचे स्थानसे गिरकर तू यहाँ पर अपनी ज़िंदगी गुज़ार रहा है।

—शब्सतरी

पत्नियाँ

पति पैसा कमा सकते हैं, लेकिन उसे बचा पत्नियाँ ही सकती हैं।

—अज्ञात

पत्र

अत्यन्त आनन्दप्रद पत्र भी संभाषणके चमत्कारका शतांश नहीं लिए होता।

—गेटे

पथ-प्रदर्शन

अगर अन्धा अन्धेको राह दिखाये, तो दोनों खाईमें गिरेंगे।

—हिब्रू कहावत

पथ्य

जो मरणोन्मुख होता है, उसे पथ्य नहीं रुचता।

—रामायण

पद

जिस मनुष्यका पद सूरजके स्थानसे भी ऊपर हो, उसको न तो कोई वस्तु घटा ही सकती है और न बढ़ा ही सकती है।

—अज्ञात

पदवी

तीन सबसे बड़ी पदवियाँ जो मनुष्यको दी जा सकती हैं: शहीद, वीर, महात्मा।

—ग्लेड्स्टन

परख

धनुर्धारीकी परख उसके धनुषसे नहीं, लक्ष्यवेधसे होती है।

—कहावत

अगर विद्वान लोगोंने मनुष्योंको साधारण रीतिसे परखा है तो मैंने गूढ़ रूपसे परखा है, मैंने लोगोंके प्रेमको धोखा और उनके धर्मको फूट पाया है।

—एक कवि

किसी सेबके पेड़का अन्दाज़ा उस परके सबसे बुरे सेबसे करना मुनासिब नहीं है, न किसी आदमीको ही उसके निम्नतम कार्य या भाषणसे परखना चाहिये।

—अज्ञात

पर-चर्चा

जो दूसरोंके गुण–अवगुणोंकी चर्चामें लगा रहता है वह अपने वक़्तको महज़ बर्बाद करता है, क्योंकि वह वक़्त न तो आत्म-विचारमें जाता है न परमात्मा के ध्यानमें।

—रामकृष्ण परमहंस

परदुःख

अगर तू दूसरोंकी तकलीफ़ नहीं समझता तो तुझे इन्सान नहीं कहा जा सकता।

—सादी

पर-द्रोही

पृथ्वी कहती है—पहाड़, झील, समुद्र मुझे इतने भारी नहीं लगते जितना कि एक पर-द्रोही।

—अज्ञात

पर-निन्दा

परनिन्दा किए बग़ैर दुर्जनको चैन नहीं पड़ता। जिस तरह कौवा सब रस खाये, फिर भी विष्ठा खाये बिना तृप्त नहीं होता।

—अज्ञात

अगर एक ही कर्मसे जगतको वश करने की इच्छा हो तो परनिन्दा छोड़ दो।

—अज्ञात

पर-पीड़ा

"पर-पीड़ा सम नहिं अधमाई"।

—तुलसी

पर-पीड़न

दूसरोंको सतानेके बराबर कोई नीचता नहीं है।

—रामायण

परमतत्त्व

अगर परमतत्त्व अज्ञात रहा तो शास्त्राध्ययन निष्फल है; और अगर परमतत्त्व ज्ञात हो गया तो भी शास्त्राध्ययन निष्फल है क्योंकि लक्ष्य प्राप्त हो चुका है।

—अज्ञात

परमशक्ति

आत्म-श्रद्धान, आत्मज्ञान, और आत्म-संयम सिर्फ़ यही तीन मिलकर जीवनको परम शक्तिकी ओर ले जाते हैं।

—टेनीसन

परमात्मा

वह परम आत्मा जो ब्रह्मांडके सिंहासन पर बैठा है न इस वक़्त जल्दीमें है, न पहिले कभी था, और न आइन्दा कभी होगा।

—जे० जी० हॉलैंड

परमात्मा सिर्फ़ पवित्रात्माका दूसरा नाम है।

—अज्ञात

जब हम अपने परम्पराके ईश्वरसे सम्बन्ध तोड़ लेंगे, और अपने लफ़्फ़ाज़ीके खुदाको खत्म कर देंगे, तब परमात्मा हाज़िर होकर तुम्हारे हृदयमें जीवन डाल देगा।

—एमर्सन

जब हम परमात्माकी परिभाषा करने और उसका वर्णन करनेका प्रयास करते हैं, तो भाषा और विचार दोनों हमें छोड़ कर चले जाते हैं, और हम मूर्खों और जंगलियोंकी तरह लाचार हो जाते हैं।

—एमर्सन

जिसने अपनी खुदीको जीत लिया; जो शांत है; और जो सरदी-गरमी, सुख-दुख, मान-अपमानमें एकसा रहता है, उसकी आत्मा ही परमात्मा है।

—गीता

मेरे लिये परमात्मा सत्य है, प्रेम है।

—गांधी

परमात्माके सिवा आत्मा किसी चीज़से संतोष नहीं मान सकती।

—बेली

जिन्हें दोनों वक़्त भूखे रहना पड़ता है उनसे मैं ईश्वरकी चर्चा कैसे करूँ? उनके सामने तो परमात्मा केवल दाल-रोटीके ही रूपमें प्रकट हो सकते हैं।

—गांधी

परमात्माकी झलक बिना नैतिक बुद्धिके विकासके असम्भव है।

—गांधी

सिवाय परमात्माके किसी भी जीवसे वाह-वाही चाहना मूर्खता है।

—एडीसन

परमात्मा सदैव कृपारूप है। जो शुद्ध अन्तःकरणसे उसकी मदद माँगता है, उसको वह अवश्य मिलती है।

—विवेकानन्द

क्या तुम पूछते हो परमात्मा कहाँ रहता है? आत्मामें; और जब तक आत्मा शुद्ध और पवित्र न हो, उसमें परमात्माके लिये स्थान नहीं है।

—अज्ञात

हर एकके हृदयमें कफ़नाया और दफ़नाया हुआ 'अनन्त' पड़ा हुआ है।

—एमर्सन

परमार्थ

प्रत्येक व्यक्तिको अपने वैशिष्ट्यका अपने स्वभावनिर्दिष्ट कर्म द्वारा विकास करनेसे परमार्थ प्राप्ति होती है।

—अरविन्द घोष

करनी और शरण परमार्थकी दो कुंजियाँ हैं।

—गीता

परमुखापेक्षी

त्यागी होकर भी जो परमुखापेक्षी बना रहता है, वह तो कुक्कुरके समान है।

—अज्ञात

परमेश्वर

सबके साथ अपने एकपन या अपनेपनको महसूस करने से ही आदमी सबके अन्दर परमेश्वरके दर्शन कर सकता है।

परमेश्वर ही आत्माका, अमृतका और अखंड सुखका खज़ाना है।

जो आदमी सबके अन्दर रहनेवाले परमेश्वरके साथ अपने दिलको लगाता है वही परमेश्वरको पाता है। वह परमेश्वरमें रहता है और परमेश्वर उसमें।

—गीता

परमेश्वर सत्य है; उसकी सचाईके सामने बाक़ी सब चीज़ें झूठी हैं। वह हर तरहके व्यक्तित्व से अलग है। वहाँ न 'मैं' है न 'तू' है न 'वह' है। वह सबमें रमा हुआ है।

—गीता

परम्परा

अपूर्ण, अनिश्चित, या भ्रष्ट परम्पराओंका इसलिये अनुसरण करना कि हम निर्णयकी ग़लतियोंसे बच जायँ, महज़ एक ख़तरेका दूसरेसे तबादला करना है।

—व्हेटले

परलोक

परलोकके जीवनमें न तो दौलतकी क़ीमत है और न ग़रीबी की। वहाँ तो क़ीमत है कृतज्ञता और सहिष्णुता की। धनवान होकर प्रभुका उपकार मत भूलो और ग़रीबीकी हालतमें सहनशीलताको मत छोड़ो।

—हयह्या

उस लोकमें अल्लाह उन लोगोंको सुख देगा जो इस दुनिया में बड़े बननेका प्रयत्न नहीं करते, जो किसीके साथ अन्याय नहीं करते। परलोकका आनन्द केवल उन लोगोंके लिये है जो इस लोकमें परहेज़गारीसे रहते हैं।

—ह० मुहम्मदका अन्तिम उपदेश

अगर तूने स्वर्ग और नरक नहीं देखा है तो समझ ले कि उद्यम स्वर्ग है और आलस्य नरक है।

—जामी

परवश

परवशको धिक्कार है।

—रामायण

परस्त्री

पर-स्त्रीको माताके समान समझो।

—अज्ञात

परस्त्रीगमन

शाबाश है उसकी मर्दानगीको जो पराई स्त्री पर नज़र नहीं डालता! वह नेक और धर्मात्मा ही नहीं, सन्त है।

—तिरुवल्लुवर

पर-स्त्रीगमन करने से पाप, दुर्गति, भयभीतकी भयभीतसे अत्यल्प रति, यही मिलता है; इसलिये मनुष्यको पर-स्त्रीगमन नहीं करना चाहिये।

—बुद्ध

पर-स्त्रीगमन करना जान बूझकर अपनी स्त्रीको व्यभिचारिणी बनाना है।

—विजयधर्म सूरि

जिन लोगोंकी नज़र धन और धर्म पर लगी रहती है, वे पराई स्त्रीको चाहनेकी मूर्खता कभी नहीं करते।

—तिरुवल्लुवर

परहित

सम्पदा पानीकी लहरकी तरह चञ्चल है, जवानी तीन चार दिन रहती है; आयु शरद ऋतुकी बदलीकी तरह नष्ट होनेवाली है; फिर धनसे क्या फ़ायदा है? दूसरोंकी भलाई कर।

—अज्ञात

परहित

जिनके मनमें परहित बसा हुआ है, उनको जगमें कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

—रामायण

पराक्रम

हाथियोंके मस्तकोंकी खुजली मिटानेवाला सिंह हिरणोंमें अपने किस पराक्रमका वर्णन करे?

—भामिनीविलास

अति कष्टप्रिय पराक्रमी पुरुष जब किसी दुस्तर कार्यको ठानता है तब वह किसी मित्रकी सहायता नहीं चाहता।

—सभ्राद् बिन नाशिब

पराक्रमी

पराक्रमी अपनी प्रतिज्ञाको अपनी दोनों आँखोंके सामने रख लेता है; और परिणामके विचारको भूलकर भी चित्तमें नहीं लाता।

—सभ्राद् बिन नाशिब

पराक्रमी जब किसी कामका सङ्कल्प करता है तब उससे वह रोका नहीं जा सकता और वह जो काम करता है निर्भय होकर करता है।

—सभ्राद् बिन नाशिब

पराक्रमी अपने काममें अपनी आत्माके सिवा और किसीसे सलाह नहीं लेता। और न अपने काममें अपनी तलवारके दस्तेके सिवा, किसी औरको अपना साथी ही बनाता है।

—सभ्राद बिन नाशिब

पराधीन

पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।

—रामायण

पराभक्ति

पराभक्ति माने समता माने ज्ञान माने निर्विकारिता।

—विनोबा

परावलम्बन

अन्तःकरण एक बार परावलम्बी बन गया कि फिर वह किसी न किसीके पीछे जाये बगैर रह ही नहीं सकता। कोई नहीं कह सकता कि उसकी कितनी अधोगति होगी।

—विवेकानन्द

परावलम्बी जीव जीते होनेकी बनिस्बत मरे हुए अच्छे।

—विवेकानन्द

परिग्रह

जिसको विश्व अपना घर लगता है उसे परिग्रह रखनेकी ज़रूरत नहीं।

—अज्ञात

परिग्रहका अर्थ है भविष्यके लिये प्रबन्ध करना। सत्यान्वेषी, प्रेमधर्मका अनुयायी, कलके लिये किसी चीज़का संग्रह नहीं कर सकता।

—गांधी

अपरिग्रहका सच्चा अर्थ देहभाव नहीं-सा होना यह है। कारण कि देह ही मुख्य परिग्रह है।

—विनोबा

दुनियाको तारनेवाले महावीरने सिर्फ़ बाहरी चीज़ोंको ही परिग्रह नहीं कहा। उस महर्षिने आसक्तिको भी परिग्रह बताया है।

—अज्ञात

सच्चे सुधारका, सच्ची सभ्यताका लक्षण परिग्रह बढ़ाना नहीं है, बल्कि उसका विचार और इच्छापूर्वक घटाना है। ज्यों-ज्यों परिग्रह घटाइये त्यों-त्यों सच्चा सुख और सच्चा सन्तोष बढ़ता है, सेवाशक्ति बढ़ती है।

—गांधी

धन किसी क्षणिक आवश्यकताकी क्षणिक पूर्तिका साधन है। अपने परिग्रहको अपना परमात्मा न माने जाओ।

—अज्ञात

परिचय

ईश्वरको जानकर भी उससे प्रेम न करना असंभव है। जो परिचय प्रेम-शून्य है वह परिचय ही नहीं।

—बायजीद

परिणाम

यह न कह कि परिणामसे कार्यका औचित्य सिद्ध होता है।

—अज्ञात

महान् परिणाम तत्काल नहीं प्राप्त हो जाते; इसलिये हमें जीवनमें क़दम-क़दम बढ़ते जानेमें सन्तोष मानना चाहिये।

—सेमुएल स्माइल्स

परिपूर्णता

हथौड़ेकी चोटें नहीं, जलके नृत्यका सङ्गीत पत्थरके टुकड़ोंको परिपूर्ण बनाता है।

—टैगोर

मामूली बातोंसे परिपूर्णता आती है, और परिपूर्णता मामूली बात नहीं है।

—पोप

छोटे छोटे कर्त्तव्योंके पालनमें परिपूर्णता लाना आनन्दका अद्‌भुत स्रोत है।

—फ़ेवर

परिमितता

परिमितता वह रेशमी सूत्र है जो समस्त सद्‌गुणोंकी मुक्तामालामें पिरोया हुआ है।

—थॉमस फ़ुलर

परिवर्तन

परिवर्तनका नाम असंगति नहीं है। परिवर्तन यदि मुझे अपने लक्ष्यकी ओर न ले जाता हो तो असंगति हो सकती है।

—अज्ञात

परिश्रम

अच्छे काममें किया गया परिश्रम अवश्य ही सफल होता है। ज्ञानी समर्थ पुरुष कभी नीच विचारवालोंकी राहपर नहीं चलते।

—कालिदास

वह परिश्रम जिससे कोई उपयोगी परिणाम न निकले, नैतिक पतनका कारण होता है।

—जॉन रस्किन

कुएँमें चाहे जितना पानी हो, मगर महज़ चाहनेसे तो वह नहीं निकल आता।

—कन्नड कहावत

मरते दमतक तू अपने पसीनेकी रोटी खाना।

—बाइबिल

जो काटना चाहता है उसे बोना होगा।

—सूत्र

प्रयत्नशीलता सद्भाग्यकी जननी है।

—सरवेन्टीज़

अगर तूने कुछ नहीं बोया, तो अन्य किसी बोनेवालेको जब तू कुछ काटते हुए देखेगा, उस समय तू अपने व्यर्थ समय गँवानेपर लज्जित होगा।

—एक कवि

देखो, जो मनुष्य परिश्रमके दुःख, दबाव और आवेगको सच्चा सुख समझता है उसके दुश्मन भी उसकी प्रशंसा करते हैं।

—तिरुवल्लुवर

बग़ैर परिश्रम, यानी बग़ैर तप, कुछ भी हो नहीं सकता है; तो आत्मशोध कैसे हो सके?

—गांधी

नवयुवकोंके लिये मेरा सन्देश तीन शब्दोंमें है—परिश्रम, परिश्रम, परिश्रम।

—बिस्मार्क

परिश्रम अन्य हर अच्छी चीज़की तरह स्वयं ही अपना पुरस्कार है।

—ह्विपिल

याद रखिये आपमें एक भी स्नायु ऐसा नहीं है जो काम करनेसे बलवान् न होता हो; हमारे शरीर, मन या आत्माकी ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो परिश्रमसे सुधरती न हो।

—हॉल

मेहनत करेगा तो पायेगा ।

—कहावत

ऊँचे ऊँचे ख़्याल किसको नहीं आते ? कौन महत्त्वाकांक्षी नहीं होता ? किसकी अन्तरात्मा उच्चतम पदके लिये मिन्नतें नहीं करती रहती ? मगर महत्ताका सेहरा उन्हींके सिर बँधता है जो रातदिन अपने अन्तःकरणके बताये रास्तेपर लगातार चलते रहते हैं ।

—अज्ञात

जो न तो अपने लिये करता है न दूसरोंके लिये उसे ख़ुदाका इनाम नहीं मिलेगा ।

—मुहम्मद

कुशाग्र-बुद्धि महान् कार्योंको प्रारम्भ करती है; परिश्रम उन्हें पूरा करता है ।

—अज्ञात

आदमियोंका सुख ज़िंदगीमें है; और ज़िंदगी परिश्रममें है ।

—अज्ञात

परिश्रमी

लक्ष्मी, महत्ता, दृढ़ता और कीर्ति परिश्रमीको मिलती हैं, आलसीको नहीं ।

—अज्ञात

परिस्थिति

आदमीकी सबसे बड़ी ख़ूबी यह है कि वह जितना अधिक मुमकिन हो बाहरी हालातपर शासन करे, और जितना कम हो सके उनसे शासित रहे ।

सत्यके पुजारीपर परिस्थितिका प्रभाव न पड़ना चाहिये। उसको भेदकर उसमेंसे पार हो जाना ही उसका कर्त्तव्य है। परिस्थितिके कारण बने हुए कितने ही विचार ग़लत ठहरते हैं, यह हम देखते हैं।

—गांधी

अगर तुम किसी गोल छेदमें जा पड़ो, तो तुम्हें अपनेको गेंद बना डालना होगा।

—जार्ज ईलियट

परिस्थितियोंके बदलनेसे चारित्रका दोष दुरुस्त नहीं हो जाता।

—एमर्सन

नैपोलियन अपने कार्योंको परिस्थितियोंके अनुकूल नहीं बनाता था, बल्कि परिस्थितियोंको अपने कार्योंके अनुकूल बनाता था।

—अज्ञात

परेशानी

परेशानीको कामसे ज़्यादा कोई परेशान नहीं करता।

—अज्ञात

अनागतके लिये परेशान होना ईश्वरका अविश्वास है; जो है उसके लिये परेशान होना ईश्वरके प्रति अधैर्य है; और गुज़री हुई बातोंके लिये परेशान होना ईश्वरपर क्रोध करना है।

—बिशप पैट्रिक

परोपकार

दूसरेका चिराग़ जला, लेकिन अपना न बुझा दे।

—अज्ञात

अठारह पुराणोंके अन्दर व्यासजीने दो ही बातें कही हैं, वे ये हैं—दूसरोंका भला करना पुण्य यानी सवाब है, और किसी दूसरेको तकलीफ़ देना पाप यानी गुनाह है।

अगर तू किसी एक आदमीकी भी तकलीफ़को दूर करो तो यह ज़्यादा अच्छा काम है बजाय इसके कि तू हज्जको जाय और रास्तेकी हर मंज़िलपर एक एक हज़ार रकअत नमाज़ पढ़ता जाय।

—सादी

मैंने अमर जीवनको और प्रेमको वास्तविक पाया, और यह कि अगर मनुष्य निरन्तर सुखी बना रहना चाहता है तो उसे परोपकारके लिये ही जीवित रहना चाहिये।

—टैगोर

यदि मैं तुझे उठानेका प्रयत्न करता हूँ, तो इससे अपना ही अधिक हित करूँगा; तू तो अपने ही प्रयत्नसे उठ सकेगा।

—अज्ञात

जिस तरह दरिया अपना पानी खुद नहीं पीता, और दरख़्त अपने फल खुद नहीं खाता, उसी तरह नेक आदमियोंकी कमाई भी अपनी ज़ातसे ज्यादा दूसरोंके काम आती है।

—अज्ञात

किसी बच्चेको खतरेसे बचा लेनेपर हमें कितना आनन्द आता है। परोपकार इसी अनिर्वचनीय आनन्द-प्राप्तिके लिये किया जाता है।

—अज्ञात

परोपकार करनेकी एक खुशीसे दुनियाकी सारी खुशियाँ छोटी हैं।

—हरबर्ट

पर-हित सरीखा धर्म नहीं है भाई !

—रामायण

सांसारिक कार्योंमें लिप्त हो जानेसे हानि ही होती है; और परोपकारके अतिरिक्त सारे कामोंमें घाटा ही घाटा है।

—अबुल-फतह-बुस्ती

जिन सज्जनोंके हृदयोंमें परोपकार भावना हमेशा जाग्रत रहती है, उसकी विपदाएँ नष्ट हो जाती हैं, और उनके क़दम क़दमपर सम्पदाएँ आती हैं।

—अज्ञात

जो करोड़ों ग्रन्थोंमें कहा गया है उसे मैं आधे श्लोकमें कहता हूँ, वह यह कि 'परोपकार करना पुण्य है और दूसरेको दुःख देना पाप'।

—अज्ञात

परोपकारी लोग हमेशा प्रसन्न चित्त होते हैं।

—फ़ादर टेलर

मनुष्यके स्थायी सुखका कारण दूसरेको सुखी करनेके सिवा कुछ नहीं है। आज जैसे लोग पैसा, इज़्ज़त वग़ैरहके पीछे पागल हुए फिरते हैं, वैसे ही एक दिन सारी मनुष्य जाति दूसरोंको सुखी बनाने के लिये पागल हुई फिरेगी।

—अज्ञात

वृक्ष परोपकारके लिये फलते हैं; नदियाँ परोपकारके लिये बहती हैं; गायें परोपकारके लिये दूध देती हैं; यह शरीर भी परोपकारके लिये है।

—अज्ञात

वह वृथा नहीं जीता जो अपना धन, अपना तन, अपना मन, अपना बचन दूसरोंकी भलाईमें लगाता है।

—हिन्दू सिद्धान्त

सन्त लोग परोपकार करते वक़्त प्रत्युपकारकी आशा नहीं रखते।

—अज्ञात

परोपकारी

परोपकारी पुरुष उसी समय अपनेको ग़रीब समझता है, जब कि वह सहायता माँगनेवालोंकी इच्छा पूरी करनेमें असमर्थ होता है।

—तिरुवल्लुवर

परोपदेश

'परोपदेशे पाण्डित्यं' कभी न होने दो। हम जगके गुरु नहीं शिष्य व सेवक हैं। यह हमेशा ध्यानमें रखना चाहिये।

—विवेकानन्द

पवित्र

पवित्रात्माके लिये सब चीज़ें पवित्र हैं।

—बाइबिल

सचमुच पवित्र-आत्मा वह है जिसने कामिनी और कञ्चन का त्याग कर दिया है।

—रामकृष्ण परमहंस

पवित्रता

आनन्दसे बढ़कर दुनियामें सिर्फ़ एक चीज़ है, और वह है पवित्रता।

—अज्ञात

अपना हृदय पवित्र रखोगे तो दस आदमियोंकी ताक़त रखोगे।

—अज्ञात

जो कुछ हृदयको पवित्र करता है, उसे मज़बूत भी करता है।

—रलेर

पारसाई दुनियाकी ख़्वाहिशोंपर लात मारनेसे हासिल होती है।

—हज़रतअली

तुम पवित्र रहो और किसीसे न डरो। धोबी मैले कपड़ेको ही पत्थर पर पछाड़ता है।

—अज्ञात

पवित्रता, आत्माका संतुलन है।

—फ़िलिप हैनरी

ईश्वर साफ़ हाथोंको देखता है, भरे हाथोंको नहीं।

—साइरस

जिस स्त्रीको अपनी पवित्रताका ख़्याल है उसपर वलात्कार करनेवाला पुरुष न आजतक पैदा हुआ है, न होगा।

—गांधी

जहाँ पवित्रता है वहाँ सौन्दर्य है; जहाँ सौन्दर्य है वहाँ काव्य है।

—विनोबा

पवित्र वे नहीं हैं जो अपने शरीर धोकर बैठ जाते हैं। पवित्र वे ही हैं जिनके अन्तःकरणमें वह रहता है।

—नानक

पवित्रके लिये सब वस्तुएँ पवित्र हैं।

—सेन्टपॉल

जिसका मन पवित्र नहीं, उसका कोई काम पवित्र नहीं होता।

—जुन्नेद

कामनासे मुक्त होनेके सिवाय पवित्रता और कुछ नहीं है।

—तिरुवल्लुवर

हम निजी जीवनकी पवित्रताकी आवश्यकता मानते हैं; इतना ही नहीं, हम तो ऐसा भी मानते हैं कि अन्तःशुद्धिके बिना केवल बुद्धिसे हुए कार्य चाहे जितने अच्छे मालूम होते हों तो भी कभी चिरस्थायी नहीं हो सकते।

—गांधी

ईश्वरके मार्गमें तो न आँखोंकी ज़रूरत है और न जीभकी; ज़रूरत है पवित्र हृदयकी। ऐसा प्रयत्न करो जिससे वह पवित्रता पाकर तुम्हारा मन जाग जाय।

—राबिया

पशु-हिंसा

पहले तीन ही रोग थे—इच्छा, क्षुधा और बुढ़ापा। पशु-हिंसासे बढ़ते-बढ़ते वे अट्ठानबे हो गये।

—बुद्ध

पसन्द

कुत्तेके लिये दुनियामें सर्वोत्कृष्ट वस्तु कुत्ता है; बैलको बैल; गधेको गधा; और सूअरको सूअर।

—शोपेनहोर

पहिचान

साधु ही साधुको पहिचान सकता है।

—रामकृष्ण परमहंस

अपनेको पहिचाननेके लिये मनुष्यको अपनेसे बाहर निकलकर तटस्थ बनकर अपनेको देखना है।

—गांधी

ग़ाफ़िल, अपने आपको पहिचान।

—सुक़रात

तीर सीधा होता है और तम्बूरेमें कुछ टेढ़ापन रहता है। इसलिये आदमियोंको सूरतसे नहीं, बल्कि उनके कामोंसे पहचानो।

—तिरुवल्लुवर

हम आदमीको इससे पहिचान सकते हैं कि वह ईश्वरसे क्या कहता है, लेकिन इस बातसे कभी नहीं कि ईश्वरने उसे क्या दिया है।

—पामर

पंख

नफ़ीस परोंवाले परिन्दे हमेशा नफ़ीस नहीं होते।

—कहावत

पण्डित

जो मनुष्य ख़ूब सोच-विचारकर काम शुरू करता है; आरम्भ किये कामको समाप्त किये बिना नहीं छोड़ता, किसी समय भी काम करनेसे मुँह नहीं मोड़ता और इन्द्रियोंको वशमें रखता है, वही 'पण्डित' कहलाता है।

—विदुर

जो आदमी अपने कामोंसे ख़ुद अपने लिये सुख हासिल करनेका इरादा नहीं रखता वही पण्डित है।

—गीता

जो करके दिखाता है, वही पण्डित है।

—महाभारत

पाकीज़गी

पाकीज़गी और सादगी एक ही चीज़के दो नाम हैं।

—अज्ञात

पात्र-अपात्र

पात्र अपात्रमें बड़ा भेद होता है—गाय घास खाकर दूध देती है, साँप दूध पीकर ज़हर उगलता है।

—अज्ञात

पाप

पापका प्रारम्भ चाहे प्रातःकालकी तरह चमकदार हो, मगर उसका अन्त रात्रिकी तरह अन्धकारपूर्ण होगा।

—टालमेज

सुक़रातका कहना है कि पापमात्र अज्ञान है। इसके विपरीत यह भी कहा जा सकता है कि अज्ञान ही पाप है।

—विनोबा

एक आदमी पाप करके धनादि लाता है, उसका उपभोग घरके सब लोग करते हैं; लेकिन पापका फल वह अकेला ही भोगता है।

—महाभारत

पापकी कल्पना आरंभमें अफ़ीमके फूलकी तरह सुन्दर और मनोहारिणी होती है; किन्तु अन्तमें नागिनके आलिंगनकी तरह विनाशमयी है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

दूसरोंके पाप हमारी आँखोंके सामने रहते हैं; खुदके हमारी पीठके पीछे।

—सैनेका

मैं सिवाय पाप करनेके और किसीसे नहीं डरता।

—स्टर्न

रंजीदा होना पाप है।

—यंग

पाप पापीसे जीवन, सुख और लाभ लेता है और उसे मौत, यंत्रणा और विनाश देता है, पापका झूठ और फ़रेब समझनेके लिये हमें उसके वादों और भुगतानोंका मुक़ाबला करके देखना चाहिये।

—साउथ

अर्जुन पूछता है, 'इच्छा न होते हुए भी मनुष्य पाप किस लिये करता है?' भगवान् कहते हैं, "इच्छा है इसलिये करता है।"

—विनोबा

पाप पहले मज़ेदार लगता है, फिर वह आसान हो जाता है, फिर हर्षदायक; फिर वह बार बार किया जाता है, फिर आदतन् किया जाता है, फिर उसकी जड़ जम जाती है; फिर आदमी गुस्ताख़ हो जाता है, फिर हठी, फिर वह कभी न पछतानेका क़स्द कर लेता है और फिर वह तबाह हो जाता है।

—लीटन

पापमें पड़ना मनुष्योचित है; पापमें पड़े रहना दुष्टोचित है; पापपर दुःखित होना संतोचित है; तमाम पापको छोड़ देना ईश्वरोचित है।

—लौंगफ़ैलो

छिपकर पाप करना कायरता और खुलकर पाप करना बेहयाई है।

—अज्ञात

पाप कर्म जो करे बुरा है, परन्तु विद्वान्में बहुत बुरा है दुराचारी मूर्ख असंयमी विद्वान्से अच्छा है, क्योंकि वह तो अन्धा होनेके कारण मार्गसे बिचल गया, मगर यह आँखें होते हुए कुएँमें गिरा।

—सादी

रोगके डरसे आदमी खाना तो बन्द कर देता है, पर दण्ड और मरणके भयसे वह पाप करना नहीं बन्द करता, कैसा आश्चर्य !

—अज्ञात

पापकी पहचान मुक्तिकी शुरूआत है ।

—ल्यूथर

पाप विनाशकी बंसी है, जिसके कांटेका ज्ञान मछलीको लीलते समय नहीं मरते समय होता है ।

—हरिभाऊ उपाध्याय

जो पापमें लगा है, वह पापकी सज़ा भी भोग रहा है ।

—स्वेडनबर्ग

एक पाप दूसरे पापके लिये दरवाज़ा खोल देता है ।

—अज्ञात

जब तक पाप पकता नहीं, तभी तक मीठा लगता है, लेकिन जब फलने लगता है; तब बड़ा दुःख देता है ।

—बुद्ध

हम सब पापी हैं; और हमसे कोई जिस बातके लिये दूसरेको दोषी ठहराता है उसे अपने ही हृदयमें पायेगा ।

—सैनेका

अगर हममें पाप न होता तो बाहरसे कोई प्रलोभन नहीं हो सकता था, क्योंकि कोई पाप खुशगवार नहीं लग सकता था ।

—क्राफ़ोर्ड

जो पापमें पड़ता है, वह आदमी है; जो उसपर दुःखी होता है, साधु है; जो उसपर अभिमान करता है, शैतान है ।

—फुलर

पाप करते रहनेसे निष्पाप हर्गिज़ नहीं बना जा सकता ।

—अज्ञात

पाप इसलिये दुःखद नहीं है कि वह मना है, बल्कि वह इसलिये मना है कि दुःखद है। कर्त्तव्य भी इसलिये हित-कर नहीं है कि उसका आदेश दिया गया है, बल्कि उसका आदेश इसलिये दिया गया है कि वह हितकर है।

—फ्रैंकलिन

"मैं ब्रह्म हूँ" यह न कहना पाप है।

—स्वामी रामतीर्थ

कोई पाप छोटा नहीं है। घड़ीकी मशीनमें कोई रज-कण छोटा नहीं है।

—जैरेमी टेलर

पापकी उत्पत्ति होती है विचारहीनतासे और हृदय हीनता से।

—टी० हुड

पाप क्या है? 'जो दिलमें खटके।'

—मुहम्मद

पापकी जड़ पर अगर एक प्रहार कर रहा है तो हज़ार उसकी टहनियाँ तोड़ रहे हैं।

—थोरो

जो पापमें तैरता है, वह दुःखमें डूबेगा।

—कहावत

दो पापोंमेंसे एकको भी न चुनो; दो पुण्योंमेंसे दोनोंको चुन लो।

—ट्राइन एडवर्डस

एक पापको दो दफ़े कर दो, बस वह अपराध नहीं मालूम पड़ेगा।

—तलमद

पापकी शुरूआत लोभसे होती है।

—अज्ञात

धमकियों और सज़ाओंसे पाप नहीं रोका जा सकता।

—स्वामी रामतीर्थ

पापकी चर्चा भी पाप है।

—अज्ञात

आत्मा-रहित काम ही पाप है।

—जैनेन्द्रकुमार

पापकी याद करके ज़िंदगी पापके हवाले न कर दो।

—एनीबीसेंट

अगर किसीको अपनेसे प्रेम है तो उसे पापकी ओर ज़रा भी न झुकना चाहिये।

—तिरुवल्लुवर

जो काम अपनी खुदीको बिल्कुल अलग रखकर, अपने निजी सुख दुःख, नफ़े नुक़सान और जीत-हारका बिलकुल ख़याल न करते हुए, सिर्फ़ फ़र्ज़ समझकर किया जावे, उससे करनेवालेको पाप नहीं लगता।

—गीता

मैं सिर्फ़ उसी पर अमल करता हूँ जो अल्लाह मुझे हुक्म देता है। मेरा काम इसके सिवाय और कुछ नहीं कि लोगोंको बुरे कामोंके नतीजोंसे आगाह करूँ।

—मुहम्मद

जो आदमी "सिर्फ़ अपने लिये खाना पकाता है" वह पापी है, वह "पाप" ही खाता है।

—गीता

पापको तुच्छ समझना ईश्वरको भी तुच्छ समझना है

—आविस

आदमियोंमें अन्याय या वेईमानी या खुदग़र्ज़ीसे वड़ा पाप नहीं, जिसने दूसरोंका हक़ मार रक्खा है।

—टपर

यह सर्वथा अनुचित है कि ईश्वरके राज्यमें रहकर, उसकी रोज़ी खाकर, उसीकी आँखोंके आगे, उसको आज्ञाके विरुद्ध पापाचरण किया जाय।

—इब्राहिम आदम

पाप-प्रवृत्ति

मैं पापके परिणामसे नहीं, पापकी प्रवृत्तिसे मुक्ति चाहता हूँ।

—अज्ञात

पापी

जिनकी आत्माएँ छोटी होती हैं अक्सर वे ही बड़े वड़े पाप-काण्डोंके निर्माता होते हैं।

—गेटे

इस मस्जिदमेंसे सबसे अधिक पापीको बाहर निकलनेके लिये कहा जाय तो मैं ही सबसे पहले निकलूँगा।

—मलिक दिनार

पापीके बराबर मूढ नहीं, जो हर क्षण अपनी आत्माको दाँवपर लगाता रहता है।

—टिलटसन

पाबन्द

लोग हमेशा रस्मो-रिवाजकी पाबन्दी करते हैं, अपनी निजी रुचिका भी लिहाज़ नहीं करते उनमें इतना साहस नहीं होता कि अपनी असली सूरतमें नज़र आयें।

—अज्ञात

पॉलिसी

नम्रता सरीखी कोई पॉलिसी नहीं ।

—लिटन

पिता

पुत्रके प्रति पिताका कर्त्तव्य यही है कि वह उसे सभामें पहली पंक्तिमें बैठने लायक़ बना दे ।

—तिरुवल्लुवर

पीड़ा

अपने छोटे लड़केके मरनेके बादसे मैंने उससे ज़्यादा अमली धर्म सीखा है जितना कि मैंने अपनी तमाम ज़िंदगीमें पहले सीखा था ।

—होरेस बुशनैल

ज़ख़्म तुम्हारे लिये है, पीड़ा मेरे लिये ।

—नवाँ चार्ल्स

बात विचित्र लगेगी, मगर दर असल परमात्मा हमको बीमारी, विपत्ति और निराशासे न केवल नेक बल्कि सुखी बनाना चाहता है ।

—बार्टल

पीड़ा तो सुकृतियोंकी पाठशाला है; यह लहरीपनको दुरुस्त करती है, और पाप करनेके विश्वास में बाधा डालती है ।

—एटरबरी

सबकी रक्षा करनेवाला सबका विश्वासपात्र बनता है। जो कोई पीड़ा नहीं देता, वह पीड़ा नहीं पाता ।

—महाभारत

पुण्य

प्यारे, पुण्योंको मैं बुरा नहीं मानता, पर बात सिर्फ़ इतनी है कि वे आत्माकी महत्ताके साथ नहीं लागू होते।

—नीट्शे

पुण्यका मार्ग शांतिका मार्ग है।

—नैतिक सूत्र

पुत्र

पुत्रसे कोई शाश्वत नाम नहीं रहता। उसके लिये भी अनेक प्रकारके पाप और उपाधियाँ सहनी पड़ती हैं।

—अज्ञात

पुत्री

मेरा बेटा तब तक मेरा बेटा है जब तक उसे जोरू नहीं मिल जाती, लेकिन मेरी बेटी अपनी ज़िंदगीभर मेरी बेटी बनी रहती है।

—कहावत

पुनर्जन्म

मैं सब्ज़े यानी घास की तरह पैदा हुआ हूँ। मैंने सात सौ सत्तर जिस्म देखे हैं।

—मौलाना रूम

पुरस्कार

मैं जो कुछ कर रहा हूँ वह उचित है या नहीं, इसकी परीक्षा तज्जन्य आर्थिक पुरस्कारसे बचकर करनी होगी।

—अज्ञात

पुरुष

उत्तम पुरुषोंकी यह रीति है कि वे किसी कामको अधूरा नहीं छोड़ते।

—वीलेण्ड

पुरुषार्थ

हर आदमी एक ही निश्चित मार्गको अंगीकार करनेके बजाय खुदके स्वभावानुसार स्वतन्त्र रीतिसे नया मार्ग निकालकर पुरुषोत्तम हो सके तभी यह कहा जा सकता है कि उसने सच्चा पुरुषार्थ किया।

—अरविन्द घोष

ईश्वरमें अपनेको तद्‌गत करना व स्वयं उसको आत्मगत करके उसे सर्वत्र अनुभव करना यही अपना पुरुषार्थ और यही अपना स्वराज्य है।

—अरविन्द घोष

स्वतन्त्र रीतिसे आदर्शको पहचानकर, चाहे जितना कठिन होने पर भी उसे पानेके लिये जीतोड़ परिश्रम करनेका नाम ही पुरुषार्थ है।

—गांधी

कर्म, ज्ञान और भक्ति इन तीनोंका जिस जगह ऐक्य होता है वही श्रेष्ठ पुरुषार्थ है।

—अरविन्द घोष

पुरुषार्थमें दरिद्रता नहीं, ईश्वर-चिन्तनमें पाप नहीं, मौन धरनेमें कलह नहीं, जागनेवालेको भय नहीं।

—चाणक्य

ईश्वरकी कृपाके बिना पत्ता भी नहीं हिलता। किन्तु प्रयत्नरूपी निमित्तके बिना वह हिलता भी नहीं।

—गांधी

बुद्धिमान् और माननीय लोग पुरुषार्थको बड़ा मानते हैं; परन्तु नपुंसक, जो पुरुषार्थ नहीं कर सकते, दैव की उपासना करते हैं।

—शुक्राचार्य

हे राम, शुभ पुरुषार्थसे शुभ फल मिलता है और अशुभ से अशुभ फल मिलता है; तुम्हारी जैसी इच्छा हो वैसा कर्म करो।

—वशिष्ठ

जो मनुष्य घरमें बैठा रहता है उसका भाग्य भी बैठ जाता है; जो खड़ा रहता है, उसका भाग्य खड़ा हो जाता है; जो सोया रहता है उसका भाग्य सो जाता है और जो चलता फिरता है, उसका भाग्य भी चलने फिरने लगता है।

—ऐतरेय ब्राह्मण

पुरुषार्थी

पुरुषार्थी वह है जो भाग्यकी रेखायें मिटा दे।

—शीलनाथ

पुरुषार्थीका दैव भी अनुवर्तन करता है।

—अज्ञात

पुरुषोत्तम

पाणिनिका उत्तम पुरुष वही भगवान्का पुरुषोत्तम।

—विनोबा

पुरुषोत्तम इतना मुक्त है कि वह अपनी मुक्तावस्थामें भी बद्ध नहीं है।

—अरविन्द घोष

उत्कृष्ट व्यक्तिका मार्ग तिहेरा है: पुण्यात्मा-चिन्ताओं से मुक्त; सम्यक्ज्ञानी-उलझनोंसे मुक्त; दिलेर-भयसे मुक्त।

—कन्फ्यूशियस

पुरोहित

अगर दाढ़ी ही सब कुछ होती, तो बकरा शेख़ हो गया होता।

—डेनिश कहावत

पुस्तक

जो पुस्तकें तुम्हें सबसे अधिक सोचनेके लिये विवश करती हैं, तुम्हारी सबसे बड़ी सहायक हैं।

—थ्योडोर पार्कर

पुस्तक-प्रेमी सबसे धनी और सुखी है, उसका दर्जा या स्थान कुछ भी हो।

—जे० ए० लैंगफ़ोर्ड

जैसा लेखक वैसी पुस्तक।

—कहावत

पुस्तकोंमें अक्षर रहते हैं; इसलिये पुस्तकोंकी संगतिमें जीवन सार्थक करनेकी आशा व्यर्थ है। वचनोंकी कढ़ी और वचनोंका ही भात खाकर भला कौन तृप्त हुआ है?

—विनोबा

पूजनीय

सबसे बड़ा विषय कौन है? सभी विषय। सदा दुःखी कौन है? विषयानुरागी। धन्य कौन है? परोपकारी पूजनीय कौन है? शिवतत्त्वनिष्ठ।

—शंकराचार्य

पूजा

जो जिस रूपकी पूजा करता है वह उसी रूपको पाता है।

—गीता

कृतज्ञ और प्रफुल्ल हृदयसे आई हुई पूजा ईश्वरको सबसे ज़्यादा प्रिय है।

—प्लुटार्क

अल्लाहका क्रोध उन लोगोंपर हो जो अपने पैग़म्बरोंकी क़ब्रोंको पूजाका स्थान बना लेते हैं। ऐ अल्लाह, मेरी क़ब्रकी कभी कोई पूजा न करे।

—हज़रत मुहम्मद

छोटे फूलने पूछा, "ऐ सूर्य, मैं तेरी पूजा-स्तुति किस तरह करूँ?" "अपनी पवित्रताके सरल मौन द्वारा", सूर्यने जवाब दिया।

—टैगोर

प्राप्त कर्तव्य उत्तम रीतिसे पूरा करना ही परमेश्वरकी पूजा करनेका ऊँचा तरीक़ा है।

—विवेकानन्द

पूर्णता

सर्वोच्च पूर्णताकी प्राप्ति सर्वोच्च संयमके बिना सम्भव नहीं।

—गांधी

पूर्णताकी प्राप्तिका मार्ग इच्छाका नाश करना ही दिखाई पड़ता है।

—मनोविज्ञानका एक विद्वान्

मन, वाणी और कर्मसे सम्पूर्ण संयम पाले बग़ैर आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती।

—महात्मा गांधी

जो पूर्णताकी शेख़ी बघारता है वह मूर्खतामें परिपूर्ण है।

—अज्ञात

कामिनी और कंचनको त्यागे बग़ैर आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती।

—रामकृष्ण परमहंस

पूर्वज

खच्चरोंको फ़ख्र है कि उनके पुरखे घोड़े थे।

—जर्मन कहावत

जिस आदमीके पास शानदार पूर्वजोंके सिवाय अभिमान करनेकी कोई चीज़ नहीं है, वह आलू-छाप आदमी है—सबसे अच्छा हिस्सा ज़मीनके अन्दर।

—ओवरबरी

पूर्व धारणा

पूर्व-धारणाओंसे सावधान रहना! वे चूहोंकी तरह हैं और आदमियोंके मन चूहेदानोंकी तरह; पूर्व-धारणायें घुस आसानीसे जाती हैं, मगर इसमें सन्देह है कि वे कभी बाहर भी निकलती होंगी।

—अज्ञात

आदमीमेंसे पूर्व-धारणाको तर्क द्वारा निकालनेकी कोशिश न करो। तर्कसे वह उसमें घुसेड़ी नहीं गई थी, चुनाँचे तर्कसे वह निकल भी नहीं सकती।

—सिडनी स्मिथ

पूँजीपति

पनामा टोपोंको पूँजीपति पसीना बहानेवाले किसानोंसे आठ आठ पैंसको ख़रीद लेते हैं, और दुकानोंपर बीस बीस शिलिंगको बेचते हैं।

—एनन

यूरोपके अपराधी चोर, उसके तमाम युद्धोंके वास्तविक स्रोत, पूँजीपति हैं, जो कि दूसरोंकी मेहनतकी फ़ीसदियोंपर जीते हैं।

—जॉन रस्किन

"तू किसीकी दौलतको गृद्ध-दृष्टिसे नहीं देखेगा;" परन्तु पशु-बल और धूर्तताके ज़ोरसे वे जितना हो सके झपट लेते हैं और दबाये रखते हैं।

—एनन

पेट

पेटको भोजनसे ख़ाली रक्खो ताकि उसमें ईश्वरीय ज्ञानका प्रकाश हो।

—अज्ञात

तुम बुद्धिसे इसलिये ख़ाली हो कि नाक तक भोजनसे भरे हुए हो।

—अज्ञात

भरा पेट सीख श्रवण नहीं कर सकता।

—रूसी कहावत

मनुष्य अपनेको सरलतासे परमेश्वर क्यों नहीं समझ लेता, इसका मुख्य कारण 'पेट' है।

—नीट्शे

जो खाली पेट शायद ही कभी होता हो, उसे सादा भोजन अरुचिकर लगता है।

—होरेस

जो अपने पेटका ख़्याल नहीं रखता वह शायद ही किसी और चीज़का ख़्याल रक्खे।

—सैम्युएल जॉन्सन

अपना पेट साफ़ रक्खो, तुम्हारा दिमाग़ साफ़ रहेगा।

—अज्ञात

पेटू

जो पेटका दास है वह शायद ही कभी परमेश्वरकी पूजा कर सकता है।

—अज्ञात

उनका बावर्चीख़ाना उनकी मसजिद है, बावर्ची उनका मुल्ला, दस्तरख़्वान उनकी क़ुर्बानगाह और उनका पेट उनका खुदा है।

—बक

पेटूपन

हमारी समस्त दुर्बलताओं और तमाम बीमारियोंका मूल कारण पेटूपन है। जैसे दीपक अत्यधिक तेलसे घुट मरता है, आग अत्यधिक ईंधनसे बुझ जाती है, उसी तरह असंयत आहारसे शरीरका स्वाभाविक स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है।

—बर्टन

तलवारसे इतने नहीं मरते जितने अति-भोजनसे।

—कहावत

पैग़म्बर

लेकिन ऐ मुहम्मद, अगर लोग तुमसे मुँह फेर लें तो हमने (अल्लाहने) तुम्हें उनके ऊपर चौकीदार (हाफ़ीज़) बनाकर नहीं भेजा है तुम्हारा काम सिर्फ़ अपना पैग़ाम (संदेशा) सुना देना है।

—क़ुरान

पैसा

प्रेम बहुत-कुछ कर सकता है, परन्तु पैसा सब-कुछ कर सकता है।

—फ्रेंच कहावत

जब पैसेका सवाल हो, तो दोस्तीको 'ख़ुदा हाफ़िज़'।

—हाउसमन

अगर तुम पैसेको अपना ख़ुदा बना लोगे तो वह शैतानकी तरह तुम्हें सतायेगा।

—अज्ञात

पैसेको ही बड़ा मानकर ज़िंदगी बरबाद कर दी जाय तो बरबादशुदा ज़िंदगीको पैसेकी क़ीमत नहीं रहती।

—अज्ञात

जिसकी राय यह हो कि पैसा सब कुछ कर सकता है, उसके बारेमें यह मुनासिब शंका की जा सकती है कि वह हर काम पैसेकी ख़ातिर करता है।

—अज्ञात

जब दौलतमन्द बीमार पड़ता है तभी वह पूरी तौरसे अनुभव करता है कि पैसा कैसी नाकारा चीज़ है।

—कोल्टन

जो जीव आत्मेच्छा रखता है वह पैसेको नाकके मैलकी तरह त्याग देता है।

—अज्ञात

पैसा पाना ही आदमीका कुल काम नहीं है, दयालुता जीवन कार्यका क़ीमती भाग है।

—जॉन्सन

पोशाक

पोशाकमें ज़्यादती क़ीमती हिमाक़त है, फ़ैशन और प्रदर्शन-प्रिय लोगोंकी साज-सज्जासे तमाम नंगोंको सवस्त्र किया जा सकता है।

—विलियम पेन

कोई आदमी अपनी सजीली-छबीली पोशाकके कारण सिवाय मूर्खों और स्त्रियोंके और किसीके द्वारा सम्मानित नहीं होता।

—सरवाल्टर रेले

आपकी पोशाक न तो भद्दी हो, न भड़कीली, और न क़ीमती पोशाकमें बनठन, दरहक़ीक़त, दिमागी फ़ितूरकी अलामत है।

—अज्ञात

पोशाककी परिपूर्णता तीन बातोंके मिलनेमें है—उसका आरामदेह सस्ता और सुरुचिपूर्ण होना।

—बोवी

वह सर्वोत्तम पोशाकमें है जिसकी पोशाक कोई नहीं देखता।

—ट्रोलप

भाषा विचारकी पोशाक है; और रुचिके आधुनिक नियमानुसार वह पोशाक सबसे अच्छी है जो पहननेवाले परसे कमसे कम ध्यान खींचती है।

—लैली स्टीफ़िन्स

यह हमेशा याद रखना चाहिये कि हमारी पोशाक हमारे मनपर बड़ा और सीधा प्रभाव डालती है।

—अज्ञात

सुरुचिपूर्ण पोशाक स्वयं ही एक सिफ़ारिशी पत्र है।

—अज्ञात

क़ीमती पोशाक किसीके सौन्दर्यको न कुछ बढ़ाती है; मुमकिन है वह कुछ रोब-सा पैदा कर दे, मगर वह तो प्रेमका दुश्मन है।

—शैन्स्टन

खाओ अपनी खुशीका, पहिनो दूसरोंकी खुशीका।

—फ्रैंकलिन

पोषण

बुरेको पोसना भलेको चोट पहुँचानेके समान है।

—सादी

प्यार

प्यार, रंजीदगीकी तरह, छोटी बातोंको बड़ी बनाता है; लेकिन एकका यह बड़ा-बनाना आस्मानके सितारोंको दूरबीनसे देखनेकी तरह है; दूसरेका, राक्षसोंको खुर्दबीनसे बड़ा-बनाने की तरह।

—लीहन्ट

प्यारा

सब मखलूक़ (सृष्टि) अल्लाहका कुनबा है और उन सबमें अल्लाहको सबसे प्यारा वह है जो अल्लाहके इस कुनबेका भला करता है।

—मुहम्मद

प्रकाश

दयामय प्रकाश, मुझे रास्ता दिखा; इस दुखान्धकारके घेरेमेंसे तू मुझे निकाले चला चल।

—न्यूमैन

बहुतसी चिनगारियोंसे प्रकाश तुच्छ ही मिलता है।

—एमील

जब तक तुम्हें 'प्रकाश' प्राप्त है चले चलो; ताकि कहीं तुम्हें 'अन्धकार' न आ घेरे।

—अज्ञात

सबसे अधिक दैवीप्रकाश सिर्फ़ उन हृदयोंमें चमकता है जो तमाम दुनियावी कूड़े-करकट और इन्सानी नापाकीज़गीसे पाक-साफ़ हैं।

—सरवाल्टर रेले

लम्बा और कठिन है वह रास्ता जो नरकसे प्रकाशकी ओर जाता है।

—मिल्टन

ज्यों ज्यों प्रकाश बढ़ता है हम खुदको अपने क़यासमे बदतर पाते हैं।

—अज्ञात

प्रकाशमान

जो स्वयं प्रकाशमान हैं, उपग्रहोंकी तरह नहीं घूमते।

—एनन

प्रकृति

शक्तिशालिनी, दयालु, परमप्रिय प्रकृतिने धीमेसे कहा,—"प्यारे, परवा मत कर!"

—एमर्सन

यदि तुमको मेरे ढंग बुरे मालूम होते हैं तो भी तुम्हें अपनी सुष्ठु प्रकृति न छोड़नी चाहिये।

—अज्ञात

प्रकृति और विवेक हमेशा एक ही बात कहते हैं।

—जुवैनल

सूर्योदयमें जो नाटक है, जो सौन्दर्य है, जो लीला है, वह और कहीं देखनेको नहीं मिल सकती; ईश्वरसरीखा दूसरा सूत्रधार नहीं मिल सकता; और आकाशसे बढ़कर भव्य रंग-भूमि दूसरी नहीं मिल सकती।

—महात्मा गांधी

अगर मुझे पूरी तरह अन्दरूनी ज़िंदगी बसर करनी है तो मुझे रूढ़ियोंकी पवित्रतासे क्या करना? मेरी प्रकृतिके नियमके अलावा मुझे कोई क़ानून मान्य नहीं, 'अच्छा' और 'बुरा' तो नाम हैं जो कभी इसके लिये और कभी उसके लिये आसानीसे लगा दिये जाते हैं, वही सही है जो मेरी प्रकृति-के माफ़िक है, और वही ग़लत है जो उसके ख़िलाफ़ है।

—एमर्सन

प्रगति

'आप नसैनीके किस डंडे पर हैं?'-सवाल यह नहीं है; बल्कि यह कि 'आपका मुँह किधरको है?'

—अज्ञात

आगे न बढ़ना पीछे हटना है।

—कहावत

हर साल एक बुरी आदतको जड़से खोद कर फेंका जाय तो कुछ कालमें बुरेसे बुरा आदमी भला हो सकता है।

—फ्रैंकलिन

इस दुनियामें बड़ी चीज़ यह नहीं है कि हम कहाँ हैं, बल्कि यह कि हम किस तरफ़ चल रहे हैं।

—होम्स

मैं यह भी मानता हूँ कि आर्थिक प्रगति सच्ची प्रगतिके प्रतिकूल है। कुबेर और भगवानकी सेवा एक साथ नहीं हो सकती। यह अर्थशास्त्रका एक अमूल्य तत्त्व है। दौलत और ईश्वरका बे-बनाव है। ईश्वर तो ग़रीबोंके ही यहाँ रहता है।

—गांधी

अगर कोई आदमी फ़रिश्ता बननेके लिये ऊपर नहीं उठ रहा, तो इत्मीनान रक्खो, वह शैतान बननेके लिये नीचे ग़र्क़ हो रहा है। वह पशुकी अवस्थामें ही नहीं रुका रह सकता।

—कॉलेरिज़

प्रचार

जो अच्छी तरह जीता है वह अच्छी तरह प्रचार करता है।

—स्पेनिश कहावत

प्रचुरता

तंगीकी तरह प्रचुरता भी बहुतोंका नाश कर देती है।

—नीतिसूत्र

प्रजातंत्र

यह निश्चितरूपसे सिद्ध किया जा सकता है कि पूर्ण अहिंसाकी पृष्ठभूमिके बिना पूर्ण प्रजातंत्र असंभव है।

—गांधी

प्रण

प्रण-हीनता प्राण-हीनताके समान है।

—स्वामी शिवानन्द

जिसने किसी कामके पूरा करनेका प्रण ठान लिया वह उसको अवश्य कर लेगा।

—कालिदास

प्रणको तोड़नेसे पुण्य नष्ट हो जाते हैं।

—रामायण

प्रतिध्वनि

जहाँ प्रतिध्वनियाँ होती हैं वहाँ हमें अक्सर खालीपन और खोखलापन मिलता है; दिलकी प्रतिध्वनियोंमें इससे उल्टा होता है।

—बौइज़

प्रतिभा

प्रतिभा एक तरहका आचरण है और आचरण भी एक तरहका आवरण है।

—नीट्शे

परिमितता विवेककी सहयोगिनी है, परन्तु प्रतिभासे उसका दूरका भी वास्ता नहीं।

—कोल्टन

प्रतिभावान् वह है जिसमें समझदारी और कार्यशक्ति विशेष हो।

—शोपेनहोर

प्रतिभावान्का एक लक्षण यह है कि वह मान्यताओंको हिला देता है।

—गेटे

प्रतिभा केवल स्वतंत्र वातावरणमें स्वतंत्रतापूर्वक साँस ले सकती है।

—जे० एस० मिल

प्रतिभा हमारी साधारण शक्तियोंके सुतीक्ष्णरूपके अतिरिक्त कुछ नहीं।

—हेडन

प्रतिभावान्के लिये आवश्यक पहली और आखिरी चीज़ सत्यका प्रेम है।

—गेटे

प्रतिशोध

पर्वतोंमें पानी नहीं रहता, महापुरुषोंके मनमें प्रतिशोधकी भावना नहीं रहती।

—चीनी सूत्र

प्रतिष्ठा

शरीफ़-मिज़ाज बनो! हमारा ही हृदय हमें सच्ची प्रतिष्ठा देता है, लोगोंकी रायें नहीं।

—शिलर

जिसने अपनी प्रतीष्ठा खो दी, उसका सब कुछ खो गया।

—अज्ञात

स्वार्थके सिद्धान्तोंपर बनी हुई प्रतिष्ठा शर्मनाक अपराध है।

—कूपर

प्रतिज्ञा

प्रतिज्ञा न लेनेका अर्थ अनिश्चित या डाँवाडोल रहना है।

—गांधी

सत्यवादी अपनी प्रतिज्ञा कभी नहीं छोड़ते, प्रतिज्ञापालन यही बड़प्पनका लक्षण है।

—रामायण

प्रदर्शन

लोगोंको अपनी बाहरी हालतके सिवा और कुछ न दिखा। चाहे समय तेरे अनुकूल न हो, अथवा कोई मित्र ही क्यों न तुझपर अत्याचार कर रहा हो।

—हज़रतअली

आदमी शक्तिशाली हो, लेकिन अगर वह अपनी योग्यता न दिखाये तो लोग उसका तिरस्कार ही करते हैं। आग जब तक लकड़ीमें छिपी रहती है तब तक हर कोई उसे लाँघ जाता है, मगर जलती हुई को नहीं।

—अज्ञात

या तो जैसा अपनेको बाहरसे दिखाते हो वैसा ही भीतरसे बनो, या जैसे भीतर हो वैसे ही बाहरसे दिखाओ।

—अज्ञात

जो नम्रतापूर्वक किसी गुमराहको रास्ता बताता है, उसके समान है जो अपने चिराग़से दूसरेका चिराग़ रोशन करता है; ताहम चिराग़ दूसरेके लिये जलता है स्वयं उस व्यक्तिको ही आलोकित करता है।

—अज्ञात

प्रफुल्लता

अपने कामपर गाओ। प्रफुल्लताकी शक्ति आश्चर्यजनक है।

—अज्ञात

हृदयकी प्रफुल्लतासे वह अनुपम लावण्य आता है, जो कि अङ्गोपांगकी निर्दोषता और चेहरेकी सुन्दरतामें नहीं है।

—अज्ञात

प्रभाव

ज्ञान और सब तरहकी चतुरतासे क्या लाभ ? अन्दर जो आत्मा है उसका ही प्रभाव सर्वोपरि है।

—तिरुवल्लुवर

हमारा प्रभाव हमारे ज्ञानपर, या हमारी कृतियोंपर भी, इतना निर्भर नहीं है, जितना कि इसपर कि हम क्या हैं।

—अज्ञात

प्रभुता

प्रभुताको सब कोई भजते हैं, प्रभुको कोई नहीं भजता। प्रभुको भजे तो प्रभुता चेरी हो जाय।

—कबीर

दुनियामें ऐसा कोई नहीं जन्मा जिसे प्रभुता पाकर गर्व न हुआ हो।

—रामायण

प्रभु-स्मरण

जो गंभीरतापूर्वक प्रभु-स्मरण करता है वह दूसरे सब पदार्थोंको भूल जाता है, उसे तो सभी पदार्थोंमें एक वह प्रभु ही दिखाई देने लग जाता है।

—जुन्नुन

प्रमाद

काहिलीसे बच, क्योंकि आत्माके प्रमादसे शरीर सड़ने लगता है।

—कैटो

प्रमाद न करो, ध्यानमें लीन रहो, लोगोंके चक्करमें न पड़ो, प्रमादके कारण तुम्हें लोहेका लाल-गरम गोला न निगलना पड़े और दुःखकी आगसे जलते वक़्त तुम्हें यूँ न चीख़ना पड़े कि "हाय यह दुःख है।"

—बुद्ध

जब रोनेका प्रकरण हो तब हँसना कैसे मुमकिन हो जाता है! जब कर्त्तव्य पुकारता हो तब प्रमाद कैसे बर्दाश्त होता है!!

—अज्ञात

ज़ंग खा खाकर ख़त्म होनेकी अपेक्षा घिस घिसकर मिटना अच्छा।

—बिशप कम्बरलेंड

मनुष्यकी अपेक्षा तो भेड़-बकरे भी अधिक सचेत होते हैं, क्योंकि वे गड़रियेकी आवाज़ सुनकर खाना-पीना भी छोड़कर उसकी ओर तुरन्त दौड़ पड़ते हैं; दूसरी ओर मनुष्य इतने लापरवाह हैं कि ईश्वरकी ओर जानेकी बाँग सुनकर भी उधर न जाकर आहार-विहारमें तल्लीन रहते हैं।

—हुसेन बसराई

शैतान औरोंको प्रलोभित करता है, प्रमादी आदमी शैतानको प्रलोभित करता है।

—अँग्रेज़ी कहावत

जैसे वृक्षका पत्ता रात्रिकालके चले जानेके बाद पीला होकर खिर जाता है, वैसे ही मनुष्यका जीवन भी आयु समाप्त होनेपर नष्ट हो जाता है। इसलिये गौतम, क्षणमात्रका भी प्रमाद न कर।

—भगवान् महावीर

हे आत्मा, तुझे उदासीनता धारण करना योग्य नहीं। कारण कि प्रातःकाल तो गया; संध्या तक रहनेका भी कहाँ ठिकाना है ?

—रत्नसिंह सूरि

अगर तुम अपनी प्राकृतिक शिथिलता या पाली हुई काहिलीको नहीं जीत सकते तो यक़ीन रक्खो कि तुम 'सैकिण्ड-रेट'से ज़्यादा कुछ नहीं हो सकते और ताज्जुब नहीं पूर्ण असफल रहो।

—अज्ञात

प्रमाद मौत है। प्रमाद नहीं करना।

—अज्ञात

प्रमादसे कटुतर तुम्हारा कोई शत्रु नहीं।

—जैन सिद्धान्त

प्रमाद उतना शरीरका नहीं जितना मनका होता है।

—रोशे

अच्छा, तो भिक्षुओ, मैं तुमसे कहता हूँ—"संसारकी सभी चीज़ें बनी हैं इसलिये बिगड़नेवाली हैं, नश्वर हैं। तुम अपने लक्ष्यकी प्राप्तिमें प्रमाद न करना।" यही तथागतके अन्तिम शब्द हैं।

—बुद्ध

प्रयत्न

प्रयत्न देवता है और भाग्य दैत्य है इसलिये प्रयत्न देवकी उपासना करना ही श्रेयस्कर है ।

—समर्थ रामदास

प्राप्तिकी अपेक्षा प्रयत्नका आनन्द अधिक है ।

—अज्ञात

अन्तर्यामीकी 'तलमल' नहीं-सी होनेसे प्रयत्न ढीला पड़ जाता है ।

—विनोबा

बिना प्रयत्नके या अल्प प्रयत्नसे मिट्टीके ढेले भले ही प्राप्त हो जायँ, मगर रत्नकी प्राप्ति तो महान प्रयत्नसे ही होती है ।

—अज्ञात

यह न समझ कि मानव-प्रयत्नसे कुछ नहीं मिल सकता; प्रयत्न ईश्वरका स्वरूप है ।

—अज्ञात

शक्तिभर प्रयत्नसे कुछ भी कम खुद तुम्हारी ही तुष्टि नहीं प्राप्त कर सकता ।

—अज्ञात

योग माने कर्म करनेका कौशल ।

—गीता

दैव-प्रतिकूल होनेसे प्रयत्न व्यर्थ जानेपर सत्त्वशील पुरुष विषाद नहीं करते ।

—अज्ञात

निष्फल प्रयत्न करनेसे जगत्में कौन नहीं हँसा जाता ।

—कालिदास

प्रयास

क्या तुमने कभी ऐसे आदमीका नाम सुना है, जिसने श्रद्धा और सरलताके साथ जीवनभर प्रयास किया हो और किसी अंशमें भी सफल न हुआ हो? अगर कोई आदमी उन्नतिके लिये प्रयत्न करता है, तो क्या वह उन्नत नहीं होता? क्या कभी किसी आदमीने वीरता, महानता, सत्य, दयालुताको आज़माया है और यह पाया है कि इनसे कोई लाभ नहीं है, यह प्रयास वृथा है?

—थोरो

किसी सम्यक् प्रयासको जब एक बार शुरू कर दिया, तो पूर्णसफलता मिले बग़ैर नहीं छोड़ना चाहिये।

—शेक्सपियर

माँग, और वह तुझे अवश्य दिया जायेगा; खोज, और तू अवश्य पायेगा; खटखटा, तेरे लिये दरवाज़ा अवश्य खुलेगा।

—बाइबिल

प्रलोभन

मालूम करो कि तुम्हारे प्रलोभन क्या हैं, और तुम्हें बहुत-कुछ मालूम हो जायगा कि तुम खुद क्या हो।

—बीचर

बद क़िस्मतियोंकी तरह प्रलोभन भी हमारे नैतिक बलकी परीक्षा करने भेजे जाते हैं।

—मारगरिट

कुछ लोग बड़े-बड़े प्रलोभनोंसे दूर रहते हैं, परन्तु छोटे-छोटे प्रलोभनोंसे परास्त हो जाते हैं।

—अज्ञात

बेवक़ूफ़ चिड़िया दाना तो देखती है, फंदा नहीं।

—अफ़ग़ानी कहावत

फन्देमें तड़फड़ानेकी बनिस्बत प्रलोभनसे बचकर निकलना अच्छा है।

—ड्राइडन

आग सोनेकी परीक्षा करती है और प्रलोभन सच्चे मनुष्यकी।

—अज्ञात

सारेके सारे दार्शनिक जितना सिखा सकते हैं उससे ज़्यादा दर्शनशास्त्र एक प्रलोभन सिखा देता है।

—लावेल

शैतान फ़िलफ़ौर प्रलोभित करते हैं, लगते ऐसे हैं कि 'प्रकाश' के देवदूत हों।

—शेक्सपियर

जिसे शैतानके साथ व्यापार करनेका इरादा नहीं है उसे इतना अक़्लमन्द होना चाहिये कि उसकी दूकानसे दूर रहे।

—साउथ

प्रलोभनके प्रतिरोधका हर क्षण विजयस्वरूप है।

—फ़ेबर

हम किसी दुनियवी प्रलोभनमें आकर मनुष्यताको क़ुर्बान नहीं कर सकते।

—अज्ञात

हर प्रलोभन ईश्वरके ज़्यादा नज़दीक पहुँचनेका मौक़ा है।

—आदम्स

प्रलोभनसे चिड़िया जालमें फँस जाती है। इसलिये हम सर्वथा प्रलोभनरहित होकर विचरेंगे।

—अज्ञात

सबसे ऊँची 'बोली-बोलनेवाले' के सामने अडिग रह सकनेका सद्‌गुण विरले लोगोंमें ही होता है।

—वाशिंग्टन

कल्याण-स्वरूप है वह व्यक्ति जो प्रलोभनोंपर विजय पाता है।

—अज्ञात

प्रवृत्ति

प्रवृत्ति रजोगुणका लक्षण है, अप्रवृत्ति तमोगुणका; इधर खाई उधर कुँआ।

—विनोबा

प्रश्न

अगर कोई आदमी अपने आपसे नहीं पूछता "क्या करूँ? क्या करूँ?" तो सचमुच मैं नहीं जानता कि ऐसे आदमीका क्या करूँ?

—कनफ़्यूशियस

प्रशंसा

दानादि सत्कर्मोंको करते समय होनेवाली अपनी प्रशंसाकी ओर कान भी न दो। वह प्रशंसा तुम्हारी नहीं, उस ईश्वरकी महिमा है।

—जुन्नुन

ऊपरके देव और नीचेके देव दोनों समान रूपसे प्रशंसा-गानसे प्रसन्न होते हैं।

—होरेस

चापलूसी करना बहुत-से लोग जानते हैं; बहुत कम लोग जानते हैं कि प्रशंसा कैसे की जाती है।

—वेन्डेल फ़िलिप्स

जो केवल बाहरी वाहवाही चाहता है, उसने अपना सारा आनन्द दूसरेकी मुट्ठीमें दे रक्खा है।

—गोल्डस्मिथ

प्रशंसा आदमीके मनको इस क़दर प्यारी लगती है कि वह उसके लगभग तमाम कार्योंकी मूल प्रेरणा बनी हुई है।

—जॉनसन

किसीके गुणोंकी प्रशंसा करनेमें अपना समय नष्ट न करो, उसके गुणोंको अपनानेका प्रयत्न करो।

—कार्ल मार्क्स

प्रशंसा विभिन्न व्यक्तियोंपर प्रभाव डालती है, वह विवेकीको नम्र बनाती है और मूर्खको और भी अहंकारी बनाकर उसके दुर्बल मनको मदहोश कर देती है।

—फ़ैलथम

प्रशंसाके भूखे यह साबित करते हैं कि वे योग्यतामें कंगले हैं।

—प्लुटार्क

प्रशंसा उत्कृष्ट मनस्वियोंका प्रोत्साहन होती है, दुर्बल व्यक्तियोंका ध्येय।

—कोल्टन

प्रशंसा अज्ञानकी बच्ची है।

—फ्रैंकलिन

मूर्खकी प्रशंसा करना उसकी मूर्खताको सींचना है।

—अज्ञात

जो शुभ कार्यके लिये प्रशंसाके भूखे रहते हैं, उनकी वास्तविक प्रीति शुभ कार्यसे नहीं, प्रशंसासे है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

स्वार्थ-सिद्धिके लिये प्रशंसा करना दाताके हाथ स्वाभिमानको बेच देना है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

प्रसन्न

प्रसन्न रहनेका नियम ले लेना चाहिये। छोटी-मोटी मर्यादा भी लोकमें पूजित होती है।

—अज्ञात

प्रसन्न-चित्त

चिन्तामें डूबे रहनेवालेको अन्न अच्छी तरह नहीं पचता; प्रसन्न-चित्त रहनेसे भोजन अच्छी तरह पचता है।

—अज्ञात

प्रसन्नता

मन और शरीरमें गहरा और अविच्छिन्न सम्बन्ध है; यदि मन प्रसन्न है तो शरीर स्वस्थ और स्वतंत्र अनुभव करता है; प्रसन्नतासे बहुतसे पाप पलायन कर जाते हैं।

—गेटे

प्रसन्नता वसन्तकी तरह, दिलकी तमाम कलियाँ खिला देती है।

—जीन पॉल

प्रसन्नता समस्त सद्‌गुणोंकी माँ है।

—गेटे

जीवन-वृक्ष केवल ख़ुशमिज़ाजोंके लिये खिलता है।

—आरन्ट

प्रसन्नतामें योगदान देनेवाली वस्तुओंमें तन्दुरुस्तीसे बढ़कर और दौलतसे घटकर कुछ नहीं।

—शोपेनहोर

प्रसन्नता परम स्वास्थ्यवर्धक है, शरीर और मन दोनोंके लिये मित्र-तुल्य !

—एडीसन

प्रसन्नचित्त आदमी अधिक जीता है।

—शेक्सपियर

चित्तकी प्रसन्नता-प्रफुल्लता एक वस्तु है; आमोद-प्रमोद दूसरी। पहलीके लिये भीतरसे सामग्री मिलती है, दूसरीके लिये बाहरसे।

—हरिभाऊ उपाध्याय

संसारमें प्रसन्न रहनेका एक ही उपाय है वह यह कि अपनी आवश्यकताओंको कम करो।

—गांधी

प्रसन्नता सीधा और तात्कालिक लाभ है—आनन्दका मानो वह सिक्का है।

—आर्थर शोपेनहोर

चित्तके प्रसन्न होनेसे सब दुःख नष्ट हो जाते हैं। जिसका चित्त प्रसन्न, निर्मल हो गया है उसकी बुद्धि भी शीघ्र स्थिर हो जाती है।

—गीता

हमेशा खुश रहा करो; इससे दिमाग़में अच्छे ख्यालात आते हैं और तबियत नेकीकी तरफ़ लगी रहती है।

—टैगोर

प्रसन्नता आत्मा का स्वास्थ्य है; ग़मगीनी उसका ज़हर।

—स्टेनिसलास

चित्तकी अभीक्ष्ण प्रसन्नता ज्ञानी होनेका सबसे स्पष्ट लक्षण है।

—माण्टेन

कार्य-रत रहनेसे ही चित्त को प्रसन्नता मिलती है। मैं एक ऐसे आदमीको जानता हूँ जो एक श्मशान-यात्रासे हर्ष-मस्त लौटा, सिर्फ़ इस कारण कि उसका इन्तज़ाम उसके सुपुर्द था।

—बिशप होर्न

जो अपनी छलकती आँखोंसे, पवित्र विचारोंसे, मीठे शब्दोंसे और शुभ कार्योंसे आनन्द बरसाता है, लोग उसको हमेशा प्रसन्न रखते हैं।

—अज्ञात

प्रसिद्धि

परनिन्दा व आत्म-प्रशंसा किये बग़ैर कोई गुणसम्पन्न पुरुष प्रसिद्धि पाता नज़र नहीं आता।

—अज्ञात

यह अक्सर होता है कि जिनका हम ज़मीनपर न्यूनतम उल्लेख करते हैं वे स्वर्गमें सर्वाधिक प्रसिद्ध होते हैं।

—कौसिन

प्रसिद्धि, वीरताके कामोंकी सुगंध है।

—सुक़रात

प्रसिद्धि, सज्जनता या महानताकी कोई ज़रूरी शर्त नहीं है।

—अज्ञात

किसी भी व्यक्तिमें कोई एक ही विशेषता होती है और उसीसे वह प्रसिद्धि पा जाता है। देखिये; क्या केवड़ेमें फल लगते हैं? क्या पानकी बेलमें फूल या फल लगते हैं?

—अज्ञात

प्रज्ञा

जैसे कछुआ अपने अंगोंको समेट लेता है उसी तरह जो अपनी इन्द्रियोंको उनके विषयोंसे हटा लेता है, उसकी बुद्धि स्थिर हो जाती है।

—गीता

प्रज्ञावान

भारी भरकम शरीरके होते हुए भी मूर्ख मनुष्यको हम बड़ा नहीं कह सकते, जो प्रज्ञावान है, वही बड़ा है।

—बुद्ध

प्राचीनता

प्राचीनता! उसके पुनर्निर्माणकी अपेक्षा उसके खंडहर ज्यादा पसन्द करता हूँ।

—जोबर्ट

प्राणरक्षा

प्राणियोंकी प्राणरक्षा यथाशक्ति अवश्य करनी चाहिये।

—अज्ञात

प्राप्ति

श्रद्धासे जो कुछ माँगोगे, तुम्हें मिलेगा।

—बाइबिल

जितना त्यागोगे, ईश्वरसे उतना ही अधिक पाओगे।

—होरेस

तू अपने जीको मत रोक, ताकि वह अपनी शक्तिके अनुसार हर चीज़ प्राप्त करले; क्योंकि आत्मा और शरीर दोनों पड़ोसी, जिनका घर आयु है, शीघ्र ही एक दूसरेसे अलग होनेवाले हैं।

—मुतनब्बी

मनुष्य जिस बातको चाहता है उसे प्राप्त कर सकता है और वह भी उसी तरहसे जिस तरह कि वह चाहता है, बशर्ते कि वह अपनी पूरी शक्ति और पूरे दिलसे उसको चाहता हो।

—तिरुवल्लुवर

हे भगवन्, किसीको देने से ही हमें मिलता है; मरनेसे ही हम अमरपद पा सकते हैं।

—सन्त फ्रांसिस (आसीसी)

जो कुछ प्राप्त करना हो उसे तू तलवारसे नहीं, मुस्कानसे प्राप्त कर।

—शेक्सपियर

बालक बखानता है, जवान कोशिश करता है, और मर्द प्राप्त करता है।

—अज्ञात

साधारणतः, जिसे पानेके लिये हम अत्यधिक चिन्तातुर नहीं होते उसे हम अवश्यमेव और अति शीघ्र प्राप्त कर लेते हैं।

—रूसो

प्रायश्चित्त

पाप करके प्रायश्चित्त करना कीचड़में पैर डालकर धोनेके समान है।

—अज्ञात

वैसा फिर न करना सबसे सच्चा प्रायश्चित्त है।

—ल्यूथर

प्रायश्चित्तकी तीन सीढ़ियाँ हैं—आत्मग्लानि, दूसरी बार पाप न करनेका निश्चय और आत्मशुद्धि।

—जुन्नेद

प्रारंभ

खुद अपने दर्वाजेसे कूड़ा-कचड़ा झाड़ फेंक, सारा नगर साफ़ हो जायगा।

—चीनी कहावत

प्रार्थना

प्रार्थनाका अर्थ अमुक शब्दोंका दुहराना नहीं है। प्रार्थनाका अर्थ है दैविकताकी अनुभूति और प्राप्ति।

—स्वामी रामतीर्थ

शांतिसे सोचो, बोलो, करो, मानो कि तुम प्रार्थनामें होओ। सचमुच, प्रार्थना यही है।

—फ़ैनेलन

सब्र सबसे बड़ी प्रार्थना है।

—बुद्ध

प्रार्थना है एक देखनेवाली और खुशीमें मस्त रहनेवाली आत्माका आत्म निवेदन।

—एमर्सन

किसी मनुष्य अथवा वस्तुको लक्ष्य कर प्रार्थना हो सकती है। उसका परिणाम भी हो सकता है। किन्तु इस प्रकार लक्ष्य न करके की गई प्रार्थनासे आत्मा और संसारके लिये अधिक कल्याणकर होनेकी संभावना है। वह हृदयका विषय है। मुँहसे प्रार्थना आदिकी क्रियाएँ हृदयको जाग्रत करनेके लिये हैं। व्यापक शक्ति जो बाहर है वही अन्दर है और उतनी ही व्यापक है। उसे शरीरका अन्तराय नहीं, अन्तराय हम उत्पन्न करते हैं। प्रार्थनाके योगसे वह अन्तराय दूर हो जाता है······ प्रार्थना अनासक्त होनी चाहिये।

—गांधी

साधुलोग नम्रतापूर्वक जो प्रार्थना किया करते हैं, उसे ईश्वर कभी भूलता ही नहीं।

—विहाउद्दीन जुहैर

मेरे अन्तस्तलकी अन्तिम गहराइयोंसे प्रभुजी, मेरी आपसे यह याचना है कि पूरे ज़ोरसे खड्ग घुसेड़कर मेरी तमाम क्षीणता छेद डालो।

—टैगोर

प्रार्थनाका उद्देश्य मनुष्यको पूर्ण मनुष्य वना देना और हृदयको पवित्र कर देना है। मैले हृदयसे प्रार्थना करना व्यर्थ है। कमसे कम प्रार्थनाके समय तो हमें हृदयको साफ़ रखना चाहिये।

—गांधी

प्रार्थनासे मनुष्यको अत्यन्त आनन्द मिलता है।

—गांधी

सज्जनसे की हुई प्रार्थना कब सफल नहीं होती ?

—कालिदास

प्रार्थनामें साकार मूर्तिका मैंने निषेध नहीं किया है, हाँ, निराकारको ऊँचा स्थान दिया है·········मेरी दृष्टिसे निराकार अधिक अच्छा है।

—गांधी

अगर तुम समुद्रमें गिर जाओ और तैर न सकते हो, तो तुम प्रार्थनाओं और पंथोंके बावजूद डूबोगे।

—एनन

अगर तू उद्देश्योंकी पूर्तिके लिये सन्तोष धारण करके प्रार्थना करता है तो हताश न हो, एक न एक दिन तू सफलता प्राप्त कर लेगा।

—मुहम्मद बिन बशीर

प्रार्थना माने ईश्वरसे संभाषण करना और अन्तरात्माकी शुद्धिके लिये प्रकाश प्राप्त करना। ताकि ईश्वरकी सहायतासे हम अपनी कमज़ोरियोंपर विजय प्राप्त कर सकें।

—गांधी

प्रार्थनामें वाणी और हृदयको मिला दे; एक उँगलीसे गाँठ नहीं खुलती।

—मनसुख

जो बिना प्रार्थना किये सोता है हर दिनकी दो रात बनाता है।

—हरबर्ट

हे प्रभो, मेरी प्रार्थना है कि मैं अन्दरसे सुन्दर बनूँ।

—सुक़रात

हृदय जितना बोलता है ईश्वर उससे अधिक कुछ नहीं सुनता; और अगर हृदय गूँगा हो तो ईश्वर ज़रूर बहरा रहेगा।

—ब्रुक्स

हमें अपनी प्रार्थनाओंमें सामान्य मंगलकामना करनी चाहिये, क्योंकि ईश्वर ही अच्छी तरह जानता है कि हमारे लिये क्या हितकर है।

—सुक़रात

क्या प्रार्थनाओंका सचमुच कुछ असर है? हाँ, जब मन और वाणी एक होकर कोई चीज माँगते हैं, तो उस प्रार्थनाका जवाब मिलता है।

—रामकृष्ण परमहंस

अगर कोई स्तवन और प्रार्थना करता हुआ ईश्वरकी तरफ़ एक बालिश्त भी चले तो ईश्वर उससे मिलनेके लिये बीस मील चलकर आयेगा।

शब्द जितने कम हों प्रार्थना उतनी ही उत्तम होती है।

—ल्यूथर

प्रार्थना तुम्हारी महाशक्तिके खज़ानेकी कुंजी है। तर्क तुम्हें क़तरा बनाता है मगर विश्वास समुद्र। विश्वास और प्रार्थनासे क्या नहीं प्राप्त हो सकता?

—अज्ञात

प्रार्थना हमारे अधिक अच्छे, अधिक शुद्ध होनेकी आतुरताको सूचित करती है।

—गांधी

ज्ञानके लिये और सत्यके प्रकाशके लिये परमेश्वरसे अवश्य याचना करनी चाहिये; मगर किसी भी विनाशी पदार्थके लिये प्रार्थना न करनेकी दक्षता प्राप्त करनी चाहिये।

—विवेकानन्द

मैं अपना कोई काम बिना प्रार्थना किये नहीं करता।

—गांधी

जिन्होंने सीधा प्रभुसे माँगा, उनकी माँग कभी रायगाँ नहीं गई।

—अज्ञात

प्रार्थना उस हाथको चलाती है जो दुनियाका संचालन करता है।

—अज्ञात

प्रार्थनाका तात्पर्य यह है कि अपने सम्पूर्ण बलको काममें लाकर प्रभुसे माँगना—"ज़्यादा बल दे"।

—विनोबा

तुम माँगते हो, और तुम्हें नहीं मिलता, क्योंकि तुम ग़लत चीज़ माँगते हो।

—बाइबिल

मेरी प्रार्थना होगी–दूसरोंके लिये ।

—अज्ञात

हम अपनी तरफ़से अज्ञानी; अक्सर अपने लिये हानिकर वस्तुओंकी प्रार्थना करते हैं, जिनसे सम्यक् ज्ञानी शक्तियाँ हमारे कल्याणार्थ हमें वंचित रखती हैं; इस प्रकार हम अपनी प्रार्थनाओंको खोकर लाभान्वित होते हैं ।

—शेक्सपियर

व्यक्तिगत प्रार्थनासे मैं देवकी मदद प्राप्त करता हूँ, सामुदायिक प्रार्थनासे संतोंकी ।

—विनोबा

देव, मुझे भुक्ति नहीं, मुक्ति नहीं–भक्ति दे । सिद्धि नहीं, समाधि नहीं–सेवा दे ।

—विनोबा

अपने सब कामोंके पहिले ईश्वरकी प्रार्थना कर, ताकि वे निर्विघ्न समाप्त हों ।

—ज़ैनोफ़ोन

प्रार्थना धर्मका स्तम्भ और स्वर्गकी कुंजी है ।

—मुहम्मद

वह न होने दे जो मैं चाहता हूँ, वल्कि वह जो कि ठीक है ।

—अज्ञात

लोग जब ईश्वरसे प्रार्थना करते हैं तो अक्सर यह माँगते हैं कि दो और दो मिलकर चार न हों ।

—रूसी कहावत

प्रिय

प्रिय क्या है ? करना और न कहना । अप्रिय क्या है ? कहना और न करना ।

—जालीनूस

प्रियजन

कुछ किये बिना ही प्रियजन अपने संसर्गके आनन्द-मात्रसे दुःखको भगा देते हैं। सचमुच, जिसके कोई प्रियजन हैं उसके पास बेशक़ीमती ख़ज़ाना है।

—अज्ञात

प्रियवादी

प्रियवादीके लिये कौन पराया है?

—आर्य-सूक्ति

प्रीति

प्रीतिपात्र होना बेशक है तो कर्त्तव्य, मगर उसे किसी सद्गुणकी क्षति उठाकर नहीं करना चाहिये।–जो हमेशा प्रियंकर होनेकी कोशिश करता है, वह अपनी इन्सानियतकी कुर्बानी देकर ही वैसा बननेमें कभी-कभी सफल हो सकता है।

—सिम्स

कोई रहस्यपूर्ण आन्तरिक कारण पदार्थोंको परस्पर मिलाता है; प्रीति बाहरी बातोंपर निर्भर नहीं होती।

—अज्ञात

सुरनर मुनि सबकी यह रीती।
स्वारथ लागि करैं सब प्रीती॥

—रामायण

बिना सचाईके प्रतीति नहीं, और बिना प्रतीतिके प्रीति नहीं।

—अज्ञात

प्रीति सदा सज्जनोंके ही साथ करनी चाहिये।

—अज्ञात

प्रेम

घृणा राक्षसोंकी सम्पत्ति है; क्षमा मनुष्यत्वका चिह्न है; परन्तु प्रेम देवताओंका स्वभाव है।

—भर्तृहरि

प्रेम आँखोंसे नहीं, बल्कि हृदयसे देखता है; और इसी-लिये प्रेमके देवताको अन्धा बताया गया है।

—शेक्सपियर

प्रेम स्वर्गका रास्ता है।

—टालस्टाय

प्रेम मनुष्यत्वका नाम है।

—बुद्ध

प्रेम संसारकी ज्योति है।

—ईसा

प्रेम पापियोंको भी सुधार देता है।

—कबीर

प्रेम-प्रेम कहते सब कोई हैं, प्रेमको पहिचानता कोई नहीं है। जिस प्रेमसे प्रभु मिले वही प्रेम कहलाता है।

—कबीर

अपने आपको सबसे अन्तमें प्रेम कर।

—शेक्सपियर

सब कुछ प्रेमकी खातिर, और बदलेके लिये कुछ नहीं।

—स्पेंसर

मेरी आज्ञा है कि तुम एक दूसरेके साथ प्रेम करो।

—कन्फ्यूशियस

दण्ड देनेका अधिकार सिर्फ उनको है जो कि प्रेम करते हैं।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

प्रभुके मार्गमें प्राण तक देनेकी तैयारी न हो तो उसके प्रति प्रेम है ऐसा मानना ही नहीं चाहिये।

—जुन्नेद

एक परमेश्वरके सिवाय व्यर्थ नाना देवताओंकी पूजा करना अपने प्रेमको व्यभिचारी बनाकर शुद्ध भावनाका नाश करना है।

—संत तुकड़ोजी

अपने पड़ोसीसे प्रेम करो, परन्तु बाड़को न तोड़ फेंको।

—जर्मन कहावत

हाथ कारमें, दिल चारमें।

—अज्ञात

आपसमें लेने-देनेसे जो प्रेम पैदा होता है वह प्रेम उस लेने-देनेकी समाप्तिके साथ ही समाप्त हो जाता है। बिना किसी स्वार्थकी गंधके जो प्रेम होता है, वही सच्चा प्रेम है।

—जुन्नेद

प्रेममें, हम सब समान रूपसे मूर्ख हैं।

—गेटे

प्रेमकी सीमा कहाँ तक है? प्रेम-पात्र यदि असीम और अमाप हो तो फिर प्रेमकी भी सीमा कैसी?

—अज्ञात

प्रेम जीवनका प्राण है! जिसमें प्रेम नहीं वह सिर्फ़ मांससे घिरी हुई हड्डियोंका ढेर है।

—तिरुवल्लुवर

बाहरी सौन्दर्य किस कामका जबकि प्रेम, जोकि आत्माका भूषण है, हृदयमें न हो?

—तिरुवल्लुवर

प्रेमसे हृदय स्निग्ध हो उठता है और उस स्नेहशीलतासे ही मित्रतारूपी बहुमूल्य रत्न पैदा होता है।

—तिरुवल्लुवर

प्रेमकी ज़बान आँखोंमें है।

—पिलचुंर

जिस प्रेमको प्रकट न किया जा सके वह प्रेम सबसे पवित्र है।

—कार्लाइल

दूसरोंसे प्रेम करना यह स्वयं अपने साथ प्रेम करनेके बराबर है।

—एमर्सन

इश्क़ अक़्लकी बिनाको उखाड़ डालता है। इश्क़की आग महबूबके सिवाय बाक़ी सबको भस्म कर डालती है।

—हदीस

द्वेषके लिये कोई कारण हुए बिना कोई द्वेष नहीं करता, अतः अपनेको किसीने द्वेषका कारण दिया हो तो भी उसका द्वेष न कर उसपर प्रेम करना चाहिये। उसपर रहमकर उसकी सेवा करना यही अहिंसा है। प्रेमी मनुष्यपर प्रेम करनेमें अहिंसा नहीं, वह तो व्यवहार है। अहिंसाको दान कहा जा सकता है। प्रेमके बदले प्रेम करना–यह फ़र्ज़ चुकानेकी तरह है।

—गांधी

जिस प्रेमका तुम दम भरते हो, अगर सच्चा होता तो तुम पानीपर भी चलनेका साहस करते।

—बिहाउद्दीन जुहैर

जब प्रेम पतला होता है तो दोष गाढ़े हो जाते हैं।

—कहावत

शुद्ध प्रेममें शरीर-स्पर्श करनेकी आवश्यकता नहीं होती किन्तु उसका अर्थ यह नहीं है कि स्पर्शमात्र अपवित्र होता है।

—गांधी

परमात्मा, मुझे ऐसी आँख दे जोकि संसारके सब पदार्थोंको प्रेमकी दृष्टिसे देखे।

—वेद

हमेशा प्रेमपात्र बने रहनेके लिये, आदमीको हमेशा मनमोहक बना रहना चाहिये।

—लेडी मौंटेग्यू

प्रेमको भौतिक सहवासकी आवश्यकता ही न होनी चाहिये। और हो तो वह प्रेम क्षणिक ही कहना चाहिये। शुद्ध प्रेमकी कसौटी तो दूसरेके वियोगमें–दूसरेकी मृत्युके उपरान्त होती है।

—गांधी

व्यक्ति-प्रेममात्र तिरस्करणीय नहीं है, वह विश्व-प्रेमका, प्रभु-प्रेमका विरोधी न होना चाहिये। 'बा'के विषयमें मुझे प्रेम है किन्तु वह प्रभु-प्रेमके गर्भमें है। मैं विषयी था, तब वह प्रभु-प्रेमका विरोधी था अतः त्याज्य था।

—गांधी

कोई आदमी इस भुलावेमें न रहे कि उसे कोई प्यार करता है, जब कि वह किसीसे प्यार नहीं करता।

—एपिक्टेटस

'प्रेम सबकुछ जीतता है' यह अमर वाक्य हृदयमें जमने दे। कोई भी आवे प्रसन्न रहना ही अपना धर्म है।

—गांधी

प्रेम और धुआँ छिपाये नहीं जा सकते।

—फ्रांसीसी कहावत

जो दूसरोंको ऊपरसे प्यार करता है किन्तु भीतर ही भीतर उनसे द्वेष रखता है वह ईश्वरका कोप-भाजन बनता है।

—फ़ज़ल अयाज़

प्रेम कमानकी तरह है जोकि, अत्यधिक ताने जानेपर, टूट जाती है।

—इटालियन कहावत

प्रेमकी अग्नि, यदि एक बार बुझ जाय तो फिर, बड़ी मुश्किलसे जलती है।

—कहावत

साराका सारा प्रेम एक ही तरफ़ नहीं होना चाहिये।

—कहावत

प्रेम परिश्रमको हलका और दुःखको मधुर बना देता है।

—कहावत

भलोंसे प्रेम करो और बुरोंको क्षमा कर दो।

—कहावत

प्रेम वक़्तको गुज़ार देता है, और वक़्त प्रेमको गुज़ार देता है।

—फ्रांसीसी कहावत

प्रेम स्वर्ग है, और स्वर्ग प्रेम है।

—स्कॉट

वह प्रेम प्रेम नहीं जो परिवर्तनके साथ परिवर्तित होता रहे।

—शेक्सपियर

प्रेम झोपड़ोंको सुनहरी महल बना देता है।

—होल्टी

जो प्रेम फलाशारहित है वही सच्चा प्रेम है।

—विवेकानन्द

जब दरिद्रता दरवाज़ेसे दाखिल होती है, प्रेम खिड़कीसे भाग छूटता है।

—कहावत

जीवन एक फूल है, प्रेम उसका मधु।

—विक्टर ह्यूगो

ऊँटपर बैठकर धक्कोंसे नहीं बचा जा सकता, यही बात लौकिक प्रेमकी है।

—स्वामी रामतीर्थ

प्रेम वह सुनहरी ज़ंजीर है जिससे समाज परस्पर बँधा हुआ है।

—गेटे

हम इस दुनियामें जीते तब हैं जब कि उससे प्रेम करते हैं।

—टैगोर

प्रेमके दो लक्षण हैं, पहिला बाहरी दुनियाको भूल जाना, और दूसरा, अपने शरीर तकको भूल जाना।

—रामकृष्ण परमहंस

जो हम दूसरोंके लिये कर सकते हैं, शक्तिका परिचायक है; जो हम दूसरोंके लिये सहन कर सकते हैं प्रेमका परिचायक है।

—वैस्टकॉट

गुप्त या खुले स्वतन्त्र प्रेममें मेरा विश्वास नहीं है। उन्मुक्त प्रेमको मैं कुत्तोंका प्रेम समझता हूँ। और गुप्त प्रेममें तो इसके अलावा कायरता भी है।

—गांधी

दैविक प्रेमके समुद्रमें गहरा गोता लगा। डरो मत। यह अमरताका समन्द्र है।

—रामकृष्ण परमहंस

दुनियावालोंका प्रेम मतलबका है; ईश्वरका प्रेम निस्स्वार्थ।

—विवेकानन्द

मैं जानता हूँ कि मेरे अन्दर बहुतसे प्रेम हैं। पर प्रेमकी तो सीमा ही नहीं होती। मैं यह भी जानता हूँ कि मेरा प्रेम असीम नहीं है। मैं साँपके साथ कहाँ खेल सकता हूँ? जो अहिंसामूर्ति हो उसके सामने साँप भी ठण्डा हो जाता है। मुझे इसपर पूरा-पूरा विश्वास है।

—गांधी

माँसे स्त्रीपर, स्त्रीसे पुत्रपर—यह प्रेमकी अधोगति है। माँसे सन्तोंपर, सन्तोंसे ईश्वर पर—यह प्रेमकी ऊर्ध्व गति है।

—विनोबा

सफलताका मार्ग बुद्धिसे ही नहीं प्रेमसे भी सूझता है।

—अज्ञात

व्यक्तिगत प्रेम=दुर्बलता।

—स्वामी रामतीर्थ

प्रेमके अतिरेकसे सत्यमें तीखापन आ सकता है, कटुता नहीं। तीखापन व्याकुलताका, अधीरताका और कटुता द्रोह और द्वेषका चिह्न है।

—अज्ञात

जब तक तेरे पास थोड़ी बहुत सम्पत्ति है, तबतक 'प्रेम प्रेम' कहकर अनेक लोग तेरे इर्द गिर्द इकट्ठे हो जाते हैं; थैली ख़ाली होते ही मौसी तक पास खड़ी नहीं होती। मगर ईश्वर तेरे पास हर जगह और हर समय रहता है; वह तुझे भले-बुरे वक़्त भी नहीं छोड़ता; उसीका प्रेम निरपेक्ष है; उसका प्रेम तुझे अधोगतिमें नहीं जाने देगा।

—विवेकानन्द

प्रत्येक चतुर मनुष्य जो मजनूँके साथ बैठता है लैलाके सौन्दर्यको छोड़कर और कुछ बात न कहेगा।

—अज्ञात

अपनेसे आखिरमें प्रेम कर।

—शेक्सपियर

बहन और भाईके प्रेममें पवित्रता है, पति और पत्नीके प्रेममें मादकता। पवित्रता शांति दिलाती है और मादकता व्याकुल कर देती है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

सेवा तो वह है जिससे चित्त सदैव प्रसन्न रहे। मित्रता और प्रेम तो वह है कि संसर्गकी उत्सुकता रहे और संसर्गके बाद प्रफुल्लता।

—हरिभाऊ उपाध्याय

विरक्तोंके क्रोधमें भी जो प्रेम देखता है और आसक्तोंके प्रेममें भी जो क्रोध देखता है वही देखता है।

—विनोबा

प्रेम भरपूर ज़िन्दगी है जैसे कि मयसे लबरेज़ पैमाना।

—टैगोर

मूसाका पहला सिद्धान्त है, "प्रेमके सिवाय तू किसी परमात्माको न मानना"।

—अज्ञात

पारस्परिक प्रेम हमारी तमाम खुशियोंका सरताज है।

—मिल्टन

प्रेम प्रत्येक बातमें विश्वास करता है, आशा रखकर प्रत्येक बात सहता है, किन्तु प्रेम कभी असफल नहीं होता।

—कोरिंथियन

ईश्वरसे, बिना बिचौलिये या पर्दके, प्रेम करनेका साहस करो।

—एमर्सन

कोई आदमी, जो कि दौलतका प्रेमी है, या विलासिताका प्रेमी है या वाहवाहीका प्रेमी है, साथ ही मनुष्योंका प्रेमी नहीं हो सकता।

—एपिक्टेटस

शुद्ध प्रेम देहका नहीं, आत्माका ही सम्भव है। देहका प्रेम विषय ही है।

—गांधी

मैं तुम्हें एक नया आदेश देता हूँ कि तुम एक दूसरेसे प्रेम करो।

—बाइबिल

वासनामय प्रेम मनुष्यको ईश्वरसे प्रेम करनेसे रोक देता है।

—अज्ञात

शक्तिने दुनियासे कहा, "तू मेरी है"; दुनियाने उसे अपने तख़्तपर क़ैदी बनाकर रक्खा। प्रेमने दुनियासे कहा, "मैं तेरा हूँ"; दुनियाने उसे अपने घरकी आज़ादी दे दी।

—टैगोर

प्रेमसे असम्भव सम्भव हो जाता है।

—एमर्सन

काम और प्रेमका जिसने अन्तर समझ लिया वह मुक्त हो गया।

—विनोबा

प्रभु प्रेमकी अंतिम अवस्था सच्चिदानन्दका स्वरूप है।

—अरविंद घोष

बच्चोंपर सब लोग प्रेम क्यों करते हैं? क्योंकि उनको इनकी ज़रूरत नहीं है।

—स्वामी रामतीर्थ

प्रेम सबसे कर, विश्वास थोड़ोंका कर; नुक़सान किसीको मत पहुँचा।

—शेक्सपियर

जीवनकी सबसे बड़ी खुशी प्रेम है।

—टैम्बिल

प्रेम ही एक ऐसी चीज़ है जो कि निष्काम और स्वतंत्र रह सकती है।

—अरविन्द घोष

शुद्ध प्रेमके लिये दुनियामें कोई बात असम्भव नहीं।

—गांधी

प्रेम नहीं है तो दोष ही दोष दीखते हैं।

—अज्ञात

प्रेमकी भाषा सबकी समझमें आती है।

—स्वामी रामतीर्थ

'एक' से प्रेम सचमुच असभ्यता है, क्योंकि उसमें 'अनेक' की उपेक्षा है; परमात्मासे प्रेम भी ऐसा ही 'एक' से प्रेम है।

—नीट्शे

जिस घटमें प्रेम नहीं है उसे श्मशान समझ; बिना प्राणके साँस लेनेवाली लुहारकी धौंकनी।

—कबीर

प्रेमरस पीना चाहे, शान और मान रखना चाहे-एक म्यानमें दो तलवार नहीं समातीं।

—कबीर

जल दूधसे मिलकर दूधके भाव बिकता है। देखिये, प्रेमकी यह कैसी अच्छी रीति है। लेकिन अगर प्रेममें कपट आ पड़े तो मिले हुए हृदय ऐसे फट जाते हैं जैसे खटाई पड़नेसे दूध और पानी अलग अलग हो जाते हैं।

—रामायण

दुनियामें चिरकाल टिकनेवाली चीज़ प्रेम ही है, द्वेष नहीं; सौजन्य ही एक टिकाऊ चीज़ है, और आख़िरश यही शुभ फलदायी होगी।

—विवेकानन्द

प्रेम किसको कहते हैं? अपनेसे बढ़कर किसीको चाहना।

—अज्ञात

प्रेमके होठोंसे निकले हुये सत्यके शब्द कितने मधुर होते हैं।

—बीटी

अगर तुम चाहते हो कि लोग तुमसे प्रेम करें तो तुम प्रेम करो और प्रेम किये जाने लायक़ बनो।

—फ्रैंकलिन

प्रेम-पात्र

धनवान होना अच्छा है, बलवान होना अच्छा है, लेकिन बहुतसे मित्रोंका प्रेम-पात्र होना और भी अच्छा है।

—यूरिपिडीज़

प्रेमिका

मुझको दुर्बलताका वस्त्र पहनानेवाली, तुझको कुशलताका वस्त्र मुबारिक रहे।

—बिहा-उद्दीन-ज़ुहैर

प्रेमी

जब मैं प्याससे कष्टमें होता हूँ, उस समय भी अगर तुम्हारी याद आ जाती है, तो शीतल जल तक पहुँचना भूल जाता हूँ।

—इब्न मातूक

राम बुलावा भेजिया कबिरा दीन्हा रोय।
जो सुख प्रेमी संगमें सो बैकुंठ न होय॥

—कबीर

प्रेमी सब वस्तुओंको अपने अनुकूल ही समझता है।

—कालिदास

प्रेमी अपनी प्रियाके वियोगके समय उससे मिलनेकी अभिलाषामें रोया करता है; और मिलापके समय वियोगसे चिन्तित होकर रोता है।

—अज्ञात

सारी मानव-जाति प्रेमीको प्रेम करती है।

—एमर्सन

प्रेरणा

कामसे कामको प्रेरणा मिलती है और प्रमादसे प्रमादको।

—हट



[फ]

फ़र्क़

किनारा नदीसे कहता है। "मैं तुम्हारी लहरोंको नहीं रख सकता। अपने पदचिह्नोंको मुझे अपने हृदयमें रखने दो।"

—टैगोर

उच्च पद चाहनेवाले महापुरुष अपने क़दमोंको अधिकाधिक ऊँचाई पर रखते जाते हैं; मगर नीच लोग गिरनेके डरसे, अधिकाधिक नीचाई पर रखते जाते हैं।

—अज्ञात

फ़र्ज़

तुम्हें काम करने यानी अपना फ़र्ज़ अदा करनेका ही अख़्तियार है। नतीजे पर तुम्हारा क़ाबू नहीं है। इसलिये अपने कामोंके नतीजेकी ओर दिल मत लगाओ। अपना फ़र्ज़ पूरा करो। लगाव या मोहको छोड़कर कामयाबी और नाकामयाबीमें एक बराबर रहकर हर काम करो। इस एक बराबर रहनेका नाम ही योग है।

—गीता

मेरे भाई अगर मुझे हानि पहुँचाते हैं तो मैं उनको लाभ पहुँचाता हूँ और चाहे वे मेरी प्रतिष्ठाको भंग करें, तथापि मैं उनका मान करता हूँ। वे पीठ-पीछे मेरी बुराई करें, मगर मैं उनकी बुराई नहीं करता और अगर्चे वे मेरी दुर्गतिके अभिलाषी हों, तो भी मैं उनकी सुगतिकी ही लालसा रखता हूँ।

—अल-मुकन्नाआ-उल-किन्दी

अध्यात्म यानी रूहानियतमें दिलको लगाए हुए, आशा और ममतासे ऊपर उठकर, आदमी 'ईश्वरके लिए' अपने सब फ़र्ज़ोंको पूरा करे।

—गीता

फल

"ऐ फल, तू मुझसे कितनी दूर है?" "मैं तेरे हृदयमें छिपा हूँ, फूल।"

—टैगोर

फल तुझे पहले ही मिल चुका है। अब तो कर्म करना बाक़ी रह गया है, फिर फल कैसे माँगता है?

—विनोबा

जो कर्म अभिमानसे किये जाते हैं उनका कुछ फल नहीं है, जो त्यागकी भावनासे किया जाता है उसका महाफल है।

—अज्ञात

कार्य फलका जनक है।

—दीनामुलक

अपना रखा हुआ क़दम ठीक होगा तो आज या कल उसका फल होगा ही।

—गांधी

फल-प्राप्ति

अभ्यास तीव्र या मध्यम जैसा होगा उसीके अनुसार फल-प्राप्ति जल्दी अथवा देरसे होगी।

—विवेकानन्द

फलाशा

सच्ची सफलता और सच्चा सुख उसीको मिलता है जिसको प्रतिफलकी आशा नहीं है।

—विवेकानन्द

निश्चय करो कि दिनकी कोई घटना तुम्हें अप्रसन्न नहीं कर पायेगी। अपने कामको इस अनुपम और पवित्र निर्णयसे शुरू करो कि उसके साथ न मिलने पायेगी महत्त्वाकांक्षा, न लाभकी आसक्ति, न सुखकी अभिलाषा; और उसके फलकी कोई चिन्ता तुम्हें स्पर्श न करेगी और न असफल होने पर कोई अधीरता या दुःख।

—रस्किन

फ़ायदा

नाजायज़ फ़ायदेकी उम्मेद नुक़सानकी शुरूआत है।

—डेमोक्रिटस

इस दुनियासे कोई फ़ायदा उठानेपर परलोकमें उससे सौगुना ज़्यादा नुक़सान उठाना पड़ेगा।

—फ़ज़ल अयाज़

फ़िज़ूल

नीतिके बिना राज्य, धर्मके बिना धन, हरिसमर्पणके बिना सत्कर्म, विवेकके बिना विद्या फ़िज़ूल है।

—रामायण

फ़िलॉस्फ़र

सिरसे ही नहीं, बल्कि हृदय और दृढ़ निश्चयसे सच्चा फ़िलॉस्फ़र पूरा बनता है।

—शैफ्ट्सबरी

फ़िलॉस्फ़ी

जो देवत्वमें फ़िलॉस्फ़ी ढूँढ़ता है, वह ज़िन्दोंमें मुर्दे ढूँढ़ता है; जो फ़िलॉस्फ़ीमें देवत्व ढूँढ़ता है, वह मुर्दोंमें ज़िन्दे ढूँढ़ता है।

—वैनिंग

सारी फ़िलॉस्फ़ी दो लफ़्ज़ोंमें है–परिश्रम और परहेज।

—एपिक्टेटस

तमाम फ़िलॉसफ़ीकी उच्चता आत्माको जानना है; और इस ज्ञानका अन्त परमात्माको जानना है। आत्माको जान ताकि तू परमात्माको जान सके; और परमात्माको जान ताकि तू उससे प्रेम कर सके और उसके समान हो सके। तू सम्यग्ज्ञानमें प्रवेश पाता है और दूसरेसे उसमें परिपूर्णता।

—क्वार्ल्स

एक सदीकी फ़िलॉस्फ़ी अगलीकी 'साधारण समझ' होती है।

—वार्डबीचर

फ़ुरसत

फ़ुरसतकी ज़िंदगी और काहिलीकी ज़िंदगी दो चीज़ें हैं।

—फ्रैंकलिन

तुम्हें अपनी दिनचर्या ऐसी बना लेनी चाहिये कि एक क्षण-की भी फ़ुरसत न मिले।

—गांधी

फूल

खिलता हुआ तुच्छातितुच्छ फूल वह विचार दे सकता है जो कि आँसुओंकी पहुँचसे ज़्यादा गहराईपर है।

—वड्सवर्थ

फ़ैसला

सफल होनेके लिये, तुरन्त फ़ैसला कर डालनेकी शक्तिका होना आवश्यक है।

—अज्ञात

जनाब, खुद खुदा भी आदमीपर उसकी उम्र खत्म होने तक फ़ैसला नहीं देता।

—डॉक्टर जॉन्सन

[ब]

बकवाद

मेरे विचारोंकी दृढ़ताने मुझे बकवाद करनेसे बचाया, और प्राकृतिक आभूषणोंकी अनुपस्थितिमें श्रेष्ठताके गहनोंने मुझे सुशोभित कर दिया।

—अबू इस्माइल तुग़राई

बग़ावत

अत्याचारियोंके ख़िलाफ़ बग़ावत ईश्वरकी फ़र्मांबरदारी है।

—फ्रैंकलिन

बचपन

वह करोड़ों जो मेरे पास हैं और वह तमाम जो मैं कर्ज़ ला सकूँ सब दे डालूँ, सिर्फ़ अगर मैं फिरसे बालक हो सकूँ।

—कारनेगी

बचपनके समयकी चर्चा छोड़; क्योंकि उस समयका तारा अब टूट चुका है।

—इब्न-उल-वर्दी

बचाना

अंधाधुन्द बचाना उतना ही बुरा है जितना अंधाधुन्द ख़र्च करना।

—अज्ञात

बच्चे

पुरुष वटवृक्ष हैं, स्त्रियाँ अंगूरलतायें हैं, बच्चे फूल हैं।

—इंगरसोल

बड़प्पन

सच्चा बड़प्पन स्थानसे कभी नहीं मिलता; और न वह ख़िताबोंके वापिस ले लिये जानेपर कभी खो ही जाता है।

—मैसिंजर

आलस्य, स्त्री-सेवा, अस्वस्थता, जन्म-भूमिसे प्रेम, सन्तोष और भय—ये छह बड़प्पनका नाश करनेवाले हैं।

—नीति

बड़प्पन हमेशा ही दूसरोंकी कमज़ोरियोंपर पर्दा डालना चाहता है; मगर ओछापन दूसरोंकी ऐबजोईके सिवा और कुछ करना ही नहीं जानता।

—तिरुवल्लुवर

बड़बड़

हम सारे दिन कितनी बड़-बड़ करते हैं, यह ध्यान देकर थोड़े दिन देखें तब हमें मालूम होगा कि हम अपनी शक्तिका कितना व्यर्थ व्यय करते हैं। धनुषसे छूटा हुआ बाण जैसे वापिस नहीं आता, उसी तरह एकबार फ़िज़ूल गई हुई शक्ति फिर प्राप्त नहीं होती।

—विवेकानन्द

बदनामी

बदनामीसे छूटनेका सबसे शर्तिया और फ़ौरी इलाज अपनेको सुधार लेना है।

—डिमॉस्थनीज़

बदनामी गृद्धोंको तो माफ़ कर देती है, मगर कबूतरोंको बुरा भला कहती है।

—जुवेनल

जब ज़मीर पाक है तो वह कटु विद्वेषपर, घोर बदनामी पर, विजय प्राप्त कर लेता है; लेकिन अगर उसमें ज़रा-सा भी धब्बा हुआ तो अपशब्द कानोंमें हथौड़ोंकी तरह लगते हैं।

—अलेग्जेंडर पुश्किन

बदला

बदला स्कूली छोकरोंकी बकवास है, समझदार राज-नीतिज्ञोंकी नहीं।

—एनन

मेरा हृदय विशाल है, इसलिये मैं ऐसा नहीं हूँ कि बदला लेनेके विचारसे गाली-गलौज करूँ।

—एक क़वि

वह जो बदला लेनेकी सोचता है अपने ही ज़ख्मोंको हरा रखता है, जो कि वरना भर कर अच्छे हो गये होते।

—बेकन

बदला लेते वक़् इन्सान महज़ उसी नीची सतहपर है जिस पर उसका दुश्मन है, लेकिन उसे दरगुज़र करनेमें वह उससे उच्चतर है, क्योंकि क्षमा करना शाहाना कार्य है। दोष से बचकर निकलना इन्सानकी शान है।

—अज्ञात

क्या किसीने तेरे प्रति अपराध किया है? वीरतापूर्वक उसका बदला ले—उसे नगण्य गिन, और काम शुरू हो गया; उसे क्षमा कर दे, और वह पूरा हो गया। वह अपनेसे नीचे है जो किसी ईज़ासे ऊपर नहीं है।

—क्वार्ल्स

बनठन

हर आदमीमें उतनी ही बन-ठन होती है जितनी कि समझकी उसमें कमी होती है।

—पोप

बनाव-चुनाव

सारा बनाव-चुनाव ग़रीबीकी अमीर दिखनेके लिये निरर्थक और उपहासात्मक कोशिश है।

—लेवेटर

बनावट

हम उन गुणोंके कारण जो हममें हैं कभी इतने हास्यास्पद नहीं बनते, जितने उन गुणोंके कारण जिनके धारी होनेका हम ढोंग करते हैं।

—ला रोशे

बन्दा

उस रहमान (दयालु ईश्वर) के सच्चे बन्दे वे हैं जो आजिज़ी (दीनता) के साथ झुककर धरतीपर चलते हैं, और जब जाहिल लोग उनसे उलटी सीधी बात कहते हैं तो वे जवाब देते हैं—'सलाम'।

—क़ुरान

बन्धन

प्रिय वस्तुओंसे ही शोक उत्पन्न होता है और प्रियसे ही भय। जो प्रिय वस्तुओंके बन्धनसे मुक्त है उसे न शोक है, न भय।

—बुद्ध

वे काम ही आदमीको बंधनमें डालते हैं जो "यज्ञ" के तौर पर नहीं यानी दूसरोंकी सेवा या दूसरोंके फ़ायदेके लिये नहीं बल्कि अपनी खुदग़र्ज़ीके लिये किए जावें।

—गीता

जिसका मन उसके वशमें है, जो दुईसे ऊपर (द्वन्द्वातीत) है, जो किसीसे डाह नहीं करता (विमत्सरः), जो हर काम क़ुर्बानी (यज्ञ) के तौर पर यानी दूसरोंके भलेके लिये और ईश्वरके लिये करता है, वह अपने कामोंसे बन्धनमें नहीं फँसता।

—गीता

बन्धनमें कौन है ? विषयी। विमुक्ति क्या है ? विषयोंका त्याग।

—शंकराचार्य

बन्धु

हर देशमें बन्धु मिल जाते हैं।

—रामायण

बरकत

कर्त्तव्यपालन सबसे बड़ी बरकत है।

—अज्ञात

स्वास्थ्य सबसे अच्छा वरदान है; सन्तोष सबसे बढ़िया धन है, सच्चा मित्र सबसे बड़ा आत्मीय है; निर्वाण उच्चतम आनन्द है।

—बुद्ध

बर्ताव

बर्ताव वह आईना है जिसमें हर एक अपना प्रतिबिम्ब दिखलाता है।

—गेटे

हमेशा ऐसे बर्ताव करो मानो कुछ नहीं हुआ, परवाह नहीं कुछ भी हो गया हो।

—आर्नोल्ड बैनेट

बड़े लोगोंके सामने कानाफूसी न करो और न किसी दूसरे के साथ हँसो या मुस्कराओ।

—तिरुवल्लुवर

जो कोई राजाओंके साथ रहना चाहता है उसको चाहिये कि आगके सामने बैठकर तापनेवाले आदमीकी तरह व्यवहार करे। उसको न तो अति समीप जाना चाहिये न अति दूर।

—तिरुवल्लुवर

बल

बल तो निर्भयतामें है; शरीरमें माँस बढ़ जानेमें नहीं।

—गांधी

बल, शक्ति नहीं है; कुछ लेखकोंमें मांस-पेशियाँ अधिक होती हैं, प्रतिभा कम।

—जोवर्ट

क्षत्रियका बल तेजमें है; ब्राह्मणका क्षमा में।

—अज्ञात

बलवा

श्रीमन्तलोग जब ग़रीबोंके लिये कुछ करते हैं, तब धर्म या दान कहलाता है परन्तु जब ग़रीब लोग श्रीमन्तोंके लिये कुछ करते हैं तो वह अराजकता या बलवा कहलाता है।

—पालशिरर

बला

अगर कोई बला शिरपर आन पड़े और आत्मा उससे पीड़ित न हो, तो वह बला सुगमताके साथ टल जाती है।

—यहिया-बिन-ज़्याद

बलिदान

अगर आज तुझसे कोई महान काम हो तो अपने सब सुखका बलिदान कर दे।

—अज्ञात

बहादुर

बहादुर आदमी जिन दिनों अपने जिस्मपर गहरे घाव नहीं खाता है, वह समझता है कि वे दिन व्यर्थ नष्ट हो गये।

—तिरुवल्लुवर

मैं पानीके भीषण प्रवाहकी तरह अत्यन्त भयंकर अवसरोंपर भी आगे ही बढ़ता हूँ। मानो मेरे लिये इस जानके अलावा कोई और जान भी है जिसके कारण मैं इसकी कुछ परवाह नहीं करता; अथवा मुझे इस जानके साथ दुश्मनी है।

—मुतनब्बी

बहाना

बहाना झूठसे भी बदतर और भयंकरतर चीज़ है, क्योंकि बहाना सुरक्षित झूठ है।

—पोप

बहुभोजी

जैसे जिन घरोंमें सामग्री बहुत भरी रहती है उनमें चूहे भरे हो सकते हैं, उसी तरह जो लोग बहुत खाते हैं वे रोगोंसे भरे होते हैं।

—डायोजिनीज़

उनका चौका उनका मंदिर है, रसोइया उनका पुरोहित, पत्तल उनकी बलिवेदी और उनका पेट उनका परमात्मा है।

—बक

बहुमत

कोई आदमी जो सचाईके हक़में है, जिसकी तरफ़ ईश्वर है, वह बहुमतमें है चाहे वह अकेला ही हो।

—बीचर

ईश्वर जिसके साथ है वह बहुमतमें है।

—फ्रेड्रिक डगलस

बहुमत क्या है ? बहु-मत वाहियात चीज़ है। समझदारी हमेशा अल्पमतके ही साथ रही है।

—शिलर

बाड़ा

मैं किसी बाड़ेका नहीं हूँ और न किसी बाड़ेमें रहना ही चाहता हूँ।

—श्रीमद्‌राजचन्द्र

बाड़ेमें कल्याण नहीं है। अज्ञानीका बाड़ा होता है।

—अज्ञात

बातचीत

बातचीतकी एक महान कला ख़ामोशी है।

—हैज़लिट

आप सब विषयोंपर बातचीत कीजिये सिवाय एकके, यानी, अपनी बीमारियाँ।

—अज्ञात

बातचीत होनी ही चाहिये अपशब्दरहित ख़ुशगवार, प्रदर्शनरहित, बुद्धिपूर्ण, असभ्यतारहित आज़ादाना, अहम्मन्यतारहित विद्वत्तापूर्ण, असत्यरहित नूतन।

—शेक्सपियर

मनुष्योंसे तो जितनी कम हो सके बात करो; ज़्यादा बात तो करो उस ईश्वरसे !

—हयहया

बातून

बातून अच्छे कर्मी नहीं होते, इत्मीनान रक्खो ?

—शेक्सपियर

वह भला मानस जिसे अपनी ही गुफ़्तगू सुननेका शौक़ है, एक मिनटमें इतना बोल जायेगा जितना वह एक महीनेमें भी सुनना गवारा न करेगा।

—शेक्सपियर

जो कभी नहीं सोचते वे हमेशा बोलते हैं।

—प्रायर

बादशाह

बादशाह अपनी स्थितिके गुलाम हैं; वे अपने दिलके कहेपर चलनेकी हिम्मत नहीं कर सकते।

—शिलर

बाधा

अदृश्य नियतिके विधानसे हमारी सबसे बड़ी बाधा ही हमारा सबसे बड़ा योग बन जाती है।

—अरविन्द घोष

आपत्तियोंकी एक सजी सेनाको अपने ख़िलाफ़ खड़ा देखकर भी जिसका मन बैठ नहीं जाता, बाधाओंको उसके पास आनेमें खुद बाधा होती है।

—तिरुवल्लुवर

बाल

महा लम्बे बाल, और अति छोटा दिमाग़।

—स्पेनिश कहावत

बाल-विधवा

मेरा यह दृढ़ मत होता जाता है कि दुनियामें बाल-विधवा जैसी कोई प्रकृति-विरुद्ध वस्तु होनी ही न चाहिये।

—गांधी

बाल-विधवाओंका अस्तित्व हिन्दू धर्मके ऊपर एक कलङ्क है।

—गांधी

बीती

सूरजके चूक जानेपर अगर तुम आँसू बहाते हो तो सितारोंको भी चूक जाते हो।

—टैगोर

बीमारी

बीमारी क़ुदरतका बदला है जिसे वह अपने नियमोंके भंग किये जानेके कारण लेती है।

—शिमन्स

बीमारी मात्र मनुष्यके लिये शर्मकी बात होनी चाहिये। बीमारी किसी भी दोषका सूचक है। जिसका तन और मन सर्वथा स्वस्थ है; उसे बीमारी होनी ही नहीं चाहिये।

—गांधी

बुद्धि

तुम बुद्धिसे इसलिये खाली हो कि नाक तक भोजनसे भरे हुए हो।

—अज्ञात

जिसका बुद्धिरूपी सारथी चतुर हो और मनरूपी लगाम जिसके ताबेमें हो, वह संसारको पार करके ईश्वरके परमपद तक पहुँचता है।

—कठोपनिषद्

समझदार बुद्धिका काम है कि हर एक बातमें झूठको सत्यसे निकालकर अलहदा कर दे, फिर उस बातका कहनेवाला कोई भी क्यों न हो।

—तिरुवल्लुवर

अगर हृदयमें धर्म नहीं है, तो बुद्धिका विकास महज़ सभ्य बर्बरता है, और छिपी हुई हैवानियत।

—बुनसैन

जिसकी इन्द्रियाँ और मन सब तरहसे विषयोंसे रुके हुए हैं उसीकी बुद्धि स्थिर हो सकती है।

—गीता

जिसके पास बुद्धि है उसके पास सब-कुछ है; मगर मूर्खके पास सब-कुछ होनेपर भी कुछ नहीं है।

—तिरुवल्लुवर

अगर किसीकी नज़र शाश्वतपर लगी है तो उसकी बुद्धि वढ़ेगी।

—एमर्सन

बुद्धिका पहला लक्षण है कामका आरम्भ न करो, और अगर काम शुरू कर दिया है तो उसे पूरा करके छोड़ो।

—विनोबा

बुद्धिजीवी

श्रमजीवीसे बुद्धिजीवी क्यों बड़ा है? क्या इसलिये कि वह उनकी मेहनतसे अपना फ़ायदा करना जानता है? तो क्या बड़ा उन्हें कहना चाहिये जो सीधे लोगोंको बेवक़ूफ़ बनाकर अपना उल्लू सीधा करते हैं?

—अज्ञात

बुद्धिमान

बुद्धिमान वह है जो शुरू किये हुए कामको पूरा करके दिखाये।

—अज्ञात

थोड़ा पढ़ना अधिक सोचना; कम बोलना, अधिक सुनना —यही बुद्धिमान बननेका उपाय है।

—टैगोर

इन तीनको बुद्धिमान जानना—जिसने संसारका त्याग कर दिया है, जो मौत आनेके पहले सब तैयारियाँ किये बैठा है, और जिसने पहले ही से ईश्वरकी प्रसन्नता प्राप्त कर ली है।

—हयहया

बुद्धिमान पुरुष सारी दुनियाके साथ मिलनसारीसे पेश आता है और उसका मिज़ाज हमेशा एक-सा रहता है।

—तिरुवल्लुवर

बुद्धिवाद

कोरे बुद्धिवादसे कोई रसोत्पत्ति होना संभव नहीं। हम कितना ही गला सुखायें फिर भी हमको उससे अनुभवकी प्राप्ति नहीं होती।

—विवेकानन्द

बुरा

गाड़ीका सबसे ख़राब पहिया सबसे ज़्यादा आवाज़ करता है।

—फ्रैंकलिन

हम खुद अपना बुरा किये बग़ैर किसीका बुरा नहीं कर सकते।

—देसमहिस

किसीने कभी किसीका बुरा नहीं किया जिसने कि साथ ही अपना और भी बुरा न कर लिया हो।

—होम

दूसरेने हमारा बुरा किया और हमको बुरा लगा, तो दोनों एक ही दर्जेके हैं।

—शीलनाथ

बोलनेवाले बुरा बोलना कब छोड़ेंगे ? —सुननेवाले बुरा सुनना कब छोड़ेंगे ?

—हेअर

दुनिया जिसे बुरा कहती है अगर तुम उससे बचे हुए हो तो फिर तुम्हें न जटा रखनेकी ज़रूरत है न सिर मुड़ानेकी।

—तिरुवल्लुवर

बुराई

बुराईके बदले भलाई करो, बुराई दब जायेगी; बुराईके बदले बुराई करोगे तो बुराई लौटकर आयेगी।

—अरबी कहावत

बुराईसे बुराई पैदा होती है, इसलिये आगसे भी बढ़कर बुराईसे डरना चाहिये।

—तिरुवल्लुवर

बुराई देखनेसे अंधा होना अच्छा।

—नैतिक सूत्र

भूलसे भी दूसरेके सर्वनाशका विचार न करो; क्योंकि न्याय उसके विनाशकी युक्ति सोचता है, जो दूसरेके साथ बुराई करना चाहता है।

—तिरुवल्लुवर

बुराई बुरा करनेमें है, न कि उसको स्वीकार करनेमें।

—अज्ञात

जो आदमी बुराईकी आशंका करनेका आदी है वह अक्सर अपने पड़ौसीमें वही देखता है जो वह स्वयं अपने अंदर देखता है। पवित्रके लिये सब चीज़ें पवित्र हैं, उसी तरह नापाकके लिये सब चीज़ें नापाक।

—हेअर

अगर तेरी बुराई की जाय, और वह सच हो, तो अपनेको सुधार ले; और अगर वह झूठ हो, तो उसपर हँस दे।

—एपिक्टेटस

. जो चीज़ मुझे हर वक्त ध्यानमें रखनी है वह यह है कि मुझे उस ग़लतीके सामने झुकना नहीं है जिसे मैं बुरा समझता हूँ।

—थोरो

बेईमानी

सिर्फ़ एक चीज़ है जिससे तुम्हें डरना है। अपने प्रति, और इसलिये परमात्माके प्रति, बेईमान होना। अगर तुम वह काम नहीं करोगे, जिसे तुम सही समझते हो, और वह बात नहीं कहोगे, जिसे तुम सत्य मानते हो, तो निस्सन्देह तुम कमज़ोर हो, तुम कायर हो, तुमने परमात्माका साथ छोड़ दिया है।

—किंग्सले

वह आदमी जो किसी समस्याके दोनों पहलुओंपर ग़ौर नहीं करता बेईमान है।

—लिंकन

बेड़ियाँ

पद और धन सुनहरी बेड़ियाँ हैं, पर हैं वे बेड़ियाँ ही।

—रफ़ीनी

कोई आदमी अपनी बेड़ियोंसे प्रेम नहीं करता, चाहे वे सोनेकी ही बनी हों।

—अंग्रेज़ी कहावत

बेवक़ूफ़

हर शख्स तीन जगह बेवक़ूफ़ दिखाई देता है, एक आईनेके सामने, दूसरे औरतके सामने, तीसरे बच्चेके सामने।

—अज्ञात

कोई बेवक़ूफ़ अपने कोटपर सोनेके बेल-बूटे लगवा सकता है, लेकिन फिर भी वह बेवक़ूफ़का ही कोट है।

—रिवेरल

जब बेवक़ूफ़को गुस्सा आता है तो वह अपना मुँह खोल देता है और आँखें बन्द कर देता है।

—अज्ञात

बेवक़ूफ़ी

सबसे हसीन बेवक़ूफ़ी ज्ञानको अत्यन्त बारीक कातना है।

—फ्रैंकलिन

बेहूदगी

हम बहुत-सी बेहूदगीको पाकीज़गी समझे बैठे हैं; महज़ इसलिये कि 'बड़े आदमियों' ने उसकी इजाज़त दे रक्खी थी।

—अज्ञात

बोध

पूर्ण बोधके चार भाग हैं; विवेकशीलता, न्यायप्रियता, वीरता और सच्चरित्रता।

—प्लेटो

बोलना

बुद्धिमान तो पसोपेशमें रहता है कि कहाँ बोलना शुरू करे, पर मूर्ख कभी नहीं जानता कि कहाँ खत्म करे। उसकी जीभ जंगली जानवरकी तरह है कि जहाँ पगहा तुड़ाया कि फिर रुकना नहीं जानता।

—अज्ञात

पशु न बोलनेसे कष्ट उठाता है और मनुष्य बोलनेसे ।

—लुक़मान

जिस तरह घनी पत्तियोंवाले पेड़में फल कम लगते हैं, उसी तरह बहुत बोलनेवालेमें बुद्धि कम पायी जाती है ।

—अज्ञात

पहले सोचना, फिर बोलना; पहले बुनियाद फिर दीवार ।

—सादी

बोली

बोली मनका चित्र है, लेखनी मनकी जीभ ।

—बेकन

वंशीकी ध्वनि प्यारी और सितारका स्वर मीठा है— ऐसा वे ही लोग कहते हैं, जिन्होंने अपने बच्चोंकी तुतलाती हुई बोली नहीं सुनी है ।

—तिरुवल्लुवर

ब्रह्म

घट वग़ैरहसे भी ब्रह्म अधिक स्पष्ट होनेसे और स्वप्रकाश होनेसे ब्रह्मज्ञानीके चित्तका निरोध आसानीसे हो जाता है ।

—अज्ञात

ब्रह्मस्वरूपकी अवस्था स्वतन्त्र है; स्वसत्ता-स्फूर्तिमें दूसरे की अपेक्षा नहीं ।

—अज्ञात

'प्रियं ब्रह्म' । ईश्वर प्रेममय है । ऐसा श्रुतिका वचन है । भक्तिमार्गका बीजमंत्र यही है ।

—विनोबा

'अहं ब्रह्मास्मि' में 'तत्त्वमसि' का निषेध नहीं है ।

—विनोबा

'अहं ब्रह्मास्मि' की अनुभूतिसे इच्छा नष्ट हो जाती है। उपयोग ही रह जाता है।

—स्वामी रामतीर्थ

बुद्धिके द्वारा जो ब्रह्म समझता है वह ब्रह्म जानता ही नहीं। ब्रह्मज्ञान हृदयमें होता है। ब्रह्मज्ञान माने प्रवृत्ति मात्रका त्याग, ऐसा बिल्कुल नहीं। बाहरसे ज्ञानी और अज्ञानी समान ही होंगे। किन्तु दोनोंकी प्रवृत्तियोंके हेतु उत्तर-दक्षिणके समान विरुद्ध होंगे। रामनाम ब्रह्मज्ञानका विरोधी नहीं है।

—गांधी

ब्रह्मचर्य

ब्रह्मचर्य ही जीवन है, वीर्यहानि ही मृत्यु है।

—शिवसंहिता

ब्रह्मचर्य-पालन है तो मुश्किल मगर मुश्किलोंको जीतने के लिये ही तो हम पैदा हुए हैं। आरोग्य प्राप्त करना हो तो इस मुश्किलको जीतना ही होगा।

—गांधी

ब्रह्मचर्यसे स्मृति स्थिर और संग्राहक बनती है। बुद्धि तेजस्विनी और फलवती बनती है; सङ्कल्प-शक्ति बलवती बनती है; और उसके चारित्रमें ऐसा रणकार आ जाता है जो स्वेच्छा-चारीके स्वप्नमें भी नहीं आ सकता।

—गांधी

जिसने स्वादको नहीं जीता वह विषयको नहीं जीत सकता।

—गांधी

दुःखका मूल नाश करनेके लिये ब्रह्मचर्यका व्रत-पालन अत्यन्त आवश्यक है।

—बुद्ध

ईश्वरकी सेवाकी खातिर जिसे ब्रह्मचारी होना है उसे तो जीवनकी सुख-सहूलियतें तजनी ही होंगी, और कठोर तपश्चर्यामें ही उसे रस लेना पड़ेगा। वह भले ही संसारमें रहे, मगर संसारका होकर नहीं रहेगा। उसका आहार, उसका व्यवहार, उसके कार्यका समय, उसके आनन्द, उसका साहित्य, उसकी जीवनके प्रति दृष्टि संसारियोंकी दृष्टिसे भिन्न ही रहेगी।

—गांधी

आधुनिक विचार ब्रह्मचर्यको अधर्म समझता है; अतः कृत्रिम उपायोंसे सन्तति निरोध कर विषय-सेवनके धर्मका पालन करना चाहता है। इसके विरुद्ध मेरी आत्मा विद्रोह करती है। विषयासक्ति संसारमें रहेगी ही किन्तु जगतकी प्रतिष्ठा ब्रह्मचर्यपर है और रहेगी।

—गांधी

मुझे ब्रह्मज्ञान हुआ है, ऐसा कहनेवालेको उसके न होने की पूरी सम्भावना है। वह मूक ज्ञान है, स्वयं प्रकाश है। सूर्यको अपना प्रकाश मुँहसे नहीं बताना पड़ता। वह है, यह हमें दिखाई देता है। यही बात ब्रह्मज्ञानके बारेमें भी है।

—गांधी



[भ]

भक्त

सच्चे प्रभु-प्रेमीके दो लक्षण हैं, स्तुति-निन्दामें समभाव रखना और धर्मके पालन और अनुष्ठानमें कोई लौकिक कामना न रखना।

—ज़ुन्नुन

जो हर हालतमें सन्तुष्ट, पाक, आलस्य-रहित, 'मेरे-तेरे' से ऊपर और दुःखसे परे है, जो नतीजेकी परवाह न कर हमेशा अपने फ़र्ज़के पूरा करनेमें लगा रहता है, वही भक्त ईश्वरको प्यारा है।

—गीता

जो आदमी दोस्त और दुश्मन दोनोंको एक निगाहसे देखता है; जो मान और अपमान दोनोंमें—एक बराबर रहता है; जो सरदी-गरमी, सुख-दुःखमें एकसा है; जिसे मोह नहीं है, जिसके लिये बदनामी और नेकनामी बराबर है; जो फ़ज़ूल नहीं बोलता; जो हर हालतमें राज़ी रहता है; जो किसी घरको अपना घर नहीं मानता; जिसका दिल अडिग है, वह भक्त ईश्वरका प्यारा है।

—गीता

जो कोई परमेश्वरके अनन्य भक्त हैं मैं उनके चरणोंका सेवक हूँ; जातिसे चाहे वे ईसाई हों, हिन्दू हों या मुसलमान हों, समान हैं।

—विवेकानन्द

अग्निके लिये जंगल तोड़कर रास्ता तैयार नहीं करना पड़ता, वही अपना रास्ता देख लेती है। भक्तको परिस्थिति कभी प्रतिकूल नहीं है।

—विनोबा

भक्तिकी चतुराई क्या है? संसारियोंके संसर्गसे अपनेको जहाँ तक बने बचाये रखना।

—अज्ञात

जिससे दुनियाके किसी आदमीको किसी तरहका डर नहीं और न जिसे किसीसे किसी तरहका डर है, जो खुशी, रंज और डरसे ऊपर उठ गया है, वह ईश्वरको प्यारा है।

—गीता

जो न आनन्दसे फूलता है और न दुखोंसे दुखी होता है, जिसे न किसी चीज़के जानेका रंज और न पानेकी खुशी, जिसने अपने लिये अच्छे और बुरे दोनों तरहके नतीजोंका त्याग कर दिया, वह भक्त ईश्वरको प्यारा है।

—गीता

भक्ति

धन्य है वह मनुष्य, जो आदि-पुरुषके पादारविन्दमें रत रहता है; जो न किसीसे प्रेम करता है न घृणा। उसे कभी कोई दुःख नहीं होता।

—तिरुवल्लुवर

ईश्वरके प्रति वृत्ति रखनेसे तुम्हारी उन्नति ही होगी, अवनति होनी तो कभी संभव ही नहीं।

—अबु उस्मान

ईश्वरके साथ जिसकी दोस्ती हुई, उसे दुनियाकी सम्पत्ति-के साथ तो दुश्मनी हुई ही समझ लेनी चाहिये।

—हयहया

एक दिन मैं अपने मनके पीछे पड़ा हुआ था। दूसरे दिन सबेरे ही मुझे सुनाई दिया–'बायजीद, मुझे छोड़कर तू दूसरी चीज़के पीछे क्यों पड़ा हुआ है? मनसे तुझे क्या सरोकार है?'

—बायजीद

जैसे पेड़की जड़को सींचनेसे उसकी सब डालियाँ और पत्ते तृप्त हो जाते हैं, उसी तरह एक मात्र परम पुरुषकी भक्तिसे सब देवी-देवता सन्तुष्ट हो जाते हैं।

—महानिर्वाणतंत्र

जो आदमी सच्ची लगनके साथ ईश्वरकी भक्ति करता है, वह सब गुणों यानी हदोंसे पार होकर ईश्वर ही में लीन यानी फ़ना हो जाता है।

—गीता

जो ईश्वरके सिवा न किसीसे डरता है, न किसीकी आशा रखता है, जिसे अपने सुख-सन्तोषकी अपेक्षा प्रभुका सुख-सन्तोष अधिक प्रिय है, उसीका ईश्वरके साथ मेल है।

—अबु उस्मान

यदि तू ईश्वरके प्रेममें पागल होता तो वज़ू नहीं करता, ज्ञानी होता तो दूसरेकी स्त्रीपर नज़र नहीं डालता और जो ईश्वर-दर्शी होता तो ईश्वरको छोड़कर तेरी नज़र दूसरी ओर नहीं दौड़ती।

—अज्ञात

लौकिक भोगोंसे विमुखता, ईश्वरकी आज्ञाका पालन और ईश्वरेच्छासे जो कुछ हो जाय उसमें प्रसन्नता मानना, सच्ची प्रभु-भक्तिके लक्षण हैं।

—अबु मुर्त्तीज़

सहनशीलता और सत्यपरायणताके संयोग बिना प्रभु-प्रेम पूर्णताको प्राप्त नहीं होता।

—जुन्नुन

भजन

साधु-सन्तोंकी भाषाके पीछे जो कल्पना होती है, वह देखनी चाहिये। वे साकार ईश्वरका चित्र खींचते हैं किन्तु भजन निराकारका करते हैं।

—गांधी

भय

भयको टालो मत, सामने आने दो। उसका पेट चीरकर निकल जानेका इरादा रक्खो।

—हरिभाऊ उपाध्याय

भय मनके लिये वही करता है जो लक़वा शरीरके लिये करता है; वह हमें शक्तिहीन बना देता है।

—अज्ञात

भीरुको भयसे जितनी पीड़ा होती है, उतनी सच्चे साहसी को मरणसे भी नहीं होती।

—सर फ़िलिप सिडनी

आध्यात्मिक क्षेत्रमें भयको स्थान नहीं। जो निर्भीक न हो, इधर क़दम रक्खे ही नहीं।

—प्रज्ञाचक्षु पं० सुखलालजी

इस संसारमें एक ईश्वरका भय दूसरे सब भयोंसे मुक्त करता है।

—जुन्नुन

भयमात्र हमारी कल्पनाकी सृष्टि है। धन, परिवार और शरीरमेंसे ममत्वका निवारण कर देनेके बाद भय कहाँ रह जाता है।

—गांधी

ईश्वरसे डरकर जो काम किया जाता है वह सुधरता है, और जो काम बिना उसके डरके किया जाता है वह बिगड़ता है।

—जुन्नुन

रोगके डरसे आदमी खाना तो बन्द कर देता है, पर दण्ड और मरणके भयसे वह पाप करना नहीं रोकता, कैसा आश्चर्य !

—हयह्या

जो ईश्वरसे डरता है, उससे दुनिया भी डरती है; और जो प्रभुसे नहीं डरता, उसे दुनिया भी नहीं डरती।

—फ़ज़ल अयाज़

भयका मार्ग कब सुगम हो? जब मनुष्य अपने आपको रोगी जानकर, रोग बढ़नेके डरसे, सारी दुनियावी चीज़ोंसे मुँह मोड़ ले।

—जुन्नुन

दमकते हृदय और स्वच्छ अन्तरंगके लिये दुनियामें डरकी कोई बात नहीं है।

—हैसन

भय ख़तरेको टालनेके बजाय उसे बुला लेता है।

—अज्ञात

हर प्रकारकी भयभीतता मूर्खता है।

—अज्ञात

घृणाके बाद, भय सबसे ज़्यादा घातक भावना है।

—अज्ञात

भयावह

अगर तू बहुतोंके लिये भयावह है तो तुझे बहुतोंसे सावधान भी रहना पड़ेगा।

—ऑसंजस

भरोसा

दूसरा सब भरोसा निकम्मा है, एक ईश्वरपर ही विश्वास रखो।

—गांधी

भर्त्सना

तीसरेकी मौजूदगीमें किसीको लानत-मलामत न दो।

—हॉल

भला

जो भलाई करनेमें अति लीन रहता है उसे भला बननेका समय नहीं मिलता।

—टैगोर

पूर्ण रूपसे भले आदमी दो हैं; एक तो वह जो मर गया, और दूसरा वह जो अभी पैदा नहीं हुआ।

—चीनी कहावत

भलाई

दूसरोंको हानि पहुँचाकर अपनी भलाईकी कभी आशा न करो।

—अज्ञात

भलाई करनेका ऐश्वर्य हर व्यक्तिगत सुखोपभोगसे बढ़कर है।

—गे०

अन्य किसी मार्गकी अपेक्षा नेक बनकर हम अधिक भलाई कर सकते हैं।

—रोलेंड हिल

आदमी सारी दुनियाकी क़ीमतपर अपनी भलाई चाहता है।

—अज्ञात

जो दूसरोंकी भलाई करना चाहता है, उसने अपना भला तो कर भी लिया।

—कन्फ़्यूशियस

भलाई करना ही इन्सानकी ज़िन्दगीका एकमात्र शर्तिया सुखद काम है।

—सर फ़िलिप सिडनी

भलाई चाहना पशुता है; भलाई करना मानवता है; भला होना दिव्यता है।

—मार्टिनी

तुमने कोई भलाई की, और उससे तुम्हारे पड़ोसीका भला हो गया। अब तुम्हें इतने मूर्ख बननेकी क्या ज़रूरत है कि तुम इसके भी आगे देखो और नामवरी तथा प्रत्युपकारके लिये मुँह फाड़े रहो?

—आरिलियस

सबसे अच्छी बात वह करता है जो अल्लाहकी ओर लोगोंको बुलाता है और स्वयं नेक काम करता है और फिर कहता है कि मैं मुसलमान हूँ। बुराईको भलाईसे दूर करो और वह जिसे तुमसे शत्रुता थी तुम्हारा दिली दोस्त हो जायगा।

—हज़रत मुहम्मद

जो दूसरोंका भला करता है उसका भला मालिक आप करता है।

—धम्मपद

अगर तुम कोई अच्छा काम करनेवाले हो, तो उसे अभी करो; अगर तुम कोई नीच काम करनेवाले हो तो कल तक ठहरो।

—एनन

भले आदमीके जीवनसे ही भलाई होती रहती है।

—बलवर

भलाई करनेके ऐश्वर्यको जानो ।

—गोल्डस्मिथ

हर व्यक्ति उस तमाम भलाईका ज़िम्मेदार है जो उसकी योग्यताके क्षेत्रके अन्दर है, पर उससे अधिकके लिये नहीं; और कोई नहीं कह सकता किसका दायरा सबसे बड़ा है ।

—हैमिल्टन

मनुष्य किसी बातमें देवोंसे इतने ज़्यादा नहीं मिलते-जुलते जितने कि लोगोंकी भलाई करनेमें ।

—सिसरो

जो दूसरोंकी भलाई करता है, अपनी भी भलाई करता है; भावी फलके रूपमें नहीं, बल्कि उसी वक़्त; क्योंकि नेकी करनेका भान, स्वयमेव विपुल पुरस्कार है ।

—सैनेका

भले लोग ही सुखी हैं, भले लोग ही महान हैं ।

—एम० इज़ेकील

ओ दिल, कोशिश तो कर ! भला बनना कितना आसान है और भला दिखना कितना बोझीला ।

—रकर्ट

भवितव्यता

भवितव्यता जिस बातको नहीं चाहती उसे तुम अत्यन्त चेष्टा करने पर भी नहीं रख सकते; और जो चीज़ें तुम्हारी हैं-तुम्हारे भाग्यमें बदी हैं-उन्हें तुम फेंक भी दो फिर भी वे तुम्हारे पाससे नहीं जावेंगी ।

—तिरुवल्लुवर

भाई

सच्चा भाई वह है जिसको तू अपनी मददके लिये बुलावे तो वह खुशीसे आवे—चाहे जंगमें खूनकी धारें ही क्यों न बहती हों।

—कुराद-बिन-औबाद

कोई आदमी अपने भाईको रौंदकर जगत्-पिता तक नहीं पहुँचता।

—अज्ञात

भाग्य

बुरा समय सिद्धान्तका परीक्षाकाल है—इसके बिना आदमी मुश्किलसे जान पाता है कि वह ईमानदार है या नहीं।

—फ़ीलिंडग

अभागोंकी ओर देखो; तुम उन्हें बुद्धिहीन पाओगे।

—यंग

आजका जो पुरुषार्थ है वही कलका भाग्य है।

—पालशिरर

✓जो तेरे भाग्यमें नहीं है वह तुझे हर्गिज़ न मिलेगा; और जो तेरे भाग्यमें है, वह तुझे जहाँ तू होगा वहीं मिल जायगा।

—सादी

✓जितना भाग्यमें लिखा है उतना हर जगह बिना उद्योग और परिश्रमके भी मिल जायगा और जो भाग्यमें नहीं लिखा है, वह कुबेरकी खुशामद और चाकरीसे भी नहीं मिलेगा।

—अज्ञात

ईश्वरसे डरना भाग्यशाली बननेका लक्षण है। पाप करते रहकर भी ईश्वरकी दयाकी आशा रखना दुर्भाग्यकी निशानी है।

—अबु उस्मान

दो बातें असम्भव हैं; भाग्यमें जितना लिखा है उससे अधिक खाना; और नियत समयसे पहले मरना।

—गुलिस्ताँ

महान् उद्देश्यसे शासित मनुष्यको भाग्य नहीं रोक सकता।

—अज्ञात

भार

स्वेच्छापूर्वक अंगीकार किया हुआ भार, भार नहीं है।

—इटालियन कहावत

भारत-माता

आज हमारी जननी जन्म-भूमि भारतमाँ महाभारतकी द्रौपदीकी-सी हालतमें है, उसे हमारे ही भाइयोंने बाज़ीपर लगा दिया है, वह आपसे अपनी सुरक्षाकी आशा कर रही है।

—गांधी

भाव

लम्पट लोग मंदिरोंमें उपदेश सुनने जाते हैं, मगर उनकी आँखें उपस्थित स्त्रियोंपर गड़ी रहती हैं। और जो चोरी करनेके इरादेसे आते हैं वे तुम्हारे जूते चुराकर चल देते हैं।

—समर्थ रामदास

भावना

अगर विचार रूप है तो भावना रंग।

—एमर्सन

ऐसा कोई कीमिया नहीं जो सीसेके भावोंसे सोनेका चारित्र पैदा कर दे।

—एच० स्पेंसर

जिस मनुष्यको भावनाओंका उफान आता है वह 'हिस्टिरिकल' है।

—गांधी

भावना बच्चों और स्त्रियोंकी चीज़ है।

—नैपोलियन

वाणी-विलाससे विचार अधिक गहराईपर है; विचारसे भावना अधिक गहराईपर है।

—फ्रेंच

भाषण

दुनियामें चलो फिरो तो नेकी और सच्चाईसे रहो और जब बोलो तो धीमी आवाज़से बोलो; सचमुच गधेकी तरह रेंकना अल्लाहको सबसे ज़्यादा नापसन्द है।

—क़ुरान

जो अपनेको शान्त रखना नहीं जानता, कभी अच्छा नहीं बोल सकता।

—प्लुटार्क

केवल भाषणसे तू श्रेष्ठ नहीं बन जायगा; बड़बड़ करनेसे कोई सत्पुरुष नहीं हो जाता।

—रामायण

अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारी तक़रीर प्रभावक हो तो उसको संक्षिप्त करो, क्योंकि अलफ़ाज़ सूरजकी किरणोंकी तरह हैं, जितनी ज़्यादा एकत्रित होंगी उतनी ही तेज़ होंगी।

—सूदे

भाषा

समझमें न आनेवाली भाषा, बिना रोशनीकी लालटेन है।

—अज्ञात

भाषा हमको इसलिये दी गई थी कि हम एक दूसरेसे खुशगवार बातें कह सकें।

—बोवी

भिक्षु

भिक्षु वही है जो संयत है, सन्तुष्ट है, एकान्तसेवी है और अपनेमें मस्त है।

—बुद्ध

भूगोल

भूगोल और दुनियाका इतिहास जवानों और बूढ़ोंको सिनेमाके द्वारा सिखाये जायँ।

—एनन

भूल

भूल करना मनुष्यका स्वभाव है; की हुई भूलको मान लेना और इस तरह आचरण रखना कि जिससे वह भूल फिर न होने पावे–मर्दानगी है।

—गाँधी

सबसे बड़ी भूल कोई कोशिश न करना है।

—अज्ञात

भेद

नौकरसे अपना भेद कहना उसे सेवकसे स्वामी बना लेना है।

—अरस्तू

अपनी आँखों, होठों और कानों सबको बन्द कर ले फिर अगर तुझे अल्लाहका भेद दिखाई न दे तो हमपर हँसना।

—मौलाना रूमी

जो आदमी दूसरेके गुप्त भेदको तुझपर प्रकट कर दे, जहाँ तक बने उसे अपना भेद न दे; क्योंकि जो कुछ वह दूसरेके भेदके साथ कर रहा है, वही तेरे भेदके साथ भी करेगा।

—हज़रत अली

वह भेद जिसे तुम गुप्त रखना चाहते हो, किसीसे भी न कहो; चाहे वह तुम्हारा परम विश्वासी ही क्यों न हो। गुप्त बातको जितनी अच्छी तरह आप स्वयं छिपा सकते हैं, दूसरा न छिपा सकेगा।

—गुलिस्ताँ

जो तुझे यह सलाह देता है कि यह काम तू ही कर, दूसरेको मत करने दे—वह तेरे मनमें अनिष्ट भेदभाव पैदा कर रहा है।

—अज्ञात

जिसने इतना भी लखा दिया कि उसके पास कोई भेद है तो उसने आधा भेद तो खोल दिया है बाक़ी आधा जल्द खुल जायेगा।

—लुक़मान

भेदभाव

तुझमें, मुझमें और अन्योंमें सबको सहन करनेवाला एक विष्णु ही हैं; तू व्यर्थ कोप करता है। सबमें तू आत्माको ही देख; और भेदभावरूपी अज्ञानका त्याग कर।

—अज्ञात

भेंट

भेंटमें मिली हुई चीज़से ख़रीदी हुई सस्ती है।

—अज्ञात

देनेवालेका हृदय भेंट की हुई चीज़को प्यारी और क़ीमती बना देता है।

—ल्यूथर

फूल और फल हमेशा माक़ूल नज़राने हैं।

—एमर्सन

भोग

ज्ञानकी ये सारी बातें मैं भी जानता हूँ; मगर विषय-भोग इन्सानपर हावी आ जाते हैं, और आसानीसे छुड़ाये नहीं छूटते।

—अज्ञात

हमने भोग नहीं भोगे, भोगोंने ही हमें भोग लिया; हमने तप नहीं किया, हम ही तप गये; हमने काल नहीं गुज़ारा, कालने ही हमें ख़त्म कर दिया; हमारी तृष्णा जीर्ण नहीं हुई, हम ही जीर्ण हो गये।

—भर्तृहरि

भोग करनेसे भोगकी इच्छा नहीं बुझती बल्कि ऐसी भड़कती है जैसे घी पड़नेसे आग।

—मनु

इन्द्रियाँ भोग नहीं माँगतीं, भोगसे तृप्त होती हैं, मगर माँगनेवाला, चितानेवाला, यह मन है।

—शीलनाथ

भोगविलास

भोग-विलाससे आदमी नियमसे स्वार्थी और कठोर-हृदय हो जाता है।

—जाफ़री

भोजन

एक बार हलका आहार करनेवाला महात्मा है, दो बार सँभलकर खानेवाला बुद्धिमान् है और इससे अधिक बेअटकल खानेवाला मूर्ख और पशु समान है।

—धम्मपद

पशु चराईसे लौटनेका समय जानता है पर मूर्ख अपने पेटका परिमाण नहीं जानता।

—सीमंड

जब तक तुम्हारा खाना हज़म न हो जाय और खूब तेज़ भूख न लगने लगे तब तक ठहरे रहो और उसके बाद शांतिसे वह खाना खाओ जो तुम्हारी प्रकृतिके अनुकूल है।

—तिरुवल्लुवर

थोड़ा खानेवालेका थोड़ा मर्दन होता है और बहुत खानेवालेका बहुत।

—अज्ञात

जिसने तुम्हें यहाँ भेजा है, उसने तुम्हारे भोजनका प्रबन्ध पहलेसे कर रक्खा है।

—अज्ञात

देखो, जो आदमी बेवकूफ़ी करके अपनी जठराग्निसे परे ठूँस-ठूँसकर खाना खाता है, उसकी बीमारियोंकी कोई सीमा नहीं रहेगी।

—तिरुवल्लुवर

नफ़ीस कोटसे उत्तम भोजन अच्छा।

—बर्गंडियन कहावत

भूखसे कुछ कम खानेसे शरीरमें फुर्ती बनी रहती है, काम करनेको जी चाहता है और आदमी नीरोग रहता है; अघा-कर खानेसे आलस और भारीपन पैदा होता है जिससे पड़ रहनेकी इच्छा होती है और दयाशीलतामें कमी आ जाती है। भूखसे ज्यादा खानेकी आदतसे आदमी बिल्कुल निकम्मा हो जाता है; इससे रोग पैदा होते हैं, उम्र घटती है और परमार्थ मटियामेल हो जाता है।

—धम्मपद

भ्रष्ट

जो बड़ी-बड़ी शक्तियाँ प्राप्त करता है, बहुत संभव है वह मिथ्याभिमानसे और झूठी शानसे फूल उठे; और निश्चय ही वह अपने परमात्मपदको एकदम भूल जाता है।

—रामकृष्ण परमहंस

भ्रष्ट वचन और भ्रष्ट विचार भ्रष्ट आत्माके परिचायक हैं।

—अज्ञात



[म]

मकान

आदमीको मरनेके बाद उसी मकानमें रहना होगा जिसको कि उसने अपनी मृत्युसे पहले बनाया है।

—हज़रत अली

हर जीव अपना मकान बनाता है; लेकिन बादमें वह मकान उस जीवकी हदबन्दी कर लेता है।

—एमर्सन

मक्कार

वह कापुरुष जो तपस्वीकी-सी तेजस्वी आकृति बनाये फिरता है, उस गधेके समान है जो शेरकी खाल पहने हुए घास चरता है।

—तिरुवल्लुवर

स्वयं उसके ही शरीरके पञ्च तत्त्व मन ही मन उसपर हँसते हैं, जब कि वे मक्कारकी चालबाज़ी और ऐयारीको देखते हैं।

—तिरुवल्लुवर

मक्कारी

देखो, जो आदमी अपने दिलसे सचमुच तो किसी चीज़को छोड़ता नहीं मगर बाहर त्यागका आडम्बर रचता है और लोगोंको ठगता है, उससे बढ़कर कठोर-हृदय दुनियामें और कोई नहीं है।

—तिरुवल्लुवर

मज़दूरी

लोग कभी-कभी पूछते हैं—'हर व्यक्तिके लिये मज़दूरी लाज़िमी क्यों होनी चाहिये?' मैं पूछता हूँ, 'हर एकके लिये खाना ज़रूरी क्यों होना चाहिये?' पूछा जाता है कि 'ज्ञानी मज़दूरीका काम क्यों करें? व्याख्यान क्यों न दें?' मैं पूछता हूँ कि 'ज्ञानी भोजन क्यों करे? केवल ज्ञानामृतसे तृप्त क्यों न रहे? उसे खाने, पीने, सोनेको क्या ज़रूरत है?

—विनोबा

मजबूरी

मैं धर्मको जानता हूँ, लेकिन मेरी उसमें प्रवृत्ति नहीं है; मैं अधर्मको जानता हूँ, लेकिन मेरी उससे निवृत्ति नहीं होती। मानो मेरे हृदयमें बैठा हुआ कोई देवता जैसा कहता रहता है वैसा करता रहता हूँ।

—अज्ञात

जिसमें तुम्हारा कोई चारा नहीं उसके लिये अफ़सोस करना बन्द कर दो।

—शेक्सपियर

मज़हब

ग़रीबोंको क़ाबूमें रखनेके लिये मज़हबको एक अच्छा साधन माना जाता रहा है।

—जे. बी. बरी

मज़हबका झगड़ा और मज़हबका पालन शायद ही साथ-साथ चलते हों।

—मंग

मज़ा

हम एक क्षणिक और उच्छृंखल मज़ेकी खातिर देवोंके सिंहासन बेच डालते हैं।

—एमर्सन

मज़ाक़

कड़वी मज़ाक़ दोस्तीका ज़हर है।

—कहावत

हँसी ठट्ठेकी आदत मत डाल; क्योंकि इससे हानि होती है; और हँसी-ठट्ठा न करनेसे लोगोंका मान बढ़ता है।

—इब्न-दहान्

हँसी-ठट्ठा छोड़ दे; क्योंकि बहुतसे हँसी-ठट्ठा करनेवाले तेरी ओर ऐसी आपदायें ला खड़ी करेंगे जिनको तू दूर नहीं कर सकेगा।

—हज़रत अली

मज़ाक़ अपने बराबर वालोंसे करो।

—डेनिश कहावत

मज़ाक़ मित्रको अक्सर खो देती है और दुश्मनको कभी नहीं पाती।

—सिमन्स

किसीसे मसख़री नहीं करना चाहिये; इससे ख़फ़गी पैदा होती है।

—अज्ञात

जो मज़ाक़ करता है वह दुश्मनी मोल लेता है।

—फ्रेंकलिन

मतवाला

उभरती हुई जवानीमें चटक-मटककर चलनेवाले, बता, क्या कभी कोई मतवाला भी नियत स्थानपर पहुँचा है ?

—अबुल-फ़तहिल-बुस्ती

मद

जवानी, सुन्दरता और ऐश्वर्य इनमेंसे हर एकमें मनुष्यको मतवाला बना देनेकी शक्ति है।

—कालिदास

मदद

वे मज़दूरको ग़रीबीमें मदद करनेके लिये उत्सुक हैं, ग़रीबीसे बाहर निकालनेके लिये नहीं।

—एच० एम० हिन्डमन

कोई इतना अमीर नहीं है कि उसे दूसरेकी मददकी ज़रूरत न हो; कोई इतना ग़रीब नहीं है कि दूसरोंका किसी न किसी तरह सहायक न हो सके; विश्वासपूर्वक दूसरोंसे सहायता लेने, और अनुकम्पापूर्वक दूसरोंको सहायता देनेका तो हमारा स्वभाव ही बन जाना चाहिये।

—पोप लियो १८वाँ

मदान्ध

अज्ञको समझाना आसान है, विशेषज्ञको समझाना तो और भी आसान है। लेकिन जो ज़रा सा ज्ञान पाकर मदान्ध हो गया है, उसे समझानेकी ताक़त ब्रह्मामें भी नहीं है।

—भर्तृहरि

मदिरा

अगर तू मनुष्य है तो मदिराको त्याग। भला पागलपनकी हालतमें कोई मनुष्य बुद्धिमानीके साथ उद्योग कर सकता है?

—इब्न-उल-वर्दी

आसमानका गोलार्ध मेरा प्याला है; और चमकती हुई रोशनी मेरी शराब।

—स्वामी रामतीर्थ

मन

यह एक सनातन रहस्य है कि मनुष्यको बनानेवाला मन है।

—अज्ञात

जिस तरह टूटे छप्परमें बारिश घुस जाती है उसी तरह ग़ाफ़िल मनमें तृष्णा दाखिल हो जाती है।

—अज्ञात

जब तक मन अस्थिर और चंचल है तब तक किसीको अच्छा गुरु और साधु लोगोंकी संगति मिल जानेपर भी कोई लाभ नहीं होता।

—रामकृष्ण परमहंस

उत्तम मन शरीरको उत्तम बनाता है।

—अज्ञात

मन ही मनुष्योंके बन्धन और मोक्षका कारण है। जिसने अपनी देह और धनधाममें आपा ठाना वह बँधुआ है; जिसने इनको मिथ्या समझ लिया वही मोक्षको प्राप्त हुआ।

—सर्वोपनिषद्

आदमीका मन इस तरह बना हुआ है कि वह शक्तिका प्रतिरोध करता है और कोमलतासे झुक जाता है।

—सेल्सका संत फ्रांसिस

हर मन अपना ही एक नया कम्पास, एक नया उत्तर, एक नया रुख़ रखता है।

—एमर्सन

चेहरेके भावोंसे, इशारोंसे, चालसे, चेष्टासे, भाषासे, आँखों और मुँहकी हरकतोंसे मनके भेद जाने जा सकते हैं।

—अज्ञात

मनको हर्ष और उल्लासमय बनाओ, इससे हज़ार हानियों-से बचोगे और दीर्घ जीवन पाओगे।

—शेक्सपियर

जो बरकतें सुचालित मनसे प्राप्त होती हैं वे न माँसे मिलती हैं न बापसे न रिश्तेदारोंसे।

—अज्ञात

मन पाँच तरहके होते हैं–(१) मुर्दार मन जैसे नास्तिकोंका, (२) रोगी मन जैसे पापियोंका, (३) अचेत मन जैसे पेट-भरोंका, (४) औंधा मन जैसे कड़ा ब्याज खानेवालोंका, (५) चंगा मन जैसे सज्जनों का।

—पारस भाग

मनुष्यका मन पूर्वजन्मके संबंधको सहज ही जान लेता है।

—कालिदास

हरएक नया मन एक नया वर्गीकरण है।

—एमर्सन

दुर्बल मन खुर्दबीनकी तरह तुच्छ चीज़ोंको तूल देता है, मगर महान् वस्तुओंको ग्रहण नहीं कर सकता।

—चैस्टरफ़ील्ड

मन अभी नहीं रुकता है तो फिर कभी नहीं रुकेगा।

—शीलनाथ

मनको शान्त और पवित्र-विचारपूर्ण रक्खो तो तुम्हारा कोई विरोध नहीं कर सकता। यह नियम है।

—स्वामी रामतीर्थ

जिसका मन मुरीद हुआ वह जगत्-गुरु है। जैसे कच्ची छतमें पानी भरता है वैसे ही अविवेकी मनमें कामनाएँ धँसती हैं। —धम्मपद

हम मनको ठीक तरह नहीं इस्तेमाल कर सकते जब कि शरीर भोजनसे ठसाठस भरा हो।

—सिसरो

अभ्यास और वैराग्यसे मन आसानीसे वसमें आ जाता है।

—गीता

मिथ्यात्वकी ओर खिंचनेवाले मनको सत्य वस्तुओंमें रस नहीं आता।

—होरेस

उस मनुष्यको देखो जिसने विद्या और बुद्धि प्राप्त कर ली है, जिसका मन शान्त और पूरी तरह वशमें है, धार्मिकता और नेकी उसका दर्शन करनेके लिये उसके घरमें आती हैं।

—तिरुवल्लुवर

अपना मन पवित्र रक्खो; धर्मका तमाम सार बस एक इसी उपदेशमें समाया हुआ है बाकी सब बातें शब्दाडम्बर-मात्र हैं।

—तिरुवल्लुवर

देखो, मन हमेशा दिलसे धोखा खाता रहता है।

—गेटे

मनुष्यका मन ही समूचा मनुष्य है।

—नीतिवाक्य

मानव-मनकी एक अतीव अद्भुत दुर्बलता यह है कि वह जो कुछ पसन्द करता है उसे देखनेके लिये अपनेको मना लेनेकी क्षमता रखता है।

—रस्किन

अपने मनको बुरी बातोंसे बचा और उसे ऐसी बातोंके लिये उत्तेजित कर, जिनसे उसकी शोभा बढ़े। ऐसी दशामें तेरा जीवन आनन्दमय होगा और लोग तेरी प्रशंसा करेंगे।

—हज़रतअली

अपने मन लाड़ले बच्चोंकी तरह हैं। लाड़ले बच्चे जैसे हमेशा अतृप्त रहते हैं, उसी तरह हमारे मन हमेशा अतृप्त रहते हैं। इसलिये मनका लाड़ कम करके उसे दबाकर रखना चाहिये।

—विवेकानन्द

मन सब कुछ है; जो कुछ हम सोचते हैं हो जाते हैं।

—बुद्ध

सत्य बातचीतसे नहीं, अध्ययनसे नहीं, सत्य सिर्फ़ ध्यानसे जाना जाता है।

—अज्ञात

पूरे जागे हुए मनका यही अर्थ है कि ईश्वरके सिवाय दूसरी किसी चीज़पर वह चले ही नहीं। जो मन उस परवरदिगारकी ख़िदमतमें लीन हो सकता है, उसे फिर दूसरे किसीकी क्या ज़रूरत?

—राबिया

धर्म-द्रोहीका मन मुरदा; पापीका मन रोगी, लोभी व स्वार्थीका मन आलसी और भजन-साधनमें तत्पर व्यक्तिका मन स्वस्थ होता है।

—हातिम हासम

जो इस मन सरीखा ही चंचल होगा और इससे आठों पहर लड़ेगा, वही इसे मिटावेगा।

—शीलनाथ

मनके रोगी होनेके ये चार लक्षण हैं—(१) उपासनासे आनन्दित न होना, (२) ईश्वरसे डरकर न चलना, (३) ज्ञान प्राप्त करनेके मतलबसे किसी चीज़को न देखना और (४) ज्ञानकी बात सुनकर भी उसके मर्मको न समझना।

—ज़ुन्नुन

मनन

ईश्वर इसलिये बड़ा है कि व्यक्तिको अपनी सत्ता व शक्ति मर्यादित मालूम होती है।

—अज्ञात

शुद्ध अन्तःकरणमें ही सत्य स्फुरित होता है। स्वार्थ व सुख छोड़नेसे ही अन्तःकरण शुद्ध बनता है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

बिना मनन किये पढ़ना, बिना पचाये खानेके समान है।

—बर्क

मनस्वी

ज़मीनपर सोना पड़े या पलंगपर सोना मिल जाय; शाक-भाजी खानी पड़े या स्वादिष्ट भोजन मिल जाय; फटा पुराना कपड़ा मिले या दिव्य वस्त्र मिलें; मनस्वी लोग कार्य सफल करनेके लिये न दुःखको गिनते हैं न सुखको।

—नीति

मालतीके फूलकी तरह मनस्वियोंकी दो ही गतियाँ होती हैं: या तो सब लोगोंके सिरपर विराजना या वनमें ही मुर्झा जाना।

—भर्तृहरि

मनः-स्थिति

अपनी प्रशंसामें जब तक रुचि है तब तक अपनी निन्दासे भी उद्वेग हुए बिना न रहेगा। अपनी सफलतामें जब तक रुचि है तब तक असफलता दुखदायी हुए बिना न रहेगी।

—हरिभाऊ उपाध्याय

मना

किसीको धोखा नहीं देना चाहिये; किसीकी रोज़ी नहीं छुड़ानी चाहिये; किसीका बुरा नहीं सोचना चाहिये।

—अज्ञात

अपने रिश्तेदारोंसे झगड़ना नहीं चाहिये; बलीका मुक़ाबला नहीं करना चाहिये; स्त्री, छोटों, बड़ों और बेवक़ूफ़ोंसे बहस नहीं करनी चाहिये।

—अज्ञात

बुद्धिमानको ऐसा काम नहीं करना चाहिये जो निष्फल हो, जिससे बहुत क्लेश हो, जिसमें सफलता संदिग्ध हो, या जिससे दुश्मनी पैदा हो।

—अज्ञात

मनुष्य

मनुष्यकी परिभाषा 'पैदायशी सिपाही' की जा सकती है।

—कार्लाइल

जो मनुष्य होना चाहता है, वह अवश्य ही किसी मत-विशेषमें दीक्षित नहीं होगा। ...यदि एक अकेला मनुष्य अपने अन्तःकरणपर अदम्यरूपसे दृढ़ रहकर उसके अनुसार कार्य करे, तो यह विशाल जगत् उस मनुष्यके चरणोंपर आ जायगा।

—एमर्सन

मनुष्य समतासे श्रमण होता है; ब्रह्मचर्यसे ब्राह्मण होता है; ज्ञानसे मुनि होता है; तपसे तपस्वी होता है।

—भ० महावीर

इस विचारने मेरे हृदयको बहुत दुखाया कि मनुष्यने मनुष्यका क्या बना डाला है।

—वर्ड्सवर्थ

मनुष्य पशु नहीं है। बहुतसे पशु-जन्मोंके अन्तमें वह मनुष्य बना है। पशुता और पुरुषार्थमें इतना भेद है जितना जड़ और चेतनमें है।

—गांधी

संसारमें तीन तरहके मनुष्य होते हैं:—नीच, मध्यम और उत्तम। नीच मनुष्य, विघ्नके भयसे काम शुरू ही नहीं करते; मध्यम मनुष्य काम शुरू तो कर देते हैं, किन्तु विघ्न आते ही उसे बीचमें ही छोड़ देते हैं; परन्तु उत्तम मनुष्य जिस कामको आरंभ कर देते हैं उसे विघ्नपर विघ्न आने पर भी पूरा ही करके छोड़ते हैं।

—भर्तृहरि

मनुष्य-मात्र ईश्वरका प्रतिनिधि है।

—गांधी

जितना ही मैं मनुष्योंको जानता जाता हूँ, उतना ही मैं कुत्तोंकी प्रशंसा करता हूँ।

—एक अंग्रेज़

साँप और मनुष्यमें क्या फ़र्क़? देखनेमें साँप पेटके बल चलता है, मनुष्य पैरोंपर टटार रहकर चलता है। लेकिन यह दिखाव है। जो मनुष्य मनसे पेटके बल चलता है, उसका क्या?

—गाँधी

हम मनुष्य नहीं हैं। जिसको पहले मनुष्य बननेकी धुन सवार हो गई वही सर्वोत्कृष्ट प्राणी है।

—टैगोर

मनुष्यता

मनुष्यता बड़ी है परन्तु मनुष्य छोटा है।

—बोर्न

हमारा मनुष्यत्व एक दरिद्र वस्तु होता यदि उसमें वह देवत्व भी न होता जो हमारे अन्दर उभरता रहता है।

—बेकन

'जिस मनुष्यको अपने मनुष्यत्वका मान है, वह ईश्वरके सिवा और किसीसे नहीं डरता।

—गांधी

जीवनमें भगवान्‌को अभिव्यक्त करना ही मनुष्यका मनुष्यत्व है।

—अरविन्द घोष

मनोबल

मनोबल ही सुख सर्वस्व है; यही जीवन है; और यही अमरता है। मनोदौर्बल्य ही रोग है, दुःख है और मौत है।

—विवेकानन्द

मनोभाव

देखो, जो आदमी ज़बानसे कहनेके पहले ही दिलकी बात जान लेता है वह सारे संसारके लिये भूषणस्वरूप है।

—तिरुवल्लुवर

मनोरञ्जन

जो अपनी सच्ची हालतका विचार किए बिना ही राग-रंगमें मस्त हो रहे हैं, यदि वे सब अपनी असली हालतको पहचान जायँ तो फिर एक पल भी ये यों व्यर्थ न जाने देंगे।

—हुसेन बसराई

अधिकांश लोगोंको प्रतिभावानोंके उत्कृष्टतम साहित्य और कलाकृतियोंकी अपेक्षा रीछका नाच, चौराहेकी हत्या या सभ्य व्यभिचारका विवरण ही अधिक मनोरंजन लगता है।

—एनन

पढ़नेसे सस्ता कोई मनोरंजन नहीं, न कोई ख़ुशी इतनी चिरस्थायी है।

—लेडी मौन्टेगू

कोई मनोरंजन जो हमारे हृदयको ईश्वरसे हटाता है, पाप है; और अगर त्याग न दिया गया तो वह आत्माकी हत्या कर डालेगा।

—रिचर्ड फ़ुलर

ममत्व

एक तो तू ममत्वकी बाधाको दूर कर दे; और दूसरे हस्तीके मैदानको पार कर जा।

—शब्सतरी

मरण

मरना ही शरीरधारियोंकी प्रकृति है, और जीवित रहना ही विकृति है। घड़ीभर भी साँस लेना ग़नीमत समझना चाहिये।

—कालिदास

मरना तो सबको है, मगर मरनेसे डरना काम कायरका है।

—तुकाराम

मर्याद

कभी कभी मैं द्रव्यहीन हो जाता हूँ, यहाँ तक कि मेरी हीनता बहुत बढ़ जाती है। परन्तु अपनी मर्यादाको स्थिर रखते ही मैं फिर अमीर हो जाता हूँ।

—इब्न-अब्दुल-इल-असदी

मशगूल

जिसके पास करनेको कुछ नहीं है उससे ज़्यादा मशगूल कौन होगा ?

—अज्ञात

महत्ता

महत्ता सदा ही विनयशील होती है और दिखावा पसन्द नहीं करती मगर क्षुद्रता सारे संसारमें अपने गुणोंका ढिंढोरा पीटती फिरती है।

—तिरुवल्लुवर

महत्ता छोटोंके साथ भी नरमी और मेहरबानीसे पेश आती है, मगर क्षुद्रताको तो बस घमण्डकी पुतली ही समझो।

—तिरुवल्लुवर

प्रायः उत्तेजित होनेपर मनुष्य अपना महत्त्व प्रदर्शित करता है।

—कालिदास

महान कार्योंके सम्पादन करनेकी आकांक्षाको ही लोग महत्त्वके नामसे पुकारते हैं; और ओछापन उस भावनाका नाम है जो कहती है कि 'मैं उसके बिना ही रहूँगी।'

—तिरुवल्लुवर

जो महापुरुष अपने महत्त्वकी ओर लक्ष्य नहीं रखता, उसीका महत्त्व सबसे अधिक है। जो अपने महत्त्वका ध्यान रखता है, वह तो सर्वथा महत्त्व हीन है।

—शाहशुजा

महत्त्वाकांक्षा

महत्त्वाकांक्षासे सावधान रह; स्वर्ग अहंकारसे नहीं, नम्रतासे मिलता है।

—मिडिल्टन्

हम प्रेमसे महत्त्वाकांक्षाकी ओर अक्सर चल पड़ते हैं लेकिन कोई महत्त्वाकांक्षासे प्रेमके पास लौटकर कभी नहीं आ पाता।

—अज्ञात

महत्त्वाकांक्षाका एक पैर नरकमें रहता है, भले ही वह अपनी उँगलियोंको स्वर्गोंको छूनेके लिये बढ़ाती रहे।

—लिली

अहंकारी शैतान, दुनियाका सबसे बुरा दुश्मन महत्त्वाकांक्षा।

—ब्लूम फ़ील्ड

जब मैं दुनियवी महत्त्वाकांक्षाओंमें लिप्त रहता हूँ तब मुझमें वह मस्ती रहती है जो कि अभिनय करते समय किसी नटमें रहती है; परन्तु जब मैं उसके प्रभावसे अपनेको हटाकर उन्हें देखता हूँ तो मुझे वह आनन्द आता है जो किसी नाटकके अभिनयको देखते हुए किसी प्रेक्षकको होता है।

—अज्ञात

ऊपरसे जो निःस्वार्थ प्रयास दीख पड़ता है बहुधा उसकी भी प्रेरक शक्ति महत्त्वाकांक्षा और स्पर्द्धा ही होती है।

—सी० जे० होम्स

जिसके लिए दुनिया नाकाफ़ी थी उसके लिये अब एक क़ब्र काफ़ी हो गई।

—सिकन्दर महानके विषयमें

महत्त्वाकांक्षा वह पाप है जिसने फ़रिश्तोंको भी पतित कर दिया।

—शेक्सपियर

सेवा-पंथ छोड़कर तू महत्त्वाकांक्षाके फेरमें क्यों पड़ गया? तेरे किस पापने अमृतका कलश तेरे हाथसे छीनकर यह शराब-का प्याला दे दिया?

—हरिभाऊ उपाध्याय

मनोराज्यके मानी महत्त्वाकांक्षा नहीं है।

—अज्ञात

महात्मा

ईश्वरकी प्रार्थनासे पवित्र हृदयको, जो उसी स्थितिमें, उस प्रभुके चरणोंमें अर्पित कर देता है, अपनी दूसरी सब सँभाल भी उस प्रभुपर ही छोड़ देता है और खुद उसके ध्यान-भजनमें रत रहता है, वही सच्चा महात्मा है।

—राबिया

जो मनुष्य अपने छोटेसे छोटे दोष या पापको बड़ा भयंकर समझता है वह साधु, महात्मा, हो जाता है।

—अज्ञात

महान

जो महानरूपसे नेक नहीं है वह महान नहीं है।

—शेक्सपियर

अरे, मुझे मासूम रहने दे, औरोंको महान बना।

—कैरोलीन

वे ही सचमुच महान हैं जो सचमुच भले हैं।

—अज्ञात

महानतरके लिये महान महान नहीं है।

—सर फ़िलिप सिडनी

महानसे महान पुरुष या स्त्री ९९ प्रतिशत वही है जो तुम हो।

—अज्ञात

सबसे महान आदमी वह है जो दृढ़तम निश्चयके साथ सत्यका अनुसरण करता है।

—सेनेका

बहुतसे विचारोंवाला नहीं एक निश्चयवाला महान बनता है।

—कॉटवस

वास्तविक महान व्यक्तिके तीन चिह्न हैं उदारतापूर्ण योजना, मानवतापूर्ण अमल, साधारण सफलता।

—बिस्मार्क

कोई चीज़ वास्तवमें महान नहीं हो सकती जो कि सत्यमय नहीं है।

—जॉन्सन

जिसे तुम्हारा अन्तःकरण महान समझे वह महान है। आत्माका फ़ैसला हमेशा सही होता है।

—एमर्सन

अभी तक ऐसा कोई वास्तवमें महान आदमी नहीं हुआ जो साथ ही साथ वास्तविक पुण्यात्मा न रहा हो।

—फ्रैंकलिन

वह जो आप लोगोंमें सबसे महान है लाज़िमन् आपका सेवक होगा।

—अज्ञात

मनुष्य ठीक उसी परिणाममें महान बनता है, जिस हद्तक वह मनुष्य-जातिके कल्याणके लिये परिश्रम करता है।

—अज्ञात

सबसे महान व्यक्ति वह है जो अटल प्रतिज्ञाके साथ सत्यका अनुसरण करता है, जो अन्दर और बाहरके सभी प्रलोभनोंका प्रतिरोध करता है, जो भारीसे भारी बोझोंको खुशीसे सहन करता है, सत्य, नेकी और ईश्वरपर जिसकी निर्भरता सर्वथा अडिग है।

—चैनिंग

महान है वह जिसने अपने शत्रुओंको परास्त कर दिया, परन्तु महानतर है वह जिसने उन्हें अपना बना लिया।

—स्यूम

महान है वह आदमी, जो अपने मिट्टीके बरतनका ऐसे आनन्दसे उपभोग करता है मानो वह थाल हो; और वह आदमी भी कम महान नहीं है जिसे अपना थाल मिट्टीके बरतनसे अधिक नहीं है।

—अज्ञात

महानसे प्रेम करना स्वयं लगभग महान होना है।

—नीकर

महान सिर्फ़ इसलिये महान हैं कि हम अपने घुटनोंपर हैं। आइये हम उठ खड़े हों!

—अज्ञात

महान पुरुष वे हैं जो देखते हैं कि किसी भी भौतिकसे आध्यात्मिक शक्ति बढ़कर है, कि विचार दुनियापर शासन करते हैं।

—एमर्सन

आज तक कभी कोई आदमी नक़ल करके महान नहीं बना।

—जॉनसन

धन या कुलीनतासे नहीं बल्कि अच्छे चालचलन और शरीफ़ मिज़ाजसे आदमी महान बनते हैं।

—अज्ञात

महानता

अगर कोई महानताकी तलाश करता है तो उसे चाहिये कि महानताको तो भूल जाय और सत्यकी माँग करे; वह दोनों पा जायेगा।

—होरेसमन

महापुरुषका यह लक्षण है कि वह तुच्छ बातोंको तुच्छ मानकर चलता है और महत्त्वपूर्णको महत्त्वपूर्ण।

—लैसिंग

महापुरुषकी महानता इसीमें है कि वह हर्गिज़ हर्गिज़ निराश न हो।

—थॉमसन

सितारोंको इस बातकी चिन्ता नहीं कि हम जुगनू जैसे दीखते हैं।

—अज्ञात

किसीकी डिग्रियों (उपाधियों) से उसकी महानताका अनुमान न लगा। ऊँटका अनुमान उसकी नकेलसे न कर।

—अज्ञात

सद्गुण ही महानताका ठोस आधार है।

—जॉन्सन

महापुरुष

महापुरुष वह है जिसने बालहृदय नहीं खोया।

—अज्ञात

विपद्कालमें धैर्य, ऐश्वर्यमें क्षमा, सभामें वचन-चातुरी, संग्राममें पराक्रम, सुयशमें अभिरुचि और शास्त्रोंमें व्यसन—ये गुण महापुरुषोंमें स्वभावसे ही होते हैं।

—भर्तृहरि

महान व्यक्तिबाज़ोंकी तरह होते है, वे अपना घोंसला किसी ऊँचे एकान्त स्थानमें बनाते हैं।

—शोपेनहोर

महापुरुष इंच इंच योद्धा होता है, वह चट्टानकी तरह कठोर और शेरकी तरह निर्भीक होता है।

—अज्ञात

महारिपु

आलस, अज्ञान और अश्रद्धा ये तीन 'महारिपु' हैं।

—विनोबा

महिमा

रामचन्द्रजीके लाखों-करोड़ोंकी लागतसे बने मंदिरपर अगर अभागे कौए हग भरें, तो क्या मंदिरकी महिमा कम हो जाती है?

—तुलसीदास

मंदिर

आजकलके पूजा-घरोंपर बड़ा तरस खाना चाहिये। उनमें परिग्रहके सिवा कुछ भी नहीं रहा।

—एमर्सन

माता

पूजाके योग्य सबसे पहिला देवता माता है। पुत्रोंको चाहिये कि माताकी टहल-सेवा तन-मन-धनसे करें। उसे सब तरहसे प्रसन्न करें। उसका अपमान कभी न करें।

—स्वामी दयानन्द

माता पृथ्वीसे भी बड़ी है।

—अज्ञात

ईश्वर हर जगह मौजूद नहीं हो सकता था, इसलिये उसने माताएँ बनाईं।

—ज्यूइश कहावत

मातृप्रेम

ईश्वरी प्रेमको छोड़कर दूसरा कोई प्रेम मातृप्रेमसे श्रेष्ठ नहीं है।

—विवेकानन्द

मान

मान बड़ाई, यमपुर जाई।

—शीलनाथ

बिना मान अमृत पिलाना मुझे नहीं सुहाता। मान सहित विष पिला दे तो मर जाना भी अच्छा।

—रहीम

तिरस्कारमय अमृतसे मानयुक्त इन्द्रायनका प्याला अच्छा। तिरस्कारमय अमृत नरक है और मानयुक्त नरक सर्वश्रेष्ठ स्थान है।

—अन्तरा

मान-मर्यादा प्राप्त कर, चाहे वह नरकमें ही क्यों न मिले; और अपमानको त्याग चाहे वह दायमी स्वर्गमें ही क्यों न हो।

—मुतनब्बी

मान-सहित मरना, अपमान-सहित जीनेसे भला है।

—अज्ञात

"मान घटै नितके घर आये"।

—अज्ञात

शेर भूखके मारे माँदमें हा भले मर जाय, पर कुत्तेका जूठा हर्गिज़ न खायेगा।

—सादी

नाम और मानके पीछे दुनिया तबाह है।

—अज्ञात

मानवता

पशुता-से-मित्रताका लक्षण–त्याग है, धर्म है।

—गांधी

मनुष्य स्वभाव, अपने विकसित रूपमें, लाज़िमी तौरसे मानवतापूर्ण है; प्रेमके बिना वह मानवताहीन है; समझदारी बिना मानवता हीन; अनुशासन बिना मानवता हीन।

—रस्किन

माप

कोई मनुष्य भले ही इतना लम्बा हो कि आकाश छू ले या सृष्टिको मुट्ठीमें ले ले, लेकिन उसका माप आत्मा और हृदयसे ही होना चाहिये।

—वाट्स

माया

जीव परतंत्र है, ईश्वर स्वतन्त्र है। जीव बहुत हैं, ईश्वर एक है। यद्यपि यह दो प्रकारका भेद मायाकृत है, फिर भी वह भगवान्‌की कृपाके बिना करोड़ों उपाय करनेपर भी नहीं जाता।

—रामायण

मायाके दो भेद हैं–अविद्या और विद्या।

—रामायण

मायाके पाशसे छूटनेका प्रयत्न करते समय भी कोमलता और सेवाभाव हमें न छोड़ना चाहिये।

—गांधी

जितनी इन्द्रियगम्य चीज़ें हैं, जहाँ तक सोची जा सकें, सब माया हैं।

—रामायण

मायाचार

मायाचार ही एकमात्र अक्षम्य दुर्गुण है। मायाचारीका पश्चात्ताप भी मायाचार है।

—विलियम हैज़लिट

लपटोंवाली आग मुझे अपनी चमकसे चेतावनी देकर दूर रखती है।

—अज्ञात

मुझे राखमें छिपे बुझते हुए अंगारोंसे बचाना।

—टैगोर

जो सोचता और कुछ है और कहता कुछ और है, मेरा दिल उससे ऐसी घृणा करता है जैसी नरककुण्डसे।

—पोप

वक्र शत्रुके साथ सीधेपनसे पेश आना अपना नाश बुलाना है। विष्णु भगवान् तकने दुष्टोंको नष्ट करनेके लिये हमेशा मायाचारसे काम लिया है।

—अज्ञात

मार्ग

जब तक अन्तःकरणमें आत्मविश्वास पक्का है और परमेश्वर पर भरोसा है तब तक तेरा मार्ग सरल ही है।

—विवेकानन्द

दो बिन्दु निश्चित हुए कि सुरेखा 'निश्चित' तैयार होती है। जीव और शिव ये दो बिन्दु क़ायम किये कि परमार्थ-मार्ग तैयार हुआ।

—विनोबा

देख, तू बुद्धि द्वारा दर्शाये मार्गपर क़ायम रहना।

—एमर्सन

मार्गदर्शन

अचूक मार्ग दिखानेके लिये मनुष्यका अन्तःकरण पूर्ण निर्दोष और दुष्कर्म करनेमें असमर्थ होना चाहिये।

—गाँधी

मालिकी

मालिकी उनकी होनी चाहिये जो सदुपयोग कर सकते हों; न कि उनकी जो जोड़ते और छिपाते हैं।

—एमर्सन

मासूम

मुझे भरोसा है अपनी मासूमियतका, और इसीलिये मैं दिलेर और दृढ़प्रतिज्ञ हूँ।

—शेक्सपियर

माँ

क्या ही अच्छा होता कि मैं तेरे बदलेमें मृत्युकी भेंट होती।

—एक माँ अपने बेटेकी मौतपर

माँ फिर भी माँ है, जीती हुई पवित्रतम वस्तु।

—एस० टी० कॉलेरिज

माँके पैरोंके नीचे जन्नत है–जेरे-क़दमेवाल्दा फ़िरदौसे-बरी है।

—अज्ञात

माँ अपने लड़केकी तारीफ़ दूसरोंकी ज़बानी सुनकर उसके जन्मदिनसे भी ज़्यादा ख़ुश होती है।

—अज्ञात

जब उसके लड़केने शिकायत की कि उसको तलवार छोटी है तो उसकी स्पार्टन माँ बोली—"इसमें एक क़दम जोड़ दे।"

—अज्ञात

माँ होनेसे मनुष्य सनाथ होता है, उसके न होने पर अनाथ हो जाता है।

—महाभारत

फ्रांसकी माताएँ अच्छी हों; उसे सपूत मिल ही जायेंगे।

—नैपोलियन

मैं जो कुछ हूँ, या कुछ होनेकी आशा रखता हूँ, उसका कारण मेरी देवी माँ है।

—लिंकन

जिस वक़्त मनुष्यको माँका वियोग होता है तभी वह वृद्ध होता है, तभी वह दुःखी होता है और तभी उसे सारी दुनिया शून्य लगती है।

—अज्ञात

मांसाहार

जानदारोंको मारने और खानेसे परहेज़ करना सैकड़ों यज्ञोंमें वलि या आहुति देनेसे बढ़कर है।

—तिरुवल्लुवर

अगर दुनिया खानेके लिये मांस न चाहे, तो उसे बेचनेवाला कोई आदमी ही नहीं रहेगा।

—तिरुवल्लुवर

अहिंसा ही दया है और हिंसा ही निर्दयता; मगर मांस खाना एकदम पाप है।

—तिरुवल्लुवर

अगर आदमी दूसरे प्राणियोंकी पीड़ा और यन्त्रणाको एकबार समझ सके, तो फिर वह कभी मांस खानेकी इच्छा न करे।

—तिरुवल्लुवर

जो लोग माया और मूढ़ताके फन्देसे निकल गये हैं वे मांस नहीं खाते।

—तिरुवल्लुवर

भला उसके दिलमें तरस कैसे आयेगा, जो अपना मांस बढ़ानेकी ख़ातिर दूसरोंका मांस खाता है?

—तिरुवल्लुवर

अपने पेटोंको पशुओंकी क़ब्र मत बनाओ।

—अली

मांसाहारी

मांसाहारी मनुष्य प्रत्यक्ष ही राक्षस है।

—अज्ञात

जो आदमी मांस चखता है, उसका दिल हथियारबन्द आदमीके दिलकी तरह नेकीकी ओर राग़िब नहीं होता।

—तिरुवल्लुवर

जो दूसरेके मांससे अपने मांसको बढ़ानेकी इच्छा करता है उससे ज़्यादा नीच और क्रूर कोई नहीं है।

—महाभारत

मिज़ाज

स्वयं उस मनुष्यने कोई अत्यन्त आनन्दी मिज़ाज नहीं पाया जो उन लीचड़ आदमियोंको सहन नहीं कर सकता जिनसे दुनिया भरी पड़ी है।

—ब्रयर

मित्र

सच्चा मित्र वह है जो मुँहपर चाहे कड़वी कहे पर पीछे सदैव बड़ाई करे।

—हरिभाऊ उपाध्याय

सच्चा मित्र वह है जो दर्पणकी तरह तुम्हारे दोषोंको तुम्हें दर्शावे। जो तुम्हारे अवगुणोंको गुण बतावे वह तो खुशामदी है।

—ग़ज़ाली

आदमीको चाहिये कि अपना मित्र आप बने, बाहरी मित्रकी खोजमें न भटके।

—जैन सूत्र

मित्र दुर्लभ है; इसकी माक़ूल वजह यह है कि इन्सान तक मुश्किलसे मिलते हैं।

—जोसेफ़ रो

/ जो कड़वी मगर हितकारी बात कहे उसे सच्चा मित्र समझना, बाक़ी सब नामधारी मित्र हैं।

—अज्ञात

मेरा मित्र वह है जो मेरी सहायता करता है, न कि वह जो मुझपर दया दिखाता है।

—अज्ञात

/ सच्चे मित्र हीरोंकी तरह क़ीमती और दुर्लभ हैं; झूठे दोस्त पतझड़की पत्तियोंकी तरह हर जगह मिलते हैं।

—अज्ञात

मित्रका, हँसी-मज़ाकमें भी, जी नहीं दुखाना चाहिये।

—साइरस

यदि तुम्हारा मित्र धर्म और आचारसे रहित है तो उसे प्यार करनेकी अपेक्षा यह अच्छा है कि तुम उससे सम्बन्ध छोड़ दो।

—अज्ञात

जो छिद्रान्वेषण किया करता है और मित्रता टूट जानेके भयसे सावधानीके साथ बर्तता है, वह मित्र नहीं है।

—बुद्ध

जो तेरा वास्तविक मित्र है, वह तेरी ज़रूरतके वक़्त तुझे मदद देगा।

—शेक्सपियर

तुझे बन्धु-मित्र चाहिये तो ईश्वर काफ़ी है; संगी चाहिये तो विधाता काफ़ी है; मान प्रतिष्ठा चाहिये तो दुनिया काफ़ी है; सान्त्वना चाहिये तो धर्म-पुस्तक काफ़ी है; उपदेश चाहिये तो मौतकी याद काफ़ी है; और अगर मेरा यह कहना तेरे गले नहीं उतरता हो तो फिर तेरे लिये नरक काफ़ी है।

—हातिम हासम

जो सामने तो मीठी मीठी बातें करता है लेकिन पीठ पीछे बुरा सोचता है और दिलमें कुटिलता रखता है, जिसका चित्त साँपकी गतिके समान है ऐसे कुमित्रको छोड़नेमें ही भलाई है।

—रामायण

मित्र ख़ूब दूर रहना चाहते हैं। वे एक दूसरेसे मिलनेकी अपेक्षा अलग रहना पसन्द करते हैं।

—थोरो

जो तुम्हें बुराईसे बचाता है, नेक राहपर चलाता है, और जो मुसीबतके वक़्त तुम्हारा साथ देता है, बस वही मित्र है।

—तिरुवल्लुवर

अपने मित्रको अपने लिये, या अपनेको अपने मित्रके लिये, सस्ता न बना डाल।

—कहावत

मित्रोंके बिना कोई भी जीना पसन्द नहीं करेगा, चाहे उसके पास बाक़ी सब अच्छी चीजें क्यों न हों।

—अरस्तू

प्रकृति पशुओं तकको अपने मित्र पहचाननेकी समझ देती है।

—कॉर्नील

पुराने सच्चे दोस्तसे बढ़कर कोई दर्पण नहीं है।

—स्पेनिश कहावत

दुश्चरित्र आदमीसे न दोस्ती करो न जान-पहिचान। गरम कोयला जलाता है, ठंढा हाथ काले करता है।

—हितोपदेश

मित्र दुःखमें राहत है, कठिनाईमें पथ-प्रदर्शक है, जीवनकी खुशी है, ज़मीनका ख़ज़ाना है, मनुष्याकार नेक फ़रिश्ता है।

—जोसेफ़ हॉल

मित्र बनाओ, मित्र अपने द्वितीय अस्तित्वके समान है।

—अज्ञात

जिसे दोष-विहीन मित्रकी तलाश है वह मित्र-विहीन रहेगा।

—तुर्की कहावत

दुनियामें सब स्वार्थके मित्र हैं, परमार्थ तो उनके सपनेमें भी नहीं है।

—रामायण

सच्चे मित्र जेलखानेमें काम आते हैं, दस्तरख्वानपर तो सभी मित्र मालूम होते हैं।

—अज्ञात

इस दुनियामें कोई ऐसा नहीं है जिससे भलाईकी आशा रक्खी जाय; और न कोई मित्र ही ऐसा है जो उस समयमें साथ दे जब कि कालचक्र धोखा दे बैठता है।

—एक कवि

जो शत्रु मेल-जोलसे मित्र बना लिया जाता है वह डबल शत्रु होता है।

—अज्ञात

जब कि तू किसी मित्रको भूल जाना चाहे तो बहुत दिनों तक उससे मत मिल।

—अज्ञात

आपत्तिमें भी एक गुण है—वह एक पैमाना है, जिससे तुम अपने मित्रोंको नाप सकते हो।

—तिरुवल्लुवर

सौ रिश्तेदारोंसे एक सच्चा दोस्त हमेशा अच्छा।

— इटालियन कहावत

जो स्वयं अपना दोस्त है वह दुनियाका दोस्त है।

—सेनेका

जब तक तेरे पास सम्पत्ति है तब तक खल मित्र तेरे प्रति बड़ी उदारता प्रकट करेगा। पर निर्धनताके समय वह तेरे निमित्त कंजूस हो जायेगा।

—हज़रत अली

नीचोंको जब तक कुछ मिलता जुलता रहता है, तब तक वे मित्र बने रहते हैं। और जब तू उनको कुछ न देगा, तब उनका विष तेरे लिये घातक बन जायेगा।

—हज़रत अली

जब किसी विवेकीने संसारकी परीक्षा की तो उसे ज्ञात हुआ कि संसारमें मित्रके रूपमें कैसे कैसे शत्रु हैं।

—अबू निवास

कभी कभी दुर्भाग्य मित्रोंका स्वरूप लेकर भी आता है।

—अज्ञात

आत्यन्तिक मित्र देवोंकी तरह दुर्लभ हैं, शायद दुर्लभतर।

—जे० एस० मिल

√ जीवनकी आधी मिठास मित्रमें है।

—कहावत

दोषरहित मित्रका पाया जाना अति कठिन है। इसलिये मित्रोंके दोषोंका वर्णन करना उचित नहीं।

—अज्ञात

जिस समय तेरे मित्र तुझसे अलग हों, उस समय तेरी आँखें न भर आईं, तो प्रेमका जो तू दम भरता है, बिल्कुल मिथ्या है।

—मुहज्जिबउद्दीन याकूत

जो लोग तुमसे अधिक योग्यतावाले हैं वे यदि तुम्हारे मित्र बन गये हैं, तो तुमने ऐसी शक्ति प्राप्त कर ली है जिसके सामने तुम्हारी अन्य सब शक्तियाँ तुच्छ हैं।

—तरुवल्लुवर

बहुत ज़्यादा आनेसे या बहुत कम आनेसे दोस्त छूट जाते हैं।

—कहावत

जैसे दोस्त हम चाहते हैं, ख़्वाब और कहानियाँ हैं।

—एमर्सन

मित्रता

"मैं तुझसे डरता हूँ।" "भई क्यों?" "क्योंकि तू 'स्कीमी' है; तुझसे सदा चौकन्ना रहना पड़ता है। मित्रता और इतना चौकन्नापन एक साथ नहीं रह सकते।

—अज्ञात

विशाल-हृदय ही सच्चे मित्र हो सकते हैं; बुज़दिल और कमीने कभी नहीं जान सकते कि सच्ची मित्रताके क्या मानी हैं।

—चार्ल्स किंग्सले

जिससे मित्रता न रही वह कभी सन्मित्र था भी नहीं।

—अँग्रेजी कहावत

असमान मित्रताएँ हमेशा घृणामें समाप्त होती हैं।

—ओ० गोल्ड स्मथ

नीति कहती है कि दोस्ती या दुश्मनी बराबरवालोंसे करे।

—रामायण

वे दोस्तियाँ जहाँ दिल नहीं मिलते बारूदसे भी बदतर हैं, बड़ी बुलन्द आवाज़से टूटती हैं।

—स्वामी रामतीर्थ

मित्रता दो तत्त्वोंसे बनी है : एक सचाई है, और दूसरा कोमलता। मित्रता = सचाई + कोमलता

—एमर्सन

मित्रताका सार है पूर्ण उदारता और विश्वास।

—एमर्सन

सच्चा प्रेम दुर्लभ है, सच्ची मित्रता और भी दुर्लभ है।

—ला फ़ौन्टेन

जब हम देवोंसे मित्रता स्थापित कर लेते हैं तभी हम मनुष्योंमें मित्रताका संचार कर पाते हैं।

—थोरो

इस कठोर दुनियामें मित्रता एक ज़बरदस्त चीज़ है, क्योंकि मित्रतासे आत्मविस्मृति आती है और कोई आदमी जब तक वह अपने 'आपे' को नहीं भूल जाता महान कार्य नहीं कर पाता।

—अज्ञात

परस्पर सात बातें होनेसे या सात क़दम साथ चलनेसे ही सज्जनोंमें मित्रता हो जाती है।

—कालिदास

जीवनमें मित्रतासे बढ़कर सुख नहीं।

—जॉनसन

यदि मित्रता मुझे दृष्टिविहीन कर दे, यदि वह मेरे दिनको अंधकारपूर्ण बना दे, तो मुझे वह लवलेश नहीं चाहिये।

—थोरो

बिला शक इन्सानका फ़ायदा इसीमें है कि वह बेवक़ूफ़ोंसे दोस्ती न करे।

—तिरुवल्लुवर

योग्य पुरुषोंकी मित्रता दिव्य ग्रन्थोंके स्वाध्यायके समान है; जितनी ही उनके साथ तुम्हारी घनिष्ठता होती जायगी, उतनी ही अधिक .खूबियाँ तुम्हें उनके अन्दर दिखाई देती जायँगी।

—तिरुवल्लुवर

जो लोग मुसीबतके वक़्त धोखा दे जाते हैं, उनकी मित्रताकी याद मौतके वक़्त भी दिलमें जलन पैदा करेगी।

—तिरुवल्लुवर

योग्य पुरुषोंकी मित्रता बढ़ती हुई चन्द्रकलाके समान है, मगर बेवक़ूफ़ोंकी दोस्ती घटते हुए चाँदके समान है।

—तिरुवल्लुवर

पाक-साफ़ लोगोंके साथ बड़े शौक़से दोस्ती करो; मगर जो तुम्हारे अयोग्य हैं उनका साथ छोड़ दो, इसके लिये चाहे तुम्हें कुछ भेंट भी देनी पड़े।

—तिरुवल्लुवर

नीचोंकी मित्रतासे बच, क्योंकि वह शुद्ध भाव रखकर मित्रता नहीं करते, बल्कि बनावटसे काम लेते हैं।

—हज़रतअली

मित्रता दो शरीरोंमें एक मन है।

—अरस्तू

बेवक़ूफ़से दोस्ती करना रीछको गले लगाना है।

—अफ़गान कहावत

मित्रता ऐसा पौधा है जिसे अक्सर पानी देते रहना चाहिये।

—जर्मन कहावत

जान लो कि छोटे छोटे उपहारोंसे मित्रता ताज़ी रहती है।

—मन्तेको

अच्छी मित्रता वह है जिसे आत्मा पसन्द करे।

—अज्ञात

जो दोस्तियाँ बराबरीकी नहीं होतीं हमेशा नफ़रतमें ख़त्म होती हैं।

—गोल्डस्मिथ

हँसी-दिल्लगी करनेवाली गोष्ठीका नाम मित्रता नहीं है; मित्रता तो वास्तवमें वह प्रेम है जो हृदयको आह्लादित करता है।

—तिरुवल्लुवर

मित्रताका दरबार कहाँ लगता है? बस वहीं पर कि जहाँ दो दिलोंके बीच अनन्य प्रेम और पूर्ण एकता है और जहाँ दोनों मिलकर हर एक तरह से एक दूसरेको उच्च और उन्नत बनानेकी चेष्टा करें।

—तिरुवल्लुवर

मौन या उपेक्षासे बहुत-सी मित्रताएँ समाप्त हो जाती हैं।

—कहावत

मित्र-रहित

कंगाल है मित्र-रहित दुनियाका मालिक।

—यंग

मिथ्याचारी

जो मूढ़ आदमी इन्द्रियोंको कर्म करनेसे रोके, लेकिन मनसे इन्द्रियोंके विषयोंका स्मरण करता रहे, वह मिथ्याचारी कहाता है।

—गीता

मिलन

हम जैसे हैं तैसोंसे ही मिलते हैं।

—एमर्सन

अपने मित्रसे कभी-कभी मिला भी न कर ताकि प्रेम बना रहे। जो मित्र बहुत आता-जाता रहता है उसको अवश्य दुखी होना पड़ता है।

—इब्न-उल-वर्दी

तू विद्याकी प्राप्तिके लिये या अपनी हालत सुधारनेके लिये लोगोंसे ज़रूर मिला जुला कर; वरना मिलनेसे कुछ फ़ायदा नहीं, क्योंकि मेल-जोलसे व्यर्थ बकवास ही बढ़ती है।

—एक कवि

मिलाप

बहुतोंका मिलाप और थोड़ोंके साथ अति समागम ये दोनों समान दुःखदायक हैं।

—श्रीमद्राजचन्द्र

मिल्कियत

जो आवश्यकतासे अधिक मिल्कियत एकत्र करता है वह चोरी करता है और चोरीका धन कच्चा पारा है। वह पच नहीं सकता। अन्तमें वह चोरकी मिल्कियत न रहेगी। ऐसा विश्वास रख अपने अहिंसक उपाय हमें करते ही जाना चाहिये।

—गांधी

मुक़दमेबाज़ी

मुक़दमाबाजी करना बिल्लीकी ख़ातिर गाय खोना है।

—चीनी कहावत

मुक़दमाबाज़ीमें कुछ भी निश्चित नहीं है, सिवाय ख़र्चेके।

—बटलर

ज़्यादा मुक़दमेबाज़ीसे बचो; उससे तुम्हारे अन्तरंगपर कुप्रभाव पड़ता है, स्वास्थ्यको हानि पहुँचती है, और मिल्कियत बर्बाद होती है।

—ब्रुयर

मुक्ति

मैं कब मुक्त होऊँगा? जब "मैं" ख़त्म हो जायगा।

—स्वामी रामतीर्थ

मुक्तिके लिये ज़ोर नहीं लगाना पड़ता, वह तो अत्यन्त सरल प्राकृतिक विकास है।

—महात्मा भगवानदीन

शरीरको सक्रिय संघर्षमें रखना और मनको विश्रान्ति और प्रेममय रखना, इसीके मानी हैं यहीं इसी जन्ममें पाप और दुःखसे मुक्ति।

—स्वामी रामतीर्थ

मैं कब मुक्त होऊँगा? जब "मैं" न रहेगा। "मैं" और "मेरा" अज्ञान है; "तू" और "तेरा" ज्ञान है।

—रामकृष्ण परमहंस

मुक्त राममें रमते हैं।

—अज्ञात

इच्छारहितता ही मुक्ति है, और सांसारिक वस्तुओंकी कामना ही बंधन है।

—योगवासिष्ठ

जो अपनी आत्माके अन्दर ही सुख आनन्द और रोशनी पाता है वही परमेश्वरमें लीन होकर मुक्ति प्राप्त करता है।

—गीता

जो आदमी आख़िर तक ऊपरी रूढ़ियों यानी रीति-रिवाजों और कर्म-काण्डमें फँसा रहता है वह मरनेके बाद अन्धेरे रास्तेसे जाकर स्वर्ग और नरकके चक्करमें पड़ता है, और जो इन सब चीज़ोंसे ऊपर उठकर सब जानदारोंको एक निगाहसे देखता हुआ दुनियाकी बेलौस, बेलगाव (निष्काम) और बेग़रज़ (निस्स्वार्थ) सेवामें लगा हुआ शरीर छोड़ता है वह रोशनीके रास्तेसे चलकर मुक्तिकी तरफ़ क़दम बढ़ाता है।

—गीता रहस्य

जो आदमी राग और द्वेष, मुहब्बत और नफ़रत, से हटकर, दुईसे ऊपर उठकर, सब तरहके पापोंसे बचता हुआ, नेक काम करता हुआ, सिर्फ़ एक परमेश्वरकी पूजा करता है वही हक़ीक़तको जान सकता है और वही निजात हासिल कर सकता है।

—गीता

मुक्ति (निजात) के लिये किसी रीति-रिवाजकी ज़रूरत नहीं, ज़रूरत अपने दिलसे मोह, डर और ग़ुस्सेको निकाल कर उसे एक परमेश्वरकी तरफ़ लगानेकी है।

—गीता

अगर हम उस उच्चतर और गंभीरतर चेतनामें जाना चाहें जो भगवानको जानती और उनके अन्दर ज्ञानपूर्वक निवास करती है, तो हमें निम्न-प्रकृतिकी शक्तियोंसे मुक्त होना होगा और भागवत शक्तिकी उस क्रियाके प्रति अपनेको उद्घाटित करना होगा जो हमारी चेतनाको दिव्य प्रकृतिकी चेतनामें रूपांतरित कर देगी।

—अरविन्द घोष

अनासक्तिकी पराकाष्ठा गीताकी मुक्ति है।

—गांधी

अनासक्ति कैसे बढ़े ? सुख और दुःख, दोस्त और दुश्मन, हमारा और दूसरोंका—सब समान समझनेसे अनासक्ति बढ़ती है। इसलिये अनासक्तिका दूसरा नाम समभाव है।

—गांधी

भक्त कवि नरसैंयो कहते हैं: "हरिना जन तो मुक्ति न माँगें, माँगे जन्मो जनम अवतार रे।" इस दृष्टिसे देखें तो 'मुक्ति' कुछ और ही रूप ले लेती है।

—गांधी

जिन लोगोंके दिलोंसे मोह, गुस्सा और डर बिल्कुल जाते रहे, जिन्होंने एक परमेश्वरका सहारा लिया और उसीमें अपना मन लगाया, उन्हें सच्चा ज्ञान मिलता है और आख़िरमें वे उसी परमेश्वरमें लय (फ़ना) हो जाते हैं।

—गीता

यदि कोई मनुष्य अपनी समस्त वासनाओंको सर्वथा त्याग दे तो वह मुक्तिको जिस रास्तेसे आनेकी आज्ञा देता है उसी रास्तेसे आकर उससे मिलती है।

—तिरुवल्लुवर

जो गुणातीत हो जाता है वही इस दुनियासे निजात पाता है।

—गीता

तुम एक साथ इन्द्रियोंके दास और ब्रह्माण्डके स्वामी नहीं हो सकते।

—स्वामी रामतीर्थ

अगर तुम मुझे मुक्त करना चाहते हो तो तुमको मुक्त होना चाहिये।

—एमर्सन

वे ही लोग मुक्त हैं जिन्होंने अपनी इच्छाओंको जीत लिया है; बाक़ी सब देखनेमें स्वतंत्र मालूम पड़ते हैं मगर वास्तवमें बन्धनसे जकड़े हुए हैं।

—तिरुवल्लुवर

दूसरेकी गुलामी न चाहिये तो अपनी गुलामी—आत्म-संयमन—करनेकी तत्परता चाहिये।

—स्वामी रामतीर्थ

जो संसारके प्रवाहके साथ बहता है वह उसके पार नहीं जा सकता।

—अज्ञात

अपने परमात्मस्वरूपमें लीन रहो तो तुम मुक्त हो; अपने मालिक और दुनियाके शासक हो।

—स्वामी रामतीर्थ

मुक्ति हमेशा ज्ञानसे मिलती है। आज कलके ड्यूटी-के-पाबन्द, स्वार्थकी ख़ातिर दौड़-धूप करनेवाले सभ्य गुलामको कर्मकाण्ड पाप और दुःखसे नहीं बचा सकता।

—स्वामी रामतीर्थ

जितना कष्ट यह जीव संसारी चीज़ोंको पानेमें उठाता है उसका कुछ अंश भी आत्मोद्धारमें उठाता तो कभीका मुक्त हो गया होता।

—जैनाचार्य

त्यागके रास्ते चलनेसे 'अमरपुर' आता है।

—स्वामी रामतीर्थ

मुखिया

मुखिया मुखके समान होना चाहिये—खानेपीनेको एक मगर सब अंगोंका विवेकसहित पालन-पोषण करनेवाला।

—रामायण

मुमुक्षु

पानीमें नाव रहे मगर नावमें पानी न रहे, मुमुक्षु दुनियामें रहे मगर दुनिया उसमें न रहे।

—रामकृष्ण परमहंस

मुसाफ़िर

ज्ञानीने हमें मुसाफ़िर कहा है। बात सच्ची है। हम यहाँ तो चन्द रोज़के लिये हैं। बादमें 'मरते' नहीं 'अपने घर जाते' हैं। कैसा अच्छा और सच्चा ख़्याल!

—गांधी

मुसीबत

ईश्वर तुमपर कोई मुसीबत नहीं डालता, तुम ख़ुद अपनी करतूतोंकी बदौलत मुसीबतमें गिरफ़्तार होते हो।

—अज्ञात

मुस्कान

जो चेहरा मुस्करा नहीं सकता अच्छा नहीं है।

—मार्शल

देखो, जो लोग मुस्करा नहीं सकते, उन्हें इस विशाल लम्बे चौड़े संसारमें, दिनके समय भी, अन्धकारके सिवा और कुछ दिखाई न देगा।

—तिरुवल्लुवर

मुस्कराओ; मुस्कान वापिस आयेगी।

—अज्ञात

अगर हमारे होठोंपर मुस्कान है तो जो हमारे इर्द-गिर्द हैं वे भी शीघ्र मुस्करायेंगे।

—अज्ञात

मुस्कानें प्रेमकी भाषा है।

—हेअर

मुँह

आप किसी कुएँको बन्द कर सकते हैं लेकिन किसी आदमीका मुँह बन्द नहीं कर सकते।

—अज्ञात

देखना, तुम्हारा मुँह तुम्हें निगल न जाय।

—अज्ञात

मूँज़ी

क़ुदरतमें ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो ईश्वरसे इतनी दूर हो, या उसके ऐसी हद दर्जे प्रतिकूल हो, जैसा कि लोभी और मक्खीचूस मूँज़ी।

—बैरो

मूँज़ी आदमीके लिये 'उसके पास धन है'—यह न कहकर 'वह धनके पास है' कहना ज़्यादा ठोक होगा।

—अज्ञात

मूढ़

जो मूढ़ हैं वे ही दूसरोंके उपदेशपर चलते हैं।

—अज्ञात

दरिद्र महामना आदमीको पण्डित लोग मूढ कहते हैं।

—विदुर

मूढ आदमीसे ज़मीन और आसमान फ़िज़ूल लड़ते हैं।

—शिलर

मूर्ख

मूर्खको नसीहत देना गुम्बदपर अखरोट फेंकना है।

—फ़ारसी

। अटल नियम बना लो कि मूर्खका विरोध नहीं करना; क्योंकि यदि मूर्ख तुम्हारा मुक़ाबला करने खड़ा हो गया तो तुम्हारा समूचा सम्यक्ज्ञान तुम्हें बचा नहीं पायेगा।

—आर० एम० मिल्ने

ज्ञानकी खानके ख़ज़ाने मूर्खको देना ऐसा है जैसे रत्न मुर्ग़ोंकी ओर और मोती सूअरोंकी ओर फेंकना।

—अज्ञात

मूर्ख लोग सहसा कोई काम कर बैठते हैं और फिर पीछे पछताते हैं।

—रामायण

जहाँ मूर्खोंकी, अज्ञानियोंकी संख्या अधिक है वहाँ धूर्त, धोखेबाज़ भूखों नहीं मरते।

—एक अँग्रेज़ लेखक

मूर्खोंका ख़ान्दान क़दीमी है।

—फ्रैंकलिन

मूर्ख कौन है? बकवादी। मूर्खको चाहिये कि सभामें मुँह न खोले और बुद्धिमान सिर्फ़ सवालका जवाब देनेके लिये। बहुत सुनना और थोड़ा बोलना यही बुद्धिमानका लक्षण है।

—बुज़रचिमिहर

जिन भारोंको मनुष्य सहन कर सकता है, उनमें मूर्खकी बातको सुनना और सहना सबसे कठिन है।

—स्पेंसर

/मूर्खोंसे न मिलो। क्योंकि अगर तुम समझदार हो तो गधे दिखोगे और अगर मूर्ख हो तो और भी ज़्यादा मूर्ख दिखोगे।

—सादी

पत्थर भले ही पिघल जाय, मूर्खका हृदय नहीं पिघलेगा।

—तामिल कहावत

कोई बेवक़ूफ़ ऐसा नहीं हुआ जो अपनी ज़बान बन्द रख सका हो।

—सोलन

मूर्खको जो काम करनेको मना करोगे, वह उस कामको ज़रूर करेगा।

—अज्ञात

मूर्ख बोये या लगाये नहीं जाते, वे अपने आप उगते हैं।

—रूसी कहावत

दुर्गम पर्वतों और भयानक जंगलोंमें हिंस्र पशुओंके साथ घूमना अच्छा, पर मूर्खोंका सम्पर्क इन्द्रभवनमें भी अच्छा नहीं।

—भर्तृहरि

सबका इलाज है, पर मूर्खका इलाज नहीं।

—भर्तृहरि

जो अपने अमृतमय उपदेशसे दुष्टको सन्मार्गपर लाना चाहता है वह सिरसके नाज़ुक फूलकी पंखड़ीसे हीरेको छेदना चाहता है, या एक बूंद शहदसे खारे समन्दरको मीठा करना चाहता है।

—भर्तृहरि

जो परले सिरेके मूर्ख हैं वे ही सदा दूसरोंकी मूर्खताकी बातोंपर ठट्ठे उड़ाया करते हैं।

—गोल्डस्मिथ

जो मनुष्य पढ़ा-लिखा न होनेपर भी घमंडी हो, दरिद्र होकर भी ऊँची ऊँची वासनाओंके भोगनेकी इच्छा करे और बुरे कामोंसे धन पैदा करना चाहे, वह मूर्ख है।

—महाभारत

अपनेको गधा बना डाला तो हर आदमीका बोझा अपनी पीठपर पायेगा।

—डेनिस कहावत

मैं मूर्खसे हमेशा डरता हूँ; कोई कैसे मान सकता है कि वह दुष्ट भी नहीं है।

—हैज़लिट

मूर्ख लोग जो कुछ पढ़ते हैं, उससे अपना अहित करते हैं; और जो कुछ वे लिखते हैं, उससे दूसरोंका अहित करते हैं।

—रस्किन

चतुराईकी उतनी ज़रूरत कभी नहीं होती जितनी कि उस वक़्त जब कि कोई किसी मूर्खसे बहस कर रहा हो।

—चीनी कहावत

मूर्खको सिखाना, मुर्देको ज़िन्दा करनेके समान है।

—रूसी कहावत

जवान सोचते हैं कि बूढ़े मूर्ख हैं; बूढ़े जानते हैं कि जवान मूर्ख हैं।

—चैपमैन

जो अपनी मूर्खतासे भी कुछ न सीख सके वह निपट मूर्ख होना चाहिये।

—हेअर

वह बेवक़ूफ़ है जो सारी दुनियाको और उसके बापको सन्तुष्ट करनेकी कोशिश करता है।

—फ़ोन्टेन

मूर्ख अपनेको ज्ञानी समझता है।

—कहावत

एक आदमी खूब पढ़ा-लिखा और चतुर है और दूसरोंका गुरु है; मगर फिर भी वह इन्द्रिय-लिप्साका दास बना रहता है— उससे बढ़कर मूर्ख और कोई नहीं है।

—तिरुवल्लुवर

मूर्खोंको और जो चाहो तुम सिखा सकते हो, मगर सन्मार्गपर चलना वे नहीं सीख सकते।

—तिरुवल्लुवर

जो अज्ञानी होते हुए भी घमंडी है, जो ग़रीब होते हुए भी उदार है, और जो बिना मेहनत किये धन कमाना चाहता है वह बेवक़ूफ़ है।

—अज्ञात

जो अपना काम छोड़कर पराये काममें लगता है वह बेवक़ूफ़ है।

—अज्ञात

मूर्खको ख़ामोश कर देना बदतहज़ीबी है, मगर उसे अपनी हिमाक़तपर क़ायम रहने देना क्रूरता है।

—फ्रैंकलिन

जो अपनी कार्य-योजनाको प्रकट कर देता है, हर बातमें शंकाशील है, क्षिप्र (फ़ौरी) काममें देर लगाता है वह बेवक़ूफ़ है

—अज्ञात

बेवक़ूफ़ छह बातोंसे पहिचाना जाता है—बिला वज़ह ग़ुस्सा; बेफ़ायदा बोलना; बिना उन्नतिके परिवर्तन; बेमतलब पूछना; अजनबीपर विश्वास करना; और दोस्तोंको दुश्मन समझना।

—अरबी कहावत

मूर्खोंके देशमें लोग महापुरुषोंको अवतार, नबी और महात्मा बना देते हैं, लेकिन उनकी आज्ञाओंपर अमल नहीं करते।

—अज्ञात

मूर्खको, बुद्धिहीन होनेके कारण, अपनी भलाई खुद नहीं सूझती। लेकिन यह सचमुच महान आश्चर्य है कि वह उसे दूसरों द्वारा सुझाये जानेपर भी नहीं सूझती!

—अज्ञात

वे लोग निस्सन्देह मूर्ख हैं जो इस नापाक, कृतघ्न और नाशवान् शरीरके लिये पाप करते हैं।

—अज्ञात

जो हमेशा दूसरोंकी सलाहपर चलता है बेवक़ूफ़ है।

—अज्ञात

मूर्ख, दुःखावस्थाको प्राप्त होनेपर देवोंको दोष देने लगता है मगर अपनी ग़लतियोंको देखनेकी कोशिश नहीं करता।

—अज्ञात

चाहे बादल अमृत बरसावें मगर बेंत नहीं फूलता फलता, चाहे ब्रह्माके समान गुरु मिल जायें मगर मूर्खका हृदय नहीं चेतता।

—रामायण

सूअरोंको मोतियोंसे, गधोंको गुलक़न्दसे, अन्धोंको चिराग़से और बहरोंको सङ्गीतसे क्या फ़ायदा? मूर्खको उपदेश देनेसे क्या फ़ायदा?

—अज्ञात

जो अनिच्छनीयकी इच्छा करता है, इच्छनीयको त्यागता है और बलवानोंसे दुश्मनी मोल लेता है वह बेवक़ूफ़ है।

—अज्ञात

मूर्खता

मैं मानती हूँ कि अपनी वृत्तियोंके अनुसार चलनेमें इतनी मूर्खताएँ नहीं होतीं, जितनी दुनियाका लिहाज़ रखकर चलनेमें।

—लेडी मेरी मोन्टेग्यू

जैसे कुत्ता अपने वमनपर लौटकर आता है, उसी प्रकार मूर्ख अपनी मूर्खतापर लौटकर आता है।

—कहावत

क्या तुम जानना चाहते हो कि मूर्खता किसे कहते हैं? जो चीज़ लाभदायक है उसको फेंक देना और हानिकर पदार्थको पकड़ रखना बस, यही मूर्खता है।

—तिरुवल्लुवर

अपना काम न बनाना ही मूर्खता है।

—अज्ञात

दुःख-प्राप्ति मूर्खताका निश्चित परिणाम है।

—अज्ञात

मूर्खताके सामने देवता तक लाचार हैं।

—अज्ञात

सबसे अधिक असाध्य रोग मूर्खता है।

—पोर्च्युगीज़ कहावत

सन्ततकके दिमाग़में एक मूर्खताका कोना होता है।

—अरस्तू

मूल्य

कोई किसीको समझनेकी कोशिश नहीं करता। जिसे दुनिया धूर्त और बदमाश समझती है उसमें भी काफ़ी सद्‌गुण हो सकते हैं; क्योंकि बाहरी नाम, मान-प्रतिष्ठा किसीके सच्चे और ठोस मूल्यके परिचायक नहीं।

—अज्ञात

मृतक

दरिद्री, रोगी, मूर्ख, प्रवासी और हमेशा सेवा-चाकरी करनेवाले मृतकसमान हैं।

—अज्ञात

शराबी, कामी, कंजूस, मूर्ख, अत्यन्त, दरिद्री, बदनाम, बहुत बूढ़ा, सदारोगी, संततक्रोधी, ईश-विमुख, श्रुति-संत-विरोधी, तन-पोषक, निन्दक और पापी ये चौदह प्राणी जीते हुए भी मुर्देके समान हैं।

—रामायण

मृत्यु

मृत्युमें आतंक नहीं होता। मृत्यु तो एक प्रसन्नतापूर्ण निद्रा है, जिसके पीछे जागरणका आगमन होता है।

—गाँधी

मृत्यु तो मित्र है। क्षणभंगुर शरीरके लिये मोह कैसा? चीनी मिट्टीके बर्त्तनोंसे भी हम कमज़ोर हैं। मृत्युका भय अपने दिलोंसे निकाल देना चाहिये और देहके रहते हुए उसे सेवामें घिस डालना चाहिये।

—गाँधी

मृत्युदंड

दुष्टोंको मृत्युदण्ड देना अनाजके खेतसे घासको बाहर निकालनेके समान है।

—तिरुवल्लुवर

मृदु भाषण

हृदयसे निकली हुई मधुर वाणी और ममतामयी स्निग्ध दृष्टिके अन्दर ही धर्मका निवासस्थान है।

—तिरुवल्लुवर

मेरा

मेरे कौन ? सब मेरे हैं मैं सबका हूँ।

—विनोबा

मेहनत

मेहनतके बग़ैर कामयाबी और ख़ुशीकी उम्मेद मत रखो।

—अज्ञात

मेहनत वह सुनहरी चाभी है जो ख़ुशक़िस्मतीके फाटक खोल देती है।

—नीतिवाक्य

कड़ी मेहनतसे तन्दुरुस्ती नहीं बिगड़ती पर घबराहट, झंझट, चिन्ता, असन्तोषसे उसकी बहुत हानि होती है और निराशा तो आदमीको तोड़ ही डालती है।

—आवबरी

मेहनती

कामचोर शेरसे मेहनती कुत्ता अच्छा है।

—अज्ञात

मेहमान

मेहमानको अपने मेज़बानकी हैसियतके मुताबिक़ बरतना चाहिये।

—अज्ञात

मेहमानदारी

जब घरमें मेहमान हो तब चाहे अमृत ही क्यों न हो, अकेले नहीं पीना चाहिये।

—तिरुवल्लुवर

घर आये हुए अतिथिका आदर-सत्कार करनेमें जो कभी नहीं चूकता, उसपर कभी कोई आपत्ति नहीं आती।

—तिरुवल्लुवर

बुद्धिमान् लोग इतनी मेहनत करके गृहस्थी किस लिये बनाते हैं? अतिथिको भोजन देने और यात्रीकी सहायता करनेके लिये।

—तिरुवल्लुवर

देखो, जो आदमी योग्य अतिथिका प्रसन्नतापूर्वक स्वागत करता है, लक्ष्मीको उसके घरमें निवास करनेसे ख़ुशी होती है।

—तिरुवल्लुवर

अनीचाका फूल सूँघनेसे मुर्झा जाता है, मगर अतिथिका दिल तोड़नेके लिये एक निगाह ही काफ़ी है।

—तिरुवल्लुवर

अतिथि-सरकारमें कसर करना दरिद्रताकी दरिद्रता है।

—पारस भाग

गृहस्थका धर्म है कि घरपर शत्रु भी आवे तो उसका आदर-सत्कार करे, जैसे पेड़ अपने काटनेवालेको भी छाया देता है। अतिथि-सत्कारमें चूकनेवाला पतित होता है।

—मनु

मेहरबानी

उदार बन, खुशमिज़ाज बन, क्षमावान बन; जिस तरह कि क़ुदरतकी मेहरबानियाँ तुझपर बरसी हैं, तू औरों पर बरसा।

—सादी

किसी आदमीको उसके प्रति की गई मेहरबानीकी याद दिलाना और उसका ज़िक्र करना गाली देनेके समान है।

—डिमॉस्थनीज़

चिड़िया सोचती है कि मछलीको उठाकर हवामें ले आना दयाका काम है।

—टैगोर

मैत्री

जैसे बिन्दुका समुदाय समुद्र है, इसी तरह हम मैत्री करके मैत्रीका सागर बन सकते हैं। और जगतमें सब एक दूसरोंसे मित्र-भावसे रहें तो जगताका रूप बदल जाय।

—गांधी

मैं

देहका अभिमान छोड़कर यह जानना कि मैं असंग शिव हूँ, यही रसायन है और कालका काल है।

—अज्ञात

अगर मैं अपने लिये नहीं हूँ तो मेरे लिये कौन होगा? और अगर मैं सिर्फ़ अपने लिये हूँ, तो मैं हूँ ही किसलिये?

—अज्ञात

ईश्वर मुझे मुझीसे बचाये।

—अज्ञात

मैं कौन हूँ? ईश्वरका दिया खानेवाला और शैतानका हुक्म बजानेवाला!

—मलिक दिनार

मोनोडायट

'मोनो डायट' (एक समयमें एक ही चीज़ खाना) में लाभ है ही।

—गांधी

मोक्ष

मनुष्य प्रवृत्त कर्मके सेवनसे देवतुल्य होता है और निवृत्त कर्मके सेवनसे पंच महाभूतमेंसे छूटकर मोक्ष प्राप्त करता है।

—मनु

ज्ञान, भक्ति और कर्मके मिलनेसे आत्मा परमात्मपद प्राप्त करता है।

—अरविन्द घोष

मोक्ष न कर्म धर्मसे मिलती है न धन सन्तानसे, बल्कि इन सबसे निर्बन्ध होने पर।

—कैवल्योपनिषद्

जो मोक्षमार्ग बतलाया गया है वह तो चाहे जिस जाति या वेषसे प्राप्त किया जा सकता है। जो उसका साधन करेगा उसे ही मोक्ष प्राप्त होगा।

—श्रीमद्राजचन्द्र

मार्ग यह है कि सबसे अनासक्त होकर एक चीज़में आसक्ति रक्खे; फिर उससे भी अनासक्त हो जाय तो मोक्ष ही है।

—उड़िया बाबा

हर एकको अपना मोक्ष आप बनाना होता है। उसे अपनी राह भी आप बनानी होती है।

—जैनेन्द्रकुमार

जो सब कामनाओंको छोड़कर निःस्पृह, निर्मम और निरहंकार होकर विचरता है, वही शांति पाता है।

—गीता

मोक्षकी ओर पहला क़दम अनित्य वस्तुओंके प्रति अत्यन्त वैराग्य होना है, उसके बाद शांति, शम, दम, तितिक्षा और सकाम-कर्मों-का-त्याग।

—अज्ञात

यह तो ब्राह्मी स्थितिकी बात है, कि जिस स्थितिको प्राप्त हुआ मनुष्य किसीमें मोहित हुए बिना अन्तकालमें भी इसीमें स्थित रहकर ब्रह्मनिर्वाण (मोक्ष)को पाता है।

—गीता

जो बात मुझे करनी है वह तो है—आत्मदर्शन, ईश्वरका साक्षात्कार, मोक्ष। मेरे जीवनकी प्रत्येक क्रिया इसी दृष्टिसे होती है। मैं जो कुछ भी लिखता हूँ, वह भी इसी उद्देश्यसे, और राजनीतिक क्षेत्रमें जो घूमा सो भी इसी बातको सामने रखकर।

—गाँधी

सब इन्द्रियोंके दरवाज़ोंको बन्द करके मनको अपने अन्दर रोककर ही आदमी···ईश्वरमें लौ लगाए हुए··· परमगति पा सकता है।

—गीता

वही आदमी ईश्वर तक पहुँच सकता है जो किसी भी प्राणीसे वैर या दुश्मनी न रखता हो।

—गीता

जो परमेश्वरको सब जगह रमा हुआ देखकर किसी दूसरेको दुःख देकर अपने हाथसे अपनी हिंसा नहीं करता वही परमगतिको पाता है।

—गीता

मोक्ष या निजात सिर्फ़ उन्हींको मिल सकती है और उन्हींके पाप धुल सकते हैं जिनकी दुविधा मिट गई है; जिन्होंने अपनी खुदीको जीत लिया है, और जो हमेशा सबकी भलाईके कामोंमें लगे रहते हैं।

—गीता

मोह

जो महामोह मद पिये हैं उनके कहेपर ध्यान नहीं देना चाहिये।

—रामायण

चेतना सरीखे चेतन होकर जड़का मोह रखना किंवा जड़वत् होना इसे क्या कहा जाय ?

—विनोबा

जिस तरह पानीसे निकलकर ज़मीनपर आ पड़नेपर मछली तड़फड़ाती है उसी तरह यह जीव राग, द्वेष और मोहके फंदेमें पड़ा तड़पता है।

—बुद्ध

मोहकी ज़ंजीर सिवाय वैराग्यके किसी चीज़से नहीं तोड़ी जा सकती।

—अज्ञात

संसारमें मोह-वुद्धि तभी तक रहती है जब तक अविचार है।

—अज्ञात

जो मनुष्य सौन्दर्यपर मोहित हो जाता है, वह बेबस हो जाता है।

—अज्ञात

लोभ-मोहके दूर होते ही पुनर्जन्म बन्द हो जाता है। जो लोग इन बन्धनोंको नहीं काटते वे भ्रमजालमें फँसे रहते हैं।

—तिरुवल्लुवर

जीवन-रक्षाका मोह, साहसीको उच्च पदोंकी प्राप्तिसे वञ्चित रखता है।

—अबू इस्माइल तुग़राई

मौक़ा

हर दिन, हर हफ़्ता, हर महीना, हर साल तुमको ईश्वर द्वारा दिया गया एक नया मौक़ा है।

—अज्ञात

मौज

जो हर काममें मालिककी मौज निहारता है वह निष्कर्म हो गया और वही सच्चा भक्त है।

—राधास्वामी

मौत

मौत कभी कभी उस आदमीको ज़िन्दा छोड़ देती है, जो उससे नहीं डरता; और उसको मार डालती है जो उससे डरता है।

—मुतनब्बी

हम शत्रुओंको मारनेके लिये उत्तम उत्तम तलवारें और बड़े बड़े भाले तैयार करते हैं। मगर मौत बिना लड़े ही हमारा सफ़ाया कर देती है।

—मुतनब्बी

संसारमें हमसे पहले जो लोग पैदा किये गये थे, अगर वे जीवित रहते तो हम पृथ्वी पर आनेसे रोक दिये जाते।

—मुतनब्बी

मौतसे डरकर जीनेकी बजाय उसके मुँहमें कूदकर मरना कहीं अच्छा है।

—अज्ञात

मरणका ज़िन्दगीसे वैसा ही सम्बन्ध है जैसे कि जन्मका। टहलना क़दमके उठानेमें उतना ही है ज़ितना क़दमके रखनेमें।

—टैगोर

मौतसे डरना बुज़दिलोंका काम है क्योंकि असली ज़िंदगी तो मौत ही है।

—सुक़रात

मौतकी मुहर ज़िंदगीके सिक्केको क़ीमत बख़्शती है; ताकि हम ज़िंदगीसे वह ख़रीद सकें जोकि सचमुच क़ीमती है।

—टैगोर

जो मौतसे डरता है, वह जीता नहीं है।

—कहावत

जो मौतसे नहीं डरता वह जो करना चाहे सो कर सकता है।

—दयाराम

मौत नहीं है। जो ऐसी दिखाई देती है परिवर्तन है; यह चन्दरोज़ा ज़िन्दगी उस दिव्य जीवनका वाहरी भाग है, जिसके दरवाज़ेको हम मौत कहते हैं।

—लौंग.फैलो

मौन

मेरे मौनसे तू क्यों परेशान है? क्या तू ज़बानकी ही बोली समझता है।

—अज्ञात

मौन सब कामोंका साधन है।

—अज्ञात

वास्तवमें चाहे कोई आदमी अविवेकी, अज्ञानी और निर्बुद्धि ही क्यों न हो, पर चुप रहनेसे वह अच्छा ही अनुमान किया जाता है।

—हज़रत अली

, ।तिदिन मौनका महत्त्व मैं देखता हूँ। सबके लिये अच्छा है, लेकिन जो कामोंमें डूबा रहता है उसके लिये तो मौन सुवर्ण है।

—गाँधी

ख़ामोशीके दरख़्तपर शांतिका फल लगता है।

—अरबी कहावत

स्त्रियोंको मौन उनका यथोचित लावण्य प्रदान करता है।

—सोफ़ोकिल्स

। जो ज़्यादा क़ाबू पाते हैं या ज़्यादा काम करते हैं, वे कमसे कम बोलते हैं। दोनों साथ मिलते ही नहीं। देखो, क़ुदरत सबसे ज़्यादा काम करती है, सोती नहीं, लेकिन मूक है।

—गाँधी

। प्रतिक्षण अनुभव लेता हूँ कि मौन सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना ही चाहिये तो कमसे कम बोलो। एक शब्दसे चले तो दो नहीं।

—गाँधी

। मुझे तू अपने मौनके केन्द्रमें ले चल और मेरे हृदयको गीतोंसे भर दे।

—टैगोर

भयसे उत्पन्न मौन पशुता, व संयमसे उत्पन्न मौन साधुता है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

आओ, हम ख़ामोश रहें ताकि फ़रिश्तोंकी कानाफूसियाँ सुन सकें।

—एमर्सन

वाचालता चाँदी है, मौन सोना; वाचालता मनुष्योचित है, मौन देवोचित।

—जर्मन कहावत

जहाँ कौवे कोलाहल कर रहे हों वहाँ कोयलका कूजन क्या शोभा दे? जहाँ खलजन परस्पर वाद-विवाद कर रहे हों वहाँ सज्जनके मौन रहनेमें ही सार है।

—अज्ञात

ओह! आत्मा चुप रहती, ताकि परमात्मा बोल सकता।

—फ़ेनेलन

कोयलने अच्छा किया कि वह बादलोंके आनेपर ख़ामोश रही। जहाँ मेंढक टर्राते हों वहाँ मौन ही शोभा देता है।

—अज्ञात

मौन नींदकी तरह है; वह विवेकको ताज़ा करता है।

—बेकन

पशु तुमसे बोलना नहीं सीख सकते, तुम उनसे चुप रहना सीख सकते हो।

—अज्ञात

प्रत्येक मनुष्य जो वाद-विवादमें चतुर है व्यवहारमें कुशल नहीं होता।

—अज्ञात

यदि बकबकमें मूर्ख विद्वान्से जीत जाय तो कोई आश्चर्य नहीं है क्योंकि साधारण पत्थर ही रत्नको तोड़ता है।

—अज्ञात

कस्तूरी वह है जो स्वयं सुगन्धित हो, वह नहीं है जिसे अत्तार कस्तूरी कहता है।

—अज्ञात

गायनसे भी ज़्यादा संगीतमय है मौन।

—क्रिश्चिना

हमारे पवित्रतम विचारोंका मंदिर मौन है।

—श्रीमती हेल

बेहतर है कि आप ख़ामोश रहें और मूर्ख समझे जायँ, बनिस्बत इसके कि आप अपना मुँह खोलकर तद्विषयक सारा भरम मिटा दें।

—अज्ञात

एक चुप और सौ सुख।

—कहावत

मौलिकता

धोबी बिला धुले हुए कपड़ोंके ढेर अपने घरमें रखता है, मगर वे उसके नहीं हैं। ज्योंहों कपड़े धुल जाते हैं उसका कमरा ख़ाली हो जाता है। वे लोग जिनके अपने मौलिक विचार नहीं हैं धोबीकी तरह हैं। अपने विचारोंमें धोबी न बनो।

—रामकृष्ण परमहंस

मौलिकता अपनेपनमें क़ायम रहना है, और सही सही वह कहना जो हम हैं और देखते हैं।

—एमर्सन

[य]

यश

कुछ लोगोंको यश मिल जाता है, लेकिन उसके पात्र दूसरे होते हैं।

—लैसिंग

हजार वर्षका यश एक दिनके चारित्रपर निर्भर रह सकता है।

—चीनी कहावत

यशकी चमक अन्तिम वस्तु है जिसे ज्ञानी छोड़ता है।

—टेसिटस

मैंने शिखरको पार कर देखा है मगर यशकी बेरंग और वीरान ऊँचाईमें कोई शरण न मिली। प्रकाश फीका पड़नेसे पहले, मेरे रहबर, मुझे शान्तिकी घाटीमें ले चल, जहाँ ज़िन्दगी की फ़सल सुनहरी ज्ञानमें सुफलित होती है।

—टैगोर

यशस्वी होनेका सबसे छोटा रास्ता अन्तरात्माके अनुसार चलना है।

—होम

खुशक़िस्मत है वह जिसका यश हक़ीक़तको पार नहीं कर जाता।

—टैगोर

यज्ञ

असली यज्ञ वह 'ज्ञान' है जिसे एक बार हासिल करनेके बाद आदमी धोखेमें नहीं पड़ सकता। वह ज्ञान यही है कि आदमी तमाम जानदारोंको अपने अन्दर और सबको ईश्वरके अन्दर और सबके अन्दर ईश्वरको देखे।

—गीता

तू जो कुछ करे, जो कुछ खावे, जो यज्ञ (क़ुरबानी) करे, जो तप करे, सब ईश्वरके लिए हो कर।

—गीता

दुनियाके शुरूमें ईश्वरने यज्ञ यानी क़ुरबानीके साथ सब जानदारोंको बनाकर उनसे यह कह दिया कि तुम सब इस यज्ञ (यानी एक दूसरेकी भलाईके कामों) से ही फूलो-फलो और ये एक दूसरेकी भलाईके काम ही तुम्हें सब अच्छी अच्छी चीज़ोंके देनेवाले साबित हों।

—गीता

याचक

तिनका हल्की चीज़ है; तिनकेसे हल्की रुई; और रुईसे हल्का याचक।

—अज्ञात

याचना

लाल-गरम और दहकते हुए लोहेका गोला खा जाना अच्छा मगर असंयत और बदचलन रहना और माँगकर खाना अच्छा नहीं।

—अज्ञात

जब तुम नीच पुरुषोंसे दयाकी प्रार्थना करते हो तब तुम शरीरकी पुष्टि करते हो पर आत्माकी हानि करते हो।

—अज्ञात

याचना की कि धिक्कृत हुए।

—स्वामी रामतीर्थ

सज्जनसे निष्फल याचना भी अच्छी, नीचसे सफल याचना भी अच्छी नहीं।

—कालिदास

"न" करनेवालेकी जान उस वक़्त कहाँ जाकर छिप जाती है जब कि वह "नहीं" कहता है? भिखारीकी जान तो झिड़कीकी आवाज़ सुनते ही तनसे निकल जाती है।

—तिरुवल्लुवर

तुम चाहे गायके लिये पानी ही माँगो, फिर भी ज़बानके लिये याचना-सूचक शब्दोंको उच्चारण करनेसे बढ़कर अपमान-जनक बात और कोई नहीं।

—तिरुवल्लुवर

यात्रा

पानी एक जगह ठहरे रहनेसे बदबूदार हो जाता है; और दूजका चन्द्रमा यात्राके कारण पूर्ण चन्द्र बन जाता है।

—इब्न-उल-वर्दी

जिस स्थानमें तू सफ़र करते हुए ठहरेगा, उसी स्थानमें कुटुम्बियोंके बदले कुटुम्बी और पड़ौसियोंके बदले पड़ौसी मिल जायेंगे।

—अज्ञात

याद

आप याद रखें और ग़मगीन हों इससे लाख दर्जे बेहतर यह है कि आप भूल जायँ और मुसकरायें"

किसी राजाने एक भक्तसे पूछा कि 'तुम्हें कभी मैं याद आता हूँ।' जवाब मिला, 'हाँ, जब मैं ईश्वरको भूल जाता हूँ।'

—सादी

यादगार

अगर मैंने कोई काम स्मरणीय किया है, वह काम मेरी यादगार होगा। —अगर नहीं किया, तो कोई यादगार मेरी स्मृतिको नहीं बनाये रख सकती।

—एजसिलास

युद्ध

अपनी आत्माके साथ युद्ध करना चाहिये। बाहरी शत्रुओंसे युद्ध करनेसे क्या लाभ? आत्माके द्वारा ही आत्माको जीतनेवाला पूर्ण सुखी होता है।

—भ० महावीर

युद्ध बर्बर लोगोंका धंधा है।

—नैपोलियन

संग्रामके दिन अगर कोई कायर तुझे इस डरसे रोके कि समरसेवियोंके घमासानमें शायद तू पिस न जाय तो उसकी बातको तू मत मान; और उसकी बातकी ज़रा भी परवा न करते हुए घमासान युद्धके समयमें भी अगली ही क़तारकी ओर बढ़।

—अन्तरा

युवक

युवकको साधुशील, अध्यवसायी, आशावान, दृढ़निश्चयी और बलिष्ठ होना चाहिये। ऐसे तरुणको यह तमाम पृथ्वी द्रव्यमय हो जाती है।

—अज्ञात

योग

जो कुछ अन्तराय बनकर आये उसे विदा कर देना होगा योगकी यह एक प्रधान शर्त है।

—अरविन्द घोष

योग उसीके दुःखोंको मिटा सकता है जो अपने आहार और विहारमें, यानी खाने पीने और रहन सहनमें, न कोई ज्यादती करता है और न बिल्कुल कमी, जो ठीक बीचके रास्तेपर चलता है, जो अपने सब फ़र्ज़ोंको पूरा करने और कामोंको करनेमें एक बीचका रास्ता पकड़ता है, ठीक सोता भी है और ठीक जागता भी है।

—गीता

'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'—यह पातंजल योग दर्शनका पहला सूत्र है। योग चित्त-वृत्तिका निरोध है; यानी हमारे दिलमें उठती तरंगोंपर अंकुश रखना, उसे दबा देना,यह योग हुआ।

—गाँधी

ज्ञानसे दिखनेवाले सत्यका साधन करनेको ही योग कहते हैं।

—अरविन्द घोष

जिसके घरमें साध्वी व प्रियवादिनी स्त्री नहीं उसको वनमें चला जाना चाहिये; क्योंकि उसके लिये जैसा वन वैसा घर।

—अज्ञात

शीघ्र लेखन यह लेखनमें 'कर्म', शुद्ध लेखन है 'ज्ञान', और सुन्दर लेखन है 'भक्ति'। तीनोंका मेल साधना यह लेखनका 'योग' है। यह दृष्टान्त सर्वजीवनमें लागू किया जाय।

—विनोबा

योगी

जो आदमी अपनी ही तरह सबको एक बराबर देखता है और सबके सुख और दुःखको अपना ही सुख और दुःख समझता है वही सबसे बड़ा योगी है।

—गीता

जो साधनाके हथियारसे दुनियाकी सारी कामनाओंका नाश कर देता है, जिसकी सारी आकांक्षाएँ एक प्रभु-प्रेममें अदृश्य हो जाती हैं, ईश्वर जिसे चाहता है उसीसे जो प्रेम करता है, और जिस प्रकार ईश्वर रखना चाहता है उसी प्रकार जो रहता है, उसीको सच्चा योगी और पुरुषार्थी समझो।

—बायजीद

योग्यता

सवाल यह नहीं है कि आप क्या थे, बल्कि यह कि आप आज क्या हैं ?

—अज्ञात

तुम्हारा सोता हुआ मन जाग जाय, इतनी योग्यता भी क्या अभी तक तुममें नहीं आई ?

—क़ुरान

योद्धा

रणवीर उस समय भी मौतसे भयभीत नहीं होते जबकि घमासान युद्धकी चक्की लोगोंको पीस डालती है।

—अबुल-उल-गौल-उत्त-तहवी

जो मार्गका लुटेरा है वह योद्धा नहीं कहला सकता; बल्कि योद्धा वह है जिसके हृदयमें ईश्वरका भय हो।

—इब्न-उल-वर्दी

[र]

रज़ामन्दी

शांत और रज़ामन्द बैलपर दूना बोझा लादा जाता है।

—कन्नड कहावत

रहस्य

सिर्फ़ एक परमेश्वर ही में मनको लगाओ, उसीकी भक्ति करो, उसीके लिये सब काम करो, उसीके सामने सरको झुकाओ और सब 'धर्मों' को छोड़कर सिर्फ़ एक परमेश्वरका सहारा लो। मुक्ति हासिल करनेका यही एक तरीक़ा है।

—गीता

हक़ीक़तका राज वही आदमी समझ सकता है जो किसीसे डाह न रखता हो।

—गीता

कोई दिमाग़दाँ आजतक क़तई यह न बतला सका कि 'यह सब क्यों है?'

—एमर्सन

जब तुम बाहरी चीज़ोंकी ओर देखोगे और उन्हें पाना और रखना चाहोगे, वे तुम्हारी पकड़में नहीं आयेंगी, दूर भागेंगी मगर जिस वक़्त तुम उनसे मुँह फेर लोगे और ज्योतिस्वरूप अपनी अन्तरात्माके रूबरू होगे, उसी क्षण अनुकूल दिशाएँ तुम्हें तलाश करने लगेंगी—यही नियम है।

—स्वामी रामतीर्थ

ईश्वर अपने रहस्य कायरोंसे नहीं खुलवाता।

—एमर्सन

मूर्खको रहस्य बता दो, वह छतपर चढ़कर उसकी उद्घोषणा करेगा।

—हिन्दुस्तानी कहावत

जगत्पराङ्मुख रहनेवाले सच्चिदानन्दके शांत स्वरूपका अनुभव लेना ईश्वरका ऐश्वर्य नहीं है। उसके शान्त स्वरूपके साथ ही उसके क्रियात्मक रूपका अर्थात् जीव और जगत्का भी आनन्द लेना चाहिये। इस प्रकार सर्वांगीण आनन्द लेना ही जीवनका रहस्य है।

—अरविन्द घोष

अगर तुम अपने रहस्यको किसी दुश्मनसे छिपाये रखना चाहते हो, तो किसी मित्र तकसे उसका ज़िक्र न करो।

—फ्रैंकलिन

तुम मुझसे आध्यात्मिक रहस्यकी बात जानना चाहते हो तो मैं ईश्वर और उसके बन्दोंको अपनी ही तरह प्रेम करनेके अलावा कोई रहस्य नहीं जानता।

—सन्त फ्रांसिस

रहस्यके प्रकट हो जानेपर कोई शोक न करो, और फूलकी तरह आनन्दसे हमेशा खिले रहो। इस बहुरूपिणी दुनिया में पद और प्रतिष्ठा, मान और मर्यादा सभी कुछ मिटने वाले हैं।

—हाफ़िज़

रहस्य यह है कि जबतक मन पूर्णतः शान्त नहीं हो जाता योग नहीं सध सकता, ईश-साक्षात्कारका तेरा मार्ग चाहे कोई-सा हो। योगी मनको वशमें रखता है, मनके वश नहीं होता।

—रामकृष्ण परमहंस

रहनी

वेद पढ़े सो पुत्र हमारा, कथन करे सो नाती।
राह चले सो गुरु हमारा, हम रहनीके साथी॥

—एक कवि

रहबर

कामिल रहबरकी पहिचान यह है कि जब वह दिखाई दे तो खुदा याद आ जाय।

—मुहम्मद

रक्षा

जब ईश्वर नहीं बचाना चाहता, तब न धन बचायेगा, न माता पिता, न बड़ा डाक्टर।

—गांधी

रागद्वेष

आदमीकी इन्द्रियाँ कुछ चीजोंकी तरफ़ तो चाहसे लपकती हैं और कुछ चीज़ोंसे भागती हैं, उनके इस चाहने और भागने-में नहीं आना चाहिये, यह चाह और नफ़रत ही आदमीकी दुश्मन है।

—गीता

संसाररूपी गाड़ीके राग और द्वेष दो बैल हैं।

—श्रीमद्राजचन्द्र

रागरंग

रागरंगकी ज़िंदगी बलिष्ठसे बलिष्ठ मनको भी अन्तमें नाकारा बना देती है।

—बलवर

पश्चात्तापके बीज जवानीके रागरंग द्वारा बोये जाते हैं, लेकिन उनकी फ़सल बुढ़ापेमें दुखभोग द्वारा काटी जाती है।

—कोल्टन

रागरंगकी, या प्रधानतः रागरंगकी ज़िंदगी हमेशा एक तुच्छ और मूल्यहीन ज़िंदगी होती है, न जीने लायक़; अपने दौरानमें हमेशा असन्तोषजनक, अन्तमें हमेशा दुखद।

—थ्योडोर पार्कर

राजदण्ड

जो राजदण्ड धारण करता है उसकी प्रार्थना भी हाथमें तलवार-लिये-हुए डाकूके इन शब्दोंके समान है—"खड़े रहो और जो कुछ है उसे रख दो।"

—तिरुवल्लुवर

राजदण्ड ही ब्रह्म-विद्या और धर्मका मुख्य संरक्षक है।

—तिरुवल्लुवर

फ्रेड्रिक महानके राजदण्डके पास बाँसुरी भी रक्खी रहती थी।

—जीन पॉल

राजनीति

मेरी देश-भक्ति अनन्त शांति तथा मुक्तिकी ओर मेरी यात्राका एक पड़ाव मात्र है। मेरे लिये धर्मसे रहित राजनीतिकी कोई सत्ता नहीं। राजनीति धर्मकी सेविका है।

—गांधी

लोग कहते हैं कि मैं धर्मपरायण मनुष्य हूँ। मगर राजनीतिमें फँस पड़ा हूँ। सच बात यह है कि राजनीति ही मेरा क्षेत्र है और उसमें रहकर मैं धर्मपरायण होनेका प्रयत्न कर रहा हूँ।

—गांधी

सारी मानवजातिके साथ आत्मीयता क़ायम किये बग़ैर मेरी धर्म-भावना सन्तुष्ट नहीं हो सकती और यह तभी संभव है जब कि मैं राजनीतिक मामलोंमें भाग लूँ। क्योंकि आजकी दुनियामें मनुष्योंकी प्रवृत्ति एक और अविभाज्य है। उसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शुद्ध धार्मिक ऐसे जुदा-जुदा भाग नहीं किये जा सकते।

—गांधी

राजनीतिज्ञ

राजनीतिज्ञ पारेकी तरह है। अगर तुम उस पर उँगली रखनेकी कोशिश करो, तो उसके नीचे कुछ नहीं मिलता।

—ऑस्टिन

राजा

देखो; जो राजा अपनी प्रजाको सताता और उनपर ज़ुल्म करता है, वह हत्यारेसे भी बदतर है।

—तिरुवल्लुवर

न्यायी राजाको प्रजा अपनी माँके समान मानती है।

—अज्ञात

जो राजालोगोंके समागममें रहता है वह सचमुच साँपोंके सहवासमें रहता है।

—अज्ञात

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी।
सो नृप अवशि नरक अधिकारी॥

—रामायण

राजा माने तुष्ट।

—स्वामी रामतीर्थ

राजा एक एकसे बड़ा है, लेकिन सबके संगठनसे छोटा है।

—ब्रेक्टन

ताजपोशोंकी मेहरबानियाँ क्षणिक होती हैं।

—अज्ञात

जो प्रजाको दुःख देकर अपना प्रयोजन साधे वह राजा नहीं डाकू है।

—ऋषि दयानन्द

राज्य-कोष

"अरे अत्याचारी शासक! यह बाज़ार कब तक गर्म रहेगा?" राज्यका कोष ग़रीबोंका टुकड़ा है, शैतान मंडलीका भक्ष्य नहीं है।

—अज्ञात

राम

चित्तकी अशान्तिमें जो रामनामका आश्रय लेता है वह जीत जाता है।

—गाँधी

व्याधि अनेक हैं, वैद्य अनेक हैं, उपचार भी अनेक हैं। अगर व्याधिको एक ही देखें और उसको मिटानेहारा वैद्य एक राम ही है ऐसा समझें; तो बहुतसी झंझटोंसे हम बच जायँ।

—गाँधी

रामनाम

जो केवल ओठोंसे रामनाम बड़बड़ाता है वह ओठोंको सुखाता है और समयकी हत्या करता है।

—गाँधी

विकारी विचारसे बचनेका एक अमोघ उपाय रामनाम है। नाम कंठ से ही नहीं, किन्तु हृदयसे निकलना चाहिये।

—गाँधी

राय

'दूसरे तुम्हारे विषयमें क्या सोचते हैं' इसकी अपेक्षा 'अपने बारेमें तुम्हारा ख्याल' बहुत ज्यादा महत्त्वकी चीज़ है।

—सेनेका

हर नई राय, शुरूमें, ठीक एकके अल्प मतमें होती है।

—कार्लाइल

किसी भी मनुष्यके विषयमें उसकी मृत्युके पूर्व कोई राय निश्चित मत करो।

—सोलन

छोटी छोटी बातें अनजाने रूपसे हमें शुरूसे ही किसीके अनुकूल या प्रतिकूल बना देती हैं।

—शोपेन होर

जिसकी अपनी कोई राय नहीं, बल्कि दूसरोंकी राय और रुचिपर निर्भर रहता है, ग़ुलाम है।

—क्लॉपस्टॉक

सिर्फ़ मूर्ख और मृतक ही अपनी रायें नहीं बदलते।

—अज्ञात

यदि मैं अपने बारेमें दूसरेकी राय जानने को उत्सुक रहता हूँ तो इसके माने यह हैं कि अपने बारेमें मेरी कोई राय नहीं है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

रास्ता

सीधे रास्ते जानेवाला, गुमराह नहीं होता।

—अज्ञात

सीधा रास्ता जैसा सरल है वैसा ही कठिन है। ऐसा न होता तो सब सीधा रास्ता ही लेते।

—गांधी

आदमीकी शक्ति और आनन्द इसमें है कि वह पता लगाये कि ईश्वर किस रास्ते जा रहा है और उसी रास्ते चला चले।

—बीचर

रिज़्क़

ऐ आकाशकी चिड़िया, उस रिज़्क़से मौत अच्छी है जिस रिज़्क़के लिये तुझे नीचा उड़ना पड़े।

—इक़बाल

रिवाज

मूर्खके लिये रिवाज तर्कका काम देता है।

—रौचेस्टर

ज़ालिम रिवाज विचारकताको ग़ुलाम बना डालती है।

—इटालियन कहावत

रिवाज अक़्लमन्दोंकी ताऊन और बेवक़ूफ़ोंकी आराध्य-देवी होती है।

—अज्ञात

१ रिवाज बेवक़ूफ़ोंका क़ानून है।

—वैनब्रग

१ किसी रिवाजके इतने कट्टर पक्षपाती न बनो कि सत्यका बलिदान करके उसे पूजने लगो।

—ज़िमरमन

रिश्ता

दुनियासे तुम्हारा रिश्ता ऐसा हो जाय जैसा ईश्वरका दुनियासे है।

—स्वामी रामतीर्थ

रिश्तेदार

ज़रा यह तो बता कि तूने मामा और चाचाका रिश्ता किससे क़ायम कर रक्खा है? और उनसे दुःख और चिन्ताके अलावा तुझे क्या मिलता है?

—शब्सतरी

रुचि

हर मनुष्यकी रुचि दूसरेसे भिन्न होती है।

—कालिदास

रोग

शारीरिक रोग, जिसे हम बजाय खुद एक मुकम्मिल चीज़ समझते हैं, आख़िरश, आत्माकी किसी बीमारीका लक्षणमात्र हो सकता है।

—हाथौर्न

यदि कोई योगी बाहरके शक्ति-जगत्से अपनेको अलग करके एकान्तमें रहे तो वह अभी-अभी सब प्रकारके रोगोंसे मुक्त हो सकता है।

—अरविन्द घोष

रोटी

१ कुत्ता तुम्हारे लिये नहीं, रोटीके लिये दुम हिलाता है।

—पोर्च्युगीज़ कहावत

१ जो अपनी रोटी दूसरोंके साथ बाँटकर खाता है, उसको भूखकी भयानक बीमारी कभी स्पर्श नहीं करती।

—तिरुवल्लुवर

यदि तुम्हें रोटीकी चिन्ता सताती रहती है, तो या तो तुम अयोग्य हो, या स्वार्थान्ध या नास्तिक।

—हरिभाऊ उपाध्याय

मैं भक्ति-पूजा कैसे करूँ जब कि मुझे अपनी रोज़ीकी हमेशा फ़िक्र करनी पड़ती है?

—अज्ञात

वही ईश्वर, जिसकी तू सेवा करता है, तेरी ज़रूरतें पूरी करेगा। उसने तुझे इस दुनियामें भेजनेसे पहले तेरे भरण-पोषण का इन्तज़ाम कर दिया है।

—रामकृष्ण परमहंस

लोगोंके मन रोटीपर जितने लगे हैं उतने यदि रोटी देनेवाले पर लगे होते तो वे फ़रिश्तोंसे भी बढ़ जाते।

—अज्ञात

ईश्वर सच्चे सेवकों को हमेशा रोटी देता है, और पिछले पचास बरससे मेरा यह अनुभव है।

—गांधी

रोब

जिसने अपनी इच्छाको जीत लिया है और जो अपने कर्तव्यसे विचलित नहीं होता, उसकी आकृति पहाड़से भी बढ़कर रोबदाबवाली होती है।

—तिरुवल्लुवर



[ल]

लक्ष्मी

अहंकार और दुःखसे बढ़कर वैभवके लिये घातक बाधाएँ दूसरा कोई नहीं हैं।

—गोल्डस्मिथ

अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारी सम्पत्ति कम न हो तो तुम दूसरेके धन-वैभवको ग्रसनेकी कामना मत करो।

—तिरुवल्लुवर

जो बुद्धिमान् मनुष्य न्यायकी बातको समझता है और दूसरेकी चीज़ोंको लेना नहीं चाहता, लक्ष्मी उसकी श्रेष्ठताको जानती है और उसे ढूँढ़ती हुई उसके घर आ जाती है।

—तिरुवल्लुवर

उत्साही, निरालसी, कुशल, निर्व्यसन, शूरवीर, कृतज्ञ और मित्रतामें दृढ़ रहनेवालेके पास लक्ष्मी स्वयं बसनेके लिये आती है।

—अज्ञात

लक्ष्मी अकसर दरवाज़ा खटखटाती है, मगर मूर्ख उसे अन्दर नहीं बुलाता।

—डेनिस कहावत

लक्ष्मी मुस्कराते-हुए दर्वाज़ेपर आती है।

—जापानी कहावत

लक्ष्मी साहसीको वरती है।

—अज्ञात

जो माँगता नहीं है, लक्ष्मी उसकी दासी हो जाती है।

—अज्ञात

लक्ष्मी ऐसे पुरुषको स्वयं ढूँढ़ती हुई आती है, जो उत्साही और अप्रमादी हो, क्रियाविधि जानता हो, व्यसन-रहित हो, शूर तथा कृतज्ञ हो और जिसकी मैत्री स्थिर हो।

—नीति

लक्ष्मी अनेकों पापोंसे पैदा होती है। यह आनेपर अभिमान, बेहोशी और मूढ़ता पैदा करती है।

—अज्ञात

मैले कपड़े पहिननेवालोंको, गन्दे दांतवालोंको, अधिक भोजन करनेवालोंको, निष्ठुर बोलनेवालोंको, और सूर्योदयके बाद सोनेवालोंको लक्ष्मी छोड़ देती है, चाहे वह विष्णु ही क्यों न हों।

—अज्ञात

जिस तरह जवान स्त्री बूढ़े पतिका आलिंगन करना नहीं चाहती; उसी तरह लक्ष्मी उद्योगहीन, आलसी, भाग्यवादी, और साहसहीन मनुष्यको नहीं चाहती।

—नीति

लक्ष्य

बस आत्म-समर्पण और आत्मोत्सर्ग ही मानव संस्कृतिका चरम लक्ष्य है।

—अज्ञात

अपने लक्ष्यको न भूलो, वरना जो कुछ मिल जायगा उसीमें सन्तोष मानने लगोगे।

—बर्नार्ड शा

लखपती

हँसनेवाले लखपती दुर्लभ हैं।

—कारनेगी

लगन

✓लगनसे ज्ञान मिलता है, लगनके अभावमें ज्ञान खो जाता है; पाने और खोनेके इस दुहरे रास्तेके जानकारको चाहिये कि अपनेको ऐसा रक्खे कि ज्ञान बढ़ता जाय।

—बुद्ध

एक लाजवाब लेखकने क्या ख़ूब कहा है कि लगन अपनेसे उल्टी दिशामें आदमीको उसी प्रकार नहीं दौड़ा सकती जिस तरहकी तेज़ नदी अपनी ही धाराके ख़िलाफ़ नावको नहीं लें जा सकती।

—फ़ील्डिंग

जो आदमी शरीर तककी परवाह किये बिना बुद्धिपूर्वक अपने कामकी धुनमें लगा रहता है, उसके लिये कुछ भी दुष्कर नहीं है।

—नीति

✓ कोई बात करने सरीखी लगी तो वह ठेठ अन्तःकरणकी तलीसे उमड़नी चाहिये; और अगर ऐसा हुआ तो कामकी स्फूर्ति सहज निर्माण होती है सच्चे प्रेमके उभाड़का ज़ोर ऐसा विलक्षण होता है कि अशक्य लगनेवाली बात भी सहज ही सहज हो जाती है।

—विवेकानन्द

लचक

मैं टूट जाऊँगा, मगर मुड़ूँगा नहीं।

—अज्ञात

मैं बेंतकी तरह लचकदार हूँ और हर ओर मोड़ा जा सकता हूँ। पर बेंतके समान ही मेरा टूटना कठिन है।

—इब्न-उल-वर्दी

लघुता

अगर कोई आदमी अपनेको कीड़ा बना ले, तो पददलित होनेपर उसे शिकायत नहीं करनी चाहिये।

—केन्ट

लज्जा

जो लोगोंके आगे लज्जित और ईश्वरके सामने निर्लज्ज है उसकी बातें शायद ही सच्च हों।

—अबु उस्मान

लायक़ लोगोंका लजाना उन कामोंके लिये होता है कि जो उनके अयोग्य होते हैं; इसलिए वह सुन्दरी स्त्रियोंके शरमानेसे बिल्कुल भिन्न है।

—तिरुवल्लुवर

जिन लोगोंकी आँखोंका पानी गिर गया है वे मुर्दा हैं। कठपुतलियोंकी तरह उनमें भी सिर्फ़ नुमायशी ज़िंदगी होती है।

—तिरुवल्लुवर

स्त्रीका सबसे क़ीमती ज़ेवर लज्जा है।

—कोल्टन

लड़ाई

लड़ाईको न तो मोल लो न उससे जी चुराओ।

—कहावत

अगर मैं अपने भाइयोंसे लड़ूँ तो निस्सन्देह मैं उस आदमीकी तरह हूँ जो मृगतृष्णामें पड़कर अपनी मशकका पानी गिरा दे।

—उदैल-बिन-इल-फ़रख़

लाइलाज

दरिद्रताके साथ आलस्य भी हो, तो यह रोग लाइलाज है।

—इस्माईल-इब्न-अबीबकर

लाचारी

जिस शक्तिने हमें उत्पन्न किया है, उससे अपनेको अलग समझनेकी मूर्खतासे ही लाचारीकी प्रतीति होती है।

—लिटन

हिंसाके मुक़ाबलेमें लाचारीका भाव आना अहिंसा नहीं कायरता है।

—गांधी

लाभ

जब मनुष्य ऐहिक लाभको छोड़ चुकता है, तब उसका बल और आनन्द बस अनुभव-गम्य ही है।

—अज्ञात

संकल्प कर लेना चाहिये कि असत्य और हिंसाके द्वारा कितना भी लाभ हो, हमारे लिये वह त्याज्य है। क्योंकि वह लाभ लाभ नहीं, किन्तु हानिरूप ही होगा।

—गांधी

उन कामोंसे सदा अलग रहो जिनसे न तो यश मिलता है न लाभ होता है।

—तिरुवल्लुवर

अशुभ लाभकी आशा हानिका श्रीगणेश है।

—डेमोक्रिटस

लालच

दूरदर्शिताहीन लालच नाशका कारण होता है; मगर महत्त्व, जो कहता है, 'मैं नहीं चाहता', सर्व-विजयी होता है।

—तिरुवल्लुवर

देखो; जो आदमी लालचमें फँसा हुआ है और उससे निकलना नहीं चाहता, उसे दुःख आकर घेर लेगा और फिर मुक्त न करेगा।

—तिरुवल्लुवर

लालची

ग़रीब कुछ, भोगी बहुतसी, लालची तमाम चीज़ें चाहता है। —कौली

ग़रीब आदमीको बहुत-सी चीज़ोंकी ज़रूरत हो, मगर लालचीको हर एककी।

—अज्ञात

लालची आदमी किसीके लिये भला नहीं है, लेकिन वह सबसे बुरा अपने लिये है।

—अज्ञात

लुटेरा

एक आदमी है जिसे लोग आग्रहके साथ चाहते हैं, एक आदमी है जो दूसरोंके सिर लदना चाहता है; पहला सेवा-भावी है, दूसरा शोषक है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

लेख

जो लिख दिया गया है क़ायम रहेगा; न वह मिटेगा न दुबारा लिखा जायगा। केवल अलिखितपर तेरा अधिकार है, ध्यान दे और अच्छी तरह सोच कि वह क्या होगा।

—लौंगफैलो

लेखक

सोचो अधिक, बोलो थोड़ा, लिखो उससे भी कम।

—फ़्रांसीसी कहावत

लेखक शाही पुरोहित है; मगर नाश जाय उसका जो अपने नापाक हाथोंको वेदीपर यह दावा करते हुए लगाता है कि वह मानव जातिके कल्याणका उत्कट अभिलाषी है, मगर सीधा करना चाहता है अपना ही उल्लू।

—होरेस ग्रीली

जो अपने लिये लिखता है, वह शाश्वत जनताके लिये लिखता है।

—एमर्सन

साफ़ लेखक, साफ़ चश्मेकी तरह, इतना गहरा नहीं दिखता जितना कि वह है; गँदला गंभीरतम दिखता है।

—लेन्डर

वह लेखक सबसे अच्छा लिखता है जो अपने पाठकोंका सबसे कम समय लेकर उन्हें सबसे ज़्यादा ज्ञान देता है।

—सिडनी स्मिथ

"मूर्ख", मेरी क़लमने मुझसे कहा, "अपने दिलमें देख और लिख।"

—सिडनी

लेखन

वक़्त आयगा जबकि उदारता और नम्रतासे कहे हुए तीन शब्दोंको, घृणित तीक्ष्णतासे लिखे हुए तीन हज़ार ग्रन्थोंकी अपेक्षा, कहीं अधिक कल्याणकारक पारितोषिक मिलेगा।

—हस्कर

किताब लिखनेकी बजाय यह कहीं सुखद और लाभप्रद है कि आदमी क्रांतिके तजुर्बेसे फ़ायदा उठाये।

—अज्ञात

✓लेखन-कार्य धर्मकी तरह है। हर शख़्स जिसे प्रेरणा मिले अपनी मुक्तिकी राह खुद बनाये।

—जॉर्ज होरेस लोरीमर

✓ऐसी कोई चीज़ न लिखो जिससे तुम्हें महान खुशी न हो; भावना सुगमतापूर्वक लेखकसे पाठक तक चली जाती है।

—जोबर्ट

लेखनी

मैंने अपनी ज़बान या लेखनीको कभी विषमें नहीं डुबोया।

—कैंबिलन

लेनदेन

मित्रोंमें लेनदेनको मित्रताकी कतरनी समझो।

—सादी

परस्पर विनियम यानी 'देनालेना' सारी दुनियाका नियम है।

—विवेकानन्द

✓पूरा मर्द वह है जो देता है मगर लेता नहीं; आधा मर्द वह है जो लेता है और देता है; नामर्द वह है जो लेता है मगर देता नहीं।

—अज्ञात

लोकप्रिय

जो 'लोकप्रिय' है वह खुदका धनी है। पर जो 'लोकप्रिय' बनता है उसकी दुर्दशा ही होती है।

—स्वामी रामतीर्थ

लोकप्रियता

लोकप्रियतासे बचा रह; इसमें बहुतसे फ़ंदे हैं, मगर कोई सच्चा लाभ नहीं है।

—पैन

मैं वह नहीं चुनूँगा जिसे बहुतसे लोग चाहते हैं, क्योंकि मैं साधारण जीवोंके साथ कूदना और बर्बर समूहमें शामिल होना नहीं चाहता।

—शेक्सपियर

लोकभय

घरमें आग लगी हुई है; 'लोग क्या कहेंगे' इसलिये बुझाता नहीं है, उसको भी 'लोग क्या कहेंगे।'

—विनोबा

लोकलाज

तुम लोक-लाजके पीछे अपना हित गँवा रहे हो।

—अज्ञात

जहाँ आत्माको ऊपर लेजानेका अवसर हो वहाँ लोकलाज नहीं मानी गई।

—अज्ञात

लोकाचार

सत्यकी शोधमें जो लोकाचार अड़चन डाले उसे तोड़ डालना चाहिये।

—गांधी

लोग

लोगोंसे काम लेनेके लिये मख़मलके स्थानमें तेज़ दिमाग़ होना चाहिये।

—जॉर्ज ईलियट

कुछ लोग ऐसे हैं जो खुश रह सकते हैं मगर ज्ञानी नहीं और कुछ ऐसे हैं जो ज्ञानी रह सकते हैं (या जो सोचते हैं कि वे ज्ञानी रह सकते हैं) मगर खुश नहीं।

—डिकेन्स

लोग अमूमन् ऐसे आदमीका सत्कार करते हैं जो आत्म-प्रशंसा करता है, जो दुष्ट और धृष्ट है, जो चौतरफ़ दौड़धूप करता है और सब पर शासन छाँटता है।

—अज्ञात

लोग बातें ऐसी करते हैं मानो वे ईश्वरमें विश्वास करते हैं, लेकिन जीते इस तरह हैं मानो उनके ख़्यालसे ईश्वर है ही नहीं।

—एस्ट्रेञ्ज

दुनिया चार क़िस्मके लोगोंमें विभाजित की जा सकती है,—पढ़नेवाले, लिखनेवाले, सोचनेवाले और लोमड़ियोंके पीछे भागनेवाले।

—शेन्स्टन

लोग पुण्यके फलकी इच्छा करते हैं, पुण्यकी नहीं; पापके फलकी इच्छा नहीं करते, मगर पाप जानबूझकर करते जाते हैं।

—अज्ञात

लोभ

महान शास्त्रज्ञ, बहुश्रुत, संशयोंको छेदनेवाला पंडित भी लोभके वश होकर दुःखी होता है।

—नीति

जिस तरह वृक्ष काट दिये जानेपर भी, अगर उसकी जड़ें सुरक्षित और मज़बूत हों, फिर उगने लगता है; उसी तरह जब तक लोभको जड़से नहीं उखाड़ फेंका जाता, दुःख बार बार आते रहते हैं।

—अज्ञात

अगर तू लोभ और लालचसे दूर रहेगा, तो तेरी मनोकामना शीघ्र ही पूर्ण होगी और गुप्त रीतिसे तुझे ईश्वरीय सहायता मिल जायगी,

—सलाह-उद्दीन सफ़दी

लोभसे क्रोध और क्रोधसे द्रोह उत्पन्न होता है। और विचक्षण शास्त्रज्ञ भी द्रोहसे नरकको प्राप्त होता है।

—हितोपदेश

लोभ पापका मूल है; स्वादका चटख़ारा रोगका मूल है। स्नेह दुःखका मूल है। इन तीनोंका त्याग कर देनेवाला सुखी होता है।

—अज्ञात

लोभकी तृष्णा मानव जातिपर इस क़दर हावी हो गई है कि बजाय इसके कि दौलत उनके कब्ज़ेमें हो यह प्रतीत होता है कि दौलतने उनपर कब्ज़ा कर रक्खा है।

—प्लिनी

दिलसे लोभ निकाल दे तो गलेसे ज़ंजीरें निकल जायँ।

—जाविदान-ए-ख़िरद

बुढ़ापेमें लोभ मूढतापूर्ण है : सफ़रके अन्तमें तोशा बाँधनेसे फ़ायदा ?

—सिसरो

ज्यों-ज्यों सोनेका ढेर बढ़ता जाता है। त्यों-त्यों लोभ भी बढ़ता जाता है।

—अज्ञात

सब पापोंका स्रोत लोभ है।

—अज्ञात

अगर तुम लोभको हटाना चाहते हो तो तुम्हें उसकी माँ अय्याशीको हटाना चाहिये।

—सिसरो

लोभ उन्हीं लोगोंमें अधिक पाया जाता है जिनमें शायद ही कोई सद्गुण होता हो। यह वह घास है जो ऊसर ज़मीनमें उगती है।

—ह्यूजेज़

दोषोंमें सबसे बड़ा दोष लोभ, अर्थात् जहाँ चाहिये वहाँ ख़र्च न करना है।

—अज्ञात

लोभसे बुद्धि नष्ट होती है, बुद्धि नष्ट होनेसे लज्जा नष्ट होती है, लज्जा नष्ट होनेसे धर्म नष्ट होता है और धर्म नष्ट होनेसे धन नष्ट होता है।

—अज्ञात



[व]

वक़्त

एक मिनट देरका बजाय तीन घंटे पहले पहुँचना अच्छा।

—शेक्सपियर

ज़िन्दगी कितनी ही छोटी हो, वक़्तकी बर्बादीसे और भी छोटी बना दी जाती है।

—जॉन्सन

वक्ता

बिना किसी महान उद्देश्यसे सरशार हुए न कभी कोई वक्ता हुआ, न होगा, न हो सकता है।

—ट्राइन

वक्ता बननेके लिये दो बातें ज़रूरी हैं: अच्छी सामग्री और अच्छा ढंग।

—जे० फ्लेमिंग

विरोधीको उत्तर देते समय विचारोंको तरतीब दो, शब्दोंको नहीं।

—कोल्टन

वक्ता अपनी गहराईकी कमीको लम्बाईसे पूरी करते हैं।

—मोण्टेस्को

जो भाषणपटु तो नहीं है, मगर जिसका अन्त किसी ख़ास विश्वाससे सरशार है, वक्ता है।

—एमर्सन

जो शूर नहीं है, वह सच्चा वक्ता नहीं हो सकता।

—एमर्सन

जो वक्ताके शब्दोंकी ध्वनिकी अपेक्षा उस वक्ताका ही अधिक गौरसे निरीक्षण करता है, उसे शायद ही कभी निराशा मिलती हो।

—लैवेटर

वक्ता वह नहीं जो कि सुन्दर बोलनेवाला हो बल्कि वह जिसका अन्तरंग किसी विश्वाससे सरशार हो।

—एमर्सन

वक्तृता

तुम ऐसी वक्तृता दो कि जिसे दूसरी कोई वक्तृता चुप न कर सके।

—तिरुवल्लुवर

देखो, जो लोग अपने ज्ञानको समझाकर दूसरोंको नहीं बता सकते वे उस फूलकी तरह हैं जो खिलता है मगर सुगन्ध नहीं देता।

—तिरुवल्लुवर

ऐ शब्दोंका मूल्य जाननेवाले पवित्र पुरुषो, पहले अपने श्रोताओंकी मानसिक स्थितिको समझ लो, फिर उपस्थित जन-समूहकी अवस्थाके अनुसार अपनी वक्तृता आरंभ करो।

—तिरुवल्लुवर

रणक्षेत्रमें खड़े होकर बहादुरीके साथ मौतका सामना करनेवाले लोग तो बहुत हैं; मगर ऐसे लोग बहुत ही थोड़े हैं जो बिना काँपे हुए जनताके सामने रंगमंचपर खड़े हो सकें।

—तिरुवल्लुवर

देखो, जो वक्तृता मित्रोंको और भी घनिष्ठताके सूत्रमें बाँधती है और दुश्मनोंको अपनी तरफ़ आकर्षित करती है, बस वही यथार्थ वक्तृता है ।

—तिरुवल्लुवर

सच्चा वक्तृत्व इसमें ही है कि जितना ज़रूरी है उतना कहा जाय, ज्यादा कुछ नहीं ।

—रोशे

जो वक्तृत्व बनावटी है, या अति श्रमजन्य है, या महज़ नक़ली है, अपने साथ एक हीन दीनता लिये रहता है, दूसरी दृष्टियोंसे चाहे फिर वह लाजवाब ही क्यों न हो ।

—बेकन

वचन

शुद्ध हृदयसे निकला हुआ वचन कभी निष्फल नहीं होता ।

—गांधी

वचनोंकी कढ़ी और वचनोंके भात इन दोनोंसे कौन तृप्त हुआ है ।

—तुकाराम

जो मनुष्य अपने वचनोंपर दृढ़ रहता है उसके बारेमें मुझे सन्देह नहीं रहता ।

—गांधी

जिसने मित्रका कार्य सम्पन्न करनेका वचन दिया है वह उसके समाप्त होने तक ढीला नहीं पड़ता ।

—कालिदास

सेवा-भावी विनम्र वचन मित्र बनाता है और बहुतसे लाभ पहुँचाता है।

—तिरुवल्लुवर

हँसी मज़ाकमें भी कड़वे वचन आदमीके दिलमें चुभ जाते हैं, इसलिये शरीफ़ लोग अपने दुश्मनोंके साथ भी बदइख्लाक़ी-से पेश नहीं आते।

—तिरुवल्लुवर

जहाँ वचन भ्रष्ट है, मन भी भ्रष्ट है।

—अज्ञात

सज्जनोंका साधारण बातमें कहा हुआ वचन पत्थरपर लिखे अक्षर सरीखा होता है, और हलकट आदमीका क़सम खाकर दिया हुआ वचन भी पानीपर खींची लकीर-सा होता है।

—अज्ञात

वज़न

तुझे तोला गया है, और कम पाया गया है।

—अज्ञात

वज्रमूर्ख

उसे वज्रमूर्ख होना चाहिये जो अपनी मूर्खतासे भी कुछ नहीं सीख सकता।

—हेअर

वन्दनीय

जो सदा प्रसन्न रहते हैं, जिनके हृदयमें दया है, ज़बानमें अमृत है और जो परोपकार-परायण हैं, वे किसके वन्दनीय नहीं हैं?

—नीति

वफ़ादार

उन्हें वफ़ादार न समझ जो तेरे तमाम लफ़्ज़ों और कामों-की तारीफ़ करें, बल्कि उन्हें जो कृपाकर तेरे अपराधोंपर झिड़कें।

—सुक़रात

वर्तन

वर्तन वह दर्पण है जिसमें हर कोई अपनी शक्ल दिखाता है।

—गेटे

वर्तन ही ईश्वरत्व है।

—स्वामी रामतीर्थ

अच्छे और बुरे आदमियोंसे तुम ऐसे पेश आओ कि मरने-पर मुस्लिम तुम्हारी लाशको आबे-जमजमसे धोयें और हिन्दू गङ्गा तटपर जलायें।

—अज्ञात

वर्तमान

यदि हम अपने विचारों और इच्छाओंकी जाँच करें तो हम उन्हें भूत और भविष्यसे ओतप्रोत पायेंगे।

—पास्कल

भविष्यके लिये सबसे अच्छा इन्तज़ाम वर्तमानका यथा-शक्य सदुपयोग है।

—ह्वाइटिङ्ग

भूतका अफ़सोस न करो, भविष्यकी फ़िक्र न करो, अक़्ल-मन्द लोग वर्तमानमें कार्यरत रहते हैं।

—अज्ञात

भूत और भविष्य सबसे अच्छा लगता है, वर्तमान सबसे बुरा।

—शेक्सपियर

वशीकरण

मुँहमें निवाला भर देनेपर कौन-सा नीच आदमी वशमें नहीं हो जाता? आटेका लेप कर देनेसे मृदङ्ग मीठी आवाज़ करता है।

—भर्तृहरि

दया, मित्रता, दान और मधुर वाणीसे बढ़कर वशीकरण नहीं है।

—शुक्राचार्य

वस्त्र

इस नारियलमें गूदा नहीं; इस आदमीकी आत्मा इसके कपड़ोंमें है।

—शेक्सपियर

अगर कोई आदमी कई तरहके कपड़ोंसे ढका हुआ हो, मगर परहेज़गारीके वस्त्रोंको धारण न किये हो, तो वास्तवमें वह नग्न ही है।

—सलाह-उद्दीन-सफ़दी

वंचना

आत्मवंचना आदमीको फुला देगी, मगर उठायेगी कभी नहीं।

—रस्किन

बुज़दिल अपनेको सावधान बताता है, कंजूस किफ़ायतशार।

—एस. साइरस

वाक्-पटुता

वाक्-शक्ति निस्सन्देह एक नियामत है। यह अन्य नियामतोंका अंश नहीं बल्कि स्वयमेव एक निराली नियामत है।

—तिरुवल्लुवर

वाचाल

जो ज़्यादा बोलता है बहुतसी मूर्खतापूर्ण बातें कह जाता है।

—अज्ञात

जिन्हें कहना कमसे कम होता है वह बोलते ज़्यादासे ज़्यादा हैं।

—प्रायर

वाचालता

जिसको बोलते चले जानेकी बीमारी एक बार गिरफ़्त कर लेती है, वह कभी शांत नहीं बैठ सकता। नहीं, बजाय इसके कि वह न बोले, वह भाड़ेपर आदमी लायेगा कि वे उसे सुनें।

—अज्ञात

वाणी

जो वाणी सत्यको सँभालती है उस वाणीको सत्य सँभालता है।

—विनोबा

वाणी मनकी परिचायिका है।

—सेनेका

श्रुति-प्रिय शब्दोंकी मधुरताका अनुभव कर लेनेके बाद भी मनुष्य क्रूर शब्दोंका व्यवहार करना क्यों नहीं छोड़ता?

—तिरुवल्लुवर

वे शब्द जो कि सहृदयतासे पूर्ण और क्षुद्रतासे रहित होते हैं, इह लोक और परलोक दोनों जगह लाभ पहुँचाते हैं।

—तिरुवल्लुवर

देखो, जो ऐसी वाणी बोलता है कि जो सबके हृदयको आह्लादित कर दे, उसके पास दुःखोंको बढ़ानेवाली दरिद्रता कभी न आयगी।

—तिरुवल्लुवर

वाणीसे निकले हुए एक असंयत शब्दको एक रथ और चार घोड़े भी वापिस नहीं ला सकते।

—चीनी कहावत

वाणीसे आदमीकी औक़ात और बुद्धिका पता लग जाता है।

—अरबी कहावत

गर्मीको ठंढा करनेमें एक नम्र शब्द एक बाल्टी पानीसे ज़्यादा काम करता है।

—कहावत

वाद-विवाद

बुद्धिमान्से, मूर्खसे, मित्रसे, गुरुसे, व अपने प्रियजनोंसे वाद-विवाद नहीं करना चाहिये।

—नीति

किसी भी बातपर वाद-विवाद बढ़ा कि मनका संतुलन नष्ट हुआ।

—विवेकानन्द

वादविवादमें हठ और गर्मी मूर्खताके पक्के प्रमाण हैं।

—मॉन्टेन

वाल्दैन

ईश्वरके बाद, तेरे वाल्दैन।

—पैन

अपने बच्चोंको पढ़ाओ तब माँबापकी क़द्र होगी कि तुम्हें कितनी मेहनत और ख़र्चसे पढ़ाया।

—हितोपदेश

वाहवाही

जब लाखों आदमी तुम्हारी वाहवाही करें तो गम्भीर होकर पूछो—'तुमसे क्या अपराध बन गया'; और जब निन्दा करें तो—'क्या भलाई।'

—कोल्टन

वासना

उस आदमीसे बढ़कर रास्तेसे भटका हुआ और कौन है। जो अपनी ख़्वाहिश (वासना) के पीछे चलता है?

—क़ुरान

वासनाओंके रहते सपनेमें भी सुख नहीं मिल सकता। बिना भगवानके भजनके वासनाएँ नहीं मिट सकतीं।

—रामायण

निस्सन्देह मुझे अपने लोगोंके लिये जिस बातका सबसे अधिक डर है, वह है विषय-वासना और महत्त्वाकांक्षा। विषय-वासना मनुष्यको सत्यसे हटा देती है और महत्त्वाकांक्षामें पड़कर मनुष्य परलोकको भूल जाता है।

—हज़रत मुहम्मद

विकार

विकारोंको वृद्धि अथवा तृप्तिमें ही जगत्का कल्याण है, ऐसी कल्पना करना महादोषमय है......विकार रोके नहीं जा सकते अथवा उन्हें रोकनेमें नुक़सान है, यह कथन ही अत्यन्त अहितकर है।

—गांधी

विकारी विचार भी बीमारीकी निशानी है। इसलिये हम सब विकारी विचारसे बचते रहें।

—गांधी

विकार आगकी तरह है-वह मनुष्यको घासकी तरह जलाता है।

—गांधी

विकास

ग़रीब ख़ान्दानमें पैदा हुआ हो; अपने ही बल और बुद्धिके सिवा किसी दूसरेका सहारा न हो, तभी मनुष्यके असली जौहर खिलते हैं।

—अज्ञात

तुम मोमबत्ती क्यों बने हुए हो जब कि तुम सूर्य बन सकते हो?

—अज्ञात

इस संसारके उद्यानमें किसी एकान्त सघन झुरमुटके मध्य एक पौधेका पुष्प बनूँ, खिलूँ और वहीं मुर्झा जाऊँ।

—अज्ञात

विघ्न

विघ्नोंका असर अनात्माके ऊपर होता है, आत्माके ऊपर नहीं।

—अज्ञात

क्षुद्र लोग विघ्नके डरसे काम शुरू ही नहीं करते; मध्यम लोग विघ्न आनेपर बीचमें ही छोड़ देते हैं; लेकिन उत्तम लोग विघ्न आनेपर भी शुरू किया हुआ काम नहीं छोड़ते।

—नीति

विचार

बिना विचारके सीखना मेहनत बर्बाद करना है; बिना सीखे हुए विचार करना ख़तरनाक है।

—कन्फ़्यूशियस

तुम जैसे विचारोंकी दुनियामें विचरते हो उसमें तुम कभी-न-कभी अपने जीवनको मूर्त्तिमान देखोगे।

—अज्ञात

जो सोचता है कि मैं जीव हूँ, वह सचमुच जीव ही रहता है; जो अपनेको ब्रह्म मानता है वह सचमुच ब्रह्म हो जाता है—जो जैसा सोचता है वैसा बन जाता है।

—रामकृष्ण परमहंस

किसीके ख़्यालोंका हमने ग्रास तो किया, पर पचा न सके, बुद्धिसे उनका ग्रहण कर लिया पर उन्हें हृदयस्थ नहीं किया—उनपर अमल नहीं किया, तो वह एक प्रकारका अजीर्ण ही है; बुद्धिका विलास है। विचारोंका अजीर्ण भोजनके अजीर्णसे कहीं बुरा है। भोजनके अजीर्णके लिये तो दवा है, पर विचारोंका अजीर्ण आत्माको बिगाड़ देता है।

—गांधी

विचार चाहे पुराना हो और बहुत बार पेश किया जा चुका हो, लेकिन आख़िरकार वह उसका है जो उसे बेहतरीन तरीक़ेसे करे।

—लॉवेल

आदमी किसी विचारकी ख़ातिर जान दे देंगे, परन्तु उसका विश्लेषण न करेंगे।

—जे० ब्राउन

मनुष्य अपनी परिस्थितियोंको प्रत्यक्षतः नहीं चुन सकता, लेकिन वह अपने विचारोंको चुन सकता है, और इस तरह परोक्ष रूपसे किन्तु लाज़िमी तौरपर, अपनी परिस्थितियोंका निर्माण कर सकता है।

—जेम्स ऐलन

विचार-शून्यता हमारे ज़मानेकी प्रधान सार्वजनिक आपत्ति है।

—रस्किन

छटाँकभर वैज्ञानिक-विचार मन-भर अज्ञानपूर्ण उत्साहसे बढ़कर है।

—हेवर्ड

महान विचार, जब वे कार्यरूपमें परिणत हो जाते हैं, महान कृतियाँ बन जाते हैं।

—हैज़लिट्

अन्तरात्मा या भावनाके विषयमें पहले विचार सर्वोत्तम हैं, समझदारीके मामलेमें, अन्तिम विचार सर्वोत्तम हैं।

—रॉबर्ट हॉल

विचारसे अधिक ठोस चीज़ ब्रह्माण्डमें नहीं है।

—एमर्सन

अपने विचारोंको अपने जेलखाने न बनाओ।

—शेक्सपियर

भौतिक शक्तिसे आध्यात्मिक बढ़कर है; विचार दुनियापर शासन करते हैं।

—एमर्सन

उधार लिये हुए विचार, उधार लिये हुए पैसेकी तरह, उधार लेनेवालेके सिर्फ़ कंगलेपनके परिचायक हैं।

—लेडी ब्लैसिंग्टन

जो मनमें है वही हाथ भी आयगा—इन्तज़ार कीजिये।

—अज्ञात

विचार क़तअन् पेटपर निर्भर है, ताहम जिनके बेहतरीन पेट हैं बेहतरीन विचारक नहीं हैं।

—वोल्टेर

जो जैसा अपने दिलमें सोचता है, वैसा ही है।

—बाइबिल

महान विचार एक बड़ी बरकत है, जिसके लिये पहले ईश्वरको धन्यवाद देना चाहिये। फिर उसको जिसने उसको पहले कहा, और तब कुछ कम लेकिन फिर भी काफ़ी मात्रामें, उस शख़्सको जिसने सबसे पहले उसे हमें सुनाया।

—बोवी

विचारमें अपार शक्ति होती है। एक स्त्री ३२ वर्षकी उम्र तक भी १९ वर्ष की-सी युवती बनी रही; चिन्तातुर रहनेसे एक आदमीके रातभरमें सारे स्याह बाल सफेद हो गये।

—अज्ञात

'रेलगाड़ीकी पटरियाँ न बनाई गई होतीं तो स्वर्गको कैसे जाया जाता' ऐसी लोगोंकी विचारसरणी है।

—स्वामी रामतीर्थ

हममेंसे कोई यह नहीं जानते कि सुन्दर विचारोंसे अपने लिये कैसे-कैसे परिस्तान बना सकते हैं, जिनपर समूची बद-बख़्तीका लेश भी प्रभाव नहीं पड़ सकता; क्योंकि किशोरा-वस्थामें किसीको यह भेद नहीं बतलाया गया।

—रस्किन

वह देवताओंसे दोयम है जिसका प्रेरक विचार है न कि कषाय।

—क्लॉडियन

जो नीच विचारोंमें लीन है वह नरकमें ग़र्क़ है; जो ऊँचे आनन्ददायक विचारोंमें लीन है वह स्वर्ग-सुखका यहीं, इसी क्षण, उपभोग कर रहा है। स्वर्ग और नरक कालान्तर और स्थानान्तरमें भी हों तो हों, पर 'नक़द स्वर्ग' और 'नक़द नरक' भी हैं जिनका निर्माण तत्क्षण विचारों द्वारा होता रहता है।

—अज्ञात

क्या ख़ूब कहा है कि अपने विचारोंसे हमारे जीवन बने हैं; रोगीले विचारोंसे हम स्वस्थ नहीं रह सकते, दुःखमय विचारोंसे जीवन आनन्दमय नहीं हो सकता।

—बुन्देखन

मनुष्य अपने मनमें जैसा सोचता है वैसा बनता है।

—अज्ञात

किसी युगकी महानतम घटनाएँ उसके सर्वोत्तम विचार हैं। विचार अमलमें आकर रहता है।

—बॉइस

विचार हैं वे साधन जो सभ्यताको उठाते हैं। वे क्रांतियाँ पैदा करते हैं। बहुतसे बमोंकी अपेक्षा एक विचारमें ज़्यादा डायनामाइट है।

—विशप विन्सेन्ट

विचार भाग्यका दूसरा नाम है।

—स्वामी रामतीर्थ

अगर किसी आदमीके मनमें बुरे विचार हैं, तो उसपर दुःख इसी तरह आता है जैसे बैलके पीछे पहिया, अगर कोई पवित्र विचारोंमें लीन रहता है तो उसके पीछे आनन्द ठीक उसी प्रकार आता है जैसे उसका साया।

—अज्ञात

आदमी अच्छा करे कि अपनी जेबमें कागज़ पेंसिल रक्खे, और वक्तके विचारोंको तुरन्त लिख डाले। जो अनायास आते हैं वे अक्सर सबसे ज्यादा कीमती होते हैं। उन्हें सँभालकर रखना चाहिये, क्योंकि वे बार बार नहीं आते।

—बेकन

मनुष्यमें जैसे विचार उत्पन्न होते हैं, वैसे ही वह काम कर सकता है।

—अरविन्द घोष

कर्म सरल है, विचार कठिन है।

—गेटे

अच्छे विचारोंपर यदि अमल न किया जाय तो वे अच्छे स्वप्नोंसे बढ़कर नहीं है। —एमर्सन

विचारहीनता

जो प्रभुके सिवाय दूसरी चीज़ोंका अनुसरण करता है, उसे विचारहीन ही कहना चाहिये; कारण मनुष्य अपनी विचार-शक्तिका पूरा उपयोग किये बिना ही अपने आसपास जो-जो अनित्य पदार्थ देखता है उनकी ओर दौड़ता है।

—बायजीद

विचित्र

मुझसे लोग कहते हैं कि तुम कुछ विरक्तसे मालूम होते हो; पर सच तो यह है कि अपमानयुक्त स्थानसे पीछे रहनेके कारण ही मैं लोगोंकी नज़रमें कुछ विचित्रसा लगता हूँ।

—एक कवि

विजय

जो दूसरोंको जीतता है वह मज़बूत है; जो स्वयंको जीतता है वह शक्तिमान।

—लाओत्ज़ू

जो बलसे पराजित करता है वह अपने शत्रुको सिर्फ़ आधा जीतता है।

—मिल्टन

जो दूसरोंपर विजय पाता वह बलवान है; जो अपने पर विजय पाता है वह शक्तिशाली है।

—ताओ-धर्मका उपदेश

सबसे शानदार विजय है अपने पर विजय प्राप्त करना और सबसे ज़लील और शर्मनाक बात है अपनेसे परास्त हो जाना।

—प्लेटो

अपने ऊपर विजय पाना सारे संसारपर विजय पानेकी अपेक्षा ज़्यादा महत्त्वकी चीज़ है।

—डॉ० रमन

सबसे कठिन विजय आत्मविजय है।

—अज्ञात

इससे ज़्यादा शानदार विजय किसी आदमीपर नहीं पाई जा सकती कि अगर ईज़ा पहले उसने पहुँचाई थी तो कृपालुता पहले हम दिखायें।

—टिलिट्सन

विद्या

विद्याका फल उत्तम शील और सदाचार है।

—अज्ञात

क्या मैं विद्याका पौधा लगानेके लिये तो असीम कष्ट उठाऊँ और फिर उससे अपमानका फल चुनूँ? इससे तो मूढताकी ही अधीनतामें रहना बड़ी गूढ़ विद्वत्ता है।

—एक कवि

तू आलस त्याग कर और विद्या प्राप्त कर; क्योंकि हर तरहके गुण बहुत ही दूर रहते हैं।

—इब्न-उल-वर्दी

शत्रुओंकी नाक विद्याकी वृद्धिसे कट जायगी; पर विद्याकी शोभा आचरण ठीक रहनेसे ही होगी।

—इब्न-उल-वर्दी

मैंने विद्याकी सेवामें इसलिये जान नहीं खपाई कि जो मिल जाय उसीका दास बन जाऊँ, बल्कि इसलिये कि लोग मेरी सेवा किया करें।

—एक कवि

जो सीखता है मगर अपनी विद्याका उपयोग नहीं करता, वह किताबोंसे लदा लद्दू जानवर है।

—सादी

विद्वानोंने विद्याका अपमान किया और उसके सुन्दर स्वरूपको लालचसे कुरूप कर दिया; यहाँतक कि विद्याकी सूरत भोंड़ीसी हो गई।

—एक कवि

विद्या मनुष्यके लिये एक दोष-त्रुटि-हीन अविनाशी निधि है। उसके सामने दूसरी तरहकी दौलत कुछ भी नहीं है।

—तिरुवल्लुवर

अगर ज़रा-से लालचके स्थानमें मैं विद्याको सीढ़ी बनाकर पहुँचा करूँ, तो वास्तवमें विद्याके दायित्वकी मैंने शर्त ही नहीं की।

—एक कवि

विद्यादान

अन्नदानसे भी बढ़कर है विद्यादान। अन्नसे क्षणिक तृप्ति होती है विद्यासे ज़िन्दगी भरके लिये।

—अज्ञात

विद्वत्ता

संसारके महान व्यक्ति अक्सर बड़े विद्वान नहीं रहते, और न बड़े विद्वान महान व्यक्ति हुए हैं।

—होम्स

तू विद्वान है तो इतनी डींगें क्यों मारता है? क्या विद्वत्ताकी यह ज़रूरी पहिचान है।

—अज्ञात

विद्वत्ताका अभिमान सबसे बड़ा अज्ञान है।

—जेरेमी टेलर

विद्वान

यदि विद्वान लोग विद्याको अपमानसे सुरक्षित रखते तो विद्या भी उन्हें अपमानसे सुरक्षित रखती; और विद्वान लोग यदि लोगोंके हृदयोंमें विद्याका सिक्का बैठाते, तो विद्या भी विद्वानोंका सिक्का जमा देती।

—एक कवि

एक दिनमें हज़ार बार शोककी ओर, सौ बार भयकी स्थितिमें मूर्ख पुरुष प्रविष्ट होता है। विद्वानके लिये शोक और भय कुछ नहीं।

—महाभारत

विद्वान देखता है कि जो विद्या उसे आनन्द देती है, वह संसारको भी आनन्दप्रद होती है और इसीलिये वह विद्याको और भी अधिक चाहता है।

—तिरुवल्लुवर

जो मूर्खोंके सामने विद्वान दिखना चाहते हैं, वे विद्वानोंको मूर्ख दिखेंगे।

—क्विंटल

विद्वान आदमी ज्ञानके हौज़ हैं, स्रोत नहीं।

—नार्थकोट

विद्वान वे हैं जो अपने ज्ञानपर अमल करते हैं।

—मुहम्मद

विद्वान ही विद्वानके परिश्रमकी क़द्र कर सकते हैं। बाँझ औरत प्रसववेदना क्या जाने ?

—अज्ञात

विनय

जो मनुष्य अपनेको ज्ञानी समझता है वह विनय रहित है।

—अज्ञात

धर्मका मूल विनय है; उसका परम रस-फल मोक्ष है, विनयके द्वारा ही मनुष्य बड़ी जल्दी शास्त्रज्ञान तथा कीर्ति सम्पादन करता है और अन्तमें निःश्रेयस मोक्ष भी उसके द्वारा प्राप्त होता है।

—भ० महावीर

विनाश

टालमटूल, विस्मृति, सुस्ती और निद्रा—ये चार उन लोगोंके खुशी मनानेके बजड़े हैं कि जिनके भाग्यमें नष्ट होना बदा है।

—तिरुवल्लुवर

विनाशकाल

जब विनाश नज़दीक होता है, बुद्धि कलुषित हो जाती है और नीति सरीखी दिखनेवाली अनीति दिलमें अड्डा जमा लेती है।

—महाभारत

विनोद

कहते हैं कि बहुत विनोद करना मन्त्रियोंका गुण है पर बुद्धिमानोंका अवगुण है। तुम गौरव और सम्मानके साथ रहो। खिलवाड़ और विनोद दरबारियोंके लिये छोड़ दो।

—अज्ञात

विपत्ति

जब विपत्ति आनेवाली होती है तब लोग दुष्टोंकी रायपर चलने लगते हैं; जब मौत नज़दीक होती है अपथ्य भोजन स्वादिष्ट लगता है।

—अज्ञात

जो फूल सूरज-मुख रहता है वह बादल भरे दिनोंमें भी वैसा ही रहता है।

—लेटन

इस जंगली दुनियामें, सबसे प्रिय और सबसे अच्छे लोगोंको ही सबसे ज़्यादा विपत्ति, कष्ट और परेशानी सहनी पड़ती है।

—क्रेब

सम्पत्ति महान शिक्षिका है; विपत्ति उससे भी बड़ी। प्राप्ति मनको मृदुल थपकियाँ देती है; अप्राप्ति उसे तालीम देती और मज़बूत बनाती है।

—हैज़लिट

विपत्ति वह हीरक रज है जिससे ईश्वर अपने रत्नोंकी पालिश करता है।

—लेटन

सम्पत्ति और विपत्ति महा-पुरुषों पर ही आती है। वृद्धि और क्षय चन्द्रमाका ही होता है, तारोंका नहीं।

—अज्ञात

जब हम विपत्तिसे बचनेके लिये पापमय उपाय करते हैं तो अक्सर इसी कारण वह हमपर आ ही पड़ती है ।

—वाल

विपत्ति सत्यका पहला रास्ता है ।

—बायरन

विभूति

समुद्र अपने रत्नोंका क्या करता है ? विन्ध्याचल अपने हाथियोंका क्या करता है ? मलयाचल अपने चन्दनका क्या करता है ? सज्जनोंकी विभूति परोपकारके लिये होती है ।

—अज्ञात

जब तक किसी विभूतिके लिये प्रयत्न करते हो तब तक अपनेको सत्यपथसे भटका हुआ समझो ।

—हरिभाऊ उपाध्याय

विभूति माने ईश्वरका 'चिन्त्यभाव', वह अनुकरणीय होगा ही ऐसा नहीं है ।

—विनोबा

विचारक

जिसे उचित-अनुचितका विचार है, वही वास्तवमें जीवित है; पर जो योग्य-अयोग्यका ख़्याल नहीं रखता उसकी गिनती मुर्दोंमें की जायेगी ।

—तिरुवल्लुवर

सम्यक्-दर्शी निस्सन्देह दुर्लभ है, परन्तु सम्यक्-विचारक उससे भी अधिक दुर्लभ है ।

—एच. टी. बक्ले

जब ईश्वर किसी विचारकको इस ज़मीनपर छोड़ दे तो सावधान रहो । उस वक़्त तमाम चीज़ें ख़तरेमें हैं ।

—एमर्सन

महान विचारक शायद ही झगड़ालू होता हो। वह दूसरोंकी युक्तियोंका जवाब खुदको दिखनेवाले सत्यको कहकर देता है।

—मार्च

यदि तुम विचारक नहीं तो फिर तुम इन्सान ही क्यों हो?

—कॉलेरिज

विचारकता

बुद्धिमानको चाहिये कि किसी कामको करनेसे पहिले उसके नतीजेपर विचार कर ले। जल्दबाज़ीमें किये गये कामका नतीजा मरते वक़्त तक हृदयको तीरकी तरह छेदता रहता है।

—अज्ञात

विचारकता कभी सार्वजनिक नहीं हो सकती। कथायें और भावनायें भले ही हो जायँ। विचारकता चन्द बुद्धिशालियोंकी निजी सम्पत्ति बनी रहेगी।

—गेटे

विचारहीनता

कुछ लोग पहले कर गुज़रते हैं, सोचते बादमें हैं, और फिर हमेशा पछताया करते हैं।

—सैकर

विभ्रान्त

निज दोषोंसे आवृत मनको सुन्दर वस्तु भी विपरीत दिखती है। पीलिया रोगवालेको शशि-शुभ्र शङ्ख भी पीला दिखता है।

—अज्ञात

पित्तज्वरवालेको शक्कर भी कड़ची लगती है।

—अज्ञात

वियोग

'तमाम प्रिय वस्तुओं और प्रिय जनोंसे एक दिन वियोग होनेको है' इस बातका स्मरण रखनेसे मनुष्य प्रिय वस्तु अथवा प्रिय जनके अर्थ पापाचरण करनेमें प्रवृत्त नहीं होता।

—बुद्ध

मेरी प्रियाका कथन है कि मेरा दूर रहना तेरे लिये अधिक आनन्ददायक है; क्योंकि सूरज दूर न होता तो उसकी ज्योति तुझको जला देती।

—खतीरी बर्राक़

प्रेमियोंके वियोगको छोड़कर संसारकी सारी आपदायें मुझको तो आसान ही मालूम हुई हैं।

—एक कवि

विरह

यद्यपि कहा जाता है कि विरहमें प्रेम कुम्हला जाता है, तथापि वस्तुतः वियोगमें प्रेमका प्रयोग न होनेसे वह संचित होकर राशीभूत हो जाता है।

—कालिदास

विरोध

कोई सत्य दूसरे सत्यका विरोधी नहीं हो सकता।

—हूकर

मनुष्यको तमाम विरोधके सामनेसे अपनेको ले जाना होगा; मानो उसको, स्वयंको छोड़कर सब क्षणिक और निस्सार है।

—एमर्सन

'तुम मेरे विरोधी हो या मेरे मत के ?' "मत के"। तो फिर मेरे मतका खण्डन करो, मेरी निन्दा करके तुम सज़ावार क्यों बन रहे हो ?

—अज्ञात

यदि अपने किसी रिश्तेदारकी बुरी बातका मैं विरोध नहीं करता हूँ तो या तो मैं उसका हितैषी नहीं हूँ या डरपोक हूँ।

—अज्ञात

विलम्ब

जो फ़ौरन् किये जानेवाले कामको देरसे करता है वह बेवक़ूफ़ है।

—अज्ञात

विलास

विलासमें ह्रासके बीज हैं, क्योंकि उससे प्रचोदक शक्ति नष्ट होती है।

—स्वामी रामतीर्थ

विवशता

युद्धक्षेत्रकी अपेक्षा चरागाह सौ बार अच्छा है पर घोड़ेकी लगाम घोड़ेके हाथमें नहीं है।

—अज्ञात

विवाह

मोक्ष पानेके लिये शरीरके बन्धन टूटना आवश्यक है। शरीरके बन्धनको तोड़नेवाली प्रत्येक वस्तु पथ्य है, शेष सब अपथ्य। विवाह बन्धनको तोड़नेके बजाय उसे और अधिक जकड़ देता है। केवल एक ब्रह्मचर्य ही मनुष्यके बन्धनको मर्यादित करके उसे ईश्वरार्पित जीवन वितानेके लिये शक्ति प्रदान करता है।

—गांधी

आज हम जिसे विवाह कहते हैं वह विवाह नहीं, उसका आडम्बर है। जिसे हम भोग कहते हैं वह भ्रष्टाचार है।

—गांधी

व्यभिचार भी व्यभिचारित हो गया है एक चीज़से, वह है-विवाह।

—नीट्शे

विवाहित

पशुजीवनमें दूसरी बात हो सकती है लेकिन मनुष्यके विवाहित जीवनका यह नियम होना चाहिये कि कोई भी पति-पत्नी बिना आवश्यकताके प्रजोत्पत्ति न करें और बिना प्रजोत्पादनके हेतुके सम्भोग न करें।

—गांधी

विवेक

आत्माके लिये विवेक वैसा ही है जैसे शरीरके लिये स्वास्थ्य।

—रोची

विवेक, मैं तेरे मृदुल शासनको 'स्वस्ति' कहती हूँ, और हमेशा, हमेशा कहनेमें चलूँगी।

—श्रीमती बार्बोल्ड

हंस दूध निकाल लेता है और उसमें मिले हुए पानीको छोड़ देता है।

—कालिदास

विवेक-भ्रष्टोंका सौ सौ तरहसे पतन होता है।

—भर्तृहरि

आदमीमें लक्ष्मी और विवेक शायद ही कभी साथ साथ मिलते हों।

—लिवी

नेकी और बदीकी पहचानके बग़ैर इन्सानकी ज़िंदगी बड़ी उलझी हुई रहती है।

—सिसरो

कोई भी बात हो, उसमें सत्यको झूठसे अलग कर देना ही विवेकका काम है।

—तिरुवल्लुवर

क्रोध और दुर्भाव, ईर्ष्या और प्रतिशोध विवेकको वक्र कर देते हैं।

—टिलटसन

बुद्धि और भावनाका समन्वय माने 'विवेक'।

—विनोबा

विवेककी शान जीते जी ऐसे काम करनेमें है जिनकी मरते वक्त ख़्वाहिश रहे।

—जेरेमी टेलर

सच्चा विवेक इसमें है कि हम सर्वोत्तम जानने लायक़को जानें, और सर्वोत्तम करने लायक़को करें।

—हम्फ़री

उच्च विवेक, उच्च आनन्द है।

—यंग

भावुकता एक क्षणिक वेग है, तूफ़ान है, बाढ़ है; विवेक सतत समान प्रवाह है।

—अज्ञात

यद्यपि विवेक मनको स्वच्छन्दरूपसे नहीं विचरने देता है; किन्तु उसे बुराईसे बचाकर सन्मार्गमें लगा देनेवाला भी वही है।

—अज्ञात

विवेक न सोना है, न चाँदी, न शोहरत, न दौलत, न तन्दुरुस्ती, न ताक़त, न ख़ूबसूरती।

—प्लुटार्क

शाश्वतका विचार ही विवेक है।

—स्वामी रामतीर्थ

बुद्धि परीक्षण करने बैठती है, परन्तु विवेक निरीक्षणसे ही राज़ी रहता है।

—पालशिरर

विवेकका पहला काम मिथ्यात्वको पहिचानना है, दूसरा सत्यको जानना।

—अज्ञात

जो विवेकसे काम लेता है वह ईश्वरविषयक ज्ञानसे काम लेता है।

—एपिक्टेटस

विवेक-बुद्धि

विवेकबुद्धि जिस कामसे घृणा कर रही है उससे हटाना ही होगा, चाहे इससे हज़ार कर्त्तव्य कर्म धूलमें मिल जायँ।

—अज्ञात

विवेकी

निश्चय ही सबसे बड़े विद्वान सबसे बड़े विवेकी नहीं होते।

—रैनियर

आज़ाद कौन है? विवेकी जो अपनेको बसमें रख सकता है।

—होरेस

विवेककी तलाश करता है तो तू विवेकी है; यह कल्पना करता है कि तू उसे पा गया, तो तू बेवक़ूफ़ है।

—रब्बी

जल्दीसे विवेकी बन। चालीस बरसकी उम्रमें भी जो बेवक़ूफ़ है, वह सचमुच बेवक़ूफ़ है।

—मौन्टेन

विवेचन-शक्ति

विवेककी कुंजी विद्या नहीं स्वाभाविक विवेचन शक्ति है। ज्ञानका प्रसार इस शक्तिके द्वारा होता है और इसीके बलपर मानवमें सद् असद्का सम्यक् ज्ञान होता है। जिस व्यक्तिमें यह शक्ति जन्म-जात रूपमें विद्यमान है उसे बहुत अधिक विद्याकी आवश्यकता नहीं होती वह अपढ़ रहकर भी सफल हो सकता है।

—जेम्स ऐलेन

विश्राम

तीव्र काम विश्राम है। हर सच्चा काम विश्राम है।

—स्वामी रामतीर्थ

विश्राम? क्या विश्राम करने के लिये तमाम 'अनन्त' नहीं पड़ा हुआ है?

—अज्ञात

उद्योगका परिवर्तन ही विश्राम है इसमें बहुत सत्य है।

—गांधी

विश्व

विश्व रामका शरीर है।

—स्वामी रामतीर्थ

विश्वास

मनुष्य अविश्वासीका विश्वास न करे और विश्वासीका भी बहुत विश्वास न करे; क्योंकि विश्वाससे उत्पन्न हुआ भय मूल सहित नष्ट कर देता है।

—नीति

जब तुम ईश्वरके प्यारे बन जाओगे, तभी वह तुम्हें संपूर्ण सन्तोष देगा। उसका विश्वास छोड़कर संशयमें न पड़ना।

—जुन्नुन

विश्वासके तीन लक्षण हैं—सब चीज़ोंमें ईश्वरको देखना, सारे काम ईश्वरकी ओर नज़र रखकर ही करना, और हरएक हालतमें हाथ पसारना तो उस सर्वशक्तिमानके आगे ही।

—जुन्नुन

किसीका भी विश्वास न करनेवाले दुर्बल मनुष्य भी बलवानोंके फंदेमें नहीं फँसते; किन्तु विश्वास करनेवाले बलवान पुरुष भी दुर्बलोंके फंदेमें फँसकर मारे जाते हैं।

—नीति

जो तुम पर विश्वास करता है उसे ठगनेमें कोई चालाकी नहीं है। क्या गोदमें सोये हुए बालककी जान लेनेमें कोई शूरवीरता है?

—अज्ञात

मेरी ख़ाक भी क़ीमत नहीं होगी अगर मैं सारे काम बिना निजी मान्यताके महज़ किसी दूसरेके कहने पर करता जाऊँ।

—गांधी

विश्वास ज्ञानकी अभीक्ष्णता है।

—डब्ल्यू आदम

फलके पहले फूल, सदाचारके पहले विश्वास।

—व्हेटली

अपने निर्वाहके लिये जो चिन्ता अथवा प्रपंच नहीं करता वही सच्चा विश्वासी है।

—जुन्नेद

यदि बुद्धिमान अपनी आयु-वृद्धि और सुखकी इच्छा करता हो, तो बृहस्पतिका भी विश्वास न करे।

—नीति

जो एक बार विश्वासघात कर चुका हो उसका विश्वास न करो।

—शेक्सपियर

अगर तुम आज़मानेसे पहले भरोसा करोगे, तो तुम्हें मरनेसे पहले पछताना पड़ेगा।

—कहावत

प्रेम सबसे करो; विश्वास थोड़ोंका करो।

—शेक्सपियर

सावधान! उन लोगोंका विश्वास देख-भाल कर करना जिनके आगे-पीछे कोई नहीं है; क्योंकि उन लोगोंके दिल ममता-हीन और लज्जा रहित होंगे।

—तिरुवल्लुवर

अनजाने आदमीपर विश्वास करना और जाने हुए योग्य पुरुषपर सन्देह करना—ये दोनों ही बातें एक समान अनन्त आपत्तियोंका कारण होती हैं।

—तिरुवल्लुवर

देखो, जो आदमी परीक्षा किये बिना ही किसीका विश्वास करता है वह अपनी सन्ततिके लिये अनेक आपत्तियोंका बीज बो रहा है।

—तिरुवल्लुवर

कुमित्रका विश्वास तो किसी हालतमें भी न करना चाहिये; किन्तु सुमित्रका भी विश्वास न करना चाहिये; शायद मित्र रूठ जाय और सारी बातोंको प्रकाशित कर दे।

—अज्ञात

दूसरेको मारनेके लिये ढालों और तलवारोंकी ज़रूरत होती है, मगर खुदको मारनेके लिये एक पिन ही काफ़ी है; इसी तरह दूसरेको सिखानेके लिये बहुतसे शास्त्रों और विज्ञानोंके अध्ययनकी आवश्यकता होती है, मगर आत्म-प्रकाशके लिये एक ही सिद्धान्त-सूत्रमें दृढ़ विश्वासका होना काफ़ी है।

—रामकृष्ण परमहंस

अपने विश्वासका शिकार बनकर मर जाना प्रशंसनीय है; अपनी महत्त्वाकांक्षाका धोखा खाकर मरना दुखद है।

—लैमरटिन

बिना कृतिका विश्वास बिना पंखकी चिड़ियाके समान है।

—क्लेमेंट

विश्वास रक्खो, तुम्हारी प्रार्थनाका जवाब ज़रूर मिलेगा

—लौंगफैलो

कम-उम्र और नाबालिग बच्चोंके कच्चे दिमागोंमें खास क़िस्मके विश्वास ठूँसना निकृष्टतम गर्भपात है।

—बर्नार्ड शा

अपने ऊपर असीम विश्वास स्थापित करना और अकेले बैठकर अन्तरात्माकी ध्वनि सुनना वीर पुरुषोंका ही काम है।

—एमर्सन

दुनिया हमेशा उस शख़्समें विश्वास करती है जो अपने आपमें विश्वास रखता है।

—अज्ञात

विश्वास शक्ति है।

—रॉबर्टसन

विश्वासका प्रधान अंग संतोष है।

—जॉर्ज मैक्डोनल्ड

सारी विद्वत्तापूर्ण चुनाचुनी एक 'विश्वास' शब्दके आगे खण्डहर हो जाती है।

—नैपोलियन

विश्वास, एकदम कट्टर विश्वास; सच्ची सफलताका बस यही नियम है।

—अज्ञात

अगर तुम विश्वासमें महान नहीं हो तो किसी चीज़में महान नहीं हो सकते।

—जैकोबी

अगर मुझसे पूछते हो तो मनुष्यका विश्वास ऐसा स्वाभाविक और स्वतंत्र हो जैसी कि हवा। यही कारण है कि मैं तमाम संघों और परिपाटियोंके ख़िलाफ़ हूँ। वे मनुष्योंके विश्वासोंको एक अमुक प्रकारके साँचेमें ढाल देना चाहते हैं, और कोई चीज़ जो बाहरसे लादी जाती है मनुष्यके मन और आत्माके विकासकी दुश्मन है।

—जे० कृष्णमूर्ति

अपने आपको न धिक्कारो। अपने ग़लत विश्वासको धिक्कारो और उसे दुरुस्त करो।

—अज्ञात

देवपर विश्वास माने जगपर विश्वास माने आत्मापर विश्वास माने सत्यपर विश्वास।

—विनोबा

विश्वासरहितताके कारण हम बहुतसे दैवी ज्ञानसे वंचित रहते हैं।

—हैरेक्लिटस

जो सोचता है 'मैं जीव हूँ'—वह जीव है; और जो सोचता है 'मैं शिव हूँ'—वह शिव है।

—अज्ञात

विश्वास जीवन है; संशय मौत है।

—रामकृष्ण परमहंस

विश्वासघात

जो तुमपर विश्वास करते हैं उन्हें ठगनेमें क्या बहादुरी है?

—अज्ञात

विश्वासघाती मित्र सबसे भयानक शत्रु है।

—अज्ञात

दग़ासे दुश्मनके हवाले कर देनेवाला या भेद खोल देनेवाला हत्यारा होता है।

—फ्रेंच कहावत

विश्वासपात्र

अगर तुम किसी मूर्ख को अपना विश्वासपात्र सलाहकार बनाना चाहते हो, सिर्फ़ इसलिये कि तुम उसे प्यार करते हो, तो याद रक्खो कि वह तुम्हें अनन्त मूर्खताओंमें ला पटकेगा।

—तिरुवल्लुवर

विषयी

विषयीका शरीर मृतक आत्माका जनाज़ा है।

—बोवी

विषयीको विषय न मिलें तो चिन्ता होती है, और मिलें तो शास्त्रसे उत्पन्न हुई विवेक-बुद्धि को बिगाड़ देते हैं।

—अज्ञात

वे लोग बड़े अभागे हैं जो भगवानको छोड़कर विषयानुरागी हो जाते हैं।

—रामायण

विषयके समान कोई नशा नहीं है। यह मुनियोंके भी मन को क्षण भरमें मोही बना देता है।

—रामायण

विषय-लम्पटता

विषय-लम्पटता तुम्हारी नरपिशाचताका पर्याप्त प्रमाण है।

—अज्ञात

विषयाशा

जो विषयाशाके महापापसे मुक्त है, वही मोक्षका अधिकारी है; और अन्य कोई नहीं,—चाहे वह तमाम शास्त्रोंका ज्ञाता हो।

—अज्ञात

विषयासक्त

जैसे चमचा पाकरसमें फिरने पर भी रस नहीं जानता, उसी प्रकार विषयासक्त पुरुष चारों वेदों और धर्मशास्त्रोंको पढ़ लेने पर भी परमात्माको नहीं जान सकते।

—अज्ञात

विषयी

जिस तरह दलदलमें फँसता हुआ हाथी उठी हुई ज़मीन को देखता है मगर किनारे नहीं लगता, उसी तरह विषय-लोलुप सन्तोंके मार्ग पर नहीं चलते।

—अज्ञात

विस्मरण

पहलेके दोषोंके स्मरणसे आत्माका अपमान न हो इसीलिये पूर्वजन्मके विस्मरणका इन्तज़ाम ईश्वरने कर दिया है।

—विनोबा

विस्मृति

एक शरीफ़ विस्मृति है—वह जो कि ईज़ाओंको याद नहीं रखती।

—सिमन्स

"मैं भूल गया" यह कभी मान्य बहाना नहीं है।

—डॉक्टर• हॉल

विज्ञ

जिस प्रकार जीभ चखते ही स्वाद पहचान लेती है, उसी प्रकार विज्ञ पुरुष मुहूर्तमात्रमें ज्ञानियोंसे धर्म और ज्ञान पा लेता है।

—बुद्ध

विज्ञान

जो शख़्स यह सोचता है कि विज्ञान और धर्ममें कोई वास्तविक विरोध है उसे या तो विज्ञानका बहुत कम ज्ञान है या वह धर्मसे बहुत अनजान है।

—प्रोफ़ेसर हैनरी

अपनी बुद्धिसे मानसिक क्लेशोंको और दवासे शारीरिक दुःखोंको दूर करो। मनुष्यके विज्ञानको यही सामर्थ्य है। इस राहको छोड़कर बालकोंकेसे काम मत करो।

—अज्ञात

विज्ञान चीज़ोंके इस सिरेमें मशग़ूल है, उस सिरेमें नहीं।

—पार्कहर्स्ट

वीतराग

जिसका राग दूर हो गया है उसके लिये घर हीं तपोवन है।

—अज्ञात

वीतरागता

सत्य-ज्ञान पानेके लिये वीतरागता निहायत ज़रूरी है। वीतरागता जितनी अधिक होगी, ज्ञान उतना ही अधिक पूर्ण होगा। जहाँ वीतरागताका अन्त है वहाँ सत्य ज्ञानका भी अन्त है।

—सत्यभक्त

वीर

वीर पुरुषके ऊपर भाला चलाया जाय और उसकी आँख जरा भी झपक जाय, तो क्या यह उसके लिये शर्मकी बात नहीं है?

—तिरुवल्लुवर

उत्कृष्ट हृदय हमेशा वीर होते हैं।

—स्टर्न

वीर पुरुष लाखोंमें एक।

—अज्ञात

बुज़दिल अपनी मौतसे पहले बहुत बार मरते हैं; वीर पुरुष मृत्युका आस्वादन सिर्फ़ एक बार करते हैं।

—शेक्सपियर

विपत्तिमें भी जो सौजन्य नहीं छोड़ता, दीन-हीनता नहीं दिखाता, वही बहादुर है।

—अज्ञात

वीर पुरुष दुर्भाव नहीं जानता; शान्तिकालमें वह युद्धकी क्षतियोंको भूल जाता है, और अपने घोरतम शत्रुका मैत्रीभावसे आलिंगन करता है।

—कूपर

कुछको वीर समझ लिया गया, क्योंकि वे डरके मारे भाग न सके।

—अज्ञात

वीरता

लोमड़ीकी तरह भाग जानेकी अपेक्षा शेरकी तरह लड़! शेरके हाथमें तलवार है क्या?

—अज्ञात

अहिंसा और कायरता परस्पर विरोधी शब्द हैं। अहिंसा सर्वश्रेष्ठ सद्गुण है; कायरता बुरीसे-बुरी बुराई है। अहिंसाका मूल प्रेममें है, कायरताका घृणामें। अहिंसक सदा कष्ट-सहिष्णु होता है; कायर सदा पीड़ा पहुँचाता है। सम्पूर्ण अहिंसा उच्चतम वीरता है।

—गाँधी

वीरतासे बढ़कर तीनों लोकमें कुछ भी नहीं है।

—अज्ञात

अगर कोई आदमी बहुतसे बच्चे पैदा करे और उनका पालन-पोषण करे, इसमें उसकी कोई तारीफ़ नहीं है; इसमें सच्चा पराक्रम नहीं है, क्योंकि कुत्तियाँ और बिल्लियाँ भी बच्चे पैदा करतीं और उनकी परवरिश करती हैं। सच्ची वीरता अपना धर्म पालन करनेमें है; ऐसी वीरता अर्जुनने दिखाई थी।

—रामकृष्ण परमहंस

सच्ची वीरता अर्जुनमें थी; वह जिसे अपना कर्तव्य या करने लायक़ काम समझता था, उसे अवश्यमेव करता था।

—रामकृष्ण परमहंस

वीरता खुदको फिरसे सँभाल लेनेमें है।

—एमर्सन

वीरतामें हमेशा सुरक्षा है।

—एमर्सन

वीरता क्या है? निर्भय और बेधड़क होकर अपनेको बड़ेसे बड़े कष्ट और खतरेका सामना करनेके लिये तैयार रखना।

—हरिभाऊ उपाध्याय

वीरांगणा

जो स्त्री मरनेके लिये तैयार है उसे कौन दुष्ट एक शब्द भी बोल सकता है। उसकी आँखोंमें ही इतना तेज होगा कि सामने खड़ा हुआ व्यभिचारी पुरुष जहाँका तहाँ ढेर हो जायेगा।

—गाँधी

वृत्ति

प्रवृत्ति और निवृत्ति ये दो वृत्तियाँ सब जीवोंमें होती हैं। संयममें प्रवृत्ति रक्खो, और असंयममें निवृत्ति।

—'साधक सहचरी'

वृत्तियोंका क्षय करना ही सब शास्त्रोंका सार है। हर एक पदार्थकी तुच्छताका विचार कर वृत्तिको बाहर जाते हुए रोकना चाहिये और उसका क्षय करना चाहिये।

—अज्ञात

अपनी वृत्तिकी ग़ुलामीसे बढ़कर कोई दूसरी ग़ुलामी आज तक नहीं देखी। मनुष्य स्वयं अपना शत्रु है, और वह चाहे तो अपना मित्र भी बन सकता है।

—गाँधी

वृद्धि

जो बढ़ना बन्द कर देता है घटना शुरू हो जाता है।

—एमील

वेतन

वेतन-शून्य पदोंसे चोरोंकी सृष्टि होती है।

—जर्मन कहावत

वेद

जो ज्ञानी आदमी हक़ीक़तको जान गया है, उसके लिये तमाम वेद वैसे ही बेकार हैं जैसे उस जगह जहाँ पानी-ही-पानी भरा हो, एक छोटा-सा कुँआ।

—गीता

वैद्य

संयम और परिश्रम आदमीके दो वैद्य हैं।

—रूसो

व्यायाम, संयम, ताज़ी हवा और ज़रूरी आराम सर्वोत्तम वैद्य हैं।

—अज्ञात

वैधव्य

बलपूर्वक पालन कराया गया वैधव्य पाप है।

—गांधी

वैभव

सांसारिक वैभव जो चाहता है उससे वह दूर भागता है, और जो नहीं चाहता उसके पीछे पीछे रहता है।

—अज्ञात

यदि तू सत्यका ही उपासक है तो दुनियाकी वैभव-विभूतियाँ तेरे सामने अपने आप आती चली जायेंगी; किन्तु तू उन्हें मुसकराकर अस्वीकार करता चला जायेगा।

—हरिभाऊ उपाध्याय

धर्मका भूषण वैराग्य है, वैभव नहीं।

—गांधी

वैर

जब भगवान निज मुखसे कहते हैं कि वे सब प्राणियोंमें विहार करते हैं तो हम किससे वैर करें ?

—गांधी

हिरन, मछली और सज्जन क्रमशः तिनके, जल और सन्तोषपर अपना जीवन निर्वाह करते हैं पर शिकारी, मछुवा और दुष्ट लोग अकारण ही इनसे वैर-भाव रखते हैं।

—भर्तृहरि

वैराग्य

वैराग्यकी पहली अवस्थामें ईश्वरपर विश्वास उत्पन्न होता है; दूसरी अवस्थामें सहनशीलता बढ़ती है; और तीसरी अन्तिम, अवस्थामें ईश्वरके प्रति प्रेम प्रकट होता है।

—हातिमहासम

वैराग्य ईश्वर-प्राप्तिका गूढ़ उपाय है उसके तो गुप्त रखनेमें ही कल्याण है जो अपना वैराग्य प्रकट करते हैं उनका वैराग्य उनसे दूर भाग जाता है।

—शाहशुजा

वैराग्यकी विवेकयुक्तता ही वैराग्यकी दृढ़ता है।

—विनोबा

श्मशान, दुःख और ग़रीबीमें किसको विरक्ति नहीं होती ? मगर सच्चा वैराग्य वह है जो अन्दरसे स्फुरित होता है और परम कल्याण तक ले जाता है।

—अज्ञात

वैषयिकता

अगर वैषयिकतामें सुख होता, तो आदमियोंसे जानवर ज़्यादा सुखी होते; लेकिन इन्सानका आनन्द आत्मामें रहता है, गोश्तमें नहीं।

—सैनेका

वोट

वोटोंको तौलना चाहिये, गिनना नहीं।

—शिलर

ईमानदार आदमीकी वोट सारे ब्रह्माण्डकी दौलतसे भी नहीं ख़रीदी जा सकती।

—ग्रिगरी

व्यक्ति

बाहरकी हर चीज़ व्यक्तिसे कहती है कि वह कुछ नहीं है; अन्दरकी हर चीज़ उसे प्रेरित करती है कि वह सब कुछ है।

—दोदन

समाज, राष्ट्र, बल्कि हर चीज़से व्यक्तिवैशिष्ट्य बढ़कर है।

—स्वामी रामतीर्थ

जो बात एक व्यक्तिपर लागू पड़ती है वही बात सारे राष्ट्र पर भी लागू पड़नी चाहिये।

—विवेकानन्द

व्यक्तित्व

जो व्यक्तित्वको कुचले वह अत्याचारी है, उसका नाम चाहे जो कुछ रख लिया जाय।

—जे० एस० मिल

व्यक्तित्व जगतका महान केन्द्रीय तथ्य है।

—अज्ञात

हर मनुष्य इसलिये है कि उसका अपना चारित्र हो; अद्वितीय बने, और वह करे जो कोई और नहीं कर सकता।

—चैनिंग

मनुष्यका व्यक्तित्व ही है जो उसे सत्य, न्याय, प्रतिष्ठा दया और प्रेमके आदर्शोंकी क़द्रदानीके योग्य बनाता है। किस वैज्ञानिकने अपने प्रयोगशाला में इनको नाप की है?

—अज्ञात

जो कुछ तुम हो तुम वही सिखाओगे, जानकर नहीं बल्कि अनजाने। कुछ न कहो। जो कुछ तुम हो तुमपर हर वक़्त सवार है, और ऐसा गरज रहा है कि उसके ख़िलाफ़ तुम जो कुछ कहते हो उसे मैं नहीं सुन सकता।

—एमर्सन

व्यभिचार

किसी स्त्रीके सतीत्वको भंग करनेसे पहिले मर जाना बहुत ही उत्तम कार्य है।

—गांधी

जो पर-स्त्रीको कुदृष्टिसे देखता है वह मानसिक व्यभिचार करता है।

—ईसा

जब आदमी ज़िनाकारी (व्यभिचार) करता है, ईमान उसे छोड़ जाता है।

—मुहम्मद

व्यभिचारीको इन चार चीज़ोंसे कभी छुटकारा नहीं मिलता—घृणा, पाप, भय और कलङ्क।

—तिरुवल्लुवर

ज़िना (व्यभिचार) करनेवाले मर्द या औरत हर एक को सौ कोड़ोंकी सज़ा देनी चाहिये; इस बातमें उनपर रहम खाकर अल्लाहके हुक्मको नहीं तोड़ना चाहिये।

—क़ुरान

व्यर्थ

रोगी शरीरके लिये सुखभोग व्यर्थ हैं; हरिभक्तिके बिना जप योग व्यर्थ हैं।

—रामायण

व्यवस्था

जब मनमें गहरी अव्यवस्था होती है, हम बाहरी व्यवस्था नहीं रखते।

—शेक्सपियर

व्यवहार

आध्यात्मिक व्यवहार माने स्वाभाविक व्यवहार माने शुद्ध व्यवहार माने नीतियुक्त व्यवहार।

—विनोबा

दुनियाको वैसी लेकर चलो जैसी वह है न कि जैसी वह होनी चाहिये।

—जर्मन कहावत

जो जैसा हो, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिये। दुष्टके साथ दुष्टता और सज्जनके साथ सज्जनता दिखलानी चाहिये।

—विदुर

अगर शहद इकट्ठा करना चाहते हो, तो शहदकी मक्खियोंके छत्तेपर ठोकर न मारो।

—अज्ञात

सद्व्यवहार प्रभावक होता है क्योंकि वह वास्तविक शक्तिका परिचायक है।

—एमर्सन

आत्म-निर्भरता सद्व्यवहारका आधार है।

—एमर्सन

ज़रा सोचो, तुम्हारा सुख कितना ज़्यादा इस बातपर निर्भर है कि और लोग तुमसे कैसे पेश आते हैं! इस बातको घुमाकर देखो, और याद रक्खो कि उसी तरह तुम भी अपने वर्तनसे लोगोंको सुखी या दुखी बना रहे हो।

—जॉर्ज मैरियम

यह भी एक बुद्धिमानीका काम है कि मनुष्य लोक-रीतिके अनुसार व्यवहार करें।

—तिरुवल्लुवर

व्याख्यान

ऐ अपनी वक्तृतासे विद्वानोंको प्रसन्न करनेकी इच्छा रखनेवाले लोगो, देखो, कभी भूलकर भी मूर्खोंके सामने व्याख्यान न देना।

—तिरुवल्लुवर

व्यापार

'सस्तेसे सस्ता ख़रीदना और महँगेसे महँगा बेचना' इस नियमके बराबर मनुष्यके लिये कलंकरूप दूसरी कोई बात नहीं है।

—गाँधी

व्यापारी

व्यापारीका कोई स्वदेश नहीं होता; और न लोभीका कोई माँ बाप।

—अज्ञात

मायाचारियों (छलियोंके) बाद, शैतानके सबसे बड़े फ़रेबख़ुर्दा लोग वे हैं जो व्यापारके कष्टों और निराशाओंमें चिन्तातुर हस्ती बसर करते हैं, और दुःखी और नीच होकर जीते हैं सिर्फ़ इसलिये कि वे धनी कहलाकर शानसे मर सकें—वे बिना मज़दूरी पाये शैतानकी ख़िदमत करते रहते हैं, और धनवान होकर मरनेकी खोखली हिमाक़तके लिये अपनी तन्दुरुस्ती, सुख और ईमानदारीको क़ुर्बान करते हैं।

—कोल्टन

व्यायाम

व्यायामसे शरीर हलका होता है, काम करनेकी ताक़त बढ़ती है, मन स्थिर होता है, कष्ट सह सकनेकी शक्ति आती है, सब दोषोंका नाश होता है, जठरानल तेज़ होती है।

—अज्ञात

व्रत

व्रत बन्धन नहीं, स्वतन्त्रताका द्वार है।

—गाँधी

व्रती

व्रती जब अखण्ड व्रत धारण कर लेता है तब वह अपनी दोनों आँखोंके सामने अपनी प्रतिज्ञाको रख लेता है और तेज़ तलवारकी तरह कर्मक्षेत्रमें प्रविष्ट हो जाता है।

—सआद-बिन-नाशिब

[श]

शक्ति

पशुबल कभी आदमीको नहीं समझा सकता; वह उसे महज़ ढोंगी बना देता है।

—फ़ेनेलन

प्रत्येक बुद्धिमान, जो कार्यशक्ति-विहीन है, असफल रहेगा।

—चैम्फ़ र्ट

शक्ति शारीरिक क्षमतासे नहीं उत्पन्न होती; वह अजेय सङ्कल्प (या इच्छासे) उत्पन्न होती है।

—गांधी

यह दुनिया शक्तिशालीकी है।

—एमर्सन

'जहाँ धर्म वहाँ जय,' यह बिल्कुल सत्य है मगर धर्मके पीछे शक्ति चाहिये, नहीं तो अधर्मका ही अभ्युत्थान होता है।

—अरविन्द घोष

शक्तिका एक स्रोत यह है कि हम इन्तज़ार करना, साथ ही परिश्रम करना सीखें।

—अज्ञात

शक्ति कभी उपहासास्पद नहीं है।

—नैपोलियन

शक्ति प्रसन्नताके साथ रहती है।

—एमर्सन

शक्तिका कण कण, कर्त्तव्यपालन है।

—जॉन फ़ॉस्टर

इन्सानकी कार्य-शक्तियोंका माप नहीं हुआ; न हम गुज़री हुई घटनाओंसे फ़ैसला कर सकते हैं कि वह क्या कर सकता है, इतने कमकी आज़माइश हुई है।

—थोरो

तेरा शुक्र है कि मैं शक्तिके पहियोंमेंसे नहीं हूँ, बल्कि मैं उन सचेतन प्राणियोंके साथ हूँ जो उससे कुचले जाते हैं।

—टैगोर

दुनियामें सबसे शक्तिमान मनुष्य वह है जो सबसे ज़्यादा अकेला खड़ा हुआ है।

—इब्सन

आत्माका आनन्द उसकी शक्तिका परिचायक है।

—एमर्सन

जो शक्ति अपनी शरारतकी शेखी बघारती है उसपर गिरती हुई पीली पत्तियाँ और गुज़रते हुए बादल हँसते हैं।

—टैगोर

ज्ञान ही शक्ति है।

—विवेकानन्द

मनुष्योंकी निर्जीवता ही शक्ति-मदमत्तोंकी उद्धतताको आमंत्रित करती है। —एमर्सन

शक्ति बिना शिव शव-तुल्य है।

—अज्ञात

अपनी खुदकी शक्तिपर हम विश्वास कर रहे हों, तो शायद हम सफल न होंगे। किन्तु ईश्वरकी शक्तिपर विश्वास करें तो घने अँधेरेमें भी प्रकाश दिखाई देगा।

—गांधी

शक्ति युक्ति नहीं है।

—जॉन ब्राइट

शत्रु

युद्धके दिन निर्बल शत्रुसे भी निश्चिन्त न रहो। क्योंकि जीवनसे निराश होनेपर वह शेरका भी मग्ज़ निकाल लेगा। आजिज़ होनेपर बिल्ली चीतेकी आँखें निकाल लेती है।

—अज्ञात

अगर हम अपने शत्रुओंकी गुप्त आत्म-कहानियाँ पढ़ें, तो हमें प्रत्येकके जीवनमें इतना दुःख और शोक भरा मिलेगा कि फिर हमारे मनमें उनके लिये ज़रा भी शत्रुभाव नहीं रहेगा।

—अज्ञात

हर्ष और शोक ये दोनों ही शत्रु हैं।

—अज्ञात

इन तीन बातोंको अपना परम शत्रु समझो—धनका लोभ, लोगोंसे मान पानेकी लालसा और लोक प्रिय होनेकी आकांक्षा।

—अबु उस्मान

आदमीका खुद अपनेसे बड़ा कोई दुश्मन नहीं है।

—पेट्रार्क

शत्रुता

ज़िंदगी छोटी है। मैं उसे शत्रुता बसाये रखने या अपराधोंकी यादमें नहीं गुज़ारना चाहता।

—आउट

शब्द

नर्म लफ़्ज़ सख़्त दिलोंको जीत लेते हैं।

—अँग्रेज़ी कहावत

कोई वक्ता या लेखक तबतक कदापि सफल नहीं होता जबतक वह अपने शब्दोंको अपने विचारोंसे छोटा बनाना न सीख ले।

—एमर्सन

शब्द पत्तियोंकी तरह हैं, और जब उनकी सर्वाधिक बहुलता होती है, तो उनके नीचे समझदारीका फल शायद ही कभी मिलता हो।

—पोप

शरण

हे प्रभु, ये तन्द्राभरी आँखें और यह भूखा पेट तो बहुत ज़ुल्म करते हैं, इनसे छुटकारा पानेके लिये मैं तेरी शरण आया हूँ।

—आविस

इस जगतमें अपने लिये मैंने आश्रय-स्थान खोजा, पर वह कहीं भी न मिला।

—बुद्ध

जिसने भगवानकी शरण ली है, उसके क़दम नहीं डगमगाते।

—रामकृष्ण परमहंस

अपने लिये स्वयं दीपक बनो। अपनी ही शरण लो। आलोककी भाँति सत्यका आश्रय लो।

—बुद्ध

शरणागति

उसीकी शरणमें सर्वभावसे जाओ—उसीकी कृपासे परम शांति मिलती और शाश्वत धाम प्राप्त होता है।

—गीता

शराफ़त

वाहियात और गन्दे शब्द भूलकर भी शरीफ़ आदमीकी ज़बानसे नहीं निकलेंगे।

—तिरुवल्लुवर

सच्ची शराफ़त भयरहित होती है।

—शेक्सपियर

शांति और प्रसन्नता शराफ़तकी अलामत है।

—एमर्सन

शरीर

शरीर तेरा नहीं; तुझे सौंपी गई ईश्वरकी वस्तु है। अतः उसकी रक्षाके लिये तुझे अवश्य समय देना चाहिये।

—गांधी

शरीर रहे या जाय, इससे आत्माको कोई लाभ-हानि नहीं।

—अज्ञात

अपने शरीरकी बनावटके विषयमें अज्ञानी बने रहना आदमीके लिये शर्मनाक है।

—अज्ञात

ऐ शरीरके सेवक, तू कबतक इसकी सेवामें लगा रहेगा? क्या तू उस चीज़से लाभ उठाना चाहता है जिसमें घाटा ही घाटा है?

—अबुल-फ़तह-बुस्ती

अरे, यह चमड़ी क्या ऐसी चीज़ है कि लोग अपनी इज़्ज़त बेचकर भी इसे बचाये रखना चाहते हैं!

—तिरुवल्लुवर

बुद्धिमान लोग जानते हैं कि यह जिस्म तो मुसीबतोंका निशाना है–तख़्त–ए–मश्क़ है; इसलिये जब उनपर कोई आफ़त आ पड़ती है तो वे उसकी कुछ परवाह नहीं करते।

—तिरुवल्लुवर

शरीर-रक्षण

मैं शरीरके रक्षणका दातार नहीं, केवल भाव-उपदेशका दातार हूँ।

—भगवान् महावीर

शरीर सुख

शरीरको सुखी रखना, बस यही 'इतिकर्तव्यता है' ऐसा भ्रम किसीको उत्पन्न हो गया हो, तो समझना चाहिये कि वह मनुष्य पशुकोटिमें जानेके मार्गपर चल पड़ा है। पशु अक्सर बीमार नहीं पड़ते; उनका स्वास्थ्य अक्सर ख़राब नहीं होता, इसलिये उन्हें उच्च कोटिके प्राणी कहा जायेगा?

—विवेकानन्द

शर्म

"इस वक़्त मत शरमाओ" एक प्रसिद्ध इटैलियनने दुराचारके अड्डेसे निकलकर आते हुए अपने एक जवान रिश्तेदार से मिलनेपर कहा, "शरमानेका वक़्त वह था जब तुम अन्दर गये थे।"

—अज्ञात

शर्मिन्दा

आदमीको बदमाशियाँ करते देखकर मुझे कभी आश्चर्य नहीं होता, लेकिन उसे शर्मिन्दा न होते देख मुझे अक्सर आश्चर्य होता है।

—स्विफ्ट

शहीद

मृत्यु नहीं, मृत्युका कारण शहीद बनाता है।

—नैपोलियन

शादी

अच्छी स्त्रीके साथ शादी ज़िंदगीके तूफ़ानमें बन्दरगाह है; बुरी स्त्रीके साथ, बन्दरगाहमें तूफ़ान।

—सैन

किसीने एक क्वारे महात्मासे पूछा कि आप शादी क्यों नहीं कर लेते? बोले, एक भूत तो मेरा मन है, दूसरा मेरी स्त्रीका होगा। दो भूतोंकी सँभालका मुझमें बल नहीं।

—अज्ञात

सुक़रातसे जब एक नवयुवकने पूछा कि वह शादी करे या नहीं, तो उसने जवाब दिया, 'करोगे तो पछताओगे; न करोगे तो पछताओगे।'

—प्लुटार्क

शादीके पहले अपनी आँखें खूब खुली रक्खो, शादीके बाद आधी बन्द।

—फ्रैंकलिन

शादी ज़रूर करना! अच्छी पत्नी मिली तो सुखी होगे, और खराब तो तत्त्वज्ञानी। यह भी क्या ख़राब है?

—सुक़रात

शान

कोई जाति खुशहाल नहीं हो सकती जबतक वह यह न सीख ले कि खेत जोतनेमें उतनी ही शान है जितनी कि कविता लिखने में।

—बुकर टी॰वाशिंग्टन

सच्ची शान अपने ही ऊपर मौन-विजयसे उमड़ती है; और उसके बग़ैर विजेता अव्वल नंबरके ग़ुलामके अलावा कुछ भी नहीं है।

—थॉम्सन

संयम, आनन्दोपभोगका सुनहरा नियम है।

—लैंडन

हमारी सबसे बड़ी शान कभी न गिरनेमें नहीं है, बल्कि जब जब हम गिरें हर बार उठनेमें है।

—कन्फ्यूशियस

ग़ैर मामूली काम, चाहे उसकी शोहरत न हुई हो, इन्सानकी सच्ची शान है।

—अज्ञात

शाप

जो कोई तुम्हें कोसे तुम उसे कदापि न कोसो। याद रक्खो, क्रोधीके शापसे आशीषका फल मिलता है।

—रैदास

शाप आस्मानकी ओर फेंके हुए पत्थरके समान है और बहुत करके वह लौटकर उसके सिरपर गिरता है, जिसने उसे फेंका था।

—स्काट

शासक

मैं यह हर्गिज़ नहीं मान सकता कि ईश्वरने चन्द आदमियोंको पहलेसे बूट पहनाकर खड़ा और एड़ लगाकर सवारी गाँठनेके लिये दुनियामें भेजा है और करोड़ोंको पहलेसे ज़ीन कसकर और लगाम चढ़ाकर बोझा ढोनेके लिये।

—रिचर्ड रम्बोल्ड

अगर जनता अपने शासकोंके वास्तविक स्वार्थ और अन्यायको जान जाय, तो कोई गवर्नमेंट एक वर्ष भी न टिके— दुनियामें क्रान्ति मच जाय।

—थ्योडोर पार्कर

शासन

दुनिया सिर्फ़ ज्ञान और शक्तिसे शासित है।

—अज्ञात

जो अपने ऊपर शासन नहीं कर सकता, वह आज़ाद नहीं है।

—पिथागोरस

जिन्होंने शासन करनेका स्वाद चक्खा, उन्हें वह स्वादिष्ट लगा; पर इस मधुमें विष है।

—इब्न-उल-वर्दी

मज़हबी शासन निकृष्टतम अत्याचार है।

—डीन इंगे

इससे अधिक आश्चर्यकारक कुछ नहीं कि किस आसानीसे मुट्ठी भर लोग लाखोंपर शासन करते हैं!

—ह्यूम

शास्त्र

शास्त्रका काम उँगलीकी तरह ब्रह्म-चन्द्रको दिखाना है।

—अज्ञात

शास्त्रका काम ईश्वरका केवल रास्ता बताना है। एक बार आपको रास्ता मालूम हो गया; फिर किताबोंसे क्या फ़ायदा है? तब तो एकान्तमें ईश-लीन होकर आत्मविकास करनेका समय है।

—रामकृष्ण परमहंस

शास्त्रार्थ

शास्त्रार्थ एक अन्धा कुँआ है। जो उसमें गिरता है वह मरता है।

—गुजराती भक्त कवि अखा

शांति

जो पूर्ण सद्गुणशील है उसे आंतरिक अशांति नहीं होती।

—कन्फ्यूशियस

मौनके वृक्षपर शांतिका फल लगता है।

—अरबी कहावत

जो जगतकी थोड़ी-सी चीज़ोंसे ही सन्तोष कर लेता है, वही सच्ची शांति पाता है।

—जुन्नुन

ईश्वरसे एक हो जाना ही शांत होना है।

—ट्राइन

अगर तुम घरमें शांति चाहते हो, तो तुम्हें वह करना चाहिये जो गृहिणी चाहती है।

—डेनिश कहावत

मनुष्यकी शांतिकी कसौटी समाजमें ही हो सकती है, हिमालयकी टोचपर नहीं।

—गांधी

जो निर्जनतासे डरता है और लोगोंके संगसे खुश होता है वह अपनी शांति खोता है।

—फ़ज़ल अयाज़

पहले स्वयं शान्त बन, तभी औरोंमें शांतिका संचार कर सकता है।

—थॉमस केम्पी

विपत्तिको सह लेनेमें अचरज नहीं, अचरज है वैसी हालतमें भी शांत रहनेमें।

—जुन्नुन

शान्ति उत्तम है। मगर उस अवसरपर शान्ति अच्छी नहीं जबकि अत्याचारके तौरपर, तू धूपमें बिठाया जाय।

—मुरार-बिन-सईद

जीवन और व्यवहारकी सादगीसे मनको शांति मिलती है।

—अज्ञात

जो न तो लोगोंको ख़ुश करनेकी लालसा रखता है, न उनके नाखुश होनेसे डरता है, बड़ी शांतिका आनन्द लेता है।

—कैम्पिस

शान्त रहो; सौ वर्ष बाद यह सब एक हो जायेगा।

—एमर्सन

शांतको शांति शायद ही कभी न मिलती हो।

—शिलर

यदि बुराई करके तू ईश्वरका गुनहगार बन चुका है तो लोक समाजमें अपनेको निर्दोष सिद्ध करके तू आन्तरिक शांति कैसे पा सकता है।

—अज्ञात

पहले प्रेम, फिर त्याग, तब शांति।

—अज्ञात

कहना बड़ा स्वादिष्ट होता है—दिनभर कहता रहता है। वैसा ही सुननेका स्वाद होता है। जिसे न कुछ कहना है, न कुछ सुनना वही शान्ति पाता है।

—शीलनाथ

मेरी शांति और मेरे विनोदका रहस्य है मेरी ईश्वर यानी सत्यपर अचल श्रद्धा। मैं जानता हूँ कि मैं कुछ कर ही नहीं सकता हूँ। मुझमें ईश्वर है, वह मुझसे सबकुछ कराता है, तो मैं कैसे दुःखी हो सकता हूँ? यह भी जानता हूँ कि जो कुछ मुझसे कराता है, मेरे भलेके ही लिये है। इस ज्ञानसे भी मुझे खुश रहना चाहिये।

—गांधी

जहाँ दूसरेका भान न रहे, वही शांतिपद है।

—अज्ञात

शान्ति ठीक वहाँसे शुरू होती है जहाँ महत्त्वाकांक्षाका अन्त हो।

—यंग

अगर तुम्हें अपनेमें ही शान्ति नहीं मिलती तो बाहर उसकी तलाश व्यर्थ है।

—रोशे

शांति सुखका सबसे सुन्दर रूप है।

—चैनिंग

जहाँ मन हिंसासे मुड़ता है वहाँ दुःख अवश्य ही शांत हो जाता है।

—बुद्ध

जहाँ वासना है, वहाँ शान्ति नहीं; जहाँ शान्ति है, वहाँ वासना नहीं।

—अज्ञात

तुझे शान्तिका आनन्द मिलेगा अगर तेरा दिल तुझे कोसे नहीं।

—थॉमस

विश्वास और शांतिका त्याग प्राणोत्सर्ग हो जानेपर भी न करो।

—विवेकानन्द

आनन्द उछलता-कूदता जाता है; शांति मुसकराती हुई चलती है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

मनकी शांति और आनन्दका सिर्फ़ एक उपाय है, और वह यह कि बाहरी चीज़ोंको अपनी न समझे, और सब कुछ परमात्माके हवाले कर दे।

—एपिक्टेटस

सब लोग शान्ति चाहते हैं, लेकिन उन बातोंको बहुत थोड़े लोग चाहते हैं जिनसे शान्ति मिलती है।

—अज्ञात

शान्ततामें एक शाही शान है।

—वाशिंग्टन इर्विंग

यहाँ शान्ति; सौम्यता और सत्संगति।

—शेक्सपियर

अगर शांति पाना चाहते हो तो लोक-प्रियतासे बचो।

—अब्राहम लिंकन

वही मर्ज़ी रखना जो ईश्वरकी मर्ज़ी है, बस यही वह साइन्स है जो हमें विश्रांति देती है।

—लौंगफ़ैलो

दुनियाकी तमाम शान शौक़तसे बढ़कर है, आत्म-शान्ति–स्थिर और शान्त अन्तरात्मा।

—शेक्सपियर

शान्त खुशियाँ सबसे ज़्यादा देर टिकती हैं।

—ब्रोवी

शिकायत

अपनी स्मरण-शक्तिकी हर कोई शिकायत करता है; अपनी निर्णायक-बुद्धिकी कोई नहीं।

—गेटे

मैंने शिकायतके पुरग़म प्रलाप और बुज़दिलाना दुर्बल निश्चयसे हमेशा नफ़रत की है।

—बर्न्स

कभी शिकायत न करो, कभी सफ़ाई न दो।

—डिसराइली

जब किसीको यह शिकायत करनेका भाव हो कि उसकी कितनी कम परवाह की जाती है, तो वह सोचे कि वह दूसरोंकी आनन्दवृद्धिमें कितना कम योगदान देता है।

—जॉनसन

शिकार

शिकारी रोज़ शिकार नहीं लाता। संभव है कि किसी दिन चीता उसे फाड़ डाले।

—अज्ञात

शिक्षक

वह शिक्षक जो प्रोत्साहन और जोश दिलाकर नवयुवकको आत्म-अनुसन्धानकी तरफ़ ले जाता है सब तालीम देनेवालोंसे बड़ा है।

—अज्ञात

शिक्षण

अन्तर्मुखता ही सच्चे शिक्षणकी शुरूआत है।

—स्वामी रामतीर्थ

जानकारसे सीखो; जो खुद ही अपनेको सिखाता है उसने एक मूर्खको अपना शिक्षक बना रक्खा है।

—फ्रैंकलिन

पक्के ज्ञानकी एकमात्र पहिचान है सिखानेकी शक्ति।

—अरस्तू

आदमीको ऐसा सिखाना कि वह आज़ाद रहकर अपना विकास कर सके, शायद यह सबसे बड़ी सेवा है जो एक आदमी दूसरेके प्रति कर सकता है।

—बैंजामिन जोवेट

इस संसारमें एक ही शिक्षण लेनेकी ज़रूरत है; और वह है प्रेमका शिक्षण।

—स्वामी रामतीर्थ

मूर्ख ज्ञानियोंसे कुछ नहीं सीखते, लेकिन ज्ञानी मूर्खोंसे बहुत कुछ सीख लेते हैं।

—डच कहावत

शिक्षा

शिक्षासे तीन फ़ायदे होते हैं, पढ़नेका शौक़, पढ़नेके ढंगका ज्ञान और यह ज्ञान कि सिर्फ़ पढ़ना काफ़ी नहीं है।

—अज्ञात

वास्तविक शिक्षाका आदर्श यह है कि हम अन्दरसे कितनी विद्या निकाल सकते हैं, यह नहीं कि बाहरसे कितनी अन्दर डाल चुके हैं।

—स्वामी रामतीर्थ

शिक्षाका चारित्र-निर्माण, एकमात्र नहीं तो, महान उद्देश्य अवश्य है।

—ओशी

शिक्षाके मानी ये नहीं कि उन्हें वह सिखाया जाय जिसे वे नहीं जानते; उसके मानी हैं उन्हें ऐसा वर्तन करना सिखाना जैसा वर्तन कि वे नहीं करते।

—रस्किन

अगर आदमी सीखना चाहे तो उसकी हर एक भूल उसे कुछ शिक्षा दे सकती है।

—गाँधी

उन विषयोंका पढ़ना जो हमारे जीवनमें कभी काम नहीं आते, शिक्षा नहीं है।

—स्वामी रामतीर्थ

शिक्षाका सही नियम या तरीक़ा यह है कि सर्वोत्तम पात्र के प्रति सर्वाधिक परिश्रम करो। ख़राब ज़मीनपर कभी श्रम न गँवाओ; परन्तु अच्छी, या अच्छी होनेकी क्षमता रखनेवाली भूमिपर कोई कसर न रक्खो।

—रस्किन

मुझे ज़्यादा पसन्द है कि लोग मुझे सीख देते हुए मुझपर हँसे, बनिस्बत इसके कि वे मुझे कुछ भी फ़ायदा पहुँचाये बग़ैर मेरी तारीफ़ करें।

—गेटे

ज्ञानी विवेकसे सीखते हैं, साधारण मनुष्य अनुभवसे, मूर्ख आवश्यकतासे और पशु वृत्तसे।

—सिसरो

हर आदमीके शिक्षणका सर्वोत्तम भाग वह है जो वह स्वयं अपने लिये देता है।

—सर वाल्टर स्कॉट

शिक्षाका, असूलन्, पहला काम यह हो कि वह इच्छा शक्तिको क्रियाशीलताकी ओर प्रेरित करे।

—ज़कारी

शिक्षासे तात्पर्य है मनुष्य और बच्चोंके शरीर, मस्तिष्क तथा आत्माका सुन्दरतम रूप निखारना।

—गाँधी

सच्ची शिक्षाके मानी हैं, ईश्वरकी आँखोंसे चीज़ोंको देखना सीखना।

—स्वामी रामतीर्थ

तमाम शिक्षाका सबसे क़ीमती फल यह होना चाहिये कि तुम्हें जो काम जब करना चाहिये तब कर सको, ख़्वाह तुम उसे पसन्द करते हो या न करते हो।

—थॉमस हक्सले

आत्म-त्याग सिखानेवाली निकृष्टतम शिक्षा उस उत्कृष्टतम शिक्षासे बहतर है जो सिवाय उसके सब-कुछ सिखाती है।

—स्टर्लिंग

जबतक शिक्षित लोग हैं और अज्ञानी लोग हैं, अज्ञानी शिक्षितोंके ग़ुलाम रहेंगे। नसीहत साफ़ है कि अगर ग़ुलामीसे बचना है तो शिक्षित बनना होगा।

—अज्ञात

दुनियाकी निन्दा-स्तुतिके भरोसे चलनेवालेकी मौत है, अपने हृदयपर हाथ रखकर चल।

—अज्ञात

सच्ची शिक्षाका पूर्ण ध्येय यह है कि न केवल वह सचाई को बताये बल्कि उसपर अमल भी कराये।

—मेरी बेकर ऐडी

सच्ची शिक्षाका समूचा उद्देश्य लोगोंको ठीक कार्योंमें रत कर देना ही नहीं, बल्कि उन्हें ठीक कार्योंमें रस लेने लायक़ बना देना है।

—रस्किन

शिक्षाका विरोध हमेशा वे लोग करते हैं जो अत्याचार करके लाभ उठाया करते हैं।

—एनन

शिव

योगीजन शिवको आत्मामें देखते हैं, मूर्तिमें नहीं। जो आत्मामें रहनेवाले शिवको छोड़कर बाहरके शिवको पूजते हैं वे हाथमें रखे हुए लड्डूको छोड़कर अपनी कोहनीको चाटते हैं।

—शंकराचार्य

एक बार तो बिल्कुल निडर होकर 'शिवोऽहं' बोलो।

—स्वामी रामतीर्थ

शील

शील मनुष्यका प्रधान गुण है। जिसमें यह गुण नष्ट हो हो गया उसका जीवन, धन, जन, सब फ़िज़ूल है।

—अज्ञात

शील वह दौलत है जो प्रेमकी बहुलतासे आती है।

—टैगोर

मनके कर्म मिटाने हैं? विचारसे वे बढ़ते हैं घटते नहीं?

—शीलनाथ

विद्याका ज़ेवर शील है।

—अज्ञात

शुद्धता

यदि तुझे राजनीति और समाजनीतिमें शुद्धता लानी है, तो तू राजनीति और समाजकार्योंसे हटकर उसे कैसे ला सकता है ?

—अज्ञात

सब शुद्धताओंमें धनकी शुद्धता सर्वोत्तम है; क्योंकि शुद्ध वही है जो धनको ईमानदारीसे कमाता है, वह नहीं; जो अपनेको मिट्टी और पानीसे शुद्ध करता है।

—अज्ञात

शुद्धि

एक मनुष्य दूसरेको शुद्ध नहीं कर सकता, अपनी शुद्धि अपने ही किये होती है।

—बुद्ध

मैं उसके लिये प्रेम रखता हूँ जिसका बाहर और भीतर अपने मित्रके लिये शुद्ध हो।

—अहमद अरजानी

शुभकार्य

तुम विजयके इतने नज़दीक कभी नहीं हो जितने जब कि तुम किसी नेक काममें हार खा जाओ।

—बीचर

एक शुभ कार्य ईश्वरकी तरफ़ एक क़दम है।

—हॉलेंड

शूर

जिस तरह एक ही तेजस्वी सूर्य सारे जगतको प्रकाशित करता है; उसी तरह एक ही शूरवीर सारी पृथ्वीको पाँव तले दबाकर अपने वशमें कर लेता है।

—भर्तृहरि

शूरका जीवन प्रगति है, 'अगति' नहीं।

—अज्ञात

शूरवीर कभी शेखी नहीं बघारते, वे अपने पौरुषको कार्योंसे दिखलाते हैं।

—अज्ञात

आदमी, जबतक उसका दुश्मनसे पाला नहीं पड़ता, अपनेको शूर समझता रहता है।

—अज्ञात

सच्चा शूर वह है जो दुनियाके प्रलोभनोंके बीच रहता हुआ पूर्णता प्राप्त करता है।

—रामकृष्ण परमहंस

शूर समरमें करके दिखाते, कहकर नहीं। मगर कायर लोग मैदानमें दुश्मनको पाकर बकबाद करने लगते हैं।

—रामायण

शेर

भूखसे दुर्बल हो गया हो, बुढ़ापेसे कृश हो गया हो, शिथिल हो गया हो, कष्ट-दशाको प्राप्त हो गया हो, तेजहीन हो गया हो, मरणासन्न हो गया हो, फिर भी मत्त हाथियोंके कुम्भस्थलोंको फाड़कर खानेवाला मानियोंमें श्रेष्ठ शेर क्या कभी घास खायेगा।

—अज्ञात

शैतान

मुझे उस शख़्सपर ताज्जुब आता है जो शैतानको दुश्मन जानता है और फिर उसका कहा मानता है।

—अज्ञात

अपना स्वार्थ छोड़कर दूसरेका भला करनेवाला सत्पुरुष कहलाता है; अपने स्वार्थको सुरक्षित रखकर दूसरेका भला करनेवाला सामान्य मनुष्य कहलाता है; अपने स्वार्थके लिये दूसरेका नुक़सान करनेवाला राक्षस कहलाता है; लेकिन जो निरर्थक दूसरेको हानि पहुँचाता है, उसे क्या कहा जाय ?

—अज्ञात

शैतानके सामने डट जाओ तो वह भाग खड़ा होगा।

—अज्ञात

शैतानमें खुशगवार शक्ल अख्तियार करनेकी शक्ति है।

—शेक्सपियर

भाई, भूले मत ! शैतान कभी नहीं सोता।

—थॉमस कैम्पी

जिस समय दुईकी भावनाएँ जाग्रत होती हैं, तभी शैतान ठगने पाता है।

—आविस

मानवजातिका वास्तविक शैतान इन्सान है।

—फ़ारसी कहावत

शैली

शैली विचारोंकी पोशाक है।

—शोपेन होर

बोलने या लिखनेमें अच्छी शैलीकी एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शर्त है बेख़बरी।

—आर० एस० ह्वाइट

शैलीके दो बड़े दोष हैं—अस्पष्टता और कृत्रिमता।

—मैकोले

सामान्यतया, शैली लेखकके मनका प्रतिबिम्ब होती है। यदि आपको प्रसादगुणयुक्त शैलीमें लिखना है, तो पहले स्वयं आपका दिमाग़ रोशन हो; और अगर आप शानदार शैलीमें लिखना चाहते हैं, तो आपका चारित्र्य शानदार होना लाज़िमी है।

—गेटे

शोक

नष्ट हुई प्यारी चीज़के मिलनेका उपाय शोकातुर होना नहीं है।

—अज्ञात

दो मनुष्य मरनेपर व्यर्थ शोक करते हैं: एक तो वह जिसने अपनी सम्पत्तिका भोग न किया, दूसरा वह जिसने अपने ज्ञानके अनुसार व्यवहार नहीं किया।

—अज्ञात

पुत्र मरे या पति मरे, उसका शोक मिथ्या है और अज्ञान है।

—गाँधी

मेरी दृष्टिमें अतीव शोक उस आनन्दमें है, जिसके चले जानेका विश्वास आनन्द मनानेवाले को है।

—मुतनब्बी

शोभा

कानकी शोभा शास्त्र-श्रवणसे है, कुण्डलसे नहीं; हाथकी शोभा दानसे है, कङ्कणसे नहीं; दयालु लोगोंके शरीरकी शोभा परोपकारसे है, चन्दनसे नहीं।

—भर्तृहरि

शोषण

यह कहना कि हम अफ़रीक़ामें वहाँके निवासियोंका उद्धार करनेके लिये रहते हैं सरासर धूर्तता है।

—एलन अपवर्ड

कैसी विभूति! कैसी लताफ़त! कैसी दौलत! परन्तु सब दूसरेकी मेहनतमेंसे खींची हुई!

—ई० कार्पेन्टर

शोहरत

जो मनुष्य मशहूर नहीं है वह सुखी है। बढ़िया कुर्ता और कम्बल नहीं पहनता तो अच्छा करता है। ऐसा आदमी ही चिड़ियाकी तरह ऊपर आकाशमें उड़ जाता है और इस संसारके उजाड़-खंडका उल्लू नहीं बनता।

—शब्सतरी

मैं मशहूर तो हूँ; मगर इस झूठी शोहरतसे मैं शर्मिन्दा हूँ।

—शब्सतरी

ख़ूनके समन्दर बहानेकी बनिस्बत एक आँसू पोंछनेमें ज़्यादा सच्ची शोहरत है।

—बायरन

श्रद्धा

मनुष्य श्रद्धामय है। जिसकी जैसी श्रद्धा है, वैसा ही वह है।

—गीता

नये क़रारमें यह वाक्य है: "तेरे दिलमें न चिन्ता रहे, न न तू किसीका भय रखे।" यह वचन उसके लिये है जो परमात्माको मानता है।

—गांधी

श्रद्धाके मानी अन्ध-विश्वास नहीं हैं। किसी ग्रन्थमें कुछ लिखा हुआ या किसी आदमीका कुछ कहा हुआ अपने अनुभव विना सच मानना श्रद्धा नहीं है।

—विवेकानन्द

श्रद्धाका अर्थ है आत्म-विश्वास, और आत्म-विश्वासका अर्थ है ईश्वरपर विश्वास।

—गांधी

श्रद्धा वह चिड़िया है जो प्रकाशका अनुभव कर लेती है और अँधेरे प्रभातमें गाने लगती है।

—टैगोर

जिसकी आँखोंके सामने ईश्वर दिखता है वह ज्ञानी हो गया। परन्तु मेरी पीठ पीछे ईश्वर खड़ा हुआ है, इतनी श्रद्धा स्थिर हुई तो भी साधकके लिये काफ़ी है।

—विनोबा

जो जिसकी पूजा श्रद्धासे करना चाहता है परमेश्वर उसे उसीमें श्रद्धा देते हैं। जो फल उन लोगोंको प्राप्त होते हैं वे भी ईश्वर हो के ठहराये हुए हैं, लेकिन उन नासमझोंके ये फल नाश होनेवाले यानी फ़ानी हैं। देवताओंकी पूजा करनेवाले देवताओंको पहुँचते हैं और एक परमेश्वरकी पूजा करनेवाले परमेश्वरको।

—गीता

जो काम बिना श्रद्धा, बेदिलीसे, किया जाय वह न इस दुनियामें किसी कामका है, न दूसरी दुनियामें।

—गीता

श्रद्धासे मनुष्य क्या नहीं कर सकता? सब कुछ कर सकता है।

—गांधी

स्वराज्य मिलनेपर मैं क्या करूँगा, यह सचमुच मैं नहीं जानता। उस समय मुझे ईश्वर मार्ग दिखायेगा—जैसे आज वह दिखा रहा है। श्रद्धालु मनुष्य पहलेसे तैयारी नहीं कर रखते। पहलेसे तैयारी करती है वह श्रद्धा नहीं, अथवा हो तो वह शिथिल श्रद्धा है।

—गांधी

जिस समय सभी चीज़ें बुरीसे और अधिक बुरी अवस्थाकी ओर जाती हुई प्रतीत होती हैं, ठीक उसी समय हमें अपनी महत् श्रद्धाका परिचय देना चाहिये और यह जानना चाहिये कि भगवत्कृपा कभी हमारा साथ नहीं छोड़ेगी।

—अज्ञात

मेरी श्रद्धा तो ज्ञानमयी और विवेकपूर्ण है। अन्ध श्रद्धा ही नहीं।

—गांधी

श्रम

जो श्रमसे शर्माये वह हमेशाका ग़ुलाम है।

—अज्ञात

यह मूढ़ता है कि ख़ाली कुँओंमें डोल डालते रहें, खींचते रहें, और बिना कुछ पाये बूढ़े होते जायें।

—कूपर

श्रम करनेमें ही मानवकी मानवता है।

—विनोबा

श्रीमन्त

उदार आदमी देकर श्रीमंत बनता है; कंजूस संग्रह करके रंक बनता है।

—अज्ञात

प्राप्त वस्तुपर जो समाधानी है वह हमेशा श्रीमंत है।

—अज्ञात

श्रेष्ठ

सबसे श्रेष्ठ मनुष्य वह है, जो अपनी उन्नतिके लिये सबसे अधिक परिश्रम करता है।

—सुक़रात

सबको अपनी बुद्धि श्रेष्ठ मालूम होती है और अपने लड़के सुन्दर मालूम होते हैं।

—अज्ञात

जो इन्द्रियों और मनको नियममें रखकर अलिप्त रहकर कर्मेन्द्रियोंसे काम करता है वह मनुष्य श्रेष्ठ है।

—गीता

श्रेष्ठता

तू तलवारके फलसे अपना मतलब रख और उसके म्यानको छोड़। मनुष्यकी श्रेष्ठताको ग्रहण कर न कि उसके वस्त्रोंको।

—इब्न-उल-वर्दी

श्रोता

उस श्रोताको बहरा समझना चाहिये जिसके कान उपदेशोंसे नहीं खुलते।

—अज्ञात



[स]

सक्रियता

शुक्र है कि मैं यह जाननेके लिये जीता रहा कि आनन्दका रहस्य अपनी शक्तियोंको सक्रिय बनाये रखनेमें है।

—आदम क्लार्क

सच्चरित्रता

सच्चरित्रताका महान नियम, ईश्वरके बाद, समयका आदर करना है।

—लैवेटर

सच्चा

देखो, जिस मनुष्यका हृदय झूठसे पाक है वह सबके दिलोंपर हुकूमत करता है।

—तिरुवल्लुवर

सच्चा भोजन वह है जो बच्चोंको और बड़ोंको खिलाकर खाया जाय। सच्चा प्रेम वह है जो ग़ैरोंके प्रति भी दर्शाया जाय। सच्चा ज्ञान वह है जो पाप नहीं करता। सच्चा धर्म वह है जो दम्भ नहीं करता।

—अज्ञात

सच्चाई

अगर तुम ईश्वरके प्रति सच्चे नहीं हो, तो तुम आदमीके प्रति कभी सच्चे नहीं हो सकते।

—लॉर्ड चैथम

इस झूठमें भी सच्चाईकी खासियत है जिसके फलस्वरूप सरासर नेकी ही होती हो।

—तिरुवल्लुवर

सच्चाई क्या है? जिससे दूसरोंको किसी तरहका ज़रा-सा भी नुक़सान न पहुँचे, उस बातको बोलना ही सच्चाई है।

—तिरुवल्लुवर

अपने प्रति सच्चे रहो और फिर दुनियामें किसी और चीज़की परवा न करो।

—स्वामी रामतीर्थ

सज्जन

बुरा आदमी अपने मित्रोंके प्रति जितना मेहरबान होता है भला आदमी अपने शत्रुके प्रति उससे अधिक होता है।

—बिशप हॉल

पेड़ तेज़ धूपको अपने सरपर लेता है और संतप्तोंको शीतल छाया देता है यही सज्जनोंका भी स्वभाव होता है।

—अज्ञात

जिनका चेहरा आनन्दसे खिला हुआ है, जिनका हृदय दयासे भरा हुआ है, जिनकी वाणी अमृतकी तरह बहती है और जिनके कार्य परोपकारके लिये होते हैं, ऐसोंका कौन सत्कार न करेगा?

—अज्ञात

सज्जन यदि अत्यन्त कुपित भी हो गये हों तो भी उचित तरीक़ेसे मनाये जा सकते हैं, मगर नीच लोग नहीं। सोना सख़्त है तो भी उसे पिघलानेका तरीक़ा है लेकिन घासके लिये नहीं है।

—अज्ञात

सज्जन अपने स्वार्थकी अपेक्षा मित्रोंके हितार्थ काम करते हैं।

—अज्ञात

सज्जनोंका स्वभाव ही है कि वे प्रिय बोलते हैं और अकृत्रिम स्नेह करते हैं।

—अज्ञात

सज्जनता

तुम्हारे बल-प्रयोगकी अपेक्षा तुम्हारी सज्जनता हमें सज्जनताकी ओर ले चलनेके लिये अधिक बलवती है।

—शेक्सपियर

सतीत्व-रक्षा

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि कोई भी स्त्री जो निडर है और जो दृढ़तापूर्वक यह मानती है कि उसकी पवित्रता ही उसके सतीत्वकी सर्वोत्तम ढाल है, उसकी शील सर्वथा सुरक्षित है ऐसी स्त्रीके तेजमात्रसे पशुपुरुष चौंधिया जायेगा और लाजसे गड़ जायेगा।

—गांधी

सत्कार

यदि तू किसी कुलीनका सत्कार करेगा तो उसका स्वामी बन जायेगा; और यदि किसी दुष्टका सत्कार करेगा तो वह तुझे दुःख देगा।

—मुतनब्बी

सत्ता

शरीर-बलसे प्राप्त की हुई सत्ता मानवदेहकी तरह क्षण-भङ्गुर रहेगी, जबकि आत्म-बलसे प्राप्त सत्ता आत्माकी तरह अजर और अमर रहेगी।

—गांधी

सत्पथ

हृदय सत्पथपर है तो न-कुछ जानकारीकी आवश्यकता है, और अगर वह कुमार्गपर है तो भारी विद्वत्तासे भी कुछ नहीं होना जाना।

—स्पेल्डिंग

सत्पुरुष

जिनके तन, मन और वाणीमें पुण्यरूपी अमृत भरा है, जो अपने उपकारोंसे तीनों लोकोंको तृप्त करते हैं और जो दूसरेके परमाणु समान गुणोंको पर्वतके समान बढ़ाकर अपने हृदयमें प्रसन्न होते हैं—ऐसे सत्पुरुष इस जगतमें विरले ही हैं।

—भर्तृहरि

सत्पुरुष वह है जो दूसरोंकी ख़ातिर कष्ट उठाता है।

—अज्ञात

सत्य

सत्य स्वयं ही पूर्ण शक्तिमान है, और जब कड़े शब्दोंके द्वारा उसकी पुष्टिका प्रयत्न किया जाता है तब वह अपमानित होता है।

—गांधी

सूर्यकी किरणोंको और सत्यको किसी बाहरी स्पर्शसे बिगाड़ना असम्भव है।

—जॉन मिल्टन

सत्य और प्रेम दुनियाकी सबसे अधिक शक्तिशाली चीज़ोंमें से हैं; और जब ये दोनों साथ हों तो उनका आसानीसे मुक़ाबला नहीं किया जा सकता।

—कडवर्थ

स्वयं सत्य भी अपनी साख खो बैठेगा, अगर ऐसे आदमी द्वारा दिया गया जिसमें उसका अंश भी नहीं है।

—साउथ

मैं प्रेसीडेंट होनेकी अपेक्षा सत्य पर क़ायम रहना अधिक पसन्द करूँगा।

—हैनरी क्ले

जिस प्रकार हीरा केवल पृथ्वीके गर्भमें ही प्राप्त हो सकता है, उसी प्रकार सत्य केवल गम्भीर चिन्तनद्वारा आत्माकी गहराइयोंमें ही मिल सकता है।

—अज्ञात

सत्यका सबसे बड़ा अभिनन्दन यह है कि हम उस चलें।

—एमर्सन

सत्यकी हमेशा विजय ही है, ऐसी जिसकी सतत श्रद्धा है उसके शब्दकोशमें 'हार' शब्द ही नहीं है।

—गाँधी

सत्य स्थिरतासे घिरा नहीं है, न अनुशासनसे परिबद्ध। काल भी सत्य ही है, काल जो बनने मिटनेका आधेय है। अतः स्थिरता सिद्धि नहीं, गति भी आवश्यक है। जीवन अस्तित्वसे अधिक कर्म है।

—जैनेन्द्रकुमार

सत्य-प्रेमीके लिये शरीर, स्त्री, पुत्र, घर, धन, ज़मीन तिनकेके समान बताई है।

—रामायण

मनुष्य जैसी उच्च योनिको पा लेनेसे भी कोई लाभ नहीं, अगर आत्माने सत्यका आस्वादन नहीं किया।

—तिरुवल्लुवर

पृथ्वी सत्यके बलपर टिकी हुई है। 'असत्'-असत्य-के मानी हैं 'नहीं'; 'सत'-सत्य-अर्थात् 'है'। जहाँ असत् अर्थात् अस्तित्व ही नहीं है, उसकी सफलता कैसे हो सकती है? और जो सत् अर्थात् 'है' उसका नाश कौन कर सकता है? बस, इसीमें सत्याग्रहका तमाम शास्त्र समाया हुआ है।

—गांधी

जो सत्यको अपना पथप्रदर्शक बनाता है, और कर्त्तव्यको अपना ध्येय, वह ईश्वरकी क़ुदरतमें इत्मीनानके साथ विश्वास कर सकता है कि वह उसे सीधे रास्ते ले जायेगी।

—पास्कल

सत्य गोपनीयतासे घृणा करता है।

—गांधी

हममें जितना धैर्य और ज्ञान होगा, सत्य उतना ही हमपर रोशन होगा। हमारे अनुरोधोंसे सत्य हमपर कृपाकर प्रकट होता है; और प्रकट होकर, हमें गहनतर सत्योंकी ओर ले जाता है।

—रस्किन

सत्यका टेढ़ी पॉलिसीसे और दुनियावी मामलोंकी दुष्टता-पूर्ण वक्रताओंसे मेल बैठना कठिन है; क्योंकि सत्य, प्रकाशकी तरह, सीधी रेखाओंमें ही चलता है।

—कोल्टन

सत्यका रूप ऐसा है, और उसकी छवि ऐसी है कि दिखते ही मन मोह लेता है।

—ड्राइडन

सन्देहमें सज्जनके अन्तःकरणकी प्रवृत्ति ही सत्यका निर्देश करती है।

—कालिदास

सत्यकी खोज तो चाहे अपढ़ भी करें, बच्चे करें, बूढ़े करें स्त्रियां करें, पुरुष करें। अक्षर-ज्ञान कई बार हिरण्यमय पात्रका काम करता है और सत्यका मुँह ढक देता है।

—गांधी

शेरका बच्चा शेरकी भयंकरता और हिंस्रतासे नहीं डरता, किलक किलककर और उछल-उछलकर उसके गलेसे लिपटता है, उसी प्रकार सत्यका अनुयायी सत्यकी प्रचण्डतासे नहीं घबराता, उल्टा उसके पास दौड़-दौड़कर जाता है।

—अज्ञात

मुझे जाना तो है बहुत दूर, रास्तेमें पर्वत-घाटियाँ अड़ी खड़ी हैं। फिर भी यात्रा तो पूरी करनी ही चाहिये। और सत्यकी खोजमें असफलताको स्थान ही नहीं, इस ज्ञानसे मैं निश्चिन्त हूँ।

—गांधी

जिसका मन सत्यमें निमग्न है, वह पुरुष तपस्वीसे भी महान और दानीसे भी श्रेष्ठ है।

—तिरुवल्लुवर

वह पुरुष धन्य है, जिसने गम्भीर स्वाध्याय किया है और सत्यको पा लिया है; वह ऐसे रास्ते चलेगा कि उसे इस दुनियामें फिर न आना पड़ेगा।

—तिरुवल्लुवर

सत्यसे बढ़कर धर्म नहीं है और झूठसे बढ़कर पाप नहीं है।

—अज्ञात

सच्चा कार्य कभी निकम्मा नहीं होता, सच्चा वचन अंतमें कभी अप्रिय नहीं होता।

—गांधी

सदा अप्रमादी और सावधान रहकर, असत्यको त्यागकर हितकारी सत्य वचन ही बोलना चाहिये। इस तरह सत्य बोलना बड़ा कठिन होता है।

—भ० महावीर

'सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्' यह केवल व्यवहार-वचन नहीं सिद्धान्त है। 'प्रियम्' का अर्थ अहिंसक है। अहिंसक सत्य शुरूमें कड़वा, परन्तु परिणाममें अमृतमय मालूम होता है। यह अहिंसाकी अनिवार्य कसौटी है।

—गांधी

सत्यके लिये सब कुछ क़ुरबान करें। हम हैं वैसे दीखना नहीं चाहते; बल्कि हैं उससे बेहतर दीखना चाहते हैं। कैसा अच्छा हो अगर हम नीच हैं तो नीच दीखें; अगर ऊँच होना चाहें तो ऊँच काम करें, ऊँचा विचारें! ऐसा न हो सके तो भले नीच ही दीखें। किसी रोज़ सब ऊँचे जायेंगे।

—गांधी

हज़ार संभावनायें एक सत्यके बराबर नहीं हो जातीं।

—इटालियन कहावत

सत्यपर आरोप लगाया जा सकता है मगर उसे लज्जित नहीं किया जा सकता।

—अज्ञात

जिसने सत्यको पा लिया उसके लिये स्वर्ग पृथ्वीसे भी अधिक समीप है।

—तिरुवल्लुवर

मैंने इस संसारमें बहुतसी चीज़ें देखी हैं, मगर उनमें सत्यसे बढ़कर और कोई चीज़ नहीं है।

—तिरुवल्लुवर

सत्य वस्तुको पानेमें गुज़ारा हुआ समय कभी बर्बाद नहीं जाता; आखिरमें वह बचाया हुआ समय साबित होता है।

—अज्ञात

सबकी कुंजी सत्यकी आराधनामें है। सत्यकी उपासनासे सब चीज़ें मिलती हैं।

—गांधी

जो मनुष्य अपनी जिह्वाको क़ब्ज़ेमें नहीं रख सकता उसमें सत्यका अधिष्ठान नहीं है।

—गांधी

मनुष्य जातिको 'सत्य' कोई नहीं सिखा सकता। सत्यकी अनुभूति स्वयं ही होती है।

—जे० कृष्णमूर्ति

इस दुनियामें हमेशा हर चीज़ मनुष्यको निराश करती है—एक मात्र भगवान ही उसे निराश नहीं करते। भगवानकी ओर मुड़ना ही जीवनका एक मात्र सत्य है।

—अरविन्द घोष

आम राय सत्यका प्रमाण नहीं; क्योंकि अधिकांश लोग अज्ञानी होते हैं।

—क्लिफ़र्ड

जिसकी जिह्वा सत्य और हितकर वाणी बोलती है वही वास्तविक सत्यवक्ता है।

—जुन्नुन

सत्य ईश्वरकी तलवार है; उसका प्रहार बिना असर किये नहीं रहता।

—जुन्नुन

अगर तुम मेरे हाथोंपर चाँद और सूरजको भी लाकर रख दो, तो भी मैं सत्यके मार्गसे विचलित नहीं होऊँगा।

—हज़रत मुहम्मद

लोगोंके मुँहसे हम चाहे जितनी बातें सुनें, मगर सत्यका पता बिना समझे नहीं लगता।

—अज्ञात

सिर्फ़ यह स्पष्ट रहे कि अन्ततः सत्य क्या, भले ही तुम उसे कर सको या न कर सको: और अगर तुमने कोशिश की तो हर दिन तुम उसे अधिकाधिक कर सकनेमें समर्थ होगे।

—रस्किन

सत्य एक ही है, दूसरा नहीं, सत्यके लिये बुद्धिमान लोग विवाद नहीं करते।

—बुद्ध

दुनियाकी सबसे आलीशान चीज़ोंमेंसे एक है स्पष्ट सत्य।

—बलवर

सत्य ही जय पाता है, असत्य नहीं। सत्यसे मोक्षमार्ग स्पष्ट दिखाई देता है उस मार्गसे परमात्माकी इच्छा करनेवाले ऋषि-जाते हैं और सत्यके परम आश्रय-स्थान, ब्रह्म को प्राप्त करके मोक्षानन्द भोगते हैं।

—मुंडकोपनिषद्

जो हमें ठीक लगे वैसा कहना और वैसा ही करना, इसका नाम है सत्य।

—विवेकानन्द

असत्य तो फूसके ढेरकी तरह है। सत्यकी एक चिनगारी भी उसे भस्म कर देती है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

अगर हज़ार अश्वमेध यज्ञोंको सत्यके मुक़ाबले तराज़ूमें रखा जाये, तो सत्यका पल्ला भारी निकलेगा।

—अज्ञात

सत्य बहुमतकी क़तई परवाह नहीं करता। एक युगका बहुमत दूसरे युगका आश्चर्य और शर्म हो सकता है।

—अज्ञात

सत्यपर क़ायम रहनेसे जो आनन्द मिलता है, उसकी तुलना अन्य किसी प्रकारके आनन्दसे नहीं दी जा सकती।

—अज्ञात

सत्यको पा लेना, दुनियाका मालिक बन जाना है।

—स्वामी रामतीर्थ

बरतनका पानी चमकदार होता है; समुद्रका पानी काला-काला। लघु सत्यमें स्पष्ट शब्द होते हैं, महान सत्यमें महान मौन।

—टैगोर

न तो अप्रिय सत्य बोले, न प्रिय असत्य।

—अज्ञात

सतत प्रियवादी पुरुष सुलभ हैं; परन्तु अप्रिय और हित-कर सत्य बोलने और सुनने वाले दुर्लभ हैं।

—रामायण

जिससे जीवनका अत्यन्त कल्याण हो वही सत्य है।

—महाभारत

सत्यके प्रादुर्भावका सबसे पहला लक्षण है निर्भयता और दूसरा लक्षण है अहिंसकता।

—हरिभाऊ उपाध्याय

सच बोलनेसे सबसे बड़ा फ़ायदा यह है कि तुम्हें याद नहीं रखना पड़ता कि तुमने किससे कहाँ क्या कहा था।

—अज्ञात

मुझे इस विश्वाससे कोई चीज़ हर्गिज़ विचलित नहीं कर सकती कि हर आदमी सत्यका प्रेमी होता है।

—एमर्सन

एक मात्र सत्य पर ही दृढ़ रहनेका स्वभाव जबतक नहीं बन जाता तबतक कहीं न कहीं कमज़ोरी, बुज़दिली, दब्बूपन, प्रकट हुए बिना न रहेगा।

—अज्ञात

अनात्मामें आत्मा माननेवाले और नामरूपके बन्धनमें पड़े हुए इन मूढ़ मनुष्योंको तो देखो, वे समझते हैं कि 'यही सत्य है'।

—बुद्ध

सत्य क्या है ? सत्य यही है कि बिना साधन किये कुछ नहीं मिलेगा।

—अज्ञात

सत्य असत्य पर विजय प्राप्त करता है; प्रेम द्वेष को परास्त करता है; ईश्वर निरन्तर शैतानके दाँत खट्टे करता है।

—गांधी

लोकोपकारी जीवनके लिये ये तीन सूत्र हैं—सत्य, संयम और सेवा।

—विनोबा

एक चीज़को हमेशा नज़रके सामने रक्खो—सत्यको; अगर तुमने यह किया, तो चाहे वह तुम्हें लोगोंकी रायोंसे अलग ले जाती मालूम पड़े मगर लाज़िमी तौरसे वह तुम्हें ईश्वरके सिंहासन तक पहुँचा देगी।

—हॉरेस मैन

सत्यके तीन भाग हैं : पहला पूछना, जो कि उसका प्रेम है; दूसरा उसका ज्ञान, जो कि उपस्थिति है; और तीसरा विश्वास, जो कि उसका उपभोग है।

—बेकन

तमाम पुण्यों और सद्गुणोंकी जड़ सत्य है।

—रामायण

तमाम कमालका आधार सत्य है।

—जॉन्सन

यह नहीं हो सकता कि तुम दुनियाके भी मज़े लो और सत्यको भी पा लो।

—स्वामी रामतीर्थ

सत्यपरायण

क्या जीवन जीने लायक़ है? यह आप पर निर्भर है। सत्य-परायण रहिये. फिर जो कुछ आप करेंगे उसमें कमाल होगा।

—ब्लेकी

तमाम सत्यपरायण लोग एक ही सेनाके सैनिक हैं और एक ही दुश्मनसे लड़ने खड़े हैं—अन्धकार और मिथ्यात्वके साम्राज्यके ख़िलाफ़।

—कार्लाइल

विजय लाज़िमी नहीं है, लेकिन सत्यपरायण होना मेरे लिये लाज़िमी है। सफलता लाज़िमी नहीं है, लेकिन जो रोशनी मुझे प्राप्त है उसपर अमल करना मेरे लिये लाज़िमी है।

—अ० लिंकन

सत्यप्राप्ति

कर्म तो मनकी शुद्धिके लिये है वस्तुस्वरूपकी उपलब्धिके लिये नहीं। सत्यकी प्राप्ति विवेकसे होती है, करोड़ों कर्मोंसे भी उसकी लवलेश प्राप्ति नहीं होती।

—अज्ञात

सत्य-प्रेमी

सत्यप्रेमीके हृदयमें सत्यस्वरूप परमात्मा ऐसे सत्य प्रकट करता है, जिनकी प्राप्ति दूसरोंके लिये दुर्लभ होती है।

—ज़ुन्नुन

वे सत्यके सर्वोत्तम प्रेमी हैं जो अपने प्रति ईमानदार हैं, और जिसका वे स्वप्न देखते हैं, उसे कर दिखानेका साहस करते हैं।

—लॉ वेल

सत्याग्रह

प्रत्येक मनुष्यके सन्मुख संकट निवारणके लिये दो बल हैं-एक शस्त्रबल और दूसरा आत्मबल किंवा सत्याग्रह। भारतवर्षकी सभ्यताका रक्षण केवल सत्याग्रह ही से हो सकता है।

—गांधी

सत्याग्रही

पूर्ण सत्याग्रही माने ईश्वरका पूर्ण अवतार। यह संसार ऐसा अवतार निर्माण करनेकी प्रयोगशाला ही है।

—गांधी

सत्संग

स्वर्ग और मोक्षका सुख भी लवमात्र सत्संगके सुखकी बराबरी नहीं कर सकता।

—रामायण

जिस तरह पारस पत्थरके छूनेसे लोहा सोना हो जाता है उसी तरह सत्संगति पाकर दुष्ट आदमी भी सुधर जाते हैं।

—रामायण

जो सांसारिक विषयों तथा विषयी लोगोंके संसर्गसे दूर रहता है और साधुजनोंका ही संग करता है, वही सच्चा प्रभु-प्रेमी है; कारण, ईश्वर-परायण साधुजनोंसे प्रीति करना और ईश्वरसे प्रीति करना एक समान है।

—जुन्नुन

सन्तमिलनके समान कोई सुख नहीं है।

—रामायण

सत्संग बड़े भाग्यसे मिलता है। उससे बिना प्रयासके भवभ्रमण मिट जाता है।

—रामायण

सदाचार

अगर आप मनोवाञ्छित फल चाहते हैं, तो आप और गुणोंमें कष्ट और हठसे वृथा परिश्रम न करके, केवल सत्क्रियारूपी भगवतीकी आराधना कीजिये। वह दुष्टोंको सज्जन, मूर्खोंको पंडित, शत्रुओंको मित्र, गुप्त विषयोंको प्रकट और हलाहल विषको तत्काल अमृत कर सकती है।

—भर्तृहरि

मैं तुम्हें बहिश्तका विश्वास दिलाता हूँ; एक, जब बोलो सच; दूसरे, जब वादे करो तो उन्हें पूरा करो; तीसरे, किसीकी अमानतमें ख़यानत न करो; चौथे, बदचलनीसे बचो; पांचवें, आँखें सदा नीची रखो; और छठे, किसीपर अत्याचार न करो।

—अज्ञात

सद्‌गुण

सद्‌गुण मेरे साथ बीमार नहीं पड़ते, और न वे मेरी क़ब्रमें ही दफ़न होंगे।

—एमर्सन

पैसेके लिये सद्‌गुण न बेच।

—नैतिक सूत्र

सद्‌गुणशील शाश्वत आनन्द पाता है।

—सादी

सद्‌गुणशीलता शांत और आनन्दमयी है।

—कनफ़्यूशियस

सद्गुणशीलता

सद्गुणशीलता निर्भीक होती है और नेकी कभी भयानक नहीं होती।

—शेक्सपियर

सद्गुरु

जिसका वर्तन अत्यन्त पवित्र है; जो बिल्कुल निरपेक्ष वृत्तिका है; जिसको मान या धनकी लवलेश आकांक्षा नहीं है, वही सद्गुरु है।

—विवेकानन्द

सद्गृहस्थ

सद्गृहस्थ वही है जो अपने पड़ोसीकी स्त्रीके सौन्दर्य और लावण्यकी परवा नहीं करता।

—तिरुवल्लुवर

सद्व्यवहार

सद्व्यवहारशीलताकी कसौटी यह है कि हम दुर्व्यवहारको खुशनूदीसे बर्दाश्त कर सकें।

—वैंडेल विल्की

विद्वानकी शोभा सद्व्यवहारसे है।

—अज्ञात

सन्त

सन्त मोक्ष-मार्ग हैं और कामी भव-पन्थ।

—रामायण

नेता यह देखता है कि यह मेरे काम आवेगा या नहीं। सन्त यह देखता है कि यह दुखी है या नहीं।

—हरिभाऊ उपाध्याय

नेताकी एक पार्टी होती है, सन्त अकेला होता है। नेताका बल उसका दल होता है, सन्तका बल उसका निर्मल दिल होता है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

सन्त सौ युगोंका शिक्षक होता है।

—एमर्सन

सन्तपुरुष प्रत्यक्ष शिक्षा न देते हों तो भी उनकी सेवा करनी चाहिये। क्योंकि उनकी सहज वार्त्ता भी शास्त्र तुल्य है।

—भर्तृहरि

नेता यह देखता है कि इसने मेरी आज्ञाका पालन किया या नहीं, सन्त यह देखता है कि इसे मेरी बात जँची है या नहीं।

—हरिभाऊ उपाध्याय

सन्त लोगोंकी आपत्तियोंको दूर करनेके लिये सन्तपुरुष ही समर्थ होते हैं, जैसे कि कीचड़में डूबते हुए हाथीको हाथी ही बाहर निकाल सकते हैं।

—अज्ञात

साधुओंका बड़प्पन इसीमें है कि वे अपने साथ बुराई करनेवालोंके साथ भी भलाई ही करें।

—रामायण

सन्तोष

अहंभावको छोड़कर विपत्तिको भी संपत्ति मानना ही सच्चा सन्तोष है।

—जुन्नेद

सन्तोष ही परम श्रेय है। सन्तोष ही सुख है।

—अज्ञात

अगर आजकी वृत्ति तुझपर कठिन हो, तो सन्तोष कर, आशा है कि समयका फेर कल तक जाता रहेगा।

—हज़रतअली

जब सन्तोष धन आता है तो सब धन धूलके समान हो जाते हैं।

—तुलसीदास

तुम्हें अपने धनका घमंड है मुझे अपने सन्तोषका घमंड है।

—अज्ञात

सत्पुरुष दूसरेके सन्तोषसे सन्तोष पाते हैं और दुर्जन दूसरेको विपत्तिमें देखकर सन्तोष पाते हैं।

—अज्ञात

भाग्यमें जितना धन लिखा है वह मरुस्थलमें भी मिल जायेगा; उससे ज्यादा सोनेके सुमेरु पर्वतपर भी नहीं मिल सकता। इसलिये वृथा दीन याचक न बनो। देखो, घड़ा समुद्र और कुएँसे समान ही जल ग्रहण करता है।

—भर्तृहरि

यदि तुम ईश्वरके प्रीति-पात्र होना चाहते हो तो ईश्वर जिस स्थितिमें रखना चाहता है उसमें सन्तुष्ट होना सीखो।

—हातिम हासम

सन्तोषरूपी अमृतसे तृप्त हुए, शान्त चित्तवालेको जो सुख होता है, वह इधर उधर दौड़नेवाले धनके लोभियोंको कहाँ?

—अज्ञात

सन्तोषके बिना किसीको शान्ति नहीं मिल सकती।

—रामायण

जो कुछ हमारे पास हो उससे सन्तोष मानना ठीक है, लेकिन हम जो कुछ हैं उससे सन्तुष्ट हो रहना कभी नहीं।

—मैकिनतोश

आत्म-सन्तोष और अल्प-सन्तोष इनमें अन्तर है। पहिली आध्यात्मिक वस्तु है। दूसरी व्यावहारिक है; जो कि अच्छी भी हो सकती है, बुरी भी। अच्छी हुई तो अध्यात्मकी पोषक होगी।

—अज्ञात

जब कि सब कामोंके रास्ते बन्द हो जाते हैं, उस वक़्त सन्तोष ही तमाम रास्तोंको बिला शक अच्छी तरह खोल देता है।

—मुहम्मद-बिन-बशीर

एक दिन मैंने प्रभुसे पूछा—"हे प्रभु, मैं सब अवस्थाओंमें तुझसे सन्तुष्ट हूँ। क्या तू भी मुझपर सन्तुष्ट है?" ईश्वरने कहा—"तू झूठा है। यदि तू मुझसे पूर्णतया सन्तुष्ट होता तो मेरे सन्तोषकी पूछताछ न करता।"

—अबुल हुसेनअली

ज्ञानवानको सुखी करनेके लिये न-कुछ चीज़ोंकी ज़रूरत है, लेकिन मूर्खको किसीसे सन्तोष नहीं मिलता; और यही कारण है कि मनुष्य जातिके इतने सारे लोग दुःखी हैं।

—रोशे

इधर उधर दौड़नेवाले धनलोलुपियोंको वह सुख-शांति कहाँ नसीब है जो सन्तोषामृतसे तृप्त लोगोंको प्राप्त है!

—अज्ञात

सन्तोष क़ुदरती दौलत है, ऐश्वर्य कृत्रिम ग़रीबी।

—सुक़रात

सच्चा सन्तोष इस बातपर निर्भर नहीं है कि हमारे पास क्या है; डायोनीज़के लिये एक नाँद ही काफ़ी बड़ी थी, लेकिन सिकन्दरके लिये एक दुनिया भी निहायत छोटी थी।

—कोल्टन

ओ सन्तोष, मुझे ऐश्वर्यशाली बना दे; क्योंकि कोई ऐश्वर्य तुझसे बढ़कर नहीं है।

—सादी

सन्तोष आदमीको शक्तिशाली बनाता है।

—फ़ारसी कहावत

सन्तोष आनन्द है, शेष सब दुःख है। इसलिये सन्तुष्ट रह, सन्तोष तुझे तार देगा।

—तुकाराम

सन्तुष्ट आदमी धनवान है, चाहे वह भूखा और नंगा हो; परन्तु तृष्णावान भिखारी है, चाहे वह सारी दुनियाका मालिक हो।

—जाविदान-ए-ख़िरद

इच्छाको ढील देनेसे बड़ा पाप नहीं; असन्तोषसे बड़ा दुःख नहीं; प्राप्तिकी तृष्णासे भयंकर आपदा नहीं।

—ताओ-धर्मका उपदेश

सर्वोत्कृष्ट मनुष्य वह है जिसे सर्वोत्तम सन्तोष हो।

—स्पेंसर

सच्ची प्रसन्नता सन्तुष्ट मनसे उत्पन्न होती है; तो फिर मनका सन्तोष पानेका प्रयास करो।

—चुंग ची

लोभ दुःख लाता है; सन्तोषमें आनन्द ही आनन्द है।

—रामकृष्ण परमहंस

सन्देश

हर बच्चा इस सन्देशको लेकर आता है कि ईश्वर अभी मनुष्यसे निराश नहीं हुआ है।

—टैगोर

सन्देह

जिसे सन्देह है, उसे कहीं ठिकाना नहीं। उसका नाश निश्चित है। वह रास्ते चलता हुआ भी नहीं चलता है, क्योंकि वह जानता ही नहीं कि मैं कहाँ हूँ।

—गांधी

सन्देह सच्ची दोस्तीका हलाहल है।

—ऑगस्टाइन

सन्मार्ग

सन्मार्ग तो परमात्माकी सतत प्रार्थनासे, अतिशय नम्रतासे, आत्मविलोचनसे, आत्म त्याग करनेको हमेशा तैयार रहनेसे मिलता है। इसकी साधनाके लिये ऊँचेसे ऊँचे प्रकारकी निर्भयता और साहसकी आवश्यकता है?

—गांधी

सफलता

संसारमें लाखों ऐसे स्त्री पुरुष हैं जो नित्य और निर्धारित मार्गपर न चल सकनेके कारण दुःखी रहते हैं, और करोड़ों ऐसे हैं जो जीवनभर कभी अपना मार्ग निर्धारित ही नहीं कर पाते। इन दोनों ही कोटियोंके मनुष्य सफलतासे सदा कोसों दूर रहते हैं।

—लिली ऐलेन

शक्ति और अध्यवसाय सफलताके दो प्रधान साधन हैं।

—अज्ञात

सफलता इसमें नहीं है कि भूलें कभी न हों, बल्कि इसमें कि एक ही भूल दुबारा न हो।

—एच. डबल्यू. शा.

उस आदमीके लिये कुछ भी असंभव नहीं है जो इरादा कर सकता है और फिर उसपर अमल कर सकता है; सफलताका यही नियम है।

—मीराबो

सफलताको खो देनेका निश्चित तरीक़ा अवसरको खो देना है।

—चेसिल्स

अपने विचारोंका द्रोही न बन; अपने प्रति ईमानदार रह, अपने विचारोंपर अमल कर, तू ज़रूर कामयाब होगा। सच्चे और सरल हृदयसे प्रार्थना कर, तेरी प्रार्थनायें ज़रूर सुनी जायेंगी।

—रामकृष्ण परमहंस

अपनी हस्तीको अपने काममें भुला दो। सफलता अवश्य मिलेगी। अन्यथा हो नहीं सकता। सफलता मिलनेसे पहले फलकी इच्छाको तुम्हारे काममें मर जाना चाहिये।

—स्वामी रामतीर्थ

समानके पास समान चीज़ आती है अपने अन्दर अभी यहीं ईश्वरका आनन्द भरा रक्खो तो सफलताका आनन्द तुम तक खिंचकर आना ही चाहिये।

—स्वामी रामतीर्थ

पहले परमात्माको याद करो, तब अपना काम शुरू करो। इत्मीनान रक्खो असफलताकी गुंजाइश नहीं रहेगी।

—दयाराम

सफलता वह सुन्दरी है जिसे बहुतसे लोग प्यारसे चाहते हैं, मगर वह आलिंगन उसीका करती है जो उत्साहके अतिरेक-से मुक्त रहकर दृढ़तापूर्वक प्रयत्नशील रहता है और शांतिपूर्वक अध्यवसायमें जुटा रहता है।

—भारवि

सफलताके योग्य बन, वह तेरी हो जायेगी।

—नैतिक सूत्र

जीवनमें सुख और सफलता हमारी परिस्थितियोंपर नहीं हमींपर निर्भर हैं। दूसरोंने जिन्हें बर्बाद किया उनकी अपेक्षा अपनी तबाही खुद ही बुलाने वालोंकी संख्या कहीं अधिक है।

—अज्ञात

कुछ भी चाहो; अगर दिलोजानसे कोशिश करोगे तो ज़रूर कामयाब होगे।

—फ़ारसी कहावत

साधारण बुद्धिवाला भी यदि असाधारण अध्यवसाय करे तो सब कुछ पा सकता है।

—बक्सटन

सफलता मिलती है समझदारी और परिश्रमसे। यदि तुझे चढ़ना है तो दोनोंको अपना।

—माघ

निर्मल अन्तःकरण, कार्य-तत्परता और नम्रतासे सफलता मिलती है।

—तोरूदत्त

सभा

जिस सभामें अधर्म धर्मको घायल कर दे, और अगर सभासद् उसके घावको न पूर दें तो निश्चय जानो कि उस सभामें सब सभासद् ही घायल पड़े हैं।

—मनुस्मृति

मनुष्यको योग्य है कि सभामें प्रवेश न करे, यदि सभामें प्रवेश करे तो सत्य ही बोले। यदि सभामें बैठा हुआ भी असत्य बातको सुनकर मौन रहे अथवा सत्यके विरुद्ध बोले, वह मनुष्य अति पापी है।

—मनुस्मृति

सभ्यता

"जो भद्रपुरुष समाजसे जितना ले उतना ही समाजको वापिस कर दे, वह साधारण भद्र-पुरुष कहा जाता है। जो सभ्य-पुरुष समाजसे जितना ले उससे अधिक उसे लौटा दे, वह विशिष्ट भद्र-पुरुष है और जो शरीफ़ आदमी अपना समस्त जीवन समाजमें लगा दे और एवज़में समाजसे कुछ भी न चाहे, वह असाधारण सभ्य एवं भद्र-पुरुष कहलाता है। लेकिन पश्चिमका सभ्यपुरुष (?) समाजसे लेता ही लेता है, देनेकी तो वह इच्छा ही नहीं करता।

—जार्ज बर्नार्ड शा.

समझ

मूर्खको समझ देना मुश्किल है।

—कहावत

वह निकृष्ट समझ, जिससे आदमी बिना मतलब या असलियत को समझे एक ही काममें अन्धेकी तरह लिपटा रहता है, और उसे ही सब कुछ समझ लेता है, तामस समझ है।

—गीता

समझदार

समझदार आदमीको चाहिये कि बिना किसी तरहके लगावके सबका भला चाहते हुए ही सब काम करे।

—गीता

वे लोग समझवाले हैं जो परमेश्वरसे लौ लगाये हुए एक दूसरेसे हमेशा उसका ज़िक्र करते हैं, आपसमें समझते समझाते हैं और इस तरह एक दूसरेके साथ मिलकर तसल्ली और आनन्द पाते हैं।

—गीता

समझदार आदमीको चाहिये कि अपनी आत्माको शुद्ध करे और फिर सबके साथ अपने फ़र्ज़को पूरा करते हुए सबकी आत्माके अन्दर परमात्माकी आराधना (पूजा) करे।

—गीता

समझदार आदमी पहलेहीसे जान जाता है कि क्या होने वाला है, मगर मूर्ख आगे आनेवाली बातको नहीं देख सकता।

—तिरुवल्लुवर

समझदार आदमीको चाहिये कि जो कम समझ लोग किसी भी "रास्ते" पर चलकर नेक कामोंमें लगे हुए हैं, उनकी समझ को डाँवाडोल न करे, बल्कि उन्हें उसी तरह नेक कामोंमें लगाए रखे।

—गीता

समझदारी

बोलनेमें समझदारीसे काम लेना वाक्‌पटुतासे अच्छा है।

—बेकन

जीवनमें ऐसे प्रसंग और वस्तु-स्थितियाँ आती हैं जबकि बुद्धिमत्ता इसीमें होती है कि अति बुद्धिमान न बने।

—शिलर

समता

सम होना माने अनन्त होना, विश्वमय हो जाना।

—अरविन्द घोष

जिन लोगोंमें समताभाव है और जो शरीरमें निस्संग होते हैं उनमें कायरता हो नहीं सकती। न तो वे गुलाम होते हैं और न किसी को गुलाम होते देख सकते हैं।

समग्र विश्वजीवनपर आत्माका प्रभुत्व स्थापन करनेकी पहिली सीढ़ी समता है।

—अरविन्द घोष

जब अन्तःकरणमें अक्षुब्ध शान्ति सदैव विराजमान रहे तब समझना कि समता प्राप्त हो गई।

—अरविन्द घोष

सम भाव ही समस्त कल्याणका पाया है।

—विवेकानन्द

ईश्वरके भक्तोंमें एक सीमा तक ही समता होती है। पूर्ण समता जिसमें प्रकट होती है वह परमेश्वर है; किन्तु वह तो एक ही है। तब पूर्णतम मनुष्यमें भी समता अपूर्ण होगी। अतः मतभेद और विरोध होगा, उसमें दुःख माननेका कारण नहीं जगत विषमताका परिणाम है। अपना धर्म रोज़ समताका अंश प्राप्त करनेका होना चाहिये। ऐसा करनेसे विषमता असह्य मालूम होनेके बजाय सह्य और कुछ अंशोंमें सुन्दर भी प्रतीत होगी।

—गांधी

समता ही परमेश्वर है।

—गीता

समय

आम लोग वक़्तको महज़ गुज़ार देना चाहते हैं, मनस्वी उसका सदुपयोग करना।

—शोपेन होर

मान लो कोई व्यक्ति रोज़ाना एक निश्चित समयपर सोता है, और अगर वह चालीस बरस तक सात बजेके बजाय पाँच बजे उठा करे, तो इससे उसकी उम्रमें क़रीब दस बरसका गोया इज़ाफ़ा हो जायेगा।

—डॉडरिज़

मेरा विश्वास करो जब कि मैं कहता हूँ कि वक़्तकी किफ़ायत भविष्यमें तुम्हें ऐसे प्रचुर लाभसे मुआवज़ा देगी जो तुम्हारे सबसे अधिक आशापूर्ण स्वप्नोंसे भी अधिक होगा; और उसकी बर्बादी वैसे ही तुम्हारी कालीसे काली कल्पनाओंसे भी अधिक बौद्धिक और नैतिक पतनमें तुम्हें विलीन कर देगी।

—ग्लेड्स्टन

जब तक समय अनुकूल नहीं है तब तक दुश्मनको कन्धेपर लिये सहना चाहिये; लेकिन जब मौक़ा आवे तब उसे पत्थरपर घड़ेकी तरह फोड़ दे।

—नीति

कोई ऐसी घड़ी नहीं बना सकता जो मेरे गुज़रे हुए घंटोंको फिरसे बजा दे।

—डिकेन्स

समय, सत्यके सिवाय, हर चीज़को कुतर खाता है।

—हक्सले

चिराग़ बुझ जानेपर तेल डालना, चोरके भाग जानेपर सावधान होना, जवानी बीत जानेपर स्त्री-सहवास, पानी बह जानेपर बाँध बाँधना ये सब व्यर्थ हैं: समयपर ही काम करना चाहिये।

—अज्ञात

समयके अनुसार भागना भी विजय है।

—अरबी कहावत

हज़ार बरस जो बीत गये और हज़ार बरस जो आनेवाले हैं इन सबसे बढ़कर वह समय है जो तुम्हारे हाथमें है।

—शिब्ली

हर क्षण एक दुर्लभ सम्पत्ति है।

काव्य और शास्त्रकी चर्चामें बुद्धिमान मनुष्य समय गुज़ारते हैं; जब कि मूर्ख लोग व्यसनोंमें, सोनेमें या लड़नेमें अपना वक़्त निकालते हैं।

—अज्ञात

'जितना सुबहका है वह राम-प्रहर', और बाक़ीका क्या हराम प्रहर है? भक्तको सब काल समान पवित्र होना चाहिये।

—विनोबा

मैं अपने वक़्तसे पाव घंटे पहिले हाज़िर रहा हूँ और इसने मुझे आदमी बना दिया है।

—नैल्सन

समाज़

किसी समाजमें बिना किसी प्रश्नके मत बोल; क्योंकि ऐसा करना उचित नहीं है।

—हज़रतअली

समाज अपने पर्दाफ़ाश करनेवालोंको प्यार नहीं करती।

—एमर्सन

लानत है उन सामाजिक बन्धनोंपर जो हमें सजीव सत्यसे वंचित रक्खे।

—टैनीसन

समाजवाद

समाजवादका सार यह है कि व्यक्तिगत स्पर्द्धाशील पूँजीको संयुक्त सामूहिक पूंजी बना देना।

—शैफ़िल

समाजवादी

एक भी कौड़ी जब तक कोई रक्खेगा, तब तक वह समाजवादी नहीं है।

—गांधी

समाप्ति

जो थकानमें समाप्त होती है वह मौत है, लेकिन परिपूर्ण परिसमाप्ति अनन्तमें है।

—टैगोर

अच्छी तरह शुरू करना अच्छा है, पर अच्छी तरह समाप्त करना बेहतर है।

—अज्ञात

समालोचक

ग्रन्थोंके गुण-दोष-निरीक्षक अक्सर वे लोग होते हैं, जो कवि, इतिहास-लेखक या जीवनी लिखनेवाले होना चाहते थे; पर जब उन्होंने सब तरहसे अपनी क्षमताकी परीक्षा कर ली, उन्हें सफलता न हुई, तब वे परछिद्रान्वेषी बन गये।

—कॉलेरिज

चन्द लोगोंको छोड़कर, अधिकांश समालोचक आलसी और दुष्ट होते हैं। जिस तरह चोर जब चोरी करनेमें सफल नहीं होता, तब चोर पकड़नेवाला हो जाता है; उसी तरह जिसे ग्रन्थ लिखनेमें सफलता नहीं होती, वह परछिद्रान्वेषी बन जाता है।

—शैली

जो ग्रन्थकारोंकी धूल उड़ाते हैं, उनमें अधिकांश लोग मूर्ख और परगुणद्वेषी होते हैं।

—शैली

समूह

विशाल जन-समूह निरे साधन हैं, अथवा रुकावटें या नक़लें हैं; महान कार्य ऐसी सामूहिक हलचलपर निर्भर नहीं हुआ करते, क्योंकि सर्वोत्तम और सर्वश्रेष्ठका भी जन-समूहपर कोई प्रभाव नहीं।

सम्पत्ति

आपत्ति 'मनुष्य' बनाती है, और सम्पत्ति 'राक्षस'।

—विक्टर ह्यूगो

तुम सम्पत्ति और पोज़ीशनके फेरमें क्यों पड़ते हो? बिना लूट-चोरी और छल-फ़रेबके दोमेंसे एक भी चीज़ तुम्हारे हाथ नहीं लग सकती!

—अज्ञात

उस आदमीकी सम्पत्ति जिसे लोग प्यार नहीं करते हैं, गाँवके बीचोबीच किसी विष-वृक्षके फलनेके समान है।

—तिरुवल्लुवर

उत्तम पुरुषोंकी सम्पत्तिका मुख्य प्रयोजन यही है कि औरोंकी विपत्तिका नाश हो।

—कालिदास

लोगोंको रुलाकर जो सम्पत्ति इकट्ठी की जाती है वह क्रन्दन-ध्वनिके साथ ही विदा हो जाती है; मगर जो धर्म द्वारा सञ्चित की जाती है वह बीचमें क्षीण हो जानेपर भी अन्तमें खूब फलती-फूलती है।

—तिरुवल्लुवर

अधर्मसे इकट्ठी की हुई सम्पत्तिसे तो सदाचारीकी दरिद्रता कहीं अच्छी है।

—तिरुवल्लुवर

सम्बन्ध

जन्मनेसे पहिले किसीके साथ सम्बन्ध नहीं था; मरनेके बाद नहीं रहता; तो फिर बीचमें ही सच्चा सम्बन्ध किस तरह हो?

—अज्ञात

यदि मुझसे तेरा कुछ भी रिश्ता है तो तुझे मेरे शरीर, मेरी कीर्ति, मेरे धन, मेरे वैभवकी नहीं, मेरी आत्माकी चिन्ता करनी चाहिये।

—अज्ञात

सज्जनोंके जोड़े हुए सम्बन्धोंका परिणाम कष्टदायक नहीं होता।

—कालिदास

हमारा दूसरे लोगोंके साथ जो सम्बन्ध होता है, प्रायः उसीसे हमारे सभी शोक और दुःखोंका जन्म होता है।

—शोपेनहोर

सम्यक् आजीविका

मनुष्यको पेट देनेमें ईश्वरका हेतु है। प्रामाणिकतासे पेट भरना यह बात जब मनुष्य साध लेगा तब समाजके बहुतसे दुःख और पातक नष्ट हो जायँगे।

—बिनोवा

सम्यक्चारित्र

जब कोई सही काम कर रहा हो तो उसे पता तक नहीं लगता कि वह क्या कर रहा है, लेकिन गलत कामका हमें हमेशा भान रहता है।

—गोटे

सम्यक्ज्ञान

सम्यक्ज्ञान दरिद्रताकी भी आधी शक्तिको नष्ट कर देता है।

—शा.

जैसे धनमें आनन्द नहीं, वैसे ही विज्ञानमें सम्यक्ज्ञान नहीं।

—बौफ़लर्स

सम्यक्ज्ञान महान है। इसका मूल्य अनन्त है। इन्सानने जो सर्वोच्च चीज़ प्राप्त की है वह सम्यक्ज्ञान है।

—कार्लाइल

ज्ञानका स्थान दिमागमें है; सम्यक्ज्ञानका दिलमें। अगर हमारी भावना सही नहीं है तो हमारे निर्णय अवश्य ग़लत होंगे।

—हैज़लिट

सम्यक्ज्ञान ही सब विज्ञानोंका विज्ञान है और अपना भी।

—प्लेटो

ज्ञान प्रेमोत्पादक है; सम्यक्ज्ञान स्वयं प्रेम है।

—हेअर

कोई मूर्ख ऐसा नहीं है जो सुखी हो, और कोई सम्यक्ज्ञानी ऐसा नहीं है जो सुखी न हो।

—सिसरो

एक मात्र रत्न जो तुम श्मशानसे आगे अपने साथ ले जा सकते हो सम्यक्ज्ञान है।

—लैंगफर्ड

सरकार

सबसे बढ़िया सरकार वह है जो कमसे कम शासन करती हो।

—थोरो

सबसे अच्छी सरकार कौनसी है?—जो हमें अपने ही ऊपर शासन करना सिखाती है।

—गेटे

शासन-कार्यमें भाग लेनेसे इन्कार करनेकी सज़ा यह मिलती है कि बदतर आदमियोंके शासनमें रहना पड़ता है।

—एमर्सन

आजकल अधिकांश आत्मज्ञानी खामोश हैं, और भले लोग शक्तिविहीन हैं, जब कि नासमझ लोग बुलक्कड़ बने हुए हैं हृदयहीन शासन कर रहे हैं।

—रस्किन

सरलता

मनुष्योंमें ऐसे लोग भी हैं जो अपने सरल जीवनमें ही सन्तुष्ट हैं। उनकी सवारी उनके दोनों पैर हैं और उनका ओढ़ना-बिछौना मिट्टी है।

—मुतनब्बी

सीधे होनेमें चाहे तू बाणके समान ही हो, तो भी लोग यही कहेंगे कि यह सीधा है· ही नहीं।

—इस्माईल-इब्न-अबीबकर

सरलता (आर्जव, निष्कपटता) यही धर्म है, और कपट ही अधर्म है। सरल मनुष्य ही धर्मात्मा हो सकते हैं।

—महाभारत

सरसता

सरस हृदय जन होत हैं, बहुधा मृदुल स्वभाव

—कालिदास

सर्वप्रियता

सर्वप्रिय होना स्त्रीका गुण है; प्रतापी होना पुरुषका।

—सिसरो

सर्वार्थसिद्धि

सब जीवोंके लिये जो हितकर और खुदको भी सुखकर है उसे ही बुद्धिसे ईश्वरार्पण करना सर्वार्थसिद्धिका मूल है।

—अज्ञात

सलाह

इन्सानसे यह उम्मेद रखना कैसे मुमकिन है कि वह सलाह ले लेगा जब कि वह चेतावनी तकसे सावधान नहीं होता।

—स्विफ्ट

वह करो जिसे तुम जानते हो कि तुम्हें करना चाहिये। हमें किसीकी सलाह क्यों लेने जाना चाहिये? हमारे अन्दर ही वह बैठा है जो हमें निरन्तर बतलाता रहता है कि हमें क्या करना चाहिये।

—अज्ञात

जो अच्छी सलाह देता है, एक हाथसे बनाता है; जो अच्छी सलाह और आदर्श पेश करता है, दोनोंसे बनाता है; लेकिन जो अच्छी चेतावनी देता है और बुरा आदर्श, वह एक हाथसे बनाता है और दूसरेसे गिराता है।

—बेकन

स्वयं तुम्हारेसे बढ़कर कोई तुमको अच्छी सलाह नहीं दे सकता।

—अज्ञात

सहनशीलता

सन्त दूसरोंको दुःखसे बचानेके लिये कष्ट सहते हैं, दुष्ट लोग दूसरोंको दुःखमें डालनेके लिये।

—रामायण

जो पुरुष तेरे विरुद्ध झूठी साक्षी देते हैं, उनके लिये तू अपने मुँहसे एक शब्द भी मत निकाल। शायद इसीसे उनका उद्धार हो जाय।

—पालशिरर

सहानुभूति

सहानुभूतिका अर्थ है सामनेवालेकी आत्मामें अपनी आत्माका अंश मिला देना।

—अज्ञात

उन पत्थरके पशुओंपर लानत है, जो दूसरेके दुःखको कोमलतासे अपनाकर द्रवीभूत नहीं हो जाते।

—हिल

डूबनेवालेके प्रति सहानुभूतिका मतलब उसके साथ डूबना नहीं है बल्कि खुद तैरकर उसको बचानेका प्रयत्न करना।

—विनोबा

सहायता

कठिन कामको वही पूरा कर सकता है जिसे मदद मिल जाती है। आँखोंवाला भी बिना प्रकाशकी सहायताके अँधेरेमें कुछ नहीं देख सकता।

—अज्ञात

दूसरेके सहारे जीनेवाला हमेशा दुःखी रहता है।

—अज्ञात

जो सिर्फ़ ईश्वरका सहारा लेते हैं, वे मनुष्यका सहारा नहीं लेंगे, चाहे वे मरे हों चाहे ज़िन्दा। यदि तुमने इसे पचा लिया, तो तुम कभी शोक नहीं करोगे।

—गांधी

जब कि इन्सान तमाम बाहरी सहारा अलग कर देता है और अकेला खड़ा होता है, तभी मैं देखता हूँ कि वह मज़बूत है और बाज़ी ले जायेगा।

संकल्प

जो आदमी इरादा कर सकता है उसके लिये कुछ भी असम्भव नहीं है।

—एमर्सन

सच्चीसे सच्ची और अच्छीसे अच्छी चतुराई दृढ़ सङ्कल्प है।

—नैपोलियन बोनापार्ट

संकीर्णता

संकीर्ण मनवाला आदमी अफ़रीकाके भैंसेकी तरह होता है, वह बस सीधा सामने देखता है; दायें बायें कुछ नहीं।

—एनन

संक्षिप्तता

जो लोग अपने मनकी बात थोड़ेसे चुने हुए शब्दोंमें कहना नहीं जानते, वास्तवमें उन्हींको अधिक बोलनेकी लत होती है।

—तिरुवल्लुवर

संक्षिप्तता, ख़ुशगोईकी जान है।

—शेक्सपियर

संक्षिप्तता; भाषण पटुताका महान जादू है।

—सिसरो

संगठन

जब दुष्ट लोग गुट बना लें, तो सज्जनोंको भी संगठित हो जाना चाहिये, वर्ना, एक एक करके, उन सबकी बलि चढ़ जायगी।

किसका बाह्य जीवन उसके आंतरिक जीवनके समान नहीं है, उसका संसर्ग मत करो।

—जुन्नुन

किसका संग किया जाय ? जिसमें 'तू-मैं' का भाव न हो।

—जुन्नुन

मिलने-जुलनेकी भूख तीव्र होती है, मगर उसमें समझदारी और किफ़ायतसे काम लेना चाहिये।

—एमर्सन

चन्दन शीतल है। चन्दनसे चन्द्रमा अधिक शीतल है। चन्द्र और चन्दनसे भी साधु पुरुषोंकी संगति अधिक शीतल होती है।

—अज्ञात

हीन मनुष्यकी संगतिसे बुद्धि हीन हो जाती है, समान मनुष्यके संगसे समान और उत्तम मनुष्यके संगसे उत्तम।

—अज्ञात

हम अपने सरीखोंकी संगतिसे कुछ नहीं पाते : हम एक दूसरेको तुच्छ बननेमें सहायक होते हैं। मैं हमेशा उन लोगोंकी संगतिका अभिलाषी रहता हूँ जो मुझसे श्रेष्ठतर हैं।

—लैम्ब

मूर्खोंकी संगतिमें रहनेवाला अवश्य बरबाद होगा।

—कहावत

झूठेकी संगतिसे ठगाना होगा; मूर्ख शुभेच्छु होनेपर भी अहितकर ही होगा; कृपण अपने स्वार्थके लिये दूसरेको अवश्य हानि पहुँचायेगा; नीच आपत्तिके समय दूसरेका नाश करेगा।

-सादिक़

मूर्खोंकी संगतिमें ज्ञानी ऐसा है जैसे अन्धोंके साथ कोई खूबसूरत लड़की।

—सादी

जिसकी संगतिमें–फिर वह व्यक्ति हो समाज हो या संस्था हो–अपूर्णता मालूम हो वहाँ पूर्णता लानेका प्रयत्न करना अपना धर्म है! गुणोंकी अपेक्षा दोष बढ़ते हों तो उसका त्याग–असहयोग–धर्म है। यह शाश्वत सिद्धान्त है।

—गांधी

गरम लोहेपर पड़नेसे जलकी बूँदका नाम भी नहीं रहता; वही कमलके पत्तेपर पड़नेसे मोती-सी हो जाती है; और वही स्वाति नक्षत्रमें सीपमें पड़नेसे मोती हो जाती है। अधम, मध्यम और उत्तम गुण प्रायः संसर्गसे ही होते हैं।

—भर्तृहरि

नीच लोगोंकी संगतिसे मनुष्यकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, मध्यम लोगोंकी संगतिसे वे मध्यम होते हैं और उत्तम लोगोंके सहवाससे उत्तम होते हैं।

—महाभारत

मुझे बताइये आपके संगी साथी कौन हैं, और मैं बता दूँगा कि आप कौन हैं।

—गेटे

संगति, बदमाशोंकी संगतिने मेरा नाश कर डाला है।

—शेक्सपियर

संगीत

संगीत पैग़म्बरोंकी कला है, यही वह कला है जो कि आत्माकी अशान्तियोंको शान्त करती है।

—ल्यूथर

भावावेशमें हृदय संगीतसे उत्तेजित होता है, ईश्वरको खोजनेके लिये व्याकुल बनता है। जो ईश्वरभावकी वृद्धिके लिये संगीत सुनता है, उसे तो उससे लाभ ही होता है। परन्तु जो संगीत इन्द्रियोंकी तृप्तिके लिये सुना जाता है उससे तो ईश्वर-विरोधी भाव और विषय-प्रेम ही की वृद्धि होती है।

—ज़ुन्नुन

समस्त कलाओंमें संगीतका कषायोंपर अधिकतम प्रभाव पड़ता है।

—नैपोलियन

संचय

दो शख़्स फ़िज़ूल तकलीफ़ उठाते हैं, और बेमतलब मशक़्क़त करते हैं। एक तो वह जो धन संचय करता है परन्तु उसे भोगता नहीं; दूसरा वह जो ज्ञानार्जन करता है किन्तु तदनुसार आचरण नहीं करता।

—सादी

संन्यास

'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' ऐसा अनुभव होना ही वेदान्तकी नज़रमें त्याग और संन्यास है।

—स्वामी रामतीर्थ

बिना वैराग्यके संन्यास ले लेनेवाला मज़ाककी चीज़ हो जाता है।

—रामायण

इस तरहके 'संन्यास' से जिसमें अपने दुनियावी फ़र्ज़को छोड़ दिया जावे आदमी सिद्धि यानी कमालको नहीं पहुँच सकता।

संन्यास दिलकी एक हालतका नाम है, किसी ऊपरी नियम या लिबास वग़ैरहका नहीं।

—गीता

अपने सब कामोंके अन्दरसे ख़ुदग़रज़ी निकाल देनेको ही समझदार आदमी असली 'संन्यास' कहते हैं; और सब कामोंके फलका त्याग यानी अच्छे बुरे नतीजेकी परवाह न करना ही सच्चा 'त्याग' है।

—गीता

'संन्यास लेना' इसका कुछ भी अर्थ नहीं है कारण कि संन्यासके माने ही हैं 'न लेना'।

—विनोबा

संन्यासी

जो आदमी नतीजेकी परवाह न कर जिसे अपना फ़र्ज़ समझता है उसे पूरा करता है, वही संन्यासी है, और वही योगी है।

—गीता

संन्यासी कौन हो सकता है? वह जो इस बातका क़तई ख़्याल किये बग़ैर कि कल क्या खाऊँगा, क्या पहनूँगा, दुनियाको क़तई छोड़ देता है।

—रामकृष्ण परमहंस

संभाषण

बातचीतका पहला अंग है सत्य, दूसरा समझदारी, तीसरा ख़ुशमिज़ाजी, और चौथा हाज़िर जवाबी।

—टैम्पिल

जैसे कि बरतन आवाज़से जाना जाता है कि फूटा हुआ है या नहीं, उसी तरह आदमी अपनी बातोंसे साबित कर देते हैं कि वे अक़्लमन्द हैं या बेवक़ूफ़।

—डिमॉस्थनीज़

वह संगीत जो अधिकतम गहराई तक पहुँचता है, और तमाम बुराइयोंको दूर करता है, हार्दिक सम्भाषण है।

—एमर्सन

किसीके बोलनेके प्रवाहमें बोल उठनेसे बढ़कर बदतहज़ीबी नहीं हो सकती।

—लौके

बातचीत होते ही विद्वानोंमें परस्पर एक प्रकारका संबंध हो जाता है।

—कालिदास

संयम

जब मनुष्य अपनी इन्द्रियोंको वश कर लेता है, तभी उसकी बुद्धि स्थिर होती है।

—महाभारत

संयम हीन स्त्री या पुरुषको गया-बीता समझिये।

—गांधी

जो अपने मुँह और ज़बानपर क़ाबू रखता है, वह अपनी आत्माको क्लेशोंसे बचा लेता है।

—बाइबिल

संयम मनुष्यको देव-तुल्य बना देता है।

—अज्ञात

असंयम दुःखका मार्ग है, संयम सुखका। जिसपर चाहो चलो।

—अज्ञात

जो अपने ऊपर शासन नहीं करेगा, वह हमेशा दूसरोंका ग़ुलाम रहेगा।

सौन्दर्य शोभा पाता है शीलसे और शील शोभा पाता है संयमसे।

— कवि नान्हालाल

संशय

अज्ञानी, अश्रद्धानी और संशयात्मा नाशको प्राप्त होते हैं। संशयात्माके लिये न यह दुनिया है, न वह दुनिया, न कोई सुख।

—अज्ञात

जो निष्पाप है, जो स्वार्थ-रहित है, वह संशयी नहीं हो सकता।

—अज्ञात

संसर्ग

महाजनोंके संसर्गसे किसकी उन्नति नहीं होती? कमलके पत्तेपर ठहरी हुई पानीकी बूँद मोतीकी सुन्दरता पाती है।

—अज्ञात

संसार

संसार क्या? जो ईश्वरसे तुम्हें परे रखे।

—जुन्नुन

अचेत आदमीके लिये संसार खेल तमाशेकी जगह है, परन्तु विचारवानके लिये लड़ाईका खेत है जहाँ जीवन पर्यन्त मन और इन्द्रियोंसे जूझना पड़ता है।

—सहजो

इस संसाररूपी सघन वनमें मनुष्यका मनरूपी हिरन वासनाके जालमें फँसकर अत्यन्त वेबस हो जाता है।

—अज्ञात

संसार महापुरुषोंकी प्रयोगशाला है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

संसारके सुख क्षण-भंगुर हैं। कोई सुखी नहीं कहा जा सकता जो सुखी न मरे।

—सोलन

संसारका संसर्ग दिलको या तो तोड़ता है, या उसे कठोर बनाता है।

—चैम्फ़र्ट

जिसके पास प्रज्ञाका जहाज़ है, विवेक खेवनहार है, फिर भी जो संसार-सागरको नहीं तरता उसे धिक्कार है।

—अज्ञात

संस्कृति

दौलतमन्द पैसा देकर काम करा सकता है, आत्म-संस्कृति नहीं ख़रीद सकता।

—स्माइल्स

संस्कृति ही सुखकी शत्रु है। वही सबसे अधिक सुखी है जो कुछ भी पढ़ा-लिखा नहीं है।

—महात्मा टाल्सटाय

आंशिक संस्कृति बनाव-चुनावकी तरफ़ दौड़ती है; परिपूर्ण संस्कृति सादगीकी ओर।

—बोवी

बड़ीसे बड़ी बातको सरलसे सरल तरीक़ेसे कहना उच्च संस्कृतिका प्रमाण है।

—एमर्सन

साइंस

जो यह कहते हैं कि साइंस और धर्मका विरोध है वे या तो साइंससे वह कहलवाते हैं जो उसने कभी नहीं कहा या धर्मसे वह कहलवाते हैं जो उसने कभी नहीं सिखाया।

साक्षात्कार

जिसे आत्माका साक्षात्कार हो गया है उसके लिये सारी दुनिया नंदनवन है; सब वृक्ष कल्पवृक्ष हैं; सब जल गंगाजल हैं। उसकी क्रिया पवित्र रहती है; उसकी वाणीमें तत्त्वोंका सार रहता है। उसके लिये सारी पृथ्वी काशी है और उसकी सारी चेष्टा परमात्मामय है।

—अज्ञात

जीवनमात्रकी शुद्धतम सेवा ही साक्षात्कार है।

—गांधी

वास्तविक साक्षात्कारमें एक ईश्वरमें ही स्थिति होनेके कारण अहंभाव और ममताका नाश होता है। वैसी हालतमें तुम अपने शरीर और जीवको नहीं देख पाओगे।

—जुन्नेद

साथी

धीरज, धर्म, मित्र और नारी इन चारोंकी परीक्षा आपत्ति-कालमें हो जाती है।

—रामायण

ईश्वर ही हमारा निरन्तर साथी है।

—गांधी

सादगी

सादगीमें एक शाही शान है जो कि बुद्धि-वैचित्र्यसे बहुत ऊँची है।

—पोप

सूरज प्रकाशकी सादा पोशाकमें है। बादल तड़क भड़कसे सुशोभित हैं।

—टैगोर

सत्य, शक्ति, सौन्दर्य, रहते हैं सादगी में ।

—टैगोर

सादगी क़ुदरतका पहला क़दम है, और कलाका आख़िरी ।

—बेली

स्त्रियोंमें सादगी मनोमुग्धकारी लावण्य है, उतनी ही दुर्लभ जितनी कि वह आकर्षक है ।

—डी फ़िनो

मेरे भाइयो, अहंकारी और शक्तिशालीके सामने अपनी सादगीकी सफ़ेद पोशाक पहिनकर खड़े होनेमें शर्माओ मत ।

—टैगोर

चारित्रमें, इख़्लाक़में, शैलीमें, सब चीज़ोंमें, बेहतरीन कमाल है—सादगी ।

—लौंग.फैलो

साधक

'प्रभुके लिये मेरा उत्साह इतना बढ़ गया है कि उससे मेरा मन बिल्कुल व्याकुल हो गया है'—ऐसा जो कह सके उसीको सच्चा साधक कहा जा सकता है ।

—अरविन्द घोष

साधन

जिस अनुपातमें साधनका अनुष्ठान होगा ठीक उसी अनुपातमें ध्येय-प्राप्ति होगी । यह नियम निरपवाद है ।

—गाँधी

लोग एक हाथीके द्वारा दूसरेको फँसाते हैं; उसी तरह एक कामको दूसरे कामके सम्पादनका ज़रिया बना लेना चाहिये ।

—तिरुवल्लुवर

अगर एक दरवाज़ा बन्द हो गया है तो दूसरा खुल जायेगा।

—कहावत

साधना

पुरुषको जाग्रत करके पुरुषोत्तम करना यही सब साधनका हेतु है।

—अरविन्द घोष

इन चार बातोंका पालन करोगे तो तुमसे शुद्ध साधना हो सकेगी। १–भूखसे कम खाना, २–लोकप्रतिष्ठाका त्याग, ३–निर्धनताका स्वीकार, ४–ईश्वरकी इच्छामें सन्तोष।

—अज्ञात

बिना साधना ईश्वर नहीं मिल सकता।

—रामकृष्ण परमहंस

जो मेरे मन्दिरमें आकर सहज ही में उकता जाता है, वह कापुरुष है। साधनामें तो दृढ़ संकल्प और अपार उत्साहकी आवश्यकता है।

—अज्ञात

साधु

साधु कुवेषमें भी हो तो भी सन्मान पाता है।

—रामायण

साधु पुरुषका यह लक्षण है कि वह जिस किसीसे भी मिलता है बाहरसे ही मिलता है। भीतरसे तो वह सदा ईश्वरसे मिलता रहता है।

—अज्ञात

हर पहाड़में माणिक नहीं, हर हाथीमें मोती नहीं, हर वनमें चन्दन नहीं, सब जगह साधु नहीं।

—अज्ञात

साधुका लक्षण पूर्णता नहीं साधना है।

—अज्ञात

अगर कोई आर्त्त अधिकारी मिल जाय तो साधुलोग उससे गूढ़तत्त्व भी नहीं छिपाते।

—रामायण

जगमें सारी मानव जातिके लिये प्रेम भाव व परम-सहिष्णुता पैदा होना ही साधुताकी सच्ची कसौटी है।

—विवेकानन्द

शैतान काँप उठता है जब वह दुर्बलसे दुर्बल साधुको भी अपने जानुओंके बल बैठा देखता है।

—अज्ञात

साधु पुरुषसे किसीका अहित नहीं होता।

—रामायण

सच्चा साधु वह है जो समस्त संसारसे सीखता है।

—पूर्वी कहावत

साधु-जीवन

साधु-जीवनसे ही आत्म-शान्तिकी प्राप्ति सम्भव है। यही इहलोक और परलोक, दोनोंका, साधन है। साधु-जीवनका अर्थ है सत्य और अहिंसामय जीवन; संयमपूर्ण जीवन। भोग कभी धर्म नहीं बन सकता; धर्मकी जड़ तो त्यागमें ही है।

—गांधी

साधुता

ऐ भाई, अपने भाईको कलेजेसे लगा; जहाँ साधुता है वहीं ईश्वरकी शान्ति है।

—व्हाटयर

हमारी साधुता बड़ी कमज़ोर और अपूर्ण होना चाहिये अगर उसने मौतका डर नहीं जीता।

—फैनेलन

भोगोपभोगोंके त्यागमें आनन्द मिलने लगना साधुता का लक्षण है।

—शाहशुजा

दुनियामें दो चीज़ें हैं जो एक दूसरेसे बिलकुल नहीं मिलतीं। धन-सम्पत्ति एक चीज़ है और साधुता-पवित्रता बिलकुल दूसरी चीज़।

—तिरुवल्लुवर

साधु-शीलता

वह भला है जो दूसरोंकी भलाई करता है। अगर वह उस भलाईके एवज़ कष्टमें पड़ जाता है तो वह और भी भला है; अगर वह उन्हींके हाथों कष्ट पाता है जिनकी उसने भलाई की थी, तो वह नेकीकी उस ऊँचाईपर पहुँच गया जहाँ कष्टोंकी वृद्धि ही उसकी और अधिक श्रीवृद्धि कर सकती है; अगर उसे प्राणोत्सर्ग करना पड़े, तो उसकी साधुशीलता पराकाष्ठाको पहुँच गई—वहाँ तो वीरताकी परिपूर्णता हो गई।

—ब्रुयेअर

साफ़

जो बाहरसे खूब साफ़ है और अन्दरसे मैला है, वह नरकके दर्वाज़ेकी चाभी हाथमें लिये हुये है।

—अज्ञात

साफ़-दिल

साफ़-दिल किसी इलज़ामसे नहीं डरता।

खुशमिज़ाज और दिलके साफ़ आदमीका काम कभी नहीं रुकता।

—अज्ञात

खुशक़िस्मत हैं वे जिनका दिल साफ़ है, क्योंकि उन्हें परमात्माके दर्शन ज़रूर होंगे।

—ईसा

सामयिक

सुचारु होनेके लिये हमारे शब्दों और कार्योंको सामयिक होना चाहिये।

—एमर्सन

सामंजस्य

कोई भी अपने सिवाय किसीके साथ पूर्ण सामंजस्य स्थापित नहीं कर सकता।

—शोपेनहोर

साम्यवाद

लोग 'साम्यवाद' से न जाने क्यों इतना घबराते हैं? यदि उसमेंसे हिंसा और द्वेष निकाल दिया जाय तो वह एक अच्छी समाज-व्यवस्था हो सकती है। और यदि अब तक थोड़े लोगोंको सुख और बहुतेरे लोगोंको दुख मिला है तो अब कुछ समय तक बहुतेरे लोगोंको सुख और थोड़े लोगोंको दुख मिलनेकी संभावना हो तो इसपर नाराज़ क्यों होते हैं?

साम्राज्यवाद

साम्राज्यवाद बैंकरों, सौदागरों और व्यापारिक सफ़ीरोंका मज़हब है; और उनकी उद्देश्यपूर्तिके साधन हैं ईटन और हेरोमें अर्ध-शिक्षित उत्साही छोकरे।

—जी० आर० एस० टेलर

सावधान

कुछ जीव हैं जिनसे सावधान रहना चाहिये। वे हैं धनवान आदमी, कुत्ता, साँड़ और शराबी।

—रामकृष्ण परमहंस

सावधानी

ज़िंदगीका हर क़दम दिखलाता है कि कितनी अहतियातकी ज़रूरत है।

—गेटे

साहस

क्या ठीक है?—यह देख लेना और फिर उसे न करना, साहसके अभावका द्योतक है।

—कन्फ्यूशियस

शारीरिक साहस जो तमाम ख़तरेको तुच्छ मानता है, आदमीको एक तरहसे वीर बनाता है; और नैतिक साहस, जो तमाम रायज़नोंको तुच्छ गिनता है, आदमीको दूसरी तरहसे वीर बनाता है। लेकिन महान पुरुष होनेके लिये दोनों लाज़िमी हैं।

—कोल्टन

सावधान—लाभ हानिका बहुत विचार करनेवाला मनुष्य हानिसे बच सकता है। अधिक प्राप्त कर लेगा, ऐसा नहीं कह सकते। इससे विपरीत साहसी मनुष्य बड़ा लाभ कर सकता है। 'साहसे श्रीः वसति'।

—अज्ञात

अपना भार दूसरेपर न लादना और बिना संकोच दान करना बड़ी दिलेरीका काम है।

—जुन्नेद

साहस गया कि आदमीकी आधी समझदारी उसके साथ गई।

—एमर्सन

साहसी

वही सच्चा साहसी है जो कभी निराश नहीं होता।

—कनफ्यूशियस

साहसी बनो, साहसी बनो, और सर्वत्र साहसी बनो।

—स्पेन्सर

साहित्य

साहित्य-समुद्रका पारावार नहीं है; आयु थोड़ी है; विघ्न बहुत हैं। इसलिये सिर्फ़ सार ग्रहण करके बाक़ीको छोड़ देना चाहिये, जिस तरह कि हंस दूध पी जाता है पानी छोड़ देता है।

—अज्ञात

साहित्यका पतन राष्ट्रके पतनका द्योतक है।

—गेटे

साहित्य वह है जिसे चरस खींचता हुआ किसान भी समझ सके और साक्षर भी समझ सके।

—गांधी

सिद्ध

देह संबद्धता—बद्ध, देहव्यतिरिक्तता—बुद्ध, देहातीतता—शुद्ध, देहरहितता—सिद्ध।

—विनोबा

सिद्धान्त

सिद्धान्त जीवनका ढाँचा है, सत्यका कंकाल, जो पवित्र जीवनके सजीव सौन्दर्यसे सुडौल और सुसज्जित किया जाना चाहिये।

—गॉर्डन

जोशके क्षण बड़ी कोशिश की जा सकती है; लेकिन लगातार छोटे प्रयास केवल सिद्धान्तके कारण होते हैं।

—अज्ञात

पवित्र सिद्धान्त हमेशा पवित्र लाभोंमें प्रतिफलित होता है।

—एमर्सन

मनुष्य जैसा होता है वैसे ही सिद्धान्त उसे प्रिय होते हैं; चोर, व्यभिचारी और कुचक्रीकी क्या कोई 'फ़िलॉसफ़ी' नहीं होती?

—हरिभाऊ उपाध्याय

सिद्धि

यदि कोई सद्गुणशीलताकी ओर प्रतिदिन शक्तिपूर्वक बढ़ता जाता है तो वह अवश्य सिद्धि प्राप्त करता है।

—कनफ्यूशियस

जो सबके लिये हितकर है और अपने लिये सुखकर है उसे ईश्वरमें श्रद्धा रखकर करते रहना चाहिये; क्योंकि यही सर्वार्थसिद्धिका मूल है।

—अज्ञात

अपना कर्तव्य आनन्दपूर्वक करते रहनेसे परमसिद्धि प्राप्त होती है।

—अज्ञात

सिपाही

सैनिकको अन्तिम और शाश्वत कर्तव्य दुष्टोंको दण्ड देना और काहिलोंको काम करनेपर विवश करना है। दूसरे देशोंसे अपने देशकी रक्षा करना, जो कि आजकल उसका फ़र्ज़ है, शीघ्र समाप्त हो जायेगा।

—रस्किन

जोखिमका डर छोड़ देना आवश्यक है···किन्तु जो अकारण संकटकी ओर दौड़ता है वह सिपाही नहीं मूर्ख है। सच्चा सिपाहीपन ईश्वर जैसे रक्खे वैसे रहनेमें है।

—गांधी

सिफ़ारिश

पड़ौसीकी सिफ़ारिशसे स्वर्गमें जाना नरकमें जानेके बराबर है।

—सादी

सीख

हर शख़्स जिससे मैं मिलता हूँ, किसी न किसी बातमें मुझसे बढ़कर है। वही, मैं उससे सीखता हूँ।

मैंने बातूनसे मौन सीखा है, असहिष्णुसे सहिष्णुता, और दयाहीनसे दयालुता सीखी है।

—ख़लील जिब्रान

सुख

जो किसीका बुरा नहीं चाहता और सबको समदृष्टिसे देखता है, उसे हर तरफ़ सुख ही सुख मिलता है।

—नीति

इन्द्रियसुख और स्वर्ग-सुख उस सुखका सोलहवाँ भाग भी नहीं है जो इच्छाओंके नाश करनेसे मिलता है।

—नीति

जो सच्चे सुखका स्वरूप जानकर उसे पानेकी कोशिश करता है, और अपनी रायको हटा देता है, वह इस दुनियामें वास्तविक आनन्द पाता है।

—अज्ञात

सुखमय जीवन स्वार्थमय जीवन है। दूसरोंको किसी न किसी प्रकारका दुःख पहुँचाये बिना सांसारिक सुख नहीं प्राप्त हो सकता।

—हरिभाऊ उपाध्याय

गुरुके बिना ज्ञान नहीं होता; ज्ञानके बिना वैराग्य नहीं होता; वेद पुराण गाते हैं कि हरि भक्तिके बिना सुख नहीं मिल सकता।

—रामायण

सन्तोष ही सर्वोत्तम सुख है।

—अज्ञात

जीनेकी इच्छा ही सब दुःखोंकी जननी है। मरनेकी तैयारी ही सब सुखोंकी जननी है।

—स्वामी रामतीर्थ

आधी दुनियाका ख़्याल है कि सुख, पाने और रखने और दूसरोंसे सेवा लेनेमें है। परन्तु सुख है देने और दूसरोंकी सेवा करनेमें।

—हैनरी ड्रमण्ड

काम सरीखी व्याधि नहीं है, मोह सरीखा कोई दुश्मन नहीं है, क्रोध सरीखी आग नहीं है, और ज्ञान सरीखा सुख नहीं है।

—अज्ञात

जो अकिञ्चन है, शान्त-दान्त-समचित्त है, सदा सन्तुष्ट-मन है उसके लिये सब दिशाएँ सुखमय हैं।

—अज्ञात

सब जग सुखी रहे ऐसी इच्छा दृढ़ करनेसे हम खुद सुखी होते हैं।

—विवेकानन्द

सुख-सन्तोष बाहरकी चीज़ोंसे नहीं अन्दरके गुणोंसे मिलता है।

—अज्ञात

क्षणिक सुखको ज्ञानियोंने दुःख ही बतलाया है। जो सुख अकृत्रिम है अनादि है अनन्त है वही सुख है।

—अज्ञात

जीवन जितना ही स्वाभाविक व समतोल होगा उतना ही सुख मिलेगा।

—हरिभाऊ उपाध्याय

तृष्णाको छोड़नेसे ही आनन्द मिल सकता है। तृष्णा वह रोग है जो प्राणोंके साथ ही जाता है।

—अज्ञात

यह एक महान सत्य है, आश्चर्य जनक और अकाट्य, कि हमारा सुख—भौतिक, आध्यात्मिक और शाश्वत—एक बातमें है; और वह यह कि हम परमात्माको आत्मसमर्पण कर दें, और अपनेको उसके, हमसे और हमारे अन्दर कुछ भी करनेके लिये, हवाले करदें।

—श्रीमती गियोन

सन्तोष परम लाभ है; सत्संग परम गति है; विचार परम ज्ञान है; और मनकी शांति ही परम सुख है।

—अज्ञात

अपने बाहुबलसे उपार्जित नोन-रोटी खानेमें सुख है, पराश्रित रहकर ज़र्दा-पुलाव खानेमें नहीं।

—अज्ञात

सुखका रास्ता निस्स्वार्थता और शुभ कामनाओंमेंसे है।

—अज्ञात

सुखका आधार पुण्य है, और लाज़िमी तौरसे उसकी बुनियाद सचाई होनी चाहिये।

—कॉलेरिज

तुम्हारे सुख-दुखका रहस्य यह है कि आया तुम यह सोच रहे हो कि और लोग तुम्हारे लिये क्या करें या यह कि तुम औरोंके लिये क्या कर सकते हो?

—विलियम किंग

अधिकतम आदमियोंका अधिकतम सुख नैतिकता में है।

—प्रीस्टले

छह सुख हैं : नीरोग रहना, क़र्ज़दार न होना, देशभ्रमण करना, स्वाधीनता-पूर्वक धन कमाना, सदा निर्भय रहना और सज्जनोंका संग करना।

—विदुर

नदीका यह किनारा निःश्वास ले लेकर कहता है : "सामनेके किनारेपर ही तमाम सुख है, मुझे इत्मीनान है"। नदीके सामनेका किनारा गहरी आहें भर भरकर कहता है : "जगतमें जितना सुख है वह तमाम पहले ही किनारेपर है।

—टैगोर

जिस दिन मैं ईश्वरका कोई अपराध नहीं करता वही दिन मेरे लिये सुखका दिन है।

—हातिम हासम

किसीको केवल सुख अथवा एकमात्र दुःख नहीं मिलता—दुःख और सुख रथके पहियेकी भाँति कभी ऊपर और कभी नीचे रहा करते हैं।

—कालिदास

सिर्फ़ धर्म-जनित सुख ही सच्चा सुख है; बाक़ी तो सब पीड़ा और लज्जा-मात्र है।

—तिरुवल्लुवर

सुख परिग्रहके बाहुल्यसे नहीं, हृदयकी विशालतासे बढ़ता है।

—रस्किन

हृदय कब सुखी होता है? जब हृदयमें प्रभु वास करते हैं।

—जुन्नेद

सुख क्या है? प्रवासमें न रहना।

—भर्तृहरि

वही सबसे सुखी है, चाहे वह राजा हो या किसान, जो अपने घरमें शान्ति पाता है।

—गेटे

सच्चा सुख बाहरसे नहीं मिलता, अंतरसे ही मिलता है।

जो सुख शुरूमें ज़हरकी तरह और आखिर अमृतकी तरह है, जिससे आत्मा और बुद्धिको शान्ति मिलती है वह सुख सात्त्विक है। इन्द्रियोंका सुख जो शुरूमें अमृतकी तरह और आखिरमें ज़हरकी तरह है, राजस सुख है। जो सुख शुरूसे आखिर तक आत्माको सिर्फ़ मोह, नींद, आलस्य और सुस्तीमें डाले रखता है, वह तामस सुख है।

—गीता

यहाँ भी मनुष्यको सुख मिल सकता है, अगर वह सबसे बड़ी आपत्ति-इच्छाका ध्वंस कर डाले।

—तिरुवल्लुवर

जिसे हम सही और शुभ मानें वही करनेमें हमारा सुख है, हमारी शांति है; न कि जो दूसरे कहें या करें उसे करनेमें।

—गांधी

सुखदुःख

जितनी पराधीनता उतना दुःख और जितनी स्वतंत्रता उतना सुख। सुख-दुःखके ये ही संक्षिप्त लक्षण हैं।

—मनु

सुखी

यदि जीवनमें सुखी होना चाहते हो तो हमेशा भलाई करो।

—कवि दलपतराम

सुखी वह नहीं है जिसे दूसरे सुखी समझें, बल्कि वह जो स्वयंको सुखी समझता है।

—स्पेनिश कहावत

बेवक़ूफ़ोंसे अलग रहनेसे आदमी सचमुच सुखी रहता है।

—बुद्ध

सुखी वह है जिसकी वासनाएँ छूट गई हैं।

—हितोपदेश

धन-धान्य लेने-देनेमें, विद्या संग्रह करनेमें, आहार व्यवहारमें जो मनुष्य शर्म नहीं रखता वह सुखी होता है।

—अज्ञात

संसारमें सुखी कौन? दूसरे सब पदार्थोंसे जिसने ईश्वरको पहिचान लिया है वह।

—जुन्नुन

जो बिना मानसिक अशांतिके किसी सच्चे सिद्धान्तपर चलता है उसे सुखी कहा जा सकता है।

—ऐस्ट्रेंज

जो पूरी तरह स्वावलम्बी है वह सबसे ज़्यादा सुखी है।

—अज्ञात

वह कैसा सुखी है जो दूसरेकी मर्ज़ीका ग़ुलाम नहीं है! जिसका कवच उसकी ईमानदारी है और सरल सत्य जिसका सर्वोच्च कौशल है!

—सर हेनरी वॉटन

दुनियामें वही आदमी सुखी है जिसे खानेके लिये आधी रोटी मिलती है; और बैठनेके लिये थोड़ीसी जगह; जो न किसीका चाकर है, न किसीका स्वामी। उससे कह दो, कि मगन रहे; उसका संसार सबसे अच्छा है।

—शब्सतरी

कोई अच्छा काम ऐसा नहीं है जिसके करनेके बाद हमें आनन्द न होता हो। तब इससे नतीज़ा यह निकलता है कि जो सबसे नेक काम करते हैं सबसे अधिक सुखी हैं।

—अज्ञात

जो सेवाभावी है, परदुःखकातर है, शान्त-स्वभाव है वही रोशन दिमाग़वाला सुखी है।

—अज्ञात

अपना कर्त्तव्य करनेमें जिसको आनन्द आता है वह सुखी।

—अज्ञात

बहुतसी जगहोंमें, लोगोंसे मिलकर मैंने पाया है कि सबसे सुखी लोग वे हैं जो दूसरोंके लिये सबसे ज़्यादा करते हैं, सबसे दुखी वे हैं जो कमसे कम करते हैं।

—बुकर टी० वाशिंगटन

वह सुखी है जिसकी परिस्थितियाँ उसके मिज़ाजके अनुकूल हैं; लेकिन वह और भी लाजवाब है जो अपने मिज़ाजको हर परिस्थितियोंके अनुकूल बना सकता है।

—ह्यूम

वह बड़ा सुखी और ख़ुशक़िस्मत है जिसकी ज़िन्दगी एक धारावाहिक क़ुर्बानी है।

—अज्ञात

सुधार

हालतको यूँ ही छोड़ दिया जाय तो वे दुरुस्त नहीं होते।

—हक्सले

दुनियाको सुधारनेका एक ही प्रभावशाली तरीक़ा है, और वह यह कि अपनेसे शुरू करो।

—अज्ञात

जो अपना सुधार कर लेता है, वह एक दर्जन बक्की, अशक्त देशभक्तोंकी अपेक्षा जनताका अधिक सुधार करता है।

—लैवेटर

जो कुछ तुम दूसरेमें नापसंद करते हो, उसे अपनेमें न रहने दो।

—स्पैट

समानपर सिर्फ़ समान ही असर करता है, इसलिये तर्कसे नहीं, नमूना पेश करके सुधारो; भावनाके पास भावनासे जाओ; प्रेमके सिवाय और किसी प्रकार प्रेम पैदा करनेकी आशा न रक्खो। जो तुम दूसरोंको बनते देखना चाहते हो, वैसे स्वयं बन जाओ।

—एमली

जिसने अपना सुधार किया उसने दूसरोंके सुधारनेमें बहुत कुछ किया; दुनिया क्यों नहीं सुधरी इसका एक कारण यह है कि हर कोई चाहता है कि शुरूआत दूसरे करें, और यह कभी नहीं सोचता कि वह स्वयं ही क्यों न करे।

—आदम्स

कोई बाहरी सुधार आदमीको स्पर्श नहीं कर सकते, न उसमें परिवर्तन ला सकते हैं। सुधार तो अपने अन्दर मनका व्यक्तिगत परिवर्तन है।

—अज्ञात

सुधार्य

अगर तू यह जानना चाहे कि जिस कामको तू करना चाहता है वह न्याययुक्त है या नहीं, तो अपनी लगनको उसे दैविक आशीर्वादके लिये पेश करने दे; अगर वह न्याययुक्त होगा, तो अपनी प्रार्थनासे तुझे अपना दिल प्रोत्साहित होता मालूम होगा; अगर अन्यायपूर्ण होगा, तो तेरा दिल तेरी प्रार्थनाको हतोत्साह करता मालूम देगा। वह काम करने लायक़ नहीं है जो या तो बरकत माँगनेसे शर्माये, या, सफल होनेपर शुक्र अदा करनेका साहस न कर सके।

—क्वार्ल्स

सुन्दर

स्वभावतः सुन्दरको बाहरी गहनोंकी ज़रूरत नहीं होती।

—अज्ञात

मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ, हे प्रभो, कि मेरा अन्तरंग सुन्दर हो।

—सुक़रात

वास्तविक सौन्दर्य वही है जो क्षण क्षण नवीन लगे।

—अज्ञात

ओ ! उस मधुर आभूषणसे जिसे सत्य देता है सुन्दरता कितनी अधिक सुन्दर दिखती है !

—शेक्सपियर

जो प्रभावक और सुन्दर है वह हमेशा कल्याणकर नहीं होता; मगर जो कल्याणकर है वह हमेशा सुन्दर है।

—अज्ञात

जो काफ़ी भला है वह काफ़ी सुन्दर है।

—अज्ञात

एक भारतीय दार्शनिकसे यह पूछे जानेपर कि, उसकी रायमें; विश्वमें सबसे सुन्दर दो चीज़ें कौनसी हैं, उसने जवाब दिया। हमारे सिरोंके ऊपर सितारोंका आकाश, और हमारे दिलोंके अन्दर कर्त्तव्यकी भावना।

—ब्रॉसेट

सुन्दरता

'सुन्दरताको बाहरी ज़ेवरकी ज़रूरत नहीं, बल्कि जब अनाभूषित है तभी सर्वाधिक आभूषित है।

—थॉमसन

सुन्दरता वहीं है जहाँ सत्य है, जहाँ शिव है।

—अज्ञात

अच्छा स्वभाव हमेशा सुन्दरताके अभावको पूरा कर देगा; लेकिन सुन्दरता अच्छे स्वभावके अभावकी पूर्ति नहीं कर सकती।

—एडीसन

ईश्वर नेकीपर सुन्दरताकी छाप लगाता है; हर प्राकृतिक काम सुन्दर है। वीरताका हर काम नायाब है, और वह उस जगहको और पास खड़े हुए लोगोंको चमका देता है।

—एमर्सन

सुन्दर चीज़ोंकी इच्छा बिल्कुल स्वाभाविक है। इतनी ही बात है कि इसका कोई मापदण्ड नहीं है कि सुन्दर किसे कहा जाय। इसलिये मेरा यह ख़्याल बन गया है कि यह इच्छा पूरी करने लायक़ नहीं है। बाहरी चीज़ोंकी लोलुपता रखनेके बजाय हमें भीतरी सुन्दरताको देखना चाहिये। अगर हमें यह आ जाय तो सौन्दर्यका विशाल क्षेत्र हमारे सामने खुल जाता है। फिर उसपर अधिकार जमानेकी इच्छा मिट जाती है।

—गांधी

लायक़ लोगोंके आचरणकी सुन्दरता ही उनकी वास्तविक सुन्दरता है। शारीरिक सुन्दरता उनकी सुन्दरतामें किसी तरह की अभिवृद्धि नहीं करती।

—तिरुवल्लुवर

जो स्वयं सुन्दर है उसका सौन्दर्य किस वस्तुसे नहीं बढ़ जाता?

—कालिदास

सुन्दरताकी तलाशमें चाहे हम सारी दुनियाका चक्कर लगा आयें, अगर वह हमारे अन्दर नहीं है तो कहीं न मिलेगी।

—एमर्सन

हिमालय सुन्दर है लेकिन उसकी सुन्दरताविषयक मेरी कल्पना उससे भी सुन्दर है। इसका कारण क्या? आत्माकी सुन्दरताकी बराबरी जड़ वस्तुकी सुन्दरता कैसे कर सकती है।

—विनोबा

सुभाषित

देवभाषा मधुर है, काव्य मधुरतर है, सुभाषित मधुरतम।

—अज्ञात

हर सुभाषित मधुमक्खिकाकी तरह होना चाहिये। जिसमें डंक हो, शहद हो, और जिसका छोटा-सा शरीर हो।

—मार्ट

जीवनको देखनेकी शक्ति दुर्लभ है, उससे सबक़ लेना दुर्लभतर है, और उस सबक़को एक नुकीले वाक्यमें घनीभूत कर देना दुर्लभतम है।

—जॉन मौर्ले

प्राचीन ज्ञानियोंने अपना अधिकांश आध्यात्मिक ज्ञान सुभाषितोंकी हलकी नौकाओं द्वारा काल-धारामें प्रवाहित कर दिया है।

—व्हिपिल

सृजन

आत्माको कोई चीज़ इतनी पवित्र, इतनी धार्मिक नहीं बनाती, जितनी कि किसी परिपूर्ण वस्तुके सृजनकी कोशिश। क्योंकि परमात्मा परिपूर्ण है, और जो कोई परिपूर्णताके लिये प्रयास करता है वह ऐसी वस्तुके लिये प्रयास करता है जो परमात्मस्वरूप है।

—अज्ञात

सेवक

सुधारकका-सेवकका-धीरजके बिना क्षणमात्र भी नहीं चल सकता, यह याद रखो। अपनी दीवारपर लिख रखो। उसका यंत्र बनाकर गलेमें पहनो।

—गांधी

स्वामीकी आज्ञा सुनकर जो उत्तर देता है ऐसे सेवक को देखकर लज्जा भी लज्जित हो जाती है।

—रामायण

मन और शरीर तुम्हारी आत्माकी आज्ञाओंके निहायत वफ़ादार सेवक होने चाहिये।

—अज्ञात

सेवक वह है जो अपना दूसरों को देता रहता है। जो दूसरोंका छीन लेना चाहता है वह तो लुटेरा है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

सेवा

अखंड नामस्मरण माने अजपा जाप माने स्वरूपावस्थान माने निरन्तर सेवा।

—विनोबा

उत्तम बुद्धि रखनेकी अपेक्षा प्यासेको ठंडे पानीका गिलास देनेका स्वभाव कहीं श्रेष्ठतर है। शैतान कुशाग्र-बुद्धि है लेकिन ईश्वरका रूप उसके पास नहीं।

—हॉवेल्स

जग मेरी प्रत्यक्ष सेवा करता है और मैं जगकी सेवाका सिर्फ़ नाम लेता हूँ।

—विनोबा

लौकिक लोगोंकी सेवा नौकर-चाकर करते हैं; और अलौकिक लोगोंकी सेवा साधु, वैरागी और महान पुरुष करते हैं।

—हयहया

किसीका दिल उसकी सेवा करके अपने हाथोंमें ले यही सबसे बड़ा हज्ज है। हज़ारों काबोंसे एक दिल बढ़कर है।

—एक सूफी

चर्खेमें धर्म और अर्थ दोनों ही बराबर सँभाले जाते हैं। आश्रमका अस्तित्व केवल देश-सेवाके लिये ही नहीं, देश-सेवाके द्वारा विश्व-सेवा साधनेके लिये है और विश्व-सेवा द्वारा मोक्ष प्राप्त करनेके लिये, ईश्वरका दर्शन करनेके लिये है।

—गांधी

महान सेवा यह है कि हम किसी ज़रूरतमन्दकी इस तरह मदद करें कि वह अपनी मदद खुद कर सके।

—अज्ञात

सेवा-धर्म

सेवा-धर्मका पालन किये बिना मैं अहिंसा धर्मका पालन नहीं कर सकता और अहिंसा धर्मका पालन किये बिना मैं सत्यकी खोज नहीं कर सकता और सत्यके बिना धर्म नहीं। सत्य ही राम है, नारायण है, ईश्वर है, खुदा है, अल्लाह है, 'गॉड' है।

—गांधी

सैकिंड

प्रत्येक सैकिंड मोती, हीरे, जवाहिरातसे जटित एक अद्भुत आभूषण है।

—अज्ञात

सोच

विचार करते करते अपनेको दीवाना न बना डालो, बल्कि जहाँ हो अपने काममें लगे रहो।

—एमर्सन

सोना

क्या कोई ऐसा दुर्गम स्थान भी है जहाँ सोनेसे लदा गधा न घुस सकता हो?

—मक़दूनियाँका बादशाह

सोनेकी चाभी हर दरवाज़े को खोल देती है।

—कहावत

चिड़ियाके पंखोंको सोनेसे मढ़ दो बस वह फिर कभी आसमानमें नहीं उड़ सकेगी।

—टैगोर

वह रहा तेरा सोना; लोगोंकी आत्माओंके लिये ज़हरसे भी बदतर चीज़।

—शेक्सपियर

सोसाइटी

जिसे सोसाइटी कहते हैं वह विनाश है; अवसर और शक्तिकी बर्बादी, रोग और असफलताकी ओर ले जानेवाली।

—अज्ञात

सोसाइटी, हर जगह, अपने प्रत्येक मेम्बरकी मनुष्यताके ख़िलाफ़ षड्यन्त्र है।

—एमर्सन

जन सोसाइटी मनोरंजन चाहती है, शिक्षण नहीं।

—एमर्सन

नौजवान, तुम अपने को सोसाइटी और अध्ययन दोनोंके हवाले नहीं कर सकते।

—अज्ञात

सौजन्य

सौजन्यका कोई बाहरी लक्षण ऐसा नहीं है जो किसी गहरी नैतिक भित्तिपर न टिका हो।

—गेटे

सौदा

बहुत सी बातें हैं जिनमें एक फ़ायदेमें रहता है और दूसरा नुक़सानमें; लेकिन अगर किसी सौदेमें यह ज़रूरी हो कि लाभ सिर्फ़ एक ही पक्षको होगा तो वह वस्तु ईश्वरकी नहीं है।

—मैकडोनल्ड

आदमी ही एक ऐसा जानवर है जो सौदे करता है; दूसरा कोई जानवर यह नहीं करता,—कोई कुत्ता अपनी हड्डीको दूसरेसे नहीं बदलता।

—आदम स्मिथ

सौन्दर्य

होठों और आँखोंको सौन्दर्य नहीं कहते, बल्कि सबकी सम्मिलित शक्ति और पूर्ण परिणामको।

—पोप

सौन्दर्य एक एकान्त बादशाहत है।

—कार्नीड्स

ओ सौन्दर्य, अपनेको प्रेममें पा, दर्पणकी चापलूसीमें नहीं।

—टैगोर

सर्वोत्तम सौन्दर्य ईश्वरमें है।

—विंकिलमैन

अगर सौन्दर्यके साथ सद्गुण हैं तो वह दिलका स्वर्ग है; अगर उसके साथ दुर्गुण हों तो वह आत्माका जहन्नुम है,—वह ज्ञानीकी होली और मूर्खकी भट्ठी है।

—क्वार्ल्स

सौन्दर्य आत्मदेवकी भाषा है।

—स्वामी रामतीर्थ

दुनियामें सबसे स्वाभाविक सौन्दर्य ईमानदारी और नैतिक सचाई है।

—शैफ्ट्सबरी

सौन्दर्यका आदर्श सादगी और शांति है।

—गेटे

गधेको गधा सुन्दर लगता है, और सूअरको सूअर।

—कहावत

सौभाग्य

वह बड़ा सौभाग्यशाली है जो अपनी इच्छाओं और शक्तियोंके बीचकी खाईकी चौड़ाईको जल्दी जान लेता है।

—गेटे

सौभाग्य हमेशा परिश्रमके साथ दिखाई देता है।

—गोल्डस्मिथ

स्त्री

काममें दासी, सम्भोगमें वेश्या, भोजन कराते समय जननी और विपद्में बुद्धि देनेवाली ही स्त्री है। ऐसी स्त्री संसारमें दुर्लभ है।

—अज्ञात

स्त्री पतिको मारती नहीं है, लेकिन स्त्रीका मिज़ाज पतिपर हकूमत करता है।

—रूसी कहावत

यह एक राय थी, किस साधु पुरुषकी मैं नहीं जानता, कि दुनियामें केवल एक अच्छी स्त्री है; और उसकी सलाह थी कि हर विवाहित आदमीको सोचना चाहिये कि उसकी पत्नी ही वह है।

—अज्ञात

स्थान

मज़बूत पहियोंवाला रथ समुद्रके ऊपर नहीं दौड़ता, और न जहाज़ खुश्क ज़मीनपर तैरता है।

—तिरुवल्लुवर

जब कि तू किसी ऐसे स्थानमें पहुँचे, जहाँ कि सब काने ही काने हों, तो तू भी अपनी एक आँख मूँद ले।

—एक कवि

विवेकी और पण्डितके लिये कोई स्थान दुःखदायी नहीं हुआ करता।

—अज्ञात

मगर पानीके अन्दर सर्वशक्तिशाली है, किन्तु बाहर निकलनेपर वह दुश्मनोंके हाथका खिलौना है।

—तिरुवल्लुवर

स्थितप्रज्ञ

जो स्थितप्रज्ञ अथवा होशियार है वह किसीका बुरा नहीं चाहेगा, और अन्तकालमें भी अपने दुश्मनके भलेके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करेगा।

—गांधी

कछुआ जैसे अपने अंगोंको कवचमें सिकोड़ लेता है, उसी तरह जो अपनी इन्द्रियोंको विषयोंमेंसे खींचकर आत्माकी ढालके नीचे कर लेता है वह स्थितप्रज्ञ है।

—गीता

जो मनुष्य ईश्वरको छोड़कर दूसरेसे स्नेह करता है वह क्या कभी सुखी हो सकता है।

—आविस

जिसका जिसपर सत्य स्नेह है वह उसे ज़रूर मिलेगा, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

—रामायण

स्पृहा

स्पृहा तीन प्रकारकी होती है—भोगने, बोलने और देखनेकी। भोग भोगते समय ध्यान रखना कि ईश्वर देख रहा है; बोलते समय ध्यान रखना कि सत्यका विनाश न हो; और देखते समय ध्यान रखना कि साधुता दूषित न हो जाय।

—हातिम हासम

स्याही

स्याहीकी एक बूँद दस लाख आदमियोंको विचारमग्न कर सकती है।

—बायरन

स्वच्छता

जो सचमुच भीतरसे स्वच्छ है वह बाहरसे अस्वच्छ हो ही नहीं सकता।

—गांधी

स्वच्छता देखकर पवित्रताका अन्दाज़ा लगाना जिल्द देखकर किताबपर राय देनेके समान है।

—विनोबा

स्वतंत्र

जब तक ईश्वरकी मर्ज़ी हमारा नियम है, हम एक क़िस्मके महज़ शरीफ़ ग़ुलाम हैं; जब उसकी मर्ज़ी हो जाती है, हम स्वतंत्र हैं।

—मैक्डोनल्ड

जिसको सत्यने स्वतंत्र किया है वही स्वतंत्र है, बाकी सब ग़ुलाम हैं।

—अज्ञात

'किसीसे कुछ भी नहीं लेना' ऐसा निश्चय जिसके चित्तमें आ गया हो वही मनुष्य सचमुच स्वतंत्र है।

—विवेकानन्द

स्वतंत्रता

स्वतंत्रता शक्तिके ही साथ रहती है।

—शिलर

स्वतंत्रता राष्ट्रोंका शाश्वत यौवन है।

—फ़ौय

स्वागत! स्वतन्त्रते, स्वागत! ज़िंदगी और आत्माकी अमरताके बाद ईश्वरकी सर्वोत्तम देन।

—थॉमसन

स्वतंत्रता देवीके उपासक तोतेको पिंजड़ेमें नहीं रखा जा सकता।

—विनोबा

स्वधर्म

हर आदमीका जो "स्वभावनियतं" (स्वभावसे तय) काम है वही उसका "स्वधर्म" है। उसके ख़िलाफ़ उसे किसी दूसरे काम या धर्मकी तरफ़ नहीं जाना चाहिये।

—गीता

मैं जो करता हूँ उसे सबको करना ही चाहिये अथवा सब उसे कर सकते हैं, यह समझना महादोष है। जो बोझा भीम उठा सकता है वह मैं उठाने लगा तो उसी क्षण मुझे 'राम' कहना पड़ेगा।

—गांधी

अपने अपने स्वभावके मुताबिक़ काम (स्वभाव नियतं कर्म) सच्चे दिलसे और ईश्वरके लिये (ईश्वरार्पण) करता हुआ हर आदमी अपने ही रास्तेसे सिद्धि या कमाल हासिल कर सकता है। यही हर आदमीका "स्वधर्म" है।

—गीता

स्वभाव

स्वभावकी मृदुलता संस्कृत मनका गुण है।

—अज्ञात

जिसका मक्खीका-सा स्वभाव है वह 'कीचड़' और 'शक्कर' दोनोंपर जाकर बैठता है।

—शीलनाथ

हर आदमी खुद अपने 'स्वभाव' को देखकर वह काम करे जो उसके स्वभावके मुताबिक़ (स्वभावज) हो, यानी जिसकी तरफ़ उसमें झुकाव और क़ाबिलियत हो।

—गीता

स्वर्ग

बोलना नहीं बल्कि चलना हमको स्वर्ग पहुँचायेगा।

—हैनरी

स्वर्गकी अच्छी तरह क़द्र कर सकनेके लिये आदमीके लिये अच्छा है कि वह क़रीब पन्द्रह मिनट नरकमें रह ले।

—चार्लटन

मरनेके बाद स्वर्गमें रहनेके लिये हमें मरनेसे पहले स्वर्गमें रहना होगा।

—हाइटिंग

हम पृथ्वीसे तो परिचित हैं पर अपने अन्दरके स्वर्गसे बिल्कुल अपरिचित हैं।

—गांधी

नौ आस्मानोंमें आठ स्वर्ग हैं; नवाँ कहाँ है? इन्सानके सीनेमें।

—अज्ञात

स्वराज्य

हिंसासे राज्य मिलेगा; पर स्वराज्य मिलेगा अहिंसासे।

—विनोबा

सच्चा स्वराज्य तो अपने मनपर राज्य है। उसकी कुञ्जी सत्याग्रह, आत्मबल अथवा दयाबल है। इस बलको काममें लानेके लिए सर्वथा स्वदेशी बननेकी ज़रूरत है।

—गांधी

स्वरूप

जिसने अपने वास्तविक स्वरूपको जान लिया उसने ईश्वरको जान लिया।

—अज्ञात

स्वाद

मेरा तो अनुभव यह है कि जिसने स्वादको नहीं जीता वह विषयको नहीं जीत सकता।

—गांधी

स्वामित्व

सब आदमी दूसरोंके मालिक बनना चाहते हैं, परन्तु अपना स्वामी कोई नहीं है।

—गेटे

मैं भी मालिक, तुम भी मालिक, तो फिर गधोंको कौन चलायेगा?

—अरबी कहावत

स्वार्थ

कोई दुर्गुण या अपराध ऐसा नहीं है जो खुद-पसन्दीसे पैदा न होता हो।

—एनन

स्वार्थमें सद्गुण ऐसे खो जाते हैं जैसे समुद्रमें नदियाँ।

—रोशे

तमाम प्राकृतिक और नैतिक पापोंका मूल और स्रोत स्वार्थ है।

—ऐमन्स

स्वावलम्बन

क्या व्यक्ति और क्या राष्ट्र, हर एकको अपने पैरोंपर खड़ा रहना सीखना चाहिये।

—विवेकानन्द

अपने पैरोंपर खड़ा हुआ किसान अपने घुटनोंपर झुके हुए जेंटिल्मैनसे ऊँचा है।

—डॉ॰ फ्रैंकलिन

खुद ही अपनी परीक्षा कर, अपनेको अपने आप उठा। इस प्रकार तू विचारशील हो, अपनी रक्षा स्वयं करता हुआ दुनियामें सुखपूर्वक विहार करेगा।

—बुद्ध

जो पूर्णतः स्वावलम्बी है वह सबसे ज्यादा सुखी है।

—अज्ञात

जो काम परवश हों उनसे यत्नपूर्वक दूर रहे, लेकिन जो आत्मवश हों उनमें यत्नपूर्वक लगा रहे।

—अज्ञात

[ह]

हक़

अर्थ कहता है, 'हक़का रक्षण करना कर्त्तव्य है।' धर्म कहता है, 'कर्त्तव्य करते रहना हक़ है'।

—विनोबा

हक़ यह है कि एक ही हक़ीक़तकी आवाज़ सारी दुनियामें गूँज रही है। गीता हिन्दुस्तानकी क़ुरान है और क़ुरान अरबकी गीता है।

—ख़ुबुल्लहशाह क़लन्दर

हंस

चाहे दुनिया कमलरहित हो जाय या कमल उगें हो नहीं, मगर हंस क्या कभी मुर्गेकी तरह घूरेको कुरेदने जायगा।

—अज्ञात

हंस श्मशानमें नहीं खेलता।

—अज्ञात

हँसना

जो जवान रोया नहीं है, जंगली है; और जो बूढ़ा हँसता नहीं है बेवक़ूफ़ है।

—जॉर्ज सान्तायन

बारबार और ज़ोर ज़ोरसे हँसना मूर्खता और बदतहज़ीबीकी निशानियाँ हैं।

—चैस्टर फील्ड

रोज़ कमसे कम एक बार खिलखिला कर हँसना चाहिये।

—अज्ञात

एक क़हक़हा हज़ार बार रोनेसे अच्छा है।

—अज्ञात

आदमीको इसकी बड़ी अहतियात रखनी चाहिये कि वह इतना ज़्यादा अक़्लमन्द न हो जाय कि हँसने जैसा महान ख़ुशीसे अलग रहने लगे।

—एडीसन

हानि

बुद्धिमान् कभी अपनी हानिपर रोते-धोते नहीं बैठते, बल्कि प्रसन्नतापूर्वक अपनी क्षतिको पूर्ण करनेका उपाय करते हैं।

—शेक्सपियर

हानि क्या है? समयपर चूकना।

—भर्तृहरि

जो निन्दनीय मनुष्यकी प्रशंसा करता है या प्रशंसनीय मनुष्यकी निन्दा करता है, वह अपने ही मुँहसे अपनी हानि करता है—उसे सुख नहीं प्राप्त होता।

—बुद्ध

हार

हारसे दिलोंमें हटाव पैदा होता है, क्योंकि जिसकी हार हुई है वह असन्तुष्ट बना रहता है। सुखी वही है जो हार जीतकी परवाह नहीं करता।

—धम्मपद

हित

जितना हित माता-पिता या दूसरे भाई-बन्धु कर सकते हैं, उससे कहीं अधिक मनुष्यका संयत-चित्त करता है।

—बुद्ध

हिम्मत

कठोरतम हृदयको भी पिघला देनेकी मुझे उम्मीद है, अतः मैं प्रयत्नशील रहता हूँ ।

—गांधी

आदमीकी आधी होशियारी उसकी हिम्मतमें है ।

—अज्ञात

हिंसक

देखो; वह आदमी जिसका सड़ा हुआ शरीर पीपदार ज़ख़्मोंसे भरा हुआ है, गुज़रे ज़मानेमें ख़ून बहानेवाला रहा होगा !

—तिरुवल्लुवर

हिंसा

हिंसा बुरी है पर ग़ुलामी उससे भी बुरी है ।

—अज्ञात

हिंसा आत्म-घाती है और उसके सामने यदि प्रतिहिंसा न हो तो वह ज़िन्दा नहीं रह सकती ।

—गांधी

दूसरोंको सतानेके बराबर कोई नीचता नहीं ।

—तुलसी

जहाँ सिर्फ़ कायरता और हिंसाके बीच किसी एकके चुनावकी बात हो वहाँ मैं हिंसाके पक्षमें राय दूँगा ।

—गांधी

कायरतासे तो हिंसा भली । क्योंकि हिंसा क्या ? —विकृत वीरता; वह तो कायरतासे हज़ारगुना अच्छी है । उसमें देहका मोह और स्वार्थ इतना नहीं ।

—गांधी

जिनको हिंसा करना पसन्द है उनके पापोंकी सीमा नहीं है।

—रामायण

हिंसा श्रेष्ठ कभी नहीं कही जा सकती। उसमें भलाई इतनी ही है कि वह कायरतासे कुछ उच्च बुराई है।

—गांधी

हृदय

हृदय फूलोंकी तरह हैं। कोमलतासे गिरती हुई ओसके लिये वे खुले रहते हैं, लेकिन तेज़ मूसलाधार बारिशमें बन्द हो जाते हैं।

—अज्ञात

लोगोंके दिलोंको एक दूसरेके ख़िलाफ़ नहीं भिड़ाना चाहिये, बल्कि एक दूसरेसे मिलाना चाहिये, और सबोंको सिर्फ़ बुराईके ख़िलाफ़ लगाना चाहिये।

—कार्लाइल

बड़े रूप, बड़े बल और बड़े धनसे वास्तवमें और सचमुच कोई महान प्रयोजन नहीं निकलता; सम्यक् हृदय सबसे बढ़कर है।

—फ्रेंकलिन

हृदय दौर्बल्य

दिलके दुर्बल आदमीका अपना नुक़सान तो होता ही है वह जिस काममें पड़ता है उसकी भी हानि बग़ैर नहीं रहती।

—विवेकानन्द

दुर्बल मनुष्यको किसी भी काममें सफलता मिलना शक्य नहीं है। दुर्बलकी कौड़ीकी भी क़ीमत नहीं। मनकी दुर्बलता सारी ग़ुलामीकी जड़ है, बल्कि साक्षात् मौत है।

—विवेकानन्द

[क्ष]

क्षणिक

धन कमाना तमाशा देखनेके लिये आई हुई भीड़के समान है, और धनका क्षय हो जाना उस भीड़के तितर-बितर हो जानेके समान है।

—तिरुवल्लुवर

समृद्धि क्षणिक चीज़ है। अगर तुम समृद्धिशाली हो गये हो तो ऐसे काम करनेमें देर न करो जिनसे स्थायी लाभ पहुँच सकता है।

—तिरुवल्लुवर

वर्षाबिन्दुने चमेलीके कानमें कहा, "मुझे अपने हृदयमें हमेशा रखना।" चमेलीने आह भरकर कहा, "अफ़सोस"; और ज़मीनपर जा पड़ी।

—टैगोर

बादलोंकी छाया, दुष्टोंकी प्रीति, पका हुआ अन्न, स्त्री, यौवन और धन,—ये थोड़े ही समय तक ही भोग्य होते हैं।

—अज्ञात

युवावस्था, रूप, जीवन, द्रव्यका संग्रह, ऐश्वर्य और प्रिय-संभाषा ये सब विनाशी हैं, इसलिये विद्वानोंको इनमें मोह नहीं रखना चाहिये।

—अज्ञात

क्षत्रिय

सच्चा क्षत्रिय वही है जो सज्जनोंकी रक्षा कर सके।

—अज्ञात

क्षत्रियका एक ही धर्म है—शत्रुओंका नाश करना।

—अज्ञात

प्रारम्भिक व अन्तिम अवस्थामें मनुष्य कैसा ही हो, पूर्णत्व प्राप्तिके लिये मध्य जीवनमें क्षत्रिय (योद्धा) होना लाज़िमी है।

—अरविन्द घोष

क्षमा

सिर्फ़ शूरवीर ही जानते हैं कि क्षमा कैसे दी जाती है, बुज़दिल कभी क्षमा नहीं करता, यह उसके स्वभावमें ही नहीं है।

—अज्ञात

अज्ञान-जन्य अपराध क्षमा कर देने चाहिये; क्योंकि ज्ञानका हर जगह मिलना आसान नहीं है।

—अज्ञात

जो लोग बुराईका बदला लेते हैं, बुद्धिमान उनकी इज़्ज़त नहीं करते; मगर जो अपने दुश्मनोंको माफ़ कर देते हैं, वे स्वर्णकी तरह बहुमूल्य समझे जाते हैं।

—तिरुवल्लुवर

क्षुद्र

क्षुद्र लोग तुम्हारी कृतियोंका नहीं, तुम्हारी त्रुटियोंका हिसाब रखते हैं।

—कहावत

क्षुद्र जीव जिसको अपना लेता है उसकी तुच्छतापर ध्यान नहीं देता।

—भर्तृहरि

[ज्ञ]

ज्ञान

जो अशुद्ध दर्शनसे नेत्रोंको और लोगोंसे इन्द्रियों को बचाता है, नित्य ध्यानयोगसे अन्तःकरणको निर्मल और चरित्रको शुद्ध रखता है, और धर्मपूर्वक अर्जित अन्नसे अपना पालन करता है, उसके ज्ञानमें कोई कमी नहीं।

—शाहशुजा

कोई दूसरेकी विद्वत्तासे विद्वान भले ही बन जाय, परन्तु उसे ज्ञानी अपने ही ज्ञानसे होना पड़ेगा।

—अज्ञात

हर क्षण शिक्षण देता है, और हर पदार्थ; क्योंकि ज्ञान हर रूपमें भरा हुआ है।

—एमर्सन

ज्ञान तीन प्रकारसे मिल सकता है। मननसे, जो कि सर्वोत्कृष्ट है; अनुसरणसे, जोकि सबसे सरल है; अनुभवसे, जोकि सबसे कड़वा है।

—कन्फ्यूशियस

उठो, जागो और श्रेष्ठ पुरुषोंके पास जाकर ज्ञान ले लो। इस मार्गसे जाना छुरीकी तेज़ धारपर चलना है।

—उपनिषद्

जिसे ईश्वरका साक्षात्कार हुआ है, उसके बिना जाना कुछ भी नहीं रहा। जिसने परमात्माको जान लिया उसने जानने योग्य सब कुछ जान लिया।

—आविस

सबको अपनी तरह समझना और सबके अन्दर एक ईश्वरके दर्शन करना, यही ज्ञानकी आखिरी हद है। इस ज्ञानसे बढ़कर आदमी को पाक करनेवाली दूसरी चीज़ इस दुनियामें नहीं है। इसके लिये महज़ श्रद्धा की और अपनी इन्द्रियोंको क़ाबूमें रखनेकी ज़रूरत है।

—गीता

पर जन-हित-साधनके लिये ज्ञानकी आवश्यकता होती है; स्व-हित-साधनके लिये सम्यक् ज्ञान की।

—अज्ञात

ज्ञान-प्राप्ति उसके लिये सरल है जो समझदार है।

—बाइबिल

ज्ञान पाप हो जाता है, यदि उद्देश्य शुभ न हो।

—प्लेटो

जिस समय लोग मुझे 'उन्मत्त' और 'मस्त' कहकर मेरी निन्दा करेंगे तभी मेरे मनमें गूढ़ तत्त्वज्ञानका उदय होगा।

—सादिक़

ज्ञान माने आत्मासे आत्माको जानना।

—श्री समर्थ

जिस प्रकार स्वच्छ दर्पणमें मुँह साफ़ दीखता है उसी प्रकार शुद्ध चित्तमें ज्ञान प्रकट हो जाता है।

—शंकराचार्य

सर्वोच्च ज्ञान क्या है? सत्यका सबसे छोटा और सबसे साफ़ रास्ता।

—कोल्टन

ज्ञान आनन्द है।

—कनफ्यूशियस

ज्ञानका पहला काम असत्य को मालूम करना है, दूसरा सत्य को जानना।

—लेकटेन्टियस

ईश्वरके पास अनन्त ज्ञान है; दूसरोंके पास वही अनन्त ज्ञान बीज रूपसे है।

—विवेकानन्द

जानना काफ़ी नहीं है, ज्ञानसे हमें लाभ उठाना चाहिये; इरादा करना काफ़ी नहीं है, हमें करना चाहिये।

—गेटे

जहाँ पूर्णज्ञान और तदनुसारिणी क्रिया है, वहाँ नीति, विजय, लक्ष्मी और अखंड वैभव है।

—गीता

सब क्रिया-कलाप दुःखसे बचने और सुख पानेके लिये किये जाते हैं; लेकिन ज्ञान-प्राप्तिकी प्रवृत्तियाँ दुःख और सुख दोनोंसे बचनेके लिये की जाती हैं।

—अज्ञात

ज्ञानका अर्थ है आत्मतत्त्वका बोध।

—अज्ञात

ज्ञान उसे कहते हैं जिससे हर्ष और शोक न हो।

—अज्ञात

अरे, सिवाय परमात्मा और हमारी आत्माओं के, दुनियामें कुछ भी जानने लायक़ नहीं है।

—अज्ञात

हमारा आखिरी कल्याण ज्ञानसे है।

—सुक़रात

द्रव्य-यज्ञसे ज्ञान-यज्ञ श्रेयस्कर है। तमाम कार्योंकी परिसमाप्ति ज्ञानमें होती है।

पहलेके अनुभवसे नया अनुभव ले सकना इस क्रिया को ज्ञान कहते हैं।

—विवेकानन्द

जब आदमीको सच्चा ज्ञान हो जाता है, तो वह ईश्वरको दूरकी चीज़ नहीं समझता। तब वह उसे 'वह' की तरह नहीं, 'यह' की तरह, यहाँ अन्दर—अपनी आत्माके अन्दर—अनुभव करता है। वह सबमें है; जो कोई उसे तलाश करता है उसे वहाँ पाता है।

—रामकृष्ण परमहंस

संसारके ज्ञानके साथ ब्रह्मज्ञान प्राप्त करना गन्ना और रोटी एक साथ खानेके समान है।

—अज्ञात

वही ज्ञान सच्चा ज्ञान है जिससे मन और हृदय पवित्र हों, बाक़ी सब ज्ञानका विपर्य्यास है।

—रामकृष्ण परमहंस

ज्ञान और भक्तिमें कुछ भेद नहीं है। दोनों ही भव-संभव दुःखोंका नाश करते हैं।

—रामायण

जिस ज्ञानसे मनुष्य अलग अलग सब जीवोंमें एक ही अविनाशी आत्माको देखता है वह सात्त्विक ज्ञान कहलाता है।

—गीता

जब तक ईश्वर बाहर और दूर दीखता है तब तक अज्ञान है, जब ईश्वरकी अनुभूति अपने अन्दर होने लगे तभी समझो कि सच्चा ज्ञान प्रकट हो गया।

—रामकृष्ण परमहंस

ईश्वरीय ज्ञान विश्वास-अनुसारी है। जहाँ विश्वास कम है, वहाँ अधिक ज्ञानकी आशा रखना व्यर्थ है।

—रामकृष्ण परमहंस

ज्ञान सत्य तक ले जा सकता है न कि अज्ञान और अधिकार। इसीलिये स्वतन्त्र विचारकी आवश्यकता है।

—अज्ञात

मैंने देख लिया है कि जो ज्ञान तर्क करनेसे आता है एक प्रकारका है; और जो ध्यानसे आता है बिल्कुल भिन्न प्रकारका है; और जो ईश-साक्षात्कार होनेपर रोशन होता है वह और ही प्रकारका है।

—रामकृष्ण परमहंस

ज्ञानावस्थामें भी भेदोंकी कल्पना करना गोया रजोगुणका कमाल है।

—अज्ञात

जब मनुष्य अपनी देहको लकड़ीके तख्ते या मिट्टीके ढेरकी तरह समझने लगता है तभी उसे परमात्माके स्वरूपका ज्ञान होता है।

—अज्ञात

जिन्हें ईश्वरकी स्तुति और ईश्वरका स्मरण करनेके बदले लोगों को शास्त्रोंके वचन सुनाना ही अच्छा लगता है, प्रायः उन सबका ज्ञान ऊपरी है, जीवन सारहीन है।

—मलिक दिनार

ईश्वरने जिसे परमार्थ ज्ञानमें श्रेष्ठ बनाया है, वह पापमें पड़कर अपना पतन न होने दे यह उसका पहला कर्तव्य है।

—अबुउस्मान

एक ईरानी दार्शनिकसे पूछा गया : 'आपने इतना ज्ञान कैसे प्राप्त किया?' जवाब मिला : 'जिसका मुझे ज्ञान न होता उसके विषयमें प्रश्न पूछनेमें संकोच न करनेसे'।

—अज्ञात

समझो ! क्यों नहीं समझते ? —परलोकमें सम्बोधिका होना वास्तवमें दुर्लभ है। बीती हुई रात्रियाँ वापिस नहीं आतीं; जीवन भी बार बार मिलना सुलभ नहीं है।

—महावीर

रातको कुत्तोंने भौंक भौंककर नींद खराब कर दी, इससे भले-मानसोंको 'दुःख' हुआ; लेकिन उस भौंकनेसे आये हुए चोर भाग गये, ऐसा दूसरे दिन सुबह जाननेपर 'सुख' हुआ।

—विनोबा

जिसे समझ है वह जानता है कि विद्वत्ता नहीं, बल्कि उसे उपयोगमें लानेकी कलाका नाम ज्ञान है।

—स्टील

ज्ञानकी अचूक निशानी यह है कि वह साधारणमें असाधारणके दर्शन करता है।

—एमर्सन

थोड़े और सच्चे ज्ञानसे निर्वाह करना सीखना चाहिये। बहुतसी पुस्तकें पढ़नेसे चित्तमें स्थिरता नहीं आती।

—अज्ञात

ज्ञानकी बातें सुनकर जो उनपर अमल करता है, उसीके अन्तःकरणमें ज्ञान-ज्योति प्रकट होती है। जो सुनकर भी उनपर अमल नहीं करता उसका ज्ञान तो बातों ही में रहता है।

—अबु उसमान

बादल चाहे पदवियाँ और जागीरें बरसा दें, दौलत चाहे हमें ढूँढ़े, लेकिन ज्ञानको तो हमें ही खोजना पड़ेगा।

—यंग

काम क्रोधको आपसमें लड़ाकर मारना, इसमें ज्ञानका कौशल है।

—विनोबा

ज्ञानी

जो उन बातोंको नहीं जानता जिनका जानना उसके लिये उपयोगी और आवश्यक है, अज्ञानी है, चाहे फिर वह और कुछ भी क्यों न जानता हो।

—टिलटसन

ज्ञानवानके ये लक्षण हैं: किसीकी निन्दा नहीं करना, किसी की स्तुति नहीं करना, किसीको दोष नहीं देना, अपने विषयमें या अपने गुणोंके विषयमें नहीं बोलना।

—एपिक्टेटस

ज्ञानी हर बातकी अपनेसे आशा रखता है; मूर्ख दूसरोंकी ओर ताकता है।

—जीन पॉल

ज्ञानीलोग तुम्हारा तमाम गुप्त इतिहास तुम्हारी आँखोंमें, चालमें और बर्तावमें बड़ी तेज़ीसे पढ़ लेते हैं।

—एमर्सन

ज्ञानी वह जिसके लिये मानापमान कुछ नहीं और जो सबमें ब्रह्मरूप देखता है।

—रामायण

'ज्ञानी पाप नहीं कर सकता; यह उसकी अपूर्णता है' इस अपूर्णतामें ही उसकी पूर्णता है।

—विनोबा

जो ज्ञानियोंके साथ चलता है अवश्य ज्ञानी हो जायेगा।

सुन्दर सुन्दर भाषण देनेसे ही कोई ज्ञानवान नहीं हो जाता। जो कोई शांत है, मैत्रीपूर्ण है, और निर्भय है वह ज्ञानी है।

—धम्मपद

ज्ञानी असम्भव चीजोंकी प्राप्तिकी आशा नहीं लगाते; न वे नष्ट हुई चीज़का अफ़सोस करते हैं, और न आपत्तिके समय साहस छोड़ते हैं।

—अज्ञात

मूर्ख लोग सुखमें हर्षते और दुःखमें बिलखते हैं; ज्ञानी दोनों हालतोंमें समभाव धारण करते हैं।

—रामायण

कोई संसारिक भय ज्ञानी मनुष्यके दिलको नहीं दहला सकता, चाहे वह उसके कितने ही निकट पहुँच जाय। जैसे कोई तीर पत्थरकी विशाल ठोस शिलाको नहीं बेध सकता।

—योगवासिष्ठ



सन् १९५१ में हमारे नये प्रकाशन

१. मेरे बापू

श्री हुकुमचन्द्र 'बुखारिया'

डॉ० रामकुमार वर्मा—

'मेरे बापू' में युगपुरुषको कविकी श्रद्धाञ्जलि समर्पित हुई है। इस श्रद्धाञ्जलिमें कविकी अनुभूति और कल्पनाके ऐसे प्रसून हैं जिनकी सुगन्धि निरन्तर पूजाकी पवित्रता लिए रहेगी। बापूका व्यक्तित्व ही काव्यका सहज विषय है। कवित्वके इस जागरणमें कविकी लेखनी संदेश-वाहिका बन गई है। ये संदेश शताब्दियों तक गूँजते रहेंगे। मैं कविके कंठमें अपना स्वर मिलाकर कह सकता हूँ:—

'एक बार धरती गूँजेगी ही फिर उसके अमर श्वास से'

मूल्य ढाई रुपए

२. पंच-प्रदीप

श्री शान्ति एम० ए०

आमुख लेखक सुमित्रानन्दन पन्त लिखते हैं:—शांतिजीका कवि-हृदय संस्कारतः एक स्वच्छ सुथरे कक्षके भीतर प्रतिष्ठित है, जहाँसे उनका सहज बोध भावनाके उत्थान-पतनों, सुख-दुःखके मधुर-तिक्त संवेदनों तथा बाह्य जगत्‌के आघातों और विक्षोभोंको एक स्वस्थ संयमन तथा आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करता रहता है। कहीं भी कवयित्रीकी समर्थ भावना ऊबड़-खाबड़ धरतीकी ठोकर खाकर परास्त होती नहीं प्रतीत होती, और न वह भावोच्छ्वास मात्र बनकर वाष्पकी तरह हवामें उड़ती दिखाई देती है।

कवयित्रीकी भाषामें स्वाभाविकता, सजीवता, मधुर प्रवाह तथा शक्तिका सन्तुलित सौष्ठव है। वह अपने काव्य-निर्माणमें बच्चन तथा महादेवी जीकी झंकारोंको आत्मसात् कर उन्हें नवीन रूप प्रदान कर देती है।

मुझे विश्वास है 'पंच-प्रदीप' की शिखा भी उत्तरोत्तर उन्नत होकर उस गौरव को वहन करनेमें समर्थ होगी।"

मूल्य दो रु०

३ वर्द्धमान

महाकाव्य

जनताकी सदियोंसे अतृप्त अभिलाषा थी कि भगवान् महावीरके जीवनचरित्रकी ऐसी मर्मस्पर्शी कविताएं हों जिन्हें पढ़कर लोग आत्मविभोर हो उठें। उन्हीं वर्षोंकी साधको सिद्धार्थके यशस्वी ख्याति प्राप्त कवि श्री अनूपशर्माने यह महाकाव्य लिखकर अभिनन्दनीय कार्य किया है।

मूल्य ६ रु०

४. गहरे पानी पैठ

[सूक्तिरूपमें मर्मस्पर्शी ११३ कहानियाँ]

अयोध्याप्रसाद गोयलीय

गुरुजनोंके चरणोंमें बैठकर जो सुना.
इतिहास और धर्मग्रन्थोंमें जो पढ़ा.
और दुनियाकी आँखोंसे जो देखा.

मूल्य ढाई रुपए

५. ज्ञानगंगा

[संसारके महान साधकोंकी सूक्तियोंका अक्षय भण्डार]

श्री नारायणप्रसाद जैन

इन सूक्तियोंको पढ़कर पता चलता है कि मनुष्यके जागरित मनमें पृथ्वीके विभिन्न खण्डोंमें रहकर अनन्त युगोंतक जीवनसे जूझकर और जीवनको अपनाकर अपने अनुभव द्वारा सत्यको किस प्रकार प्राप्त किया है और उसे किस अमर वाणीमें व्यक्त किया है। ज्ञानकी यह कितनी बड़ी करामात है कि वह मानव-मात्रमें भेद ही उत्पन्न नहीं करता, जीवनकी मौलिक एकताका आधार मादर-वाणीमें व्यक्त करता है और इतिहासके पृष्ठोंपर अमरत्वकी छाप लगा देता है। मूल्य ६)

६. भारतीय विचारधारा

श्री मधुकर

प्रस्तुत पुस्तकमें लेखकने भारतीय दर्शनको ऐतिहासिक और तुलनात्मक दृष्टिकोणसे उपस्थित करके सर्वसाधारणके लिए सुलभ बना सकनेका सराहनीय कार्य किया है। वेद, उपनिषद्, चार्वाक्, गीता, जैन और बौद्ध विचारधाराएँ, न्यायवैशेषिक, सांख्य-योग, पूर्व मीमांसा और वेदान्तके सभी दार्शनिक अंगोंकी सांगोपांग वैज्ञानिक विवेचना की गई है।

पादटिप्पणीमें दिये गये मूल संस्कृत उद्धरणोंसे पुस्तककी उपादयता और बढ़ गई है। भारतीय संस्कृतिको स्वस्थ दृष्टिकोणसे समझनेके लिए यह पुस्तक बहुत आवश्यक है।

मूल्य दो रु०

७. महापुराण [आदिपुराण]

[भाग १]

भगवज्जिनसेनाचार्यकृत युगादि पुरुष भगवान् ऋषभदेवका पुण्य चरित्र।

इस पुराणमें न केवल चरित्र ही है किन्तु जैनाचार, जैनसंस्कार आदिका साङ्गोपाङ्ग विस्तृत विवेचन है। अनेक ताडपत्रीय प्रतियोंके आधारसे इसका संशोधन और सम्पादन साहित्याचार्य पन्नालालजीने किया है।

पृष्ठ संख्या ७१२ बड़ा साइज मूल्य १३)

८. समयसार [अंग्रेजी]

भगवान् कुन्दकुन्दके सुप्रसिद्ध अध्यात्म ग्रन्थ समयसारका अंग्रेजी भाषामें प्रामाणिक अनुवाद। विस्तृत व्याख्या, महत्त्वपूर्ण प्रस्तावना सं०—रावबहादुर ए० चक्रवर्ती, मद्रास।

मूल्य आठ रु०

१९५० के हमारे प्रकाशन

९. मिलनयामिनी

[श्री बच्चनजी की नवीनतम कृति]

आल इण्डिया रेडियो—

"मिलनयामिनी एक रागिनी है। यह हमारे मनके तारोंको मायाकी उंगलियोंमें बजाती है और जीवनके एकान्त क्षणोंकी उदासी दूर कर जाती है।

मूल्य चार रु०

१०. वैदिक साहित्य

आमुख लेखक

माननीय सम्पूर्णानन्दजी, शिक्षामंत्री उत्तर प्रदेशराज्य

इसके लेखक वैदिक साहित्यके प्रकाण्ड विद्वान् और परम्परागत धर्मशास्त्र, पुराण और भारतीय दर्शनोंके प्रसिद्ध अध्येता श्री पण्डित रामगोविंद त्रिवेदी वेदान्त शास्त्री हैं।

वैदिक साहित्यका इतना सरल सांगोपांग परिचय हिन्दी तो क्या सम्भवतः भारतकी अन्य भाषाओंमें भी उपलब्ध नहीं है। पुस्तकके लगभग ५०० पृष्ठोंमें अबतक प्राप्त ११ संहिताओं, १८ ब्राह्मण ग्रंथों, ६ आरण्यकों और २२० उपनिषदोंकी मूल ज्ञानराशि और उनके सम्बन्धमें अन्य ज्ञातव्य बातोंको भी त्रिवेदीजीने सार रूपमें रख दिया है।

मूल्य छः रु०

११. जैन शासन (द्वितीय संस्करण)

पं० सुमेरुचन्द्रजी दिवाकर, न्यायतीर्थ

आचार्य बिनोवा भावे—

"किताब बहुत मेहनतसे लिखी है। जैनधर्मके बारेमें काफी जानकारी उसमेंसे मिल जाती है। जैन विचार निःसंशय प्राचीन कालसे हैं क्योंकि "अर्हन् इदं दयसे विश्वमंवम्" इत्यादि वेदवचनोंमें वह पाया जाता है।"

मैथिलीशरण गुप्त—

"जैन शासन" लिखकर आपने अपने धर्म और साहित्यकी अच्छी सेवा की है।

मूल्य तीन रु०